देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला—६

संपादक

रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा

प्राचीन मुद्रा

(श्रीयुक्त राखालदास बंद्योपाध्याय की बँगला पुस्तक का अनुवाद)

अनुवादक

रामचंद्र वर्म्मा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १००० | संवत् १९८१ | मूल्य ३)
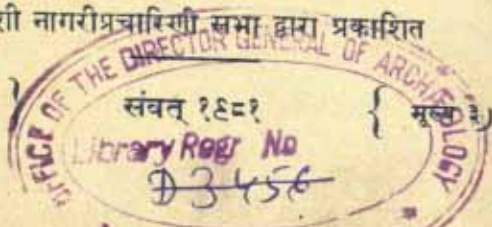
लेखक की भूमिका

लिपिबद्ध ऐतिहासिक घटनाओं की तरह प्राचीन सिक्के भी लुप्त इतिहास का उद्धार करने का एक साधन हैं। यद्यपि सिक्कों का प्रमाण प्रत्यक्ष होता है, तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि उन सिक्कों के द्वारा केवल उस राजा के अस्तित्व के अतिरिक्त, जिसके नाम से वे मुद्राङ्कित होते हैं, और भी कुछ प्रमाणित होता हो। जिन देशों में प्राचीन काल का लिपिबद्ध इतिहास होता है, उन देशों में प्राचीन सिक्कों का लुप्त इतिहास के पुनरुद्धार के उपादानस्वरूप कुछ अधिक मूल्य अथवा महत्व नहीं होता। परंतु जिन देशों में प्राचीन काल का लिखा हुआ इतिहास नहीं मिलता, उन देशों में जनप्रवाद, विदेशी यात्रियों के भ्रमण-वृत्तान्तों, प्राचीन शिलालेखों और ताम्रलेखों तथा साहित्य के आधार पर ही लुप्त इतिहास का उद्धार करना पड़ता है। ऐसे देशों के प्राचीन सिक्के इतिहास तैयार करने का एक प्रधान उपकरण होते हैं। इसी लिये जो लोग भारत की ऐतिहासिक बातों का अनुसंधान करना चाहते हैं, उनके लिये यहाँ के प्राचीन सिक्के भी बहुत ही आवश्यक और काम के हैं।

भारतवर्ष की देशी भाषाओं में मुद्रातत्त्व (Nuimismatics) के संबंध में मौलिक गवेषणा और विचारपूर्ण प्रबंध प्रायः नहीं लिखे जाते। भारतीय पुरातत्त्व के ज्ञाताओं में से जो लोग मुद्रातत्त्व के संबंध में आलोचना करते हैं, वे लोग साधारणतः अँगरेजी भाषा में ही अपना मत प्रकट किया करते हैं। इसी लिये भारतवर्ष के किसी देश में भारतीय मुद्रातत्त्व का

प्रचार नहीं हुआ। भारत के प्राचीन इतिहास, भूगोल, प्राचीन-लिपितत्त्व आदि पुरातत्त्व की भिन्न भिन्न शाखाओं के संबंध में जिज्ञासु छात्रों के लिये हुए अँगरेजी भाषा में बहुत से उपयोगी ग्रंथ हैं। परंतु मुद्रातत्त्व के संबंध में प्रस्तुत पुस्तक के ढंग के ग्रन्थ बहुत ही कम हैं। इसी अभाव को दूर करने के लिये कैम्ब्रिज के अध्यापक रैप्सन ने "भारतीय मुद्रा" नामक एक छोटा ग्रन्थ तैयार किया था। परंतु अध्यापक रैप्सन का वह ग्रन्थ, (स्वर्गीय) स्मिथ (V. A. Smith) के "प्राचीन भारत का इतिहास" अथवा स्वर्गीय अध्यापक बुहलर (G. Buhler) के "भारतीय प्राचीन लिपितत्त्व" नामक ग्रन्थ की तरह सरल अथवा विशद नहीं है। अध्यापक रैप्सन का ग्रन्थ तत्त्वानुसंधान करनेवालों को मुद्रातत्त्व की सीमा तक ही पहुँचा देता है। वह मुद्रातत्त्व संबंधी ग्रन्थों अथवा प्रबन्धों की सूची (Bibliography) मात्र है। तथापि भारतीय मुद्रातत्व के संबंध में किसी दूसरे ग्रन्थ के न होने के कारण भारतवर्ष का ऐतिहासिक तत्व जाननेवालों के लिये वही अमूल्य है।

प्रवीण ऐतिहासिक परम श्रद्धास्पद श्रीयुक्त अक्षयकुमार मैत्रेय महाशय ने कई वर्ष पहले मुझसे एक ऐसा ग्रन्थ लिखने का अनुरोध किया था, जिसका अवलम्बन करते हुए नए इतिहास-प्रेमी लोग मुद्रातत्त्व के दुर्गम क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। परंतु अनेक कारणों से मैं मैत्रेय महाशय की आज्ञा का पालन नहीं कर सका था। इस ग्रन्थ में ऐतिहासिक युग के आरंभ से लेकर उत्तरापथ और दक्षिणापथ में मुसलमानों के विजय-काल तक के पुराने सिक्कों का वैज्ञानिक और क्रमबद्ध विवरण दिया गया है। दूसरे भाग में भारतवर्ष के मुसलमानों के राजत्व काल के सिक्कों का विवरण देने की इच्छा है।

मुसलमानों की विजय के पहले के दूसरे साधनों के अभाव में लुप्त इतिहास के उद्धार के लिये पुराने सिक्के जितने आवश्यक साधन हैं, मुसलमानों के राजत्व काल के लिपिबद्ध ऐतिहासिक विवरणों के प्रस्तुत होने के कारण इस समय के लिये पुराने सिक्के उतने आवश्यक साधन नहीं हैं। मुसलमानों की विजय के पहले का मुद्रातत्व जटिल है; और साथ ही वह बहुत सी भाषाओं तथा बहुत से देशों के इतिहासों पर निर्भर करता है। इसलिये उसकी वैज्ञानिक आलोचना करना प्रायः दुस्साध्य है। तथापि वह लुप्त इतिहास का पुनरुद्धार करने के लिये एक आवश्यक साधन है; इसलिये उसका मूल्य भी बहुत अधिक और असाधारण है। रैप्सन के ग्रन्थ के अतिरिक्त संसार की और किसी भाषा में भारतीय मुद्रातत्व का ठीक ठीक विवरण नहीं लिखा गया। इसलिये इस ग्रन्थ में मैंने यथासाध्य वैज्ञानिक रीति से और वर्तमान काल तक भारतीय मुद्रातत्व की आलोचना करने की चेष्टा की है। इसकी रचना स्वर्गीय अध्यापक बुहलर के "भारतीय प्राचीन लिपितत्व" के ढंग पर की गई है। भारतीय मुद्रातत्व के प्रमाण बहुत दुर्बल हैं और उसकी विस्तृति बहुत ही सामान्य है। तथापि विद्वानों तथा सर्वसाधारण को यह बात बतलाने के लिये इस ग्रन्थ की रचना हुई है कि केवल मुद्रातत्व की आलोचना से ही लुप्त इतिहास का कहाँ तक उद्धार हो सकता है। प्राचीन लिपितत्व अथवा उद्धृत इतिहास ने मुद्रातत्व के जिन अंशों को सुदृढ़ सत्य आधार पर स्थापित किया है, अर्थात् जिन अंशों की उनके द्वारा सत्यता सिद्ध हुई है, उन्हीं सब अंशों में शिलालेखों, ताम्रशासनों अथवा लिपिबद्ध इतिहास का उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में भारतीय इतिहास के प्रत्येक

युग (Period) के भिन्न भिन्न राजवंशों के सिक्कों का विस्तृत विवरण दिया गया है। भारतवर्ष के भिन्न भिन्न युगों और स्वतंत्र राजवंशों के सिक्कों की कई अलग अलग तालिकाएँ पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। परन्तु ज्ञात पड़ता है कि संसार की किसी भाषा में किसी एक ही ग्रन्थ में समस्त भारतीय मुद्रातत्व का विस्तृत विवरण अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। आशा है कि विद्वान् लोग इस नए प्रयोग को कृपापूर्ण दृष्टि से देखेंगे।

अध्यापक रैप्सन के "भारतीय मुद्रा" (Indian Coins), कनिंघम के "भारतीय प्राचीन मुद्रा" (Coins of Ancient India), "भारतीय ग्रीक राजाओं के सिक्के" (Coins of Indo-Greek Princes), "शक राजाओं के सिक्के" (Coins of Shakas), "भारतीय मध्य युग के सिक्के" (Coins of Mediaeval India), रैप्सन के "अन्ध्र और क्षत्रप वंश के सिक्कों की सूची" (British Museum Catalogue of Indian Coins, Andhras, W. Ksatrapas etc.), एलेन के "गुप्त राजवंश के सिक्कों की सूची" (British Museum Catalogue of Indian Coins, Gupta Dynasties), गार्डनर के "वाह्लीक और भारतवर्ष के ग्रीक और शक राजाओं के सिक्कों की सूची" (British Museum Catalogue of Indian Coins, Greek and Sythic Kings of Bactria and India), स्मिथ के "कलकत्ते के अजायबघर के सिक्कों की सूची" (Catalogue of Coins in Indian Museum Vol. 1.), व्हाइटहेड के "पंजाब के अजायब घर के सिक्कों की सूची"

(Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore Vol. 1.) आदि प्रसिद्ध ग्रंथों के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है।

ग्रन्थकार के मित्रों के बहुत परिश्रम करने पर भी ग्रन्थ में बहुत सी भूलें रह गई हैं। आशा है कि ग्रन्थकार की अक्षमता के कारण भारतीय भाषा में लिखे हुए भारतीय सिक्कों पर इस पहले ग्रन्थ में जो दोष आदि रह गए हैं, उन्हें, पण्डित लोग स्वयं सुधार लेंगे।

६५ सिमला स्ट्रीट,
कलकत्ता।
२१ आश्विन १९११

श्रीराखालदास वन्द्योपाध्याय

प्राक्कथन

भारतवर्ष का प्राचीन लिखित इतिहास नहीं मिलता, यह निश्चित है। ईरान के बादशाह दारा के पंजाब पर अपना अधिकार जमाने, सिकंदर की पंजाब की चढ़ाई, और महमूद ग़ज़नवी की हिंदुस्तान के भिन्न भिन्न विभागों पर की चढ़ाइयों का हमारे यहाँ कुछ भी लिखित उल्लेख नहीं मिलता। यही हमारे यहाँ के साहित्य में इतिहास विषयक त्रुटि को बतलाने के लिये अलम् है। प्रत्येक जाति और देश के जीवन तथा उत्थान के लिये उसके इतिहास की परम आवश्यकता रहती है। ईसवी सन् १७८४ में सर् विलियम जोंस के यत्न से प्राचीन शोध की नींव डाली गई। तब से लेकर आज तक इस विस्तीर्ण देश में, जहाँ प्राचीन काल से ही अनेक स्वतंत्र राज्य या गण-राज्य समय समय पर स्थापित और नष्ट होते रहे, बहुत कुछ इतिहास-संबंधी सामग्री उपलब्ध होती गई है। यद्यपि इस विषय में श्रम करनेवाले देशी और विदेशी विद्वानों की संख्या बहुत थोड़ी है, तो भी उनके श्रम से हमारे प्राचीन इतिहास की शृंखला की जो कुछ कड़ियाँ उपलब्ध हुई हैं, वे कम महत्त्व की नहीं हैं। देसी सामग्री में शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के और विदेशी यात्रियों या विद्वानों के एवं

परदेशीय विद्वानों के लिखे हुए ग्रंथ भी हमें बहुत कुछ सहायता देते हैं। ईसवी सन् की छठी शताब्दी के बाद के कई एक संस्कृत और प्राकृत के ऐतिहासिक काव्य भी उपलब्ध हुए हैं जो इस विस्तीर्ण देश पर राज्य करनेवाले अनेक भिन्न भिन्न वंशों में से किसी न किसी वंश या राजा का कुछ इतिहास उपस्थित करते हैं। हमारे प्राचीन इतिहास के लिये सबसे अधिक उपयोगी तो शिलालेख और ताम्रलेख हैं, जो उस समय के इतिहास, देशस्थिति, लोगों के आचार-व्यवहार, धर्म-संबंधी विचार, आदि विषयों पर बहुत कुछ प्रकाश डालते हैं। सिक्के भी कम महत्व के नहीं हैं। जिन प्राचीन राजवंशों और राजाओं का पता शिलालेखों और ताम्रलेखों से नहीं मिलता, उनके विषय की बहुत कुछ जानकारी सिक्कों से प्राप्त हो जाती है।

काबुल और पंजाब पर राज्य करनेवाले यूनानी (ग्रीक) राजाओं के राजत्व-काल का अब तक केवल एक ही शिलालेख विदिशा (भेलसा, ग्वालियर राज्य में) के एक सुंदर और विशाल पाषाण स्तंभ पर खुदा हुआ मिला है, जिससे जाना जाता है कि राजा ऐंटी-आल्किडिस के समय तक्षशिला (पंजाब) नगर के रहनेवाले डियन (Dian) के पुत्र हेलियोदोर (Heliodoros) ने, जो यवन (यूनानी) होने पर भी भागवत (वैष्णव) था और जो राजा काशीपुत्र भागभद्र के यहाँ राजदूत होकर आया था, देवताओं के देवता वासुदेव

(विष्णु) का यह गरुड़ध्वज बनवाया। अब तक यूनानी राजाओं के समय का यही एक शिलालेख मिला है। सीलोन (लंका) से मलिंद पन्हो (मलिंद प्रश्न) नामक पाली भाषा की पुस्तक में मलिंद (मिनैंडर) और बौद्ध श्रमण नागसेन के निर्वाण संबंधी प्रश्नोत्तर हैं। उक्त पुस्तक से जाना जाता है कि मलिंद (मिनैंडर) यवन (यूनानी) था और वह पराक्रमी होने के अतिरिक्त अनेक शास्त्रों का ज्ञाता भी था। उसका जन्म अलसंद अर्थात् अलेग्ज़ैंड्रिया नगर (हिंदुकुश पर्वत के निकट) में हुआ था। उसकी राजधानी साकल (पंजाब में) बड़ी समृद्धिवाली नगरी थी। मलिंद (मिनैंडर) नागसेन के उपदेश से बौद्ध हो गया था। प्लूटार्क नामक प्राचीन लेखक लिखता है कि वह ऐसा न्यायी और लोकप्रिय था कि उसका देहांत होने पर अनेक नगरों के लोगों ने उसकी राख आपस में बाँट ली, और अपने यहाँ उसे ले जाकर उन पर स्तूप बनवाए। शिलालेख और प्राचीन पुस्तकों से तो हमें अफ़गानिस्तान और पंजाब आदि पर राज्य करनेवाले यूनानी राजाओं में से केवल दो के ही नाम ज्ञात हुए हैं; परंतु यूनानियों के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों ने २५ से अधिक राजाओं और रानियों के नाम प्रकाशित किए हैं। यद्यपि सिक्के छोटे होते हैं, और उन पर बहुत ही छोटे छोटे लेख रहते हैं, तो भी वे बड़े महत्व के होते हैं। यूनानियों के सिक्कों पर एक तरफ़ राजा का चेहरा और किनारे के पास ख़िताबों सहित राजा नाम का

पुरानी ग्रीक लिपि में रहता है, और दूसरी ओर किसी आराध्य देवी देवता का या अन्य किसी का चित्र रहता है; और किनारे के पास उस प्राचीन ग्रीक लिपि के लेख का बहुधा प्राकृत अनुवाद खरोष्ठी लिपि में होता है। इन सिक्कों पर राजा के पिता का नाम न होने से उनकी वंश-परम्परा यद्यपि स्थिर नहीं हो सकती, तो भी उनकी पोशाक, उनके आराध्य देवी-देवता, उस समय की शिल्पकला आदि का उनसे बहुत कुछ परिचय मिल सकता है। इन्हीं सिक्कों पर के प्राचीन ग्रीक लिपि के लेखों के सहारे से खरोष्ठी लिपि की वर्णमाला का भी ज्ञान हो सका, जिससे उक्त लिपि में मिलनेवाले हमारे यहाँ के शिलालेख और ताम्रलेख अब थोड़े श्रम से भली भाँति पढ़े जा सकते हैं। इन सिक्कों पर संवत् न रहने से उक्त राजाओं का अब तक ठीक निश्चय न हो सका, तो भी हमारे इतिहास की खोई हुई कड़ियों को एकत्र करने में वे बहुत बड़े सहायक हैं।

पश्चिमी क्षत्रप वंशी राजाओं के चाँदी के ही सिक्के मिलते हैं जो कलदार चौअन्नी से बड़े नहीं होते, तो भी उन पर के लेखों में क्षत्रप या महाक्षत्रप का नाम और ख़िताब एवं उसके पिता क्षत्रप या महाक्षत्रप का ख़िताब सहित नाम तथा संवत् का अंक दिया हुआ होने से इस राजवंश की २२ नामों की क्रम-बद्ध वंशावली और बहुत से राजाओं के राजत्व काल का निर्णय हो गया है, जब कि उनके थोड़े से मिले हुए

शिलालेखों में छः सात राजाओं से अधिक के नाम नहीं मिलते। उक्त सिक्कों के आधार पर क्षत्रपों का वंश-वृक्ष बनाने से यह भी निर्णय होता है कि इनमें क्षत्रपों की नाईं ज्येष्ठ पुत्र ही अपने पिता के राज्य का स्वामी नहीं होता था, किंतु एक राजा के जितने पुत्र हों, वे उसके पीछे यदि जीवित रहें, तो क्रमशः सबके सब राज्य के स्वामी होते थे; और उनके बाद यदि बड़े भाई का पुत्र जीवित हो तो वह राज्य पाता था। यह रीति केवल सिक्कों से ही जानने में आई है।

कुशनवंशियों के सिक्कों से जाना जाता है कि वे शीत-प्रधान देशों से आए हुए थे, जिससे उनके सिर पर बड़ी टोपी, बदन पर मोटा कोट या लबादा और पैरों में लंबे बूट होते थे। राजतरंगिणी में कल्हण ने उनको तुरुष्क अर्थात् वर्तमान तुर्किस्तान का निवासी बतलाया है, जो उनकी पोशाक से ठीक जान पड़ता है। वे लोग अग्निपूजक थे, और बहुधा सिक्कों में राजा अग्निकुंड में आहुति देता हुआ मिलता है। वे शिव, बुद्ध, सूर्य, आदि अनेक देवताओं के उपासक थे, जैसा कि उनके सिक्कों पर अंकित आकृतियों से पाया जाता है। उस समय तुर्किस्तान में भारतीय सभ्यता फैली हुई थी।

गुप्तों के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के मिलते हैं, जिनमें सोने के सिक्के विशेष महत्व के हैं, क्योंकि उन पर इन राजाओं के कई कार्य अंकित किए गए हैं। जैसे कि समुद्रगुप्त के सिक्कों

पर एक तरफ यूप (यज्ञस्तंभ) के साथ बँधा हुआ यज्ञ का अश्व बना है, जो उसका अश्वमेध यज्ञ करना और उसको दक्षिणा में देने के लिये, या उसकी स्मृति के लिये इन सिक्कों का बनवाया जाना सूचित करता है। उसके दूसरे प्रकार के सिक्कों पर राजा पलँग पर बैठा हुआ कई तारवाला धनुषाकृति वाद्य बजा रहा है, जो उक्त राजा का गन्धर्व विद्या में निपुण होना प्रकट करता है, जैसा कि उसी के शिलालेख से पाया जाता है। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर राजा बाण से व्याघ्र का शिकार करता हुआ अंकित किया गया है, जो उसकी वीरता प्रकट करता है। इसी तरह उक्त वंश के भिन्न भिन्न राजाओं के भिन्न भिन्न कार्यों आदि का पता भी इन सिक्कों से ही लगता है। इन सिक्कों से यह भी पाया जाता है कि इन राजाओं ने यूनानियों की पोशाक को भी कुछ अपनाया था, क्योंकि राजाओं के शरीर पर पुराना यूनानी कोट स्पष्ट प्रतीत होता है, जिसके आगे और पीछे का हिस्सा कमर से कुछ ही नीचे तक और दोनों पार्श्वों के अंश घुटनों के लगभग तक पहुँचे हुए देख पड़ते हैं। इन सिक्कों से यह भी पाया जाता है कि समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त दूसरे, कुमारगुप्त पहले, स्कंदगुप्त, बुधगुप्त आदि ने अपने कई एक सिक्कों पर भिन्न भिन्न छंदों में कविताबद्ध लेख अंकित कराए थे। दुनिया भर के इतिहास में यही एक उदाहरण है कि ईसवी सन् की चौथी शताब्दी में भारतवासी ही अपने सिक्कों पर कविता-बद्ध लेख भी लिखवाते थे।

मुसलमानों ने केवल मुगलों के समय में सिक्कों पर कविताबद्ध लेख रखवाए थे।

सिक्कों की विशेषताओं के ये थोड़े से उदाहरण ही हमने यह बतलाने के लिये दिए हैं कि जो बातें शिलालेखों आदि में नहीं मिलतीं, उनकी बहुत कुछ पूर्ति सिक्के कर देते हैं।

ये सिक्के अनेक राजवंशों के जैसे ग्रीक, शक, पार्थिअन, कुशन, क्षत्रप, गुप्त, अर्जुनायन, औदुंबर, कुनिंद, मालव, नाग, राजन्य, यौधेय, आंध्र, हूण, गुहिल, चौहान, कलचुरि (हैहय), चंदेल, तोमर, गाहड़वाल, सोलंकी, यादव, पाल, कदंब, आदि के तथा कश्मीर के भिन्न भिन्न वंशों, काँगड़े, नेपाल, आसाम, मणिपुर आदि के भिन्न भिन्न राजाओं तथा अयोध्या, उज्जैन, कौशांबी, तक्षशिला, मथुरा, अहिछत्रपुर आदि नगरों के राजाओं के एवं मध्यमिका आदि नगरों के मिलते हैं जो इतिहास के लिये परम उपयोगी हैं।

हमें यह भी बतलाना आवश्यक है कि हमारे यहाँ के राजा अपने सिक्कों के संबंध में विशेष ध्यान नहीं देते थे। गुप्तों के सोने के सिक्के तो बड़े सुंदर हैं; परंतु जब उन्होंने पश्चिमी क्षत्रपों का विस्तीर्ण राज्य अपने राज्य में मिलाया, तब से चाँदी के सिक्के की तरफ इन्होंने बहुत कम दृष्टि दी और क्षत्रपों के सिक्कों के एक तरफ का चेहरा ज्यों का त्यों बना रहने दिया और दूसरी तरफ अपना लेख अंकित कराया। इसी तरह जब हूण तोरमाण ईरान का खज़ाना लूटकर वहाँ के सिक्के हिंदु-

स्तान में लाया, तो उसके पीछे कई शताब्दियों तक राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, मालवा आदि देशों में उन्हीं की भद्दी नकलें बनती रहीं और वे ही प्रचलित रहे। उनकी कारीगरी में यहाँ तक भद्दापन आ गया कि राजा का चेहरा बिगड़ते बिगड़ते उसकी ऐसी भद्दी आकृति हो गई कि लोगों ने राजा के चेहरे को गधे का खुर मान लिया और उसी आधार पर उनको गधीया या गदैया सिक्के कहने लगे। उनमें बेपरवाही यहाँ तक होती रही कि उन पर राजा का नाम तक न रहा। अजमेर बसानेवाले चौहान राजा अजयदेव और उसकी रानी सोमलदेवी के चाँदी के सिक्कों के एक तरफ वही माना हुआ गधे के खुर का चिह्न और दूसरी तरफ उनके नाम अंकित हैं। राजपूताने में गुहिलवंशियों ने और रघुवंशी प्रतिहारों ने पुरानी शैली के अपने सिक्के जारी रक्खे, जैसा कि गुहिलवंशी बापा रावल के सोने के सिक्के और प्रतिहारवंशी भोजदेव (आदि वराहमिहिर) के सिक्कों से पाया जाता है। मुसलमानों की अधीनता स्वीकार करने पर हिंदू राजवंशों के सिक्के क्रमशः नष्ट होते गए और उनके स्थान पर मुसलमानों के सिक्के ही प्रचलित हुए। मुसलमानों के सिक्कों का इस पुस्तक से संबंध न होने से उनके विषय में यहाँ कुछ भी कथन करना अनावश्यक है।

भारतवर्ष के प्राचीन सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों के कई बड़े बड़े संग्रह इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और रूस

आदि यूरोप के देशों में, कलकत्ता, बंबई आदि की एशियाटिक सोसाइटियों के संग्रहों में, तथा इंडियन म्युजियम् (कलकत्ता), बंगोय साहित्य परिषद् (कलकत्ता), लखनऊ म्युजियम्, राजपूताना म्युजियम् (अजमेर), सरदार म्युजियम् (जोधपुर), वॉट्सन म्युजियम् (राजकोट) प्रिन्स ऑफ वेल्स म्युजियम् (बंबई), मद्रास म्युजियम्, पेशावर म्युजियम्, लाहौर म्युजियम्, पटना म्युजियम्, नागपुर म्युजियम् आदि कई एक संग्रहालयों में तथा कई विद्यानुरागी गृहस्थों के निजी संग्रहों में विद्यमान हैं और उनमें से कई एक संग्रहों की सचित्र सूचियाँ भी छप चुकी हैं। ऐसे ही कई अलग अलग स्वतंत्र ग्रंथ भी युरोप की अनेक भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और कई पत्रिकाएँ भी केवल इसी संबंध में प्रकाशित होती रहती हैं; तथा प्राचीन शोध-संबंधी अँगरेजी आदि पत्रिकाओं में समय समय पर बहुत कुछ सचित्र लेख प्रकाशित हुए हैं और होते रहते हैं। भारतीय प्राचीन सिक्कों के संबंध का यह साहित्य इतना विस्तीर्ण है कि यदि कोई उसका पूरा संग्रह करना चाहे, तो कई हजार रुपए व्यय किए बिना नहीं हो सकता।

खेद का विषय है कि हिन्दी साहित्य में इस बड़े उपयोगी विषय की अब तक चर्चा भी नहीं हुई। पुरातत्व विद्या के सुप्रसिद्ध विद्वान् और सिक्कों के विषय के अद्वितीय ज्ञाता श्रीयुत राखालदास बैनर्जी, एम. ए. अपनी मातृभाषा बँगला

के प्रेम के कारण उस भाषा में 'प्राचीन मुद्रा' (प्रथम भाग) नामक उत्तम पुस्तक लिखकर इस विषय की त्रुटि के एक अंश की पूर्ति कर एतद्देशीय एवं यूरोपियन विद्वानों की प्रशंसा के पात्र हुए हैं। उनका मातृभाषा का यह प्रेम वस्तुतः बड़ा ही प्रशंसनीय है। हिंदी साहित्य में इस विषय का सर्वथा अभाव होने से काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने उक्त पुस्तक का यह हिंदी अनुवाद कराकर और देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला में उसे प्रकाशित कर हिंदी साहित्य की अनुपम सेवा की है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

अजमेर।

विषय-सूची

चित्र-सूची पृ० १ से १२

(१) भारत के सब से प्राचीन सिक्के पृ० १ से २४

(२) प्राचीन भारत के विदेशी सिक्के पृ० २५ से ४१

(३) विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(क) यूनानी राजाओं के सिक्के पृ० ४२ से ७३

(४) विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(ख) शक राजाओं के सिक्के पृ० ७४ से १०२

(५) विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(ग) कुषण वंशीय राजाओं के सिक्के पृ० १०३ से १२८

(६) विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(घ) जानपदों और गण राज्यों के सिक्के पृ० १२६ से १५१

(७) नवीन भारतीय सिक्के

गुप्त सम्राटों के सिक्के पृ० १५२ से १६१

(८) सौराष्ट्र और मालव के सिक्के पृ० १६२ से २११

(९) दक्षिणापथ के पुराने सिक्के पृ० २१२ से २३०

(१०) ससनीय सिक्कों का अनुकरण पृ० २३१ से २४०

(११) उत्तरापथ के मध्य युग के सिक्के

(क) पश्चिम सीमान्त पृ० २४१ से २५८

(१२) उत्तरापथ के मध्य युग के सिक्के

(ख) मध्य देश पृ० २५६ से २६६

विषयानुक्रमणिका

चित्र-सूची

चित्र (१)—

अनाथपिण्डद के जेतवन खरीदने के चित्र

(१) बरहुत गाँव की वेष्टनी का चित्र।

(२) बुद्ध गया की वेष्टनी का चित्र।

चित्र (२)—

भारत के सब से पुराने सिक्के

(१) चौकोर दण्ड, रौप्य— अजायबघर कलकत्ता

(२) वक्रदण्ड, रौप्य „

(३) असम आकार का सिक्का, रौप्य „

(४–५) चौकोर, रौप्य, „

(६) असम चौकोर, रौप्य „

(७) गोलाकार रौप्य „

(८) गोलाकार, बड़ा, रौप्य „

(९) गोलाकार, बहुत से अंकचिह्नोंवाला, रौप्य „

(१०) चौकोर, एक अंकचिह्नवाला, ताम्र „

(१२) गोलाकार, ताम्र „

चित्र (३)—

प्राचीन भारत के विदेशी सिक्के

(१) कोसल, कोदिया का राजा, सुवर्ण—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जय राय चौधरी बहादुर।

(२) सिल्यूक कालिनिक, सीरिया का ग्रीक राजा, रौप्य ,,
(३) द्वितीय आन्तियोक, सीरिया का ग्रीक राजा, रौप्य ,,
(४) तृतीय आन्तियोक सीरिया का ग्रीक राजा, रौप्य ,,
(५) लिसिमेक, योन देश का ग्रीक राजा, रौप्य ,,
(६) सुभूति, पंजाब का राजा, रौप्य ,,
(७) सुभूति पंजाब का ग्रीक राजा, रौप्य—अजायबघर कलकत्ता
(८) दियदात, वाह्लीक का ग्रीक राजा, सुवर्ण ,,
(९) दियदात, वाह्लीक का ग्रीक राजा, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर।

चित्र (४)—

ग्रीक राजाओं के सिक्के

(१) एवुथदिम, वाह्लीक का ग्रीक राजा, रौप्य,—अजायबघर कलकत्ता
(२) एवुथदिम, वाह्लीक का ग्रीक राजा, रौप्य ,,
(३) एवुथदिम, वाह्लीक का ग्रीक राजा, ताम्र ,,
(४) दिमित्रिय, ताम्र ,,
(५) अत, वाह्लीक का ग्रीक राजा, सिल्यूकाब्द १४६—१६५ ईसा पूर्वाब्द, रौप्य-राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर
(६) द्वितीय एवुथदिम, वाह्लीक का ग्रीक राजा, ताम्र ,,
(७) अत और आगथुक्रेय, भारत के ग्रीक राजा, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर

चित्र (५)—

यूनानी राजाओं के सिक्के

(१) दिमित्रिय, रौप्य—अजायबघर कलकत्ता

(२) दिमित्रिय, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर

(३) दिमित्रिय, रौप्य—अजायबघर कलकत्ता

(४) दियदात और अगथुक्रेय, रौप्य,—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(५) पन्तलेव, भारत का ग्रीक राजा, ताम्र—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(६) अगथुक्रेय, भारत का ग्रीक राजा, ताम्र—राय श्रीयुत मृत्युंजय०

(७) दिमित्रिय, भारत का ग्रीक राजा, रौप्य–अजायब घर कलकत्ता

चित्र (६)—

यूनानी राजाओं के सिक्के

(१) मेनन्द, युवावस्था की राजमूर्तिवाला सिक्का, रौप्य,—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौ० ब०

(२) मेनन्द्र, मध्य अवस्था की राजमूर्तिवाला सिक्का, रौप्य.—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जयराय चौ० ब०

(३) मेनन्द, वृद्धावस्था की राजमूर्तिवाला सिक्का, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौधरी बहादुर

(४) मेनन्द, बैल के मुहँवाला सिक्का, ताम्र, ”

(५) मेनन्द, चमड़े के ऊपर राक्षस के मुहँवाला सिक्का, ताम्र ”

(६) अंतिमल्ल, रौप्य ”

(७) अमित, रौप्य ”

(८) हेरमय और कैलियप, राजा और रानी, रौप्य ,,

(९) क्रोइस, ताम्र ,,

चित्र (७)—

यूनानी और शक राजाओं के सिक्के

(१) देलिक्लेय (?) ग्रीक राजा, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(२) वीनोन और स्पलहोर, शक जातीय राजा, रौप्य—अजायब घर कलकत्ता

(३) मोअ, शक जातीय राजा, रौप्य,—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय०

(४) वीनोन और स्पलगदम, शकजातीय राजा, रौप्य—अजायब घर कल०

(५) हेरमय, ग्रीक राजा, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(६) स्पलहोर और स्पलगदम, शक जातीय राजा, ताम्र—अजायबघर कलकत्ता

(७) अय, शक जातीय राजा, रौप्य ,,

(८) अय, शक जातीय राजा, ताम्र—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौ० ब०

चित्र (८)—

शकजातीय और कुषणवंशीय राजाओं के सिक्के

(१) अय, शक जातीय राजा, ताम्र—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(२) अय और अस्ववर्म्मा, शक जातीय राजा, ताम्र,—अजायबघर कल०

(३) अयिलिष, शक जातीय राजा, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(४) गुदफर, पारद जातीय राजा, मिश्र धातु—अजायबघर कलकत्ता

(५) जिहुनिय, शक जातीय क्षत्रप, रौप्य ”

(६) राजुवुल (?) ताम्र—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय राय चौ० ब०

(७) कुजुलकदफिस, कुषणवंशीय राजा, रोमक सम्राट् अगस्टस के ढंग पर, ताम्र—राय श्रीयुत मृत्युंजयराय चौ०

(८) हेरमय और कुजुलकदफिस, ताम्र ”

(९) विमकदफिस, कुषणवंशीय राजा, ताम्र, ”

(१०) कनिष्क, कुषणवंशीय सम्राट् शिवमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

चित्र (९)—

कुषणवंशीय राजाओं के सिक्के

(१) कनिष्क, चंद्रमा की मूर्तिवाला सिक्का, ताम्र,—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(२) हुविष्क, Ardochsho की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण ”

(३) हुविष्क, सूर्य की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण ”

(४) हुविष्क, अग्नि की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण ”

(५) प्रथम वासुदेव, शिव की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण ”

(६) द्वितीय कनिष्क और वा, बाद का कुषण राजा, शिव की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय राय०

(७) भ्री, बाद का कुषण राजा, सुवर्ण ”

(८) द्वितीय वासुदेव, बाद का कुषणवंशी राजा, सुवर्ण ”

(९) किदरकुषण राजवंश का सिक्का, सुवर्ण ”

(१०) किदरकुषण वंश की गडहर (? गर्भिंह) शाखा का सिक्का, सुवर्ण—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

चित्र (१०)—

जानपदों और गणों के सिक्के

(१) मगोजय, मालव जाति का राजा, ताम्र,—अजायबघर कलकत्ता
(२) मालव जाति के गण का सिक्का, ताम्र ”
(३) अच्युत, अहिच्छत्र का राजा (?) ताम्र ”
(४) यौधेय जाति के गण का सिक्का, ताम्र ”
(५) स्वामी ब्रह्मण्य, यौधेय जाति का राजा, ताम्र ”
(६) अवन्तिनगर का सिक्का, ताम्र ”
(७) बलभद्र, मथुरा का राजा, ताम्र ”
(८) रामदत्त, मथुरा का राजा, ताम्र ”
(९) हगामाष, मथुरा का क्षत्रप, ताम्र ”
(१०) शोडास, मथुरा का क्षत्रप, ताम्र ”
(११-१२) साँचे में ढला प्राचीन सिक्का, चंद्रकेतु का, ताम्र—बेड़ाचाँपा, जिला २४ परगना—वंगीय साहित्य परिषद्

चित्र (११)—

जानपदों और गणों के सिक्के

(१) दोनों ओर अंकचिह्नोंवाला चौकोर सिक्का, तक्षशिला, ताम्र—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर
(२-३) दोनों ओर अंकचिह्नोंवाला गोलाकार सिक्का, तक्षशिला, ताम्र—श्रीयुत प्रफुल्लनाथ ठाकुर ।
(४) एक ओर अंकचिह्नोंवाला गोलाकार सिक्का, तक्षशिला, ताम्र श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर ।

(५) "पंचनेकम", तक्षशिला, ताम्र—राय श्रीयुत मृत्युंजय राय०

(६) कुणिन्द जाति के गण का सिक्का, रौप्य—श्रीयुत प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(७) विशाखदेव, अयोध्या का राजा, ताम्र—अजायबघर कलकत्ता

(८) कुमुदसेन, अयोध्या का राजा, ताम्र "

(९) अग्निमित्र, पंचाल का राजा, ताम्र "

(१०) भूमिमित्र, पंचाल का राजा, ताम्र "

(११) फाल्गुणीमित्र, पंचाल का राजा, ताम्र "

(१२) राजन्य जाति के गण का सिक्का, ताम्र "

चित्र (१२)—

गुप्तवंशी सम्राटों के सिक्के

(१) प्रथम चन्द्रगुप्त, स्वर्ण—वंगीय साहित्य परिषद्

(२) समुद्रगुप्त, अश्वमेध का सिक्का, सुवर्ण—श्रीयुत प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(३) " हाथ में ध्वज लिए राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण "

(४) " हाथ में वीणा लिए राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता

(५) " "कच" नामांकित सिक्का, सुवर्ण "

(६) द्वितीय चन्द्रगुप्त, हाथ में धनुष लिए राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—राय श्रीयुत मृत्युंजयराय चौधरी बहादुर

(७) " " खाट पर बैठे हुए राजा की मूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता

(८) " " छत्रधर के साथ राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता

(९) " " सिंह को मारते हुए राजा की मूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(१०) प्रथम कुमारगुप्त, मयूर पर बैठे हुए राजा की मूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—वंगीय साहित्य परिषद्

चित्र (१३)—

गुप्तवंशी सम्राटों के सिक्के

(१) प्रथम कुमारगुप्त, घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौ० ब०

(२) " " सिंह को मारते हुए राजा की मूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता

(३) " " हाथ में धनुष लिए राजा की मूर्त्ति वाला सिक्का,
सुवर्ण,—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(४) " " हाथी पर सवार राजा की मूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—महानाद जिला हुगली—अजायब घर कलकत्ता

(५) स्कन्दगुप्त राजा और राजलक्ष्मीवाला सिक्का, सुवर्ण,—जि० मेदिनीपुर,—अजायबघर कलकत्ता

(६) " हाथ में धनुष लिए राजमूर्त्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—
राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौधरी बहादुर

(७) प्रकाशादित्य (? पुरुगुप्त), घोड़े पर सवार राजमूर्त्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौधरी बहादुर

(८) नरसिंहगुप्त बालादित्य हाथ में धनुष लिए राजमूर्त्तिवाला सिक्का,
सुवर्ण—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौधरी बहादुर

(९) द्वितीय कुमारगुप्त क्रमादित्य, हाथ में धनुष लिए राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(१०) विष्णुगुप्त—चन्द्रादित्य, हाथ में धनुष लिए राजमूर्तिवाला सिक्का, सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता

चित्र (१४)—

गुप्त सम्राटों के सिक्कों के ढंग पर बने सिक्के

(१) शशांक, यशोहर, सुवर्ण,—अजायब घर कलकत्ता

(२) नरेन्द्रविनत, (? शशांक) सुवर्ण „

(३) नरेन्द्रविनत, (? शशांक), सुवर्ण „

(४) मगध के बाद के गुप्त राजाओं के सिक्के, सुवर्ण, यशोहर „

(५) मगध के बाद के गुप्त राजाओं के सिक्के, सुवर्ण, रंगपुर—राय श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चोधरी बहादुर

(६) वीरसेन (? गौड़राज) रौप्य—अजायब घर कलकत्ता

(७) ईशान वर्म्मा, मौखरी, रौप्य „

(८) शर्वंवर्म्मा, मौखरी, रौप्य „

(९) शिलादित्य (? हर्षवर्धन), रौप्य—भिटौरा जि॰ फैजाबाद „

(१०–११) नहपान, रौप्य—जोगल थेम्बी जि॰ नासिक „

(१२) नहपान के सिक्के पर बना गौतमीपुत्र शातकर्णि का सिक्का, रौप्य, जोगल थेम्बी, ज़ि॰ नासिक, अजायब घर कलकत्ता

चित्र (१५)—

सौराष्ट्र और दक्षिणापथ के सिक्के

(१) महाक्षत्रप रुद्रसिंह, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जय राय चौ॰ ब॰

(२) महाक्षत्रप रुद्रसेन, रौप्य—अजायब घर कलकत्ता

(३) महाक्षत्रप विजयसेन, रौप्य ”

(४) क्षत्रप वीरदाम, रौप्य ”

(५) क्षत्रप विश्वसेन, रौप्य ”

(६) रुद्र गण, रौप्य ”

(७) गौतमीपुत्र, शातकर्णि, रौप्य,-जोगल थेम्बी, जि० नासिक

अजायबघर कलकत्ता

(८) वासिष्ठीपुत्र विड्विायकुर, सीसक ”

(९) पुडमावि, पोटिन, ”

(१०) श्रीयज्ञशातकर्णि, सीसक–राय श्रीयुक्त मृत्युंजय राय चौ०

(११) श्रीयज्ञशातकर्णि, सीसक—अजायबघर करकत्ता

चित्र (१६)—

दक्षिणापथ और हूण राजाओं के सिक्के

(१) इमली के बीज की तरह का सिक्का, सुवर्ण–राय श्रीयुक्त मृत्युंजय०

(२) भिन्न आकार का इमली के बीज की तरह का सिक्का, सुवर्ण ”

(३) त्रिस्वामी पागोडा, सुवर्ण ”

(४) विष्णु पागोडा, सुवर्ण–श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(५) प्रतापकृष्ण देवराय, बिजयनगर, सुवर्ण,–राय श्रीयुक्त मृत्युञ्जय०

(६) पद्मटङ्का, सुवर्ण,–श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(७) पद्मटंका, सुवर्ण–श्रीयुक्त मृत्युञ्जय राय०

(८–९)पारस्य के राजा फीरोज के सिक्के के ढंग का सिक्का, रौप्य—

अजायबघर कलकत्ता

(१०) तोरमान, ताम्र, ,,

(११) मिहिरकुल, ताम्र ,,

(१२) मिहिरकुल, ताम्र, (कुषण सिक्के के ढंग का) ,,

चित्र (१७)—

सैसनीय सिक्कों के ढंग के सिक्के

(१) वाहितिगीन, रौप्य, मणिक्याला जि० रावलपिण्डी, अजायबघर कलकत्ता

(२) नापूकिमालिक, रौप्य ,,

(३–५) गदैया दम्मा, रौप्य ,,

(६–७) श्रीदाम, रौप्य, ग्वालियर राज्य, मालवा ,,

(८) आदिवराह द्रम्य, रौप्य— ,,

(९) विग्रहद्रम्म, रौप्य ,,

चित्र (१८)—

सिंहल और उत्तर-पश्चिम सीमान्त के मध्य युग के सिक्के

(१) रानी लीलावती, सिंहल, ताम्र—अजायबघर कलकत्ता

(२) पराक्रमबाहु, सिंहल, ताम्र ,,

(३) स्पलपतिदेव, रौप्य ,,

(४) स्पलपतिदेव, रौप्य—राय श्रीयुक्त मृत्युंजय राय चौ०

(५) सामन्तदेव रौप्य,—अजायब घर कलकत्ता

(६) सामन्तदेव, ताम्र ,,

(७) वक्कदेव, ताम्र, ,,

(८) कुमारपाल ताम्र, ,,

(९) महीपाल, ताम्र, ,,

(१०) मदनपाल, ताम्र, ,,

(११) अनंगपाल, ताम्र, ,,

(१२) पृथ्वीराज, ताम्र, ,,

चित्र (१६)—

काश्मीर, काँगड़ा, प्रतीहार, चेदी, चालुक्य, गाहड़-वाल, चंदेल और जेजाभुक्ति राजाओं के सिक्के

(१) विनयादित्य, काश्मीर, सुवर्ण,—अजायब घर कलकत्ता।

(२) यशोवर्म्मा, काश्मीर, मिश्र सुवर्ण, ,,

(३) रानी दिद्दा, काश्मीर, ताम्र, ,,

(४) त्रिलोकचंद, काँगड़ा, ताम्र ,,

(५) पीथमचंद, काँगड़ा, ताम्र ,,

(६) महीपाल, ताम्र,—राय श्रीयुत मृत्युंजय राय चौ।

(७) गाङ्गेयदेव, सुवर्ण, ,,

(८) गाङ्गेयदेव, सुवर्ण,—श्रीयुत प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(९) कुमारपाल, सुवर्ण,—अजायब घर कलकत्ता

(१०) गोविन्दचन्द, सुवर्ण—राय श्रीयुत मृत्युंजय०

(११) मदनपाल, सुवर्ण,—अजायब घर कलकत्ता।

(१२) जाजल्लदेव, सुवर्ण—अजायब घर कलकत्ता।

चित्र (२०)—

नेपाल और अराकान के सिक्के

(१) मानाङ्क वा मानदेव, नेपाल, ताम्र—अजायब घर कलकत्ता

(२) अंशुवर्म्मा नेपाल, ताम्र, "

(३) पशुपति, नेपाल, ताम्र "

(४) धारिच्चिय, अराकान, रौप्य—श्रीयुक्त प्रफुल्लनाथ ठाकुर

(५) रम्याकर, अराकान, रौप्य "

(६) प्रथुम्नाकर, अराकान, रौप्य "

(७) ललिताकर, अराकान, रौप्य "

(८) धन्ना(कर), अराकान, रौप्य "
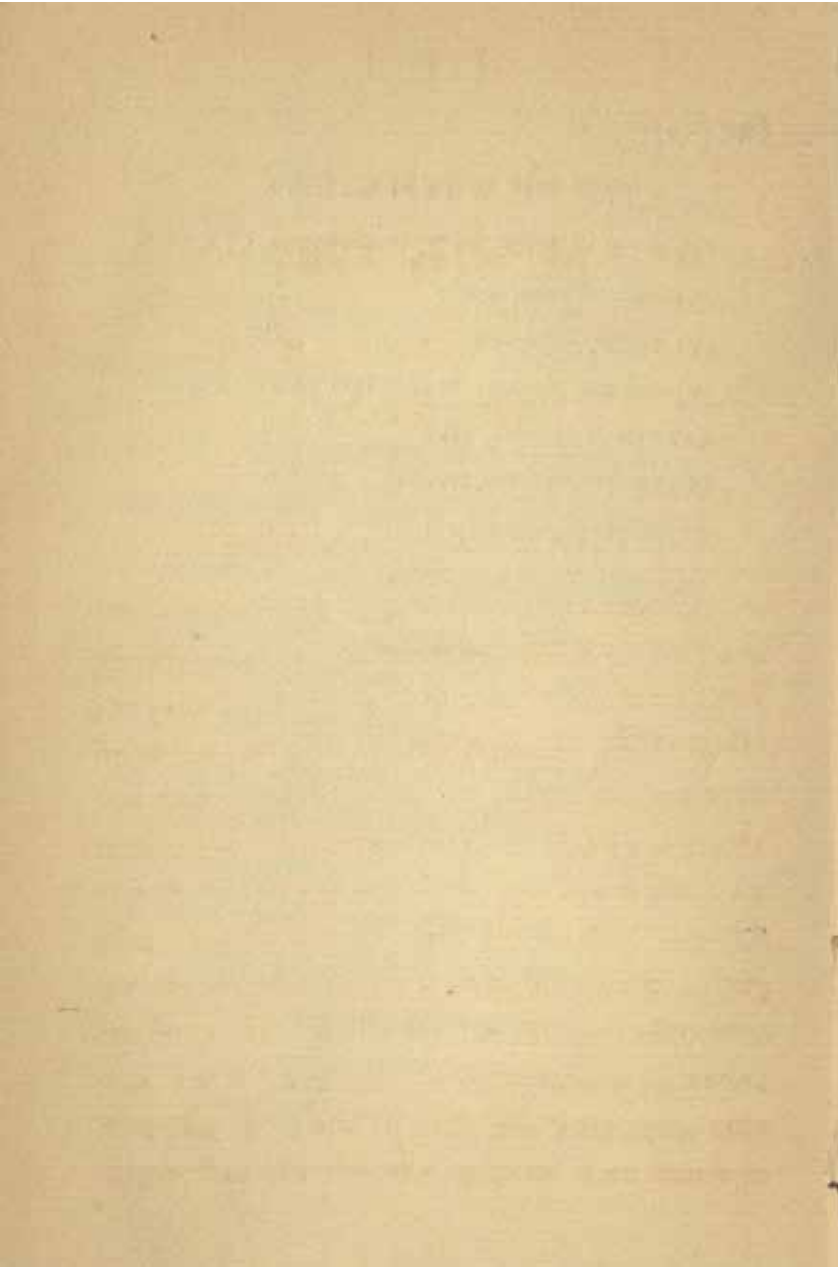
प्राचीन मुद्रा

पहला परिच्छेद

भारत के सब से प्राचीन सिक्के

बहुत ही प्राचीन काल में आदिम मनुष्यों को अपने परिवार के निर्वाह के लिये जिन पदार्थों की आवश्यकता होती थी, उनका उत्पादन और संग्रह उन्हें स्वयं ही करना पड़ता था। परिवार के लिये भोजन-वस्त्र और घर आदि जिन जिन पदार्थों की आवश्यकता होती थी, उन सब का निर्माण या संग्रह स्वयं परिवार के लोगों को ही करना पड़ता था। इसके उपरान्त जब सुभीते के लिये बहुत से परिवार मिलकर एक ही स्थान में निवास करने लगे, तब मानव-समाज में श्रमविभाग प्रारंभ हुआ। जिस समय मानव-समाज की शैशवावस्था थी, उस समय परिवार-समष्टि का कोई परिवार खाद्य पदार्थों का उत्पादन अथवा संग्रह करता था, कोई पहनने के लिये कपड़े बुनता अथवा चमड़े संग्रह करता था, कोई घर या कुटी बनाने की सामग्री एकत्र करता था और कोई लोहे आदि धातुओं

के पदार्थ बनाता था। इसी श्रमविभाग के युग में मानव-समाज में विनिमय का भी आरंभ हुआ था। खाद्य पदार्थों का संग्रह करनेवाले व्यक्ति को जब पहनने के लिये कपड़ों की आवश्यकता होती थी, तब वह अपना उपजाया अथवा एकत्र किया हुआ खाद्य पदार्थ कपड़े बनानेवाले को देता था और उसके बदले में उससे कपड़े लिया करता था। धातुओं की चीजें बनानेवाले को जब मकान की आवश्यकता होती थी, तब वह मकान बनानेवाले को अपने बनाए हुए धातु-द्रव्य देकर उससे मकान बनवा लेता था। विनिमय के काम में सुभीता करने के लिये धीरे धीरे मानव-समाज में सिक्कों का प्रचार प्रारंभ हुआ था। धातुद्रव्य बनानेवाले को जिस समय खाद्य पदार्थों की आवश्यकता नहीं होती थी, उस समय यदि कृषक अन्न लेकर उसके पास धातु-द्रव्य लेने के लिये आता था तो उसे अपने धातुद्रव्य के बदले में अन्न लेने में आगापीछा होता था। इसी अभाव को दूर करने के लिये संसार के समस्त मनुष्यों ने विनिमय का स्थायी उपकरण अथवा साधन निकाला था। विनिमय के इन्हीं उपकरणों अथवा साधनों का नाम सिक्का है। प्रारंभ में संसार के सभी स्थानों में भिन्न भिन्न धातुओं का विनियम के उपकरण-स्वरूप व्यवहार होता था। सोने, चाँदी और तांबे आदि धातुओं का बहुत ही प्राचीन काल से विनिमय के स्थायी उपकरण-स्वरूप व्यवहार होता चला आ रहा है। अनेक स्थानों

में लोहे, सीसे, पीतल और यहाँ तक कि टीन का भी विनिमय के उपकरण-स्वरूप व्यवहार होता देखा गया है। यूनान देश के स्पार्टा नगर के निवासी लोहे के बने हुए सिक्कों का व्यवहार करते थे। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी तक मलय उपद्वीप में टीन के सिक्कों का व्यवहार होता था; और प्राचीन काल में भारत के दक्षिणापथ के अंध्र राजा लोग सीसे के सिक्के बनवाते थे। चीन देश में तो अब तक पीतल के सिक्कों का व्यवहार होता है। जिस समय मानव-समाज में विनिमय के उपकरण-स्वरूप सब से पहले धातुओं का व्यवहार आरंभ हुआ था, उस समय सुवर्ण चूर (Gold dust) अथवा नियमबद्ध आकाररहित धातुपिण्ड (Irregular mass) का व्यवहार होता था। उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी के आरंभ में हिमालय की तराई में लाल कपड़े की थैलियों में तौलकर रक्खा हुआ सोना सिक्कों की जगह पर चलता था। उन्नीसवीं शताब्दी में जब आस्ट्रेलिया में तथा अमेरिका के क्लाण्डाइक देश में सोने की खानें मिली थीं, तब सब से पहले वहाँ की खानों से सोना निकालकर साफ करनेवाले लोग सिक्कों के बदले में सोने के चूर का व्यवहार करते थे। परन्तु चूर्ण-धातु की परीक्षा करने और उसे तौलने में अधिक समय लगता था, अतः सुभीते के लिये धातुओं के बने हुए सिक्कों का प्रचार आरंभ हुआ।

भारतवासी लोग बहुत ही प्राचीन काल से विनिमय के

लिये धातुओं के बने हुए सिक्कों का व्यवहार करते आए हैं। हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों के सर्व-प्राचीन धर्मग्रन्थों से भी पता चलता है कि प्राचीन काल में भारत में सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों का बहुत प्रचार था। सोने के सिक्कों का नाम सुवर्ण वा निष्क, चाँदी के सिक्कों का नाम पुराण वा धरण और ताँबे के सिक्कों का नाम कार्षापण था। प्राचीन भारत में भी पहले चूर्ण धातु का विनिमय के उपकरण-स्वरूप व्यवहार होता था। मनु आदि धर्मशास्त्रों में सोने, चाँदी और ताँबे आदि को तौलने की जिन भिन्न भिन्न रीतियों का उल्लेख है, उन्हें देखने से स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि विनियम के सुभीते के लिये भिन्न भिन्न धातुओं के लिये तौलने की भिन्न भिन्न रीतियाँ होती थीं। भारत में धातुओं को तौलने की जितनी रीतियाँ थी, रत्ती अथवा रक्तिका ही उन सब का मूल थी। मानव-धर्मशास्त्र में सोने, चाँदी और ताँबे आदि तौलने की भिन्न भिन्न रीतियाँ दी हुई हैं जो इस प्रकार हैं—

सोना तौलने की रीति

५ रत्ती = १ माशा

८० रत्ती = १६ माशा = १ सुवर्ण

३२० रत्ती = ६४ माशा = ४ सुवर्ण = १ पल वा निष्क

३२०० रत्ती = ६४० माशा = ४० सुवर्ण = १० पल वा निष्क = १ धरण

चाँदी तौलने की रीति

२ रत्ती = १ माषक

३२ रत्ती = १६ माषक = १ धरण वा पुराण

३२० रत्ती = १६० माषक = १० धरण वा पुराण = १ शतमान

ताँबा तौलने की रीति

८० रत्ती = १ कार्षापण *

प्राचीन साहित्य में जहाँ जहाँ अर्थ अथवा सिक्कों के उल्लेख की आवश्यकता हुई है, वहाँ वहाँ ग्रंथकारों ने पुराण अथवा धरण, शतमान, पल अथवा निष्क और कार्षापण का उल्लेख किया है। इससे सिद्ध होता है कि साहित्य में जिन स्थानों में इन सब तौलों के नाम आए हैं, उन स्थानों में ग्रन्थकारों ने इन सब तौलों के धातुओं के व्यवहार का ही उल्लेख किया है। रत्ती अथवा रत्तिका की तौल स्थिर रखने के लिये उसे अनेक भागों में विभक्त किया गया था, जो इस प्रकार थे—

८ त्रसरेणु = १ लिक्ष्या वा लिक्षा

२४ त्रसरेणु = ३ लिक्ष्या वा लिक्षा = १ राजसर्षप

७२ त्रसरेणु = ९ लिक्ष्या वा लिक्षा = ३ राजसर्षप = १ गौरसर्षप

४३२ त्रसरेणु = ५४ लिक्ष्या वा लिक्षा = १८ राजसर्षप = ६ गौर-सर्षप = १ यव

---

* मानवधर्मशास्त्र । ८ म अध्याय श्लोक १३२—३७ ।

१२९६ त्रसरेणु = १६२ लिक्ष्या वा लिक्षा = ५४ राजसर्षप =
१८ गौरसर्षप = ३ यव = १ कृष्णल वा रत्ती

भारतवर्ष में धीरे धीरे तौली हुई चूर्ण धातु के बदले में धातुनिर्मित सिक्कों का व्यवहार आरंभ हुआ था। पुराण, कार्षापण, सुवर्ण वा निष्क आदि जो नाम पहले तौल के थे, वे पीछे से सिक्कों के हो गए। ऋक् संहिता में लिखा है कि ऋषि कक्षीवन् ने सिंधुनद-तीर के निवासी राजा भावयव्य से सौ निष्क लिए थे * । ऋषि गृत्समद ने रुद्र के वर्णन में निष्कों के बने हुए कंठहार का उल्लेख किया है † । शतपथ ब्राह्मण में एक शतमान सुवर्ण का उल्लेख है। इन सब स्थानों में निष्क वा शतमान को चूर्ण धातु की तौल भी समझ सकते हैं। परंतु बौद्ध साहित्य में जो कार्षापण अथवा काहापण शब्द आया है, उससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि उन दिनों कार्षापण तौल का नाम नहीं रह गया था बल्कि सिक्के का नाम हो गया था। मनु ने ताँबा तौलने की जो रीति बतलाई है, उससे पता चलता है कि ८० रत्ती का एक कार्षापण होता था। अतः कार्षापण से तौल में ८० रत्ती ताम्रचूर्ण अथवा ताम्रपिंड का अभिप्राय समझना ही ठीक है। परंतु बौद्ध साहित्य में सोने अथवा चाँदी

---

* ऋक् संहिता, ३।१२५।

† अर्हन्बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपं। अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्रत्वदस्ति।

—ऋक् संहिता, २ य मंडल, ३३ सू०, १० ऋ०

के कार्षापण या काहापण का भी अनेक स्थानों में उल्लेख है *। त्रिपिटक में एक स्थान पर एक ही पद में हिरण्य और सुवर्ण दोनों शब्द आए हैं। "पभुतम् हिरञ् ञ सुवरणं" पद में हिरण्य शब्द से अमुद्रित सोने का और सुवर्ण शब्द से सवर्ण नामक सोने के सिक्के का बोध होता है। इन सब प्रमाणों के आधार पर निःसंकोच भाव से कहा जा सकता है कि बहुत प्राचीन काल में भारतवर्ष में सोने, चाँदी और ताँबे आदि की तौलों के भिन्न भिन्न नाम सिक्कों के नाम में परिणत हो गए थे। अधिकांश विदेशी मुद्रातत्त्वविद् पंडितों ने इसी मत का ग्रहण अथवा पोषण किया है। प्रसिद्ध मुद्रातत्त्वविद् एडवर्ड थामस के मत से मानव-धर्मशास्त्र में सोने, चाँदी और ताँबे आदि धातुओं की तौल के ऊपर बतलाए हुए नाम केवल तौलों के ही नाम नहीं हैं, बल्कि मानव समाज में विनिमय के उपकरण-स्वरूप काम में आनेवाले द्रव्यों के मान हैं †।

* "Buddha Ghosha mentions a gold and silver as well as the ordinary (that is bronze or copper) kahapana"
—On the Ancient Coins and Measures of Ceylon, by T. W. Rhys David, P. 3.

† In the table quoted from Manu, their classification represents something more than a mere theoretical enunciation of weights and values, and demonstrates a practical acceptance of a pre-existing order of things, precisely as the general tenor of the text exhibits of these weights of metal in full and free employment for the settlement

केम्ब्रिज के अध्यापक रैप्सन के मतानुसार भारत के सब से प्राचीन सिक्के विदेशी प्रभाव के कारण नहीं बने थे बल्कि भारतीय तुलना रीति से क्रमशः विवर्त्तित हुए थे *।

प्राचीन सुवर्ण, निष्क अथवा पल अभी तक कहीं नहीं मिले, किंतु हिमालय से लेकर कुमारिका तक और ब्रह्मपुत्र के किनारे से लेकर फारस देश की वर्त्तमान सीमा तक के विस्तृत प्रदेश में चाँदी के लाखों चौकोर और गोलाकार प्राचीन सिक्के मिले हैं। यही प्राचीन पुराण वा धरण हैं। इस तरह के सिक्कों को देखते ही पता चल जाता है कि चाँदी के पत्तरों को काटकर एक ही समय में बहुत से चौकोर रजत-खंड अथवा सिक्के बनाए गए थे। इसके उपरांत प्रत्येक खंड के दोनों ओर एक वा अधिक अंकचिह्न (Punch mark) अंकित करने की प्रथा चली थी। इस बात का भी एक बहुत ही प्राचीन प्रमाण मिला है कि यही चौकोर सिक्के प्राचीन

---

of the ordinary dealings of men, in parallel currency with the copper pieces, whose mention, ho«ever is necessarily more frequent, both as the standard and as the money of detail, amid a poor community—E Thomas.

Numismata Orientalia, Vol. 1., P. 36.

* The most ancient coinage of India, which seems to have been developed independently of any foreign influence, follows the native system of weights as given by Manu.

—Indian Coins, P. 2.

काल के पुराण वा धरण थे। मध्य भारत के नागौद राज्य के बरहुत नामक गाँव में जो स्तूप है * उस पर और बुद्ध गया के महाबोधि मंदिर की वेष्टनी † के हर एक खंभे पर पत्थर में खोदे हुए दो प्राचीन चित्र मिले हैं। दोनों में सब बातें एक ही सी हैं। श्रावस्तीवासी श्रेष्ठी अनाथपिंडद बौद्ध संघ के लिये एक उद्यान बनाने की चेष्टा करते थे। उद्यान के लिये उन्होंने जो जमीन पसंद की थी, वह जेत नामक एक राजकुमार की संपत्ति थी। अनाथपिंडद ने जब जेत से उस जमीन का दाम पूछा, तब उन्होंने उत्तर दिया कि आप जितनी जमीन लेना चाहें, उतनी जमीन पर मूल्य-स्वरूप सोना बिछाकर जमीन ले लें। अनाथपिंडद ने अठारह करोड़ सुवर्णखंड उस जमीन पर बिछाकर उसे खरीद लिया था। उक्त दोनों चित्रों में यही दृश्य है कि बहुत से परिचारक सोने के चौकोर सिक्के लेकर जमीन पर बिछा रहे हैं। बुद्ध गया के चित्र में दो परिचारक सोने के चौकोर सिक्के जमीन पर बिछा रहे हैं और तीसरा परिचारक किसी चीज में सिक्के लेकर आ रहा है। बरहुत गाँव के चित्र में एक परिचारक छकड़े पर से सिक्के उतार रहा है, एक दूसरा परिचारक उन सिक्कों को किसी चीज में उठा उठाकर ले जा रहा है और दूसरे दो और परिचारक उन सिक्कों को जमीन पर बिछा रहे हैं। दोनों ही चित्रों

---

* Cunningham, Stupa of Bharhut, P. 84 Pl. LVII.

† Cunningham's Mahabodhi, p. 13, pl. VIII. 8.

में सिक्कों का आकार चौकोर है। जब इन दोनों चित्रों से पता चलता है कि अनाथपिंडद की आज्ञा से जेतवन में सोने के जो सिक्के बिछाए गए थे, वे चौकोर थे, तब यह सिद्ध हो जाता है कि भारत के सब से प्राचीन सिक्कों का आकार चौकोर * था। समस्त भारत में सोने, चाँदी और ताँबे के जो सब अंक-चिह्न-युक्त सिक्के मिले हैं, उनमें से अधिकांश चौकोर ही हैं। अतः प्राचीन पुराण या धरण और इन सब अंक-चिह्न-युक्त सिक्कों के एक होने के संबंध में किसी प्रकार का संदेह नहीं हो सकता। उत्तरापथ और दक्षिणापथ में इस तरह के चाँदी और सोने के हजारों सिक्के मिले हैं जिन्हें मुद्रातत्त्वविद् लोग अंक-चिह्न-युक्त (Punch marked) सिक्के कहते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में पाश्चात्य पण्डित समझते थे कि प्राचीन भारत के सिक्के, वर्णमाला, नाट्यकला और यहाँ तक कि वास्तु-विद्या भी, सिकंदर के भारत पर आक्रमण करने के उपरांत यूनान देश से यहाँ आई है। परंतु अब यह कहने का किसी को साहस नहीं होता कि प्राचीन भारत की वर्णमाला प्राचीन यूनानी वर्णमाला का रूपांतर मात्र है। प्राचीन भारत के शिल्प की उत्पत्ति के संबंध में अब भी बहुत कुछ मतभेद है। तथापि अब कोई यह नहीं कह सकता कि सिकंदर के भारत पर आक्रमण करने से पहले भारतवासी

---

* बुद्ध गया के वज्रासन के नीचे और साकिय स्तूप में सोने के बहुत से छोटे छोटे सिक्के मिले हैं।

लाग पत्थर आदि गढ़ने का काम नहीं जानते थे। बहुत दिनों तक युरोपीय पण्डितों का विश्वास था कि भारत में मुद्रा के व्यवहार का आरंभ सिकंदर के आक्रमण के उपरांत हुआ है। सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता सर अलेक्ज़ेण्डर कनिंघम ने प्रायः ४० वर्ष पहले इस मत की निस्सारता प्रमाणित की थी। इससे पहले फ्रांसीसी विद्वान् बर्नुफ़ ने भी लिखा था कि इस तरह के सिक्के भारतीय ही हैं, विदेशी सिक्कों का अनुकरण नहीं हैं। रोम के इतिहासवेत्ता क्विन्टस् कर्टियस् (Quintus Curtius) ने लिखा है कि जिस समय सिकंदर तक्षशिला में पहुँचा था, उस समय वहाँ के देशी राजा ने उसको ८० टैलेन्ट (Talent) मूल्य का अंकित चाँदी का टुकड़ा (Signati Argenti) उपहार स्वरूप दिया था *। इससे भी सिद्ध होता है कि यूनानियों के भारत में आने से पहले ही यहाँ चाँदी के अंकित सिक्कों का प्रचार था। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में प्रोफेसर डार्म्स्टेटर (J. Darmsteter) ने लिखा था कि सिकन्दर के आक्रमण के उपरान्त प्राचीन भारत में सिक्कों का प्रचार आरंभ हुआ था †। इस पर पश्चिमी जगत में उनकी बहुत हँसी उड़ाई गई थी। सर अलेक्ज़ेण्डर कनिंघम, विन्सेन्ट ए० स्मिथ, ई० जे० रैप्सन आदि विद्वानों के मत के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के उपरान्त प्राचीन

---

* Coins of Ancient India, P. V.

† Journal Asiatique, 1892, p. 62.

भारत में सिक्कों का प्रचार होना असम्भव है। क्योंकि सिकन्दर के आक्रमण के समय ही तक्षशिला के राजा आम्भि (Omphis) ने उसको चाँदी के बहुत से सिक्के उपहार स्वरूप दिए थे। इन सब विद्वानों के मतानुसार प्राचीन भारत के सिक्के इस देश की तौल की रीति से बने हैं। क्योंकि भारतीय सिक्कों का आकार प्राचीन जगत की समस्त सभ्य जातियों के सिक्कों के आकार से भिन्न है। पश्चिमी देशों में सब से पहले लीडिया देश में सिक्कों का प्रचार आरंभ हुआ था। ये सिक्के या तो सोने के छोटे छोटे पिंड होते थे या चाँदी मिले हुए सोने के पिंड। पीछे धीरे धीरे राजा लोग सिक्के बनाने के काम में हस्तक्षेप करने के लिये बाध्य हुए थे; और नकली सिक्कों का प्रचार रोकने के लिये इन पिंडाकृति सिक्कों पर अंकचिह्न अंकित करने की प्रथा चली थी। पश्चिमी जगत के सभी देशों में इन पिंडाकृति सिक्कों के अनुकरण पर सिक्के बने थे। परंतु भारतीय सिक्कों की उत्पत्ति कुछ और ही ढंग से हुई थी। यहाँ चाँदी के पत्तरों के छोटे छोटे चौकोर टुकड़े काटकर सिक्के बनाए जाते थे। पीछे से उनकी विशुद्धता सूचित करने के लिये उन सिक्कों पर एक ओर अथवा दोनों ओर अंकचिह्न अंकित किया जाने लगा था। प्राचीन भारत में सिक्कों को अंकित करने की जो रीति थी, वह प्राचीन जगत के अन्यान्य सभ्य देशों की रीति से बिलकुल भिन्न थी। इसलिये विदेशी विद्वानों को विवश होकर यह मानना पड़ा था कि भारत में सिक्कों को

अंकित करने की जो रीति है, वह इसी देश की है, विदेशी नहीं है। सिक्कों को अंकित करने की यह स्वतंत्र रीति उत्तरापथ की है; क्योंकि दक्षिणापथ के प्राचीन सिक्के प्राचीन पश्चिमी देशों के सिक्कों की तरह गोलाकार हैं।

अभी हाल में डेकुर डेमाँसे नामक एक फ्रांसीसी विद्वान् ने निश्चित किया है कि पुराण आदि सिक्के भारत में बने हुए पारसी सिक्के हैं। चाँदी के पुराण और चाँदी के दारिक (दारा अथवा दरायुस के सिक्के) में कोई भेद नहीं है *।

अब पाश्चात्य विद्वान् कहा करते हैं कि भारतीय वर्णमाला और पत्थर की कारीगरी प्राचीन फिनीशिआ और फारस से यहाँ आई है। इसलिये यदि प्राचीन सिक्कों के संबंध में भी इसी प्रकार की बातें कही जायँ, तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। प्रोफेसर डेकुर डेमाँसे के मत का समर्थन अभी हाल में भारतीय पुरातत्त्व-विभाग के प्रधान अधिकारी डाक्टर डी० बी० स्पूनर ने किया है †। मैक्समूलर का मत है कि निष्क

---

* Nous crayons avoirdemotre que les punchmarked d' argent et de culvre constituent simplement une variete hindoue du mounayage perse achemenide.

अनुवाद—हमारा विश्वास है, हमने यह बतलाया है कि अंक-चिह्नित रजत एवं ताम्रमुद्रा पारस्य देश की आखिमीय मुद्रा का भारतवर्षीय विभागमात्र है।

Notes sur les Anciennes Monnaises de L' Inde—Journal Asiatique, 1912, p. 123.

† Journal of the Royal Asiatic Society, 1915, p. 411.

शब्द संस्कृत भाषा की किसी धातु से नहीं निकला है *। प्रोफेसर टामस का अनुमान है कि यह शब्द प्राचीन हिब्रू भाषा की किसी धातु से निकला है,† । प्राचीन काल में भिन्न भिन्न जातियों के संसर्ग से प्राचीन भारत की भाषा में बहुत से विदेशी शब्द आ गए थे। यदि किसी सिक्के का नाम किसी विदेशी भाषा से लिया गया हो, तो क्या इससे यह सिद्ध होगा कि भारतवासियों ने प्राचीन काल में जिस विदेशी जाति की भाषा से सिक्के का नाम लिया था, उसी विदेशी जाति से उन लोगों ने उक्त सिक्के का व्यवहार करना भी सीखा था? भाषातत्त्वविद् और नृतत्त्वविद् विद्वानों के मत के अनुसार प्राचीन भारतवासी और ईरानवासी दोनों एक ही आर्य जाति की भिन्न भिन्न शाखाएँ मात्र हैं। अतः यदि प्राचीन ईरान और प्राचीन भारत में धातु तौलने और सिक्के अंकित करने की रीतियाँ एक ही रही हों, तो इसमें आश्चार्य की कोई बात नहीं है। जब तक यह बात भली भाँति प्रमाणित न हो जाय कि धातु तौलने अथवा सिक्के अंकित करने की ये रीतियाँ ईरान के आर्य्य निवासियों की निज की हैं और जिस समय भारतवासियों ने उन रीतियों का अवलम्बन किया था, उससे पहले

---

* Nishka is a weight of gold or gold in general, and it has certainly no satisfactory etymology in Sanskrit. —Max Muller's History of Ancient Sanskrit Literature.

† Ancient Indian Weights, pp. 16—17.

से वे रीतियाँ ईरान-वासियों में चली आती थीं, तब तक यह कहना कभी संगत नहीं हो सकता कि धातु तौलने और सिक्के अंकित करने की रीतियों के संबंध में प्राचीन भारत-वासी ईरानवालों के ऋणी हैं।

गौतम बुद्ध के जन्म से बहुत पहले भारतवर्ष में जो सिक्के प्रचलित थे, उनके बहुत से प्रमाण बौद्ध साहित्य में मिलते हैं। इस विषय में किसी को संदेह नहीं है कि जातकमाला में जितनी कहानियाँ हैं, वे बुद्ध के जन्म से पहले भी यहाँ प्रचलित थीं; क्योंकि उनमें से बहुत सी कहानियाँ आर्य्य जाति की साधारण संपत्ति हैं। आजकल के पाश्चात्य विद्वानों का अनुमान है कि ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी में सब जातक वर्त्तमान स्वरूप में लिखे गए थे। उन सब जातकों में अनेक स्थानों पर कार्षापण या काहापण शब्द का व्यवहार हुआ है। मिस्टर रिज़् डेविड ने एक प्रबन्ध में यह दिखलाया है कि पाली साहित्य में सिक्कों का कहाँ कहाँ उल्लेख है *। एक स्थान पर लिखा है कि मथुरा की रहनेवाली वासवदत्ता नाम की वेश्या पाँच सौ पुराण लेकर आत्मविक्रय किया करती थी †। बौद्ध शास्त्रों में मानव समाज की दैनिक घटनाओं का जो वृत्तान्त दिया गया है, उससे पता चलता है कि उन दिनों सुवर्ण,

---

* On the Ancient Weights and Measures of Ceylon. pp. 1—13.

† Cunningham's Coins of Ancient India, p. 20.

पुराण, काकिनी और कार्षापण का बहुत अधिक व्यवहार होता था। फ्रांसीसी विद्वान् बर्नुफ ने अपने "बौद्ध धर्म के इतिहास की उपक्रमणिका" (Introduction a l' Histoire de Bouddhisme) नामक ग्रन्थ में प्राचीन सिक्कों के उल्लेख के बहुत से उदाहरण दिए हैं।

सिद्धान्त कौमुदी में ही इस बात का प्रमाण मिलता है कि पाणिनि के समय में भी यहाँ सिक्कों का प्रचार था। कौमुदी के सूत्रों में रूप्य = रूपादाहत शब्द का व्यवहार है *। इस संबंध में मि० गोल्डस्टूकर का मत है कि पाणिनि ने तद्धित प्रत्यय 'य' के संबंध में कहा है कि आहत के अर्थ में रूप्य शब्द रूप (आकार) में 'य' प्रत्यय के मिलाने से निकलता है। रूप्य शब्द से अंकित और आकार का विशिष्ट अभिप्राय होता है †।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि ईसा से पूर्व पाँचवीं और छठी शताब्दी में भी भारतवर्ष में पुराण आदि सिक्कों

---

* सिद्धान्तकौमुदी, ५।२।११६।

† That Panini knew coined money is plainly borne out by his Sutra V. 2. 119, *rupad-ahata*.........where he says "the word rupya, is in the sense of struck, (आहत) derived from rupa, 'form, shape', with the taddhita affix ya, here implying possession when rupya would literally mean "struck (money), having a form."

—Numismata Orientalia, Vol. 1., p. 39., note 3.

का प्रचार था। अतः यदि यह कहा जाय कि भारत में इन सब सिक्कों की उत्पत्ति ईसा के जन्म से १००० वर्ष पूर्व हुई थी, तो इसमें किसी प्रकार की अत्युक्ति न होगी। मुद्रा-तत्त्वविद् कनिंघम का यही मत है *। किन्तु रैप्सन † और स्मिथ ‡ का अनुमान है कि जिस समय जातकों की कहानियाँ वर्त्तमान रूप में लिखी गई थीं, उसी समय पुराण आदि सिक्कों का प्रचार आरम्भ हुआ था। निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इन सब सिक्कों का प्रचार कितने दिनों तक रहा। अनुमान होता है कि ईसवी सन् के आरम्भ के समय पुराण, सुवर्ण आदि अंक-चिह्न-युक्त सिक्कों का प्रचार उठ गया था। बुद्ध गया की मन्दिर-वेष्टनी और बरहुत गाँव की स्तूपवेष्टनी में अनाथपिण्डद के द्वारा जेतवन के खरीदे जाने के सम्बन्ध में जो दो खोदी हुई लिपियाँ (Bas-relief) हैं, उनसे प्रमाणित होता है कि उन दिनों अंक-चिह्न-युक्त सिक्कों का व्यवहार होता था। बर्हुत गाँव का स्तूप और बुद्ध गया की मन्दिर-वेष्टनी ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में बनी थी। दो वर्ष पहले पुरातत्त्व विभाग के प्रधान अधिकारी सर जान मार्शल ने तक्ष-शिला के खँडहरों को खोदते समय द्वितीय दियदात के सुवर्ण सिक्कों के साथ बहुत से पुराण या चाँदी के कार्षापण ढूँढ़

---

* Coins of Ancient of India, p. 43.

† Indian Coins, p. 2.

‡ Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I., P. 135,

निकाले थे *। दूसरे दियदात का आनुमानिक राजत्व-काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी का शेषार्ध है। कनिंघम ने लिखा है कि बहुत दिनों तक काम में आनेवाले अनेक पुराण द्वितीय आंतिमाख (Antimachos II), फ़िल्सिन (Philoxenos), लिसिय (Lysius), आंतिआलिकद (Antialkidas), मेनन्द्र (Menander) आदि भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्कों के साथ आविष्कृत हुए थे †। ये सब यूनानी राजा लोग ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में जीवित थे। इससे सिद्ध होता है कि ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में भी भारत में पुराण आदि सिक्कों का प्रचार था। बुद्ध गया के महाबोधि मंदिर में वज्रासन के नीचे कनिंघम ने हुविष्क के सुवर्ण सिक्कों के साथ एक पुराण भी ढूंढ निकाला था ‡। हुविष्क के समय में अर्थात् ईसवी दूसरी शताब्दी में पुराणों का चाहे बहुत अधिक प्रचार न रहा हो, तो भी संभवतः साधारण प्रचार अवश्य था। पादरी लोवेन्थाल का कथन है कि दक्षिणापथ में बहुत प्राचीन काल से लेकर ईसवी तीसरी शताब्दी तक पुराणों का व्यवहार होता था ×। इन सब प्रमाणों के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि पुराण और सुवर्ण आदि प्राचीन

---

* J. H. Marshall—Sketch of Indian Antiquities, Calcutta, 1914, p. 17.

† Cunningham's Coins of Ancient India, p. 54.

‡ Cunningham's Mahabodhi, pl. XXII., 16—17.

× Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I, p. 135.

सिक्कों का ईसा से पूर्व दसवीं शताब्दी से लेकर ईसवी सन् के आरंभ तक प्रचार था।

बारहवीं शताब्दी ईसवी में बंगाल के सेन राजाओं के ताम्रशासनों में भी पुराणों का उल्लेख मिलता है:—

(१) बल्लालसेन का ताम्रशासन—...प्रत्यब्दं कपर्दक पुराण पञ्चशतोत्पत्तिकः * ......।

(२) लक्ष्मणसेन का सुन्दरवनवाला ताम्रशासन; ......अधस्तया सार्द्धकाकिनी द्वयाधिक त्रयोविंशत्यन्मानोत्तर खावकसमेतः भूद्रोणत्रयात्मकः संवत्सरेण पंचाशत् पुराणोत्पत्तिकः †...।

(३) लक्ष्मणसेन का आनुलियावाला ताम्रशासन—संवत्सरेण कपर्दकपुराणशतिकोत्पत्तिकं ‡ ...।

(४) लक्ष्मणसेन का माधाई नगरवाला ताम्रशासन......
.........शतैकात्मकसंवत्सरेण कपर्दकाष्टषष्टि पुराणाधिक शतमूल्यका × ...।

(५) लक्ष्मणसेन का तर्पणदीघीवाला ताम्रशासन—......
...संवत्सरेण कपर्दकपुराण सार्द्धशतैकोत्पत्तिको + ...।

---

* साहित्य-परिषत्-पत्रिका (बँगला), १७ वाँ भाग, पृ० २३७।

† रामगति न्यायरत्न कृत "बंगभाषा ओ साहित्य", तीसरा संस्करण, परिशिष्ट, ख, पृ० ख और ग।

‡ ऐतिहासिक चित्र, १ म पर्य्याय, पृ० २६०।

× रंगपुर साहित्य-परिषद्-पत्रिका, ४ था भाग, पृ० १३१।

+ साहित्य-परिषत्-पत्रिका, १७ वाँ भाग, पृ० १३६।

(६) विश्वरूपसेन का मदनपाड़वाला तम्रशासन………
…द्वात्रिंशत् पुराणोत्तर च त्रीशतिक……१३२ *।

चाँदी के पत्तर काटकर उनके दोनों ओर एक एक करके अनेक अन्य अंक-चिह्न बनाए जाते थे। सिक्कों पर एक ही ओर अधिकांश अंकचिह्न बनाए जाते थे, दूसरी ओर अनेक पुराणों पर कोई अंक-चिह्न न होता था। यदि अंक-चिह्न होते भी थे तो उनकी संख्या बहुत कम होती थी। परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसा क्यों किया जाता था। ऐसे सिक्के बहुत ही कम हैं जिनके दोनों ओर अंकचिह्नों की संख्या समान हो। इन सब अंक-चिह्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में मत-भेद है। कनिंघम आदि विद्वानों का मत है कि वणिक लोग एक बार परीक्षा किए हुए सिक्कों को फिर से पहचानने के लिये इस प्रकार के चिह्न अंकित किया करते थे। बाद के बंगाल के स्वाधीन मुसलमान राजाओं के चाँदी के सिक्कों पर भी इस प्रकार के अंकचिह्न (Punch Mark वा Shroff Mark) मिलते हैं। पुरातत्त्व विभाग के प्रधान अधिकारी डाक्टर स्पूनर के मत के अनुसार पुराणों पर जो अंक-चिह्न हैं, वे उन नगरों के चिह्न हैं जिन नगरों में वे सिक्के मुद्रित हुए अथवा बने थे ×। भूतत्त्व-विशारद थियोबोल्ड ने इन सब

---

* Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1896, Pl, I, p. 13.

× Annual Report of the Archaeological Survey of India, 1905—6, p. 155.

अंक-चिह्नों का विस्तृत विवरण एकत्र करके प्रकाशित किया है *। थियोबोल्ड के ३०० से अधिक भिन्न भिन्न अंकचिह्नों में से ८६ अंकचिह्न सिक्कों के एक ओर, २८ अंकचिह्न दूसरी ओर और अन्य १५ अंकचिह्न सिक्कों के दोनों ओर मिलते हैं। थियोबोल्ड ने अंकचिह्नों को छः भागों में विभक्त किया है—

(१) मनुष्य मूर्ति।

(२) अस्त्र-शस्त्र और मनुष्यों के बनाए हुए द्रव्य आदि।

(३) पशु आदि।

(४) वृक्षों की शाखाएँ और फल-मूल आदि।

(५) शौर, शैव अथवा प्राचीन ज्योतिष्क-मंडलों की उपासना के सांकेतिक चिह्न।

(६) अज्ञात।

हम पहले कह चुके हैं कि प्राचीन सुवर्ण वा निष्क अब तक कहीं नहीं मिला। जो पुराण वा धरण और कार्षापण अनेक आकार के मिले हैं, वे सम वा असम, चौकोर अथवा गोलाकार हैं। विद्वानों का अनुमान है कि विदेशी जातियों के संसर्ग के कारण भारतवासियों ने गोलाकार सिक्कों का व्यवहार करना आरंभ किया था †।

---

* Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1890, Pt. I., P. 151.

† The cutting of circular blanks from a metal sheet being a more troublesome process than snipping strips into short lengths, the circular coins are presumably a

प्रसिद्ध मुद्रातत्त्वविद् विन्सेन्ट ए० स्मिथ ने प्राचीन पुराण, कार्षापण आदि सिक्कों को चार भागों में विभक्त किया है—

(१) चौकोर दण्ड (Solid ingot)। आज तक इस तरह के केवल तीन सिक्के मिले हैं।

(२) वक्रदंड (Bent bar)। जान पड़ता है कि चाँदी के दंड को टेढ़ा करके सिक्के तैयार करने की यह प्रथा इसलिये चलाई गई थी जिसमें उन सिक्कों में से चाँदी का टुकड़ा कोई काट न ले।

(३) सम वा असम चौकोर। इस तरह के सिक्के बहुत अधिक संख्या में मिले हैं। मि० स्मिथ ने इस विभाग के सिक्कों को चार और उप-विभागों में विभक्त किया है—

(क) इसमें एक ओर बहुत से अंकचिह्न हैं, परंतु दूसरी ओर कोई चिह्न नहीं है।

(ख) इसमें एक ओर एक और दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

(ग) इसमें एक ओर दो और दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

(घ) इसमें एक ओर तीन अथवा अधिक और दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

---

later invention than the rectangular ones—V. A. Smith.

—Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I., P. 124.

(४) गोलाकार सिक्के। इनमें भी तीन उप-विभाग हैं—

(क) इसमें एक ओर एक भी अंकचिह्न नहीं है, परंतु दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

(ख) इसमें एक ओर एक और दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

(ग) इसमें एक ओर दो अथवा अधिक और दूसरी ओर बहुत से अंक-चिह्न हैं।

मिस्टर स्मिथ ने कार्षापण वा काहापण नामक प्राचीन सिक्के को भी दो भागों में विभक्त किया है—

(१) सम वा असम चौकोर सिक्के।

(२) गोलाकार सिक्के।

ऊपर कहे हुए प्रत्येक विभाग में दो उप-विभाग हैं—

(क) इसमें एक ओर अंकचिह्न नहीं है, किंतु दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

(ख) इसमें एक ओर एक वा अधिक और दूसरी ओर बहुत से अंकचिह्न हैं।

प्रसिद्ध विद्वान् और मुद्रातत्त्वविद् सर एलेक्जेण्डर कनिंघम निगमचिह्न नामक सिक्के का आविष्कार करके चिरस्मरणीय हुए हैं*। निगम शब्द का अर्थ श्रेष्ठी वा सार्थ-वाहकों की सभा

---

* Rapson's Indian Coins, p. 3; Buhler Indian Studies, iii., p. 49; Cunningham, Coins of Ancient India, p. 59, pl. III., 8–12.

(Trade Guild) जान पड़ता है। इस तरह के सिक्के चौकोर और साँचे में ढले हुए हैं। उन पर प्राचीन ब्राह्मी वा खरोष्ठी लिपि में "नेगमा" और "दोजक" लिखा रहता है। प्राचीन पुराण और कार्षापण, प्राचीन और आधुनिक संसार के और और सिक्कों की तरह राज-कर्मचारियों के द्वारा अंकित नहीं होते थे। श्रेष्ठी-संप्रदाय राजा की आज्ञा के अनुसार जितने सिक्कों की आवश्यकता होती थी, इस तरह के उतने सिक्के तैयार कराया करते थे *।

---

* It is clear that the punch-marked coinage was a private coinage issued by guilds and silver-smiths with the permission of the Ruling Powers."

—Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I, P. 133.

दूसरा परिच्छेद

प्राचीन भारत के विदेशी सिक्के

बहुत प्राचीन काल से भारतवासी वाणिज्य-व्यवसाय के लिये विदेश जाया करते थे और विदेशी व्यापारी इस देश में आया करते थे। प्राचीन काल में विदेशी वाणिज्य के तीन मार्ग थे। इनमें से एक तो स्थल-मार्ग था और बाकी दो जल-मार्ग थे। आर्यावर्त्त के उत्तर-पश्चिम प्रान्त से भारतीय व्यापारी घोड़ों और ऊँटों पर माल लादकर वाह्लीक (Balkh), उत्तर कुरु, मध्य एशिया, ईरान वा वर्तमान फारस और बाबिरुष वा बभेरु अर्थात् बैबिलोन तक जाया करते थे। व्यापारी लोग अपने देश से जो माल ले जाते थे, उसके बदले में वे भिन्न भिन्न देशों से वहाँ के सोने और चाँदी के सिक्के अपने देश में ले आया करते थे। दोनों जल-मार्गों में से अरब सागर का मार्ग ही प्रधान था। इस मार्ग से भारतीय व्यापारियों के जहाज बाबि-रुष, मिस्र और अफ्रिका के पूर्वी तट के देशों तक आते-जाते थे और भारतवर्ष के माल के बदले में सोने और चाँदी के विदेशी सिक्के अपने देश में लाया करते थे। रोमन साम्राज्य की चरम उन्नति के समय में भारतवर्ष के बने हुए माल के बदले में रोम के लाखों सोने के सिक्के भारत आया करते थे। जिस

समय अरबवालों ने मुसलमानी धर्म ग्रहण किया था, उस समय तक अरब सागर पर भारतीय व्यापारियों का पूरा पूरा अधिकार और प्रभाव था। ईसवी अठारहवीं शताब्दी में भी गुजरात और महाराष्ट्र देश के व्यापारी जहाज मिस्र और अफ्रिका के पूर्वी तट तक आया-जाया करते थे। भारत के माल के बदले में सोने के जो विदेशी सिक्के इस देश में आया करते थे, उनमें से लीडिया देश के सोने और चाँदी की मिश्रित श्वेत धातु (White metal) के सिक्के सब से अधिक प्राचीन हैं। कई वर्ष हुए, पंजाब के बन्नू जिले में सिंधु नद के पश्चिमी तट पर लीडिया के राजा क्रीसस (Crœsus) का सोने का एक सिक्का मिला था। रंगपुर जिले के सद्यः पुष्करिणी नामक गाँव के प्रसिद्ध जमींदार राय श्रीयुक्त मृत्युंजय राय चौधरी बहादुर ने यह सिक्का खरीद लिया है। लीडिया के राजा क्रीसस के सिक्के संसार के सब से प्राचीन सिक्कों में सब से पहले के हैं *। इस सिक्के में एक ओर एक साँड़ और एक

---

* According to Herodotus the earliest stamped money was made by the Lydians—Coins of Ancient India, p. 3.

The earliest coinage of the ancient world would appear chiefly to have been of silver and electrum; the latter metal being confined to Asia Minor, and the former to Greece and India. Some of the Lydian Staters of pale gold may be as old as Gyges. —Ibid, p. 19.

शेर का मुँह बना है और दूसरी ओर एक छोटा और एक बड़ा अंकचिह्न (Punch mark) है। प्राचीन पूर्वी जगत में दो प्रकार के सोने के सिक्के प्रचलित थे। एक तो बाबिरुष की रीति (Babylonian Standard) के अनुसार बने हुए और दूसरे यावनिक रीति (Attic Standard) के अनुसार बने हुए। बाबिरुष की रीति पर बने हुए सोने के सिक्के तौल में १६८ ग्रेन हैं। श्रीयुक्त मृत्युंजयराय चौधरी का सिक्का १६४·७५ ग्रेन है; इसलिये यह बाबिरुष की रीति के अनुसार बना हुआ सिक्का है। चौधरी महाशय ने यह सिक्का खरीद-कर परीक्षा के लिये हमारे पास भेजा था। जान पड़ता है कि इस तरह का कोई सिक्का इससे पहले भारतवर्ष में नहीं मिला था और न इस तरह का कोई सिक्का भारतवर्ष के किसी अजायब-खाने में है। इस तरह का और कोई सिक्का पहले से मौजूद नहीं था, इसलिये मिस्टर जी० एफ० हिल ने अपनी "ऐतिहासिक यूनानी सिक्के" * और प्रोफेसर पर्सी गार्डनर ने अपनी "सिकन्दर से पूर्व एशिया के सोने के सिक्के" † नामक पुस्तक में क्रीसस के सोने के सिक्के का जो विवरण और चित्र दिया है, उसे देखकर हमने निश्चित किया था कि चौधरी महाशय का खरीदा हुआ सिक्का असली है।

---

* G. F. Hill's Historical Greek Coins, p. 18, pl. 1*7.

† Percy Gardener's Gold Coins of Asia before Alexander the Great, p. 10, pl. 1. 5.

लखनऊ के कैनिंग कालेज के अध्यापक प्रसिद्ध मुद्रातत्त्वविद् मिस्टर सी० जे० ब्राउन के पास उस सिक्के का चित्र और चौधरी महाशय का लिखा हुआ प्रबन्ध भेजा गया था। ब्राउन साहब को भी उस सिक्के के असली होने के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं हुआ था। ईसा से पूर्व छठी शताब्दी के मध्य भाग में एशिया महादेश में लीडिया देश के मिश्र धातु और सोने के सिक्के ही वाणिज्य के लिये काम में आते थे। ईसा से पूर्व सन् ५४६ में लीडिया का राजा क्रीसस फारस के राजा खुरुष (Cyrus) से लड़ाई में हार गया था। उस समय लीडिया देश पराधीन हो गया था। उसी समय से पूर्वी जगत में दारिक (Daric) और सिग्लोस (Siglos) नामक सोने और चाँदी के सिक्कों का बनना आरम्भ हुआ था। राय चौधरी महाशय का अनुमान है कि उनका खरीदा हुआ सिक्का ईसा से पूर्व सन् ३२१ में, भारत पर सिकंदर के आक्रमण से पहले, किसी समय इस देश में आया होगा *।

ईसा से पूर्व पाँचवीं अथवा छठी शताब्दी में भारत के उत्तर-पश्चिम सीमान्त के प्रदेश फारस के साम्राज्य में मिल गए थे। उस समय खुरुष (Cyrus), दरियावुष (Darius) आदि हाखामानिषीय (Achaemenian) वंशी पारसी सम्राटों का अधिकार पश्चिम में भूमध्यसागर से लेकर पूर्व में पंचनद

* Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. X., 1914, p. 487.

तक हो गया था। उस समय वर्त्तमान अफगानिस्तान उत्तरापथ का एक प्रदेश माना जाता था। पारस के राजाओं का भारतीय अधिकार और शासनभार तीन क्षत्रपों (Satraps) पर था। और फारस के सम्राट् प्रति वर्ष तौल में ३६० टेलेन्ट (Talent) सोने के सिक्के राजस्व-स्वरूप पाते थे। उस समय पारसिक साम्राज्य की भारतीय प्रजा ने अपने शासकों से दो बातें सीखी थीं—

(१) खरोष्ठी लिपि, जो वर्तमान फारसी लिपि की तरह दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती थी और (२) प्राचीन पारसी सिक्कों का व्यवहार।

इस बात के बहुत से प्रमाण हैं कि पारसिक अधिकार के समय भारत के उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशों में पारसिक सिक्कों का व्यवहार होता था। भारतीय प्रदेशों में प्रचलित सोने और चाँदी के अनेक पारसिक सिक्के मिले हैं। सोने के सिक्के भारत में ही बनते थे*। उनका मूल्य दो स्टेटर (Stater) होता था। चाँदी के सिक्कों (Sigloi) पर प्राचीन भारतीय पुराण वा धरण की भाँति अंकचिह्न (Punch mark) मिलते हैं। मुद्रातत्त्वविद् कनिंघम के अनुसार ऐसे चिह्न भारतीय नहीं हैं। परन्तु उनका सिद्धान्त युक्तियुक्त नहीं है; क्योंकि इस तरह के दो एक सिक्कों पर अंक-चिह्न में भारतीय ब्राह्मी

* E. Babelon—Les Perses Achaemenides, pp. XI. XX. 16.

वा खरोष्ठी अक्षर बने हुए हैं। भारतवर्ष में मिले हुए प्राचीन पारसिक सिक्कों के अंक-चिह्न देखकर प्रोफेसर रैप्सन अनुमान करते हैं कि पारसिक अधिकार-काल में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम सीमान्त के प्रदेशों में पुराण और चाँदी के पारसिक सिक्के दोनों एक ही समय में चलते थे*। इस तरह के सिक्कों में से एक सिक्के पर ब्राह्मी 'जो' और एक दूसरे सिक्के पर खरोष्ठी 'ग' बना हुआ मिलता है†। मिस्टर रैप्सन ने इस तरह के सिक्कों पर सब मिलाकर १२ खरोष्ठी और ब्राह्मी अक्षर ढूँढ़ निकाले हैं‡। अनुमान होता है कि गोलाकार पुराण आदि पारसिक अधिकार-काल में विदेशी सिक्कों को देखकर बनाए गए होंगे।

रोम साम्राज्य के अभ्युदय-काल में वहाँ के सोने, चाँदी और ताँबे के लाखों सिक्के भारतवर्ष में आया करते थे। उत्तरापथ और दक्षिणापथ के भिन्न भिन्न स्थानों में अब भी समय समय पर रोम देश के सोने, चाँदी और ताँबे के बहुत से सिक्के मिला करते हैं×। थोड़े दिन हुए, उड़ीसा में रोम के

---

* Indian Coins, p. 3.

† Ibid. pl. 1, 3—4.

‡ Journal of the Royal Asiatic Society, 1895, p. 875.

× श्रीयुत सिवण्ल ने भारतवर्ष में मिले हुए रोमक सिक्कों की सूची तैयार की है। —Journal of the Royal Asiatic Society, 1904 pp. 591—673.

सम्राट् हेड्रियन का सोने का एक सिक्का मिला था। रोम साम्राज्य के अधःपतन के समय अरब के समुद्री मार्गवाला भारतीय वणिकों का वाणिज्य धीरे धीरे कम होने लगा। भारतीय विदेशी व्यापार का दूसरा जलमार्ग बंगाल की खाड़ी का था। इस मार्ग से बंगाली, उड़िया और द्राविड़ी वणिक् लोग माल लेकर बरमा, मलय और यवद्वीप आदि स्थानों में आया करते थे। इन देशों में उन्होंने भारतीय उपनिवेश स्थापित किए थे। इस मार्ग से विदेशी सिक्के तो भारत में न आते थे, परंतु पूर्वी देशों में बहुत बड़ा औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित हो गया था।

बहुत प्राचीन काल से प्राचीन पारसिक सिक्कों के साथ यूनान के एथेन्स नगर के वे सिक्के भी, जिन पर उल्लू की तसवीर बनी होती थी, पूर्वी जगत में वाणिज्य-व्यवसाय में काम आते थे। पीछे ज्यों ज्यों एथेन्स की अवनति होती गई, त्यों त्यों पूर्वी जगत में ऐसे सिक्कों का अभाव होता गया; और अनुमानतः ईसा से पूर्व ३२२ सन् में एथेन्स नगर में सिक्के बनाने का काम बन्द हो गया। उसी समय से पूर्वी जगत में इस तरह के सिक्कों का बनना आरम्भ हुआ। भारत में बने हुए इस तरह के बहुत से सिक्के एथेन्स के सिक्कों का अनुकरण मात्र हैं। मनुष्य का स्वभाव सहज में नहीं बदलता, इसलिये जब एथेन्स के उल्लूवाले सिक्कों का अभाव हुआ, तब पूर्वी वणिकों ने नए प्रकार के सिक्कों का व्यवहार न करके उसी

पुराने ढंग के उल्लूवाले सिक्कों का अनुकरण आरम्भ किया*। भारतवर्ष में इन सिक्कों के अनुकरण पर जो सिक्के बने थे, उनमें से कई सिक्कों पर उल्लू के बदले में बाज का चिह्न बना हुआ मिलता है†। ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी के सातवें दशक में जिस समय जगद्विजयी सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय सुभूति नाम का एक राजा पंचनद में राज्य करता था ‡। सुभूति ने एथेन्स के सिक्कों के ढंग पर चाँदी के जो सिक्के बनवाए थे, उन पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर कुक्कुट की मूर्ति बनी हुई है। ऐसे सिक्कों पर यूनानी भाषा में सुभूति (Sophytes) का नाम लिखा हुआ है ×। भारतवर्ष में ताँबे के कुछ ऐसे चौकोर सिक्के भी मिले हैं जिन पर सिकन्दर का नाम अङ्कित है। परन्तु इस तरह के सिक्के बहुत दुर्लभ हैं +। सिकन्दर के प्रधान सेनापति सिल्यूकस (Seleucus) ने ईसा से पूर्व ३०६ सन् में मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त पर आक्रमण किया

---

* B. V. Head, Catalogue of Greek Coins in the British Museum, Attica, pp. XXXI—XXXII, Athens, Nos. 267—276a, pl. VII, 3—10.

† Rapson's Indian Coins, p. 3, pl. 1., 7.

‡ V. A. Smith, Early History of India, 3rd Edition, pp. 80—90.

× V. A. Smith, Catalogue of Coins in the Indian Museum. Vol. I., p. 7, pl. I., 1—3.

\+ Rapsons' Indian Coins, p. 4.

था। युद्ध में सिल्यूकस हार गया और उसे भारत के उत्तर-पश्चिम सीमान्त के तीन प्रदेशों पर से अपना अधिकार छोड़ना पड़ा। जान पड़ता है कि उस समय से सीरिया के सिल्यूकवंशी राजाओं के साथ मौर्य-वंशी चन्द्रगुप्त, बिम्बिसार और अशोक आदि सम्राटों का फिर कोई झगड़ा नहीं हुआ। इस अनुमान का कारण यह है कि मेगास्थनीज (Megasthenes), दाइमाखोस (Daimachos) आदि यूनानी राजदूत पाटलिपुत्र नगर में रहा करते थे; और अशोक के अनेक शिलालेखों में आन्तियोक (Antiochos), तुरमय (Ptolemy), मक (Magas of Cyrene), आलिकसुदर (Alexander of Epirus) आदि यूनानी राजाओं के नामों का उल्लेख है। प्रथम सिल्यूक (Seleukos Nikator), प्रथम आन्तियोक (Antiochos Theos), द्वितीय आन्तियोक (Antiochos II.), तृतीय आन्तियोक (Antiochos Magnus) और द्वितीय सिल्यूक (Seleukos Kallinikos) इन चारों राजाओं के चाँदी के बहुत से सिक्के भारत के उत्तर-पश्चिम सीमांत में मिले हैं।

सीरिया के सिल्यूकवंशी राजाओं के विशाल साम्राज्य के ध्वंसावशेष पर बहुत से छोटे छोटे खंड-राज्य बने थे। उनमें से पारस देश का पारद राज्य और वाह्लीक में प्रथम दियदात का यूनानी राज्य प्रधान है। पारस का पारद राज्य ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य भाग से लेकर ईसवी तीसरी

शताब्दी के प्रथम पाद तक बना रहा। एक बार पारदवंशी राजा लोग उत्तरापथ में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में समर्थ हुए थे। उन लोगों के भारतीय सिक्कों का विवरण आगे चलकर यथास्थान दिया जायगा। पंजाब, अफगानिस्तान और सिन्ध देश में प्रति वर्ष पारद राजाओं के सोने और चाँदी के बहुत से सिक्के मिला करते हैं।

स्टीन (Sir Marc Aurel Stein), ग्रनवेडेल (Grunwedel) आदि विद्वानों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मध्य एशिया किसी समय भारतवासियों का बहुत बड़ा उपनिवेश और भारतीय सभ्यता का एक स्वतंत्र केन्द्र था। मध्य एशिया के रेगिस्तान में सैकड़ों गाँवों और नगरों के खँडहर आदि मिले हैं। उन्हीं सब खँडहरों आदि में भारतवर्ष और चीन देश की सीमा के प्रदेशों के प्राचीन सिक्के मिले हैं। मध्य एशिया के काशगर प्रदेश में जो सिक्के मिले हैं, उन पर खरोष्ठी अक्षरों में भारत की प्राकृत भाषा और चीनी अक्षरों में चीनी भाषा है। चीनी अक्षरों में सिक्के का मूल्य या परिमाण और खरोष्ठी अक्षरों में राजा का नाम लिखा हुआ है। इस तरह के सिक्के यद्यपि बहुत ही दुष्प्राप्य हैं, तो भी अनेक सिक्के मिले हैं। परन्तु दुःख की बात है कि उनमें से किसी पर का राजा का नाम पूरी तरह से पढ़ा नहीं जाता*।

---

* Rapson's Indian Coins, p. 10; Terrien de la Couperie, Comptes rendus de L' Academie des Inscriptions,

ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य भाग में सिल्यूकवंशी राजाओं के अधीन वाह्लीक (Bactria) देश के शासनकर्त्ता दियदात (Diodotos) ने विद्रोह करके अपनी स्वाधीनता की घोषणा की थी। उसके उपरान्त उसका पुत्र द्वितीय दियदात सिंहासन पर बैठा। दियदात के नाम के सोने, चाँदी और ताँबे के कई सिक्के मिले हैं; परन्तु अब तक किसी प्रकार इस बात का निर्णय नहीं हो सका कि ये सिक्के प्रथम दियदात के हैं अथवा द्वितीय दियदात के। प्रथम दियदात ने मौर्य सम्राट् अशोक के राजत्व-काल के मध्य भाग में वाह्लीक में स्वाधीन राज्य स्थापित किया था; और उसका पुत्र द्वितीय दियदात अशोक के राज्य-काल के शेष भाग में अथवा उसकी मृत्यु के कुछ ही बाद वाह्लीक के सिंहासन पर बैठा था। अशोक की मृत्यु के बाद ही भारत के उत्तर-पश्चिम सीमांत के प्रदेश मौर्यवंशी राजाओं के अधिकार से निकल गए थे। अनुमान होता है कि द्वितीय दियदात ने कपिशा, उद्यान और गांधार को जीतकर पञ्चनद के पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया था; क्योंकि सिंधुनद के पूर्व ओर अवस्थित तक्षशिला नगरी के खँडहरों में से पुरातत्त्व-विभाग के प्रधान अधिकारी सर जान मार्शल ने दियदात के सोने के अनेक सिक्के ढूँढ निकाले हैं। दियदात के नाम के एक प्रकार के सोने के सिक्के, दो प्रकार के चाँदी के

1890, p. 338; Gardner, Numismatic Chronicle, 1879, p. 274.

सिक्के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के अब तक मिले हैं। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं ने आकार के अनुसार चाँदी के सिक्कों को दो भागों में विभक्त किया है—एक छोटे और दूसरे बड़े। चाँदी के बड़े सिक्कों में दो उपविभाग हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर हाथ में वज्र लिए ज्यूपिटर की मूर्त्ति, एक गिद्ध पक्षी और फूल की माला है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर माला के बदले में चंद्रकला और छोटे गिद्धपक्षी की मूर्त्ति है *। चाँदी के छोटे सिक्के तो दुष्प्राप्य नहीं हैं, परंतु दियदात के ताँबे के सिक्के बहुत ही दुष्प्राप्य हैं। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर ज्यूपिटर का मस्तक और दूसरी ओर देवी आर्तमिस की मूर्त्ति और कुक्कुर है। देवी के हाथ में उल्का और पीठ पर तर्कश † है। सिक्कों पर यूनानी भाषा और अक्षरों में दियदात का नाम है। इस विषय में मतभेद है कि ये सिक्के प्रथम दियदात के हैं अथवा द्वितीय दियदात के। मि० विंसेंट ए० स्मिथ कहते हैं कि ये सिक्के द्वितीय दियदात के हैं ‡। किंतु स्वर्गीय अध्यापक गार्डनर के मत के अनुसार ये सिक्के प्रथम दियदात के हैं ×। सिल्यूक-

---

* Catalogue of Coins in the British Museum, Greek and Scythic Kings of Bactria and India, p. 3, pl. 1. 5–7.

† B. M. C. pl. 1., 9.

‡ Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. 1., p. 7.

× British Museum Catalogue of Indian Coins. —Greek and Scythic kings of Bactria & India, p. 3.

वंशी सम्राट् तृतीय आंतियोक (Antiochos III. Magnus) ने जिस समय अपने पैतृक राज्य के उद्धार का संकल्प करके वाह्लीक और पारद राज्य पर आक्रमण किया था, उस समय यूथीदिम (Euthydemos) नामक एक राजा ने वाह्लीक में उसका मुकाबला किया था। यूथीदिम ने द्वितीय दियदात को पराजित करके वाह्लीक पर अधिकार किया था। जब आंतियाक ने यूथीदिम को हरा दिया, तब यूथीदिम ने दूत के द्वारा आंतियोक से कहला भेजा कि जिन लोगों ने मेरे बड़ों के राजत्व-काल में विद्रोह किया था, उन लोगों को पराजित करके मैंने वाह्लीक पर अधिकार किया है। वाह्लीक की उत्तरी सीमा पर शक जाति सदा यवन राज्य पर आक्रमण करने के लिये तैयार रहती है। यदि हम आत्मरक्षा के लिये उन सब वर्बर जातियों से सहायता माँगें, तो वे जातियाँ बड़ी प्रसन्नता से हमारी सहायता करेंगी। परंतु जब एक बार यवन राज्य में शक जाति का प्रवेश हो जायगा, तब फिर वह कभी अपने देश को लौटना न चाहेगी; और उस दशा में एशिया खंड के ग्रीक या यवन साम्राज्य पर बहुत बड़ी आफत आ जायगी। इस पर आंतियोक ने यूथीदिम को स्वाधीन राजा मान लिया था और उसके पुत्र के साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया था। पाश्चात्य ऐतिहासिक पोलीबियस (Polybios) ने इन सब घटनाओं का उल्लेख किया है। यूथिदिम के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। इनमें से सोने के सिक्के बहुत ही दुष्प्राप्य

हैं। यूथिदिम का सोने का एक ही सिक्का लंदन के ब्रिटिश म्यूजिअम में है। उसके एक ओर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में दंड लिए हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है *। यूथिदिम के चाँदी के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा की प्रौढ़ अवस्था की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में दण्ड लेकर पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति है। ऐसे सिक्कों के दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग में तो हरक्यूलस के हाथ का दण्ड पत्थर पर रखा हुआ है; परंतु दूसरे विभाग में वह दण्ड हरक्यूलस की जाँघ पर पड़ा है। दोनों प्रकार के सिक्कों का आकार बहुत छोटा है। इस प्रकार के बड़े आकार के सिक्के नहीं मिलते। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर राजा की वृद्ध अवस्था की मूर्त्ति है; परंतु इस तरह के सिक्के बहुत दुष्प्राप्य हैं। लंडन के ब्रिटिश म्यूजिअम में इस तरह के केवल दो सिक्के हैं †। यूथिदिम के ताँबे के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस की मूर्त्ति और दूसरी ओर नाचते हुए घोड़े की मूर्त्ति है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूनानी देवता अपोलो का मस्तक और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है। यूथिदिम के नाम के चाँदी के कई दुष्प्राप्य सिक्कों पर राजा की तरुण वय की मूर्त्ति है। मि० गार्डनर के मत से ये सिक्के

---

* B. M. C, 4; pl. 1.—10

† Ibid p. 5, Nos. 13—14.

द्वितीय यूथिदिम के हैं। परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि प्रथम यूथिदिम के साथ द्वितीय यूथिदिम का क्या संबंध था। मि० गार्डनर का मत है कि द्वितीय यूथिदिम, दिमित्रिय का पुत्र और प्रथम यूथिदिम का पोता था। मि० गार्डनर*के ग्रन्थ के प्रकाशित होने के उपरान्त द्वितीय यूथिदिम के और भी तीन प्रकार के सिक्के मिले हैं। इनमें से एक प्रकार के सिक्के निकल धातु के हैं। रसायन शास्त्र के पाश्चात्य विद्वानों ने ईसवी सत्रहवीं शताब्दी में निकल धातु का आविष्कार किया था†। किंतु भारतीय यूनानी राजाओं के निकल के बने हुए अनेक सिक्कों के मिलने से‡ सिद्ध होता है कि निकल का अंतिम आविष्कार पुनराविष्कार मात्र है; क्योंकि पूर्वी जगत् में बहुत प्राचीन काल से निकल धातु का व्यवहार होता आया था। यदि यह बात न होती तो द्वितीय यूथिदिम और दिमित्रिय कभी प्रायः विशुद्ध निकल धातु के सिक्के बनाने में समर्थ न होते। द्वितीय यूथिदिम के निकल के सिक्कों पर एक ओर अपोलो का मुख और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है× । द्वितीय यूथिदिम के ताँबे के नए

---

* B. M. C. p. 18, pl. III, 3—6

† Numismatic Chronicle—1868, p. 307.

‡ Ibid p. 308.

× Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore, by R. B. Whitehead, Vol. 1. p. 14.

मिले हुए सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले विभाग के ताँबे के सिक्के सब प्रकार से निकल के सिक्कों की तरह ही हैं*। दूसरे प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक घोड़े की मूर्त्ति है†।

प्रथम और द्वितीय यूथिदिम के सिक्के भारतीय यूनानी राजाओं की यूनान देश की तौल की रीति के अनुसार बने हुए हैं। यूथिदिम के पहले के किसी यूनानी राजा ने धातु तौलने की भारतीय रीति के अनुसार सिक्के नहीं बनवाए थे। प्रथम यूथिदिम के पुत्र दिमित्रिय ने सब से पहले अपने सिक्कों पर भारतीय भाषा में अपना नाम अंकित कराया था और यूनानी तौल की रीति के बदले पारसिक रीति का अवलम्बन किया था। दिमित्रिय के उपरान्त पन्तलेव (Pantaleon) और अगथुक्लेय (Agathocles) नामक राजाओं ने सब से पहले भारतीय तौल की रीति के अनुसार सिक्के बनवाए थे।

हम पहले कह चुके हैं कि अंक-चिह्नवाले सिक्के दो प्रकार के हैं, एक चौकोर और दूसरे गोलाकार। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि अन्यान्य विदेशी जातियों के संसर्ग के कारण भारतवासी लोग गोलाकार पुराण बनाने लग गए थे। पाश्चात्य जगत के सब से पुराने सिक्के गोला-

---

* Ibid p. 15, Nos. 32—33.

† Ibid, No. 34.

कार हैं। इसलिये अनुमान होता है कि बाबिरुषीय, फिनिशिय आदि प्राचीन सभ्य जातियों के संसर्ग के कारण भारतवासियों ने वाणिज्य के सुभीते के लिये गोलाकार पुराण बनाए थे। उस समय तक प्राचीन भारत के सिक्कों के आकार में परिवर्तन होने पर भी सम्भवतः और किसी बात में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। सिक्कों पर राजा का नाम अथवा और कुछ अक्षर आदि न होते थे। यूनानी जाति के संसर्ग के कारण भारतवासी लोग सिक्कों की और बातों में भी परिवर्तन करने लग गए थे। उस समय सब से पहले भारतीय सिक्कों पर भारतीय भाषा में राजा की उपाधि और नाम अंकित करने की प्रथा चली थी। जिस प्रकार भारत के यूनानी राजाओं ने इस देश की धातु तौलने की रीति के अनुसार सिक्के बनवाने आरम्भ किए थे, उसी प्रकार भारतीय राजाओं और जातियों ने भी यूनानी सिक्कों के ढंग पर गोलाकार सिक्के बनवाना और उन पर अपना अपना नाम अंकित कराना आरम्भ किया था। आगे के दो अध्यायों में उन सिक्कों का विवरण दिया जायगा जो ईसा से पूर्व दो शताब्दी और ईसा के बाद दो शताब्दी तक भारत में प्रचलित थे और जो सिक्के बनाने की देशी अथवा विदेशी रीति के अनुसार देशी अथवा विदेशी राजाओं ने बनवाए थे।

तीसरा परिच्छेद

विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(क) यूनानी राजाओं के सिक्के

भारतीय मुद्रातत्त्व के साथ आरम्भिक अवस्था में प्राचीन भारत के लुप्त इतिहास के उद्धार का घनिष्ठ सम्बन्ध था। ईसवी अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में जिस समय सब से पहले भारतवर्ष में भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्के मिले थे, उस समय पाश्चात्य पण्डितों में बहुत बड़ी हलचल मच गई थी। ऐसे सिक्कों पर यूनानी भाषा में लिखे हुए राजा के नाम के साथ साथ भारतीय प्राकृत भाषा और खरोष्ठी अथवा ब्राह्मी अक्षरों में भी राजा का नाम लिखा हुआ है। १८२४ ईसवी में राजस्थान के लेखक कर्नल टाड ने रायल एशियाटिक सोसाइटी के कार्य-विवरण में आपलदत्त और मेनेन्द्र के सिक्कों के चित्र छपवाए थे। उसी समय से पाश्चात्य जगत् के समस्त देशों में भारतीय यूनानी राजाओं के सम्बन्ध में अनुसन्धान आरम्भ हुआ था। फ्रान्स में रोचेट (Raoul Rochette), जर्मनी में लैसेन (Lassen), इंगलैण्ड में विल्सन (H. H. Wilson) और भारतवर्ष में प्रिन्सेप (James Prinsep) आदि विद्वान् यूनानी राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में अनु-

सन्धान करने लग गए थे। इस अनुसन्धान के फल-स्वरूप भारतवर्ष में प्रिन्सेप और जर्मनी में लैसेन ने एक ही समय में प्राचीन भारतीय ब्राह्मी और खरोष्ठी वर्णमालाओं का पाठोद्धार किया था। आजकल के प्रसिद्ध प्रत्नलिपितत्त्व (Palaeography) का यहीं से आरम्भ होता है।

जिन पाश्चात्य पण्डितों ने वैज्ञानिक रीति से भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में विचार किया है, उनमें से भारतीय पुरातत्त्व विभाग के सर्वप्रधान अधिकारी सर एलेग्ज़ेण्डर कनिंघम का नाम सब से अधिक उल्लेख के योग्य है। कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में सन् १८३४ में भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में कनिंघम का पहला लेख प्रकाशित हुआ था। उस समय से लेकर अपने मृत्यु-काल (सन् १८९२) तक कनिंघम साहब भारतीय मुद्रातत्त्व के सम्बन्ध में बराबर विचार करते रहे। सन् १८६८ से १८९२ तक कनिंघम साहब ने "पूर्व में सिकन्दर के उत्तराधिकारियों के सिक्के" नामक जो बहुत से निबन्ध आदि प्रकाशित किए थे, उन्हीं में यूनानी, शक और पारद राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में सब से पहले वैज्ञानिक आलोचना हुई थी *। यद्यपि कुछ दिनों बाद ये सब निबंध

---

* Numismatic Chronicle ; Coins of Alexander's Successors in the East, 1868—70, 1872—73; Coins of the Indo-Scythians, 1888-90,1892; Coins of the later Indo-Scythians, 1893-94.

आदि निरर्थक हो गए थे, तथापि भारतीय यूनानी राजाओं सम्बन्धी मुद्रातत्त्व की आलोचना का इतिहास इन्हीं सब निबंधों में मिलता है*। कनिंघम साहब भारतवर्ष में प्रायः साठ वर्ष तक रहे थे। इस बीच में उन्होंने हजारों पुराने सिक्के एकत्र किए थे। उनके इकट्ठे किए हुए भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्के आजकल लंदन के ब्रिटिश म्यूजिअम में रखे हुए हैं। इस तरह के सिक्कों का ऐसा अच्छा संग्रह संसार में और कहीं नहीं है। कनिंघम के बाद जर्मन विद्वान् वान सैले (Von Sallet) ने वाह्लीक और भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में जर्मन भाषा में एक ग्रन्थ लिखा था† । आजकल केम्ब्रिज के अध्यापक रैप्सन(E. J. Rapson), प्रसिद्ध ऐतिहासिक विन्सेन्ट स्मिथ और भारतीय मुद्रातत्त्वसमिति (Neumismatic Society of India) के सम्पादक ह्वाइटहेड (R. B. Whitehead) इस तरह के मुद्रातत्त्व के सम्बन्ध में विचार करने के लिये प्रसिद्ध हैं। रैप्सन ने अपने "भारतीय सिक्के" नामक ग्रन्थ और रायल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका के अनेक निबंधों में भारतीय यूनानी राजाओं के सिक्कों के सम्बन्ध में

---

* इनके सिवाय विल्सन की Ariana Antiqua और रोचेट की Journal des Savants, नामक पत्रिका में प्रकाशित ग्रन्थावली और गार्डनर रचित ब्रिटिश म्यूज़िअम के सिक्कों की सूची में मुद्रातत्त्व की इस तरह की आलोचना का इतिहास दिया गया है।

† Nachfolger Alexander der Grossen in Baktrien und Indien, Zeitschrift fur Numismatik, 1879-83.

आलोचना की है*। विन्सेन्ट स्मिथ ने कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में एक निबन्धमाला में† और कलकत्ते के सरकारी अजायबखाने की सूची में इस तरह के सिक्कों की विस्तृत आलोचना की है। मि० ह्वाइटहेड ने कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में और हाल में प्रकाशित लाहौर के अजायबघर की सूची में‡ इस विषय का असाधारण पारदर्शिता के साथ वर्णन किया है।

कनिंघम और वान सैले भारतीय यूनानी राजाओं को सिकंदर के उत्तराधिकारी बतलाते हैं, परंतु वास्तव में सिकंदर के साथ उन राजाओं का बहुत ही थोड़ा संबंध है। सिकंदर भारत के किसी देश पर स्थायी रूप से अधिकार न कर सका था। उसके सेनापति सिल्यूक ने एशिया के पश्चिम में जो विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया था, वाह्लीक उसीके अंतर्गत था; और वाह्लीक के यवनों वा यूनानियों ने भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रांत पर आक्रमण करके अधिकार किया था। मुद्रा-तत्वविद् ह्वाइटहेड का अनुमान है कि यूथिदिम ने वाह्लीक से

---

* Notes on Indian Coins and Seals, Jonrnal of the Royal Asiatic Society, 1900-05, Coins of the Greco-Indian Sovereigns, Agathocleia and Strato I, Soter and Strato II. Philopator.

† Numismatic Notes and Novelties, Journal of the Asiatic Society of Bengal—Old series. I, 1890.

‡ Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal-New Series, Vols. I-XI, Numismatic Supplement.

अफगानिस्तान उद्यान और गांधार जीता था* । परंतु सम्भवतः दियदात के समय में ही भारत का उत्तर-पश्चिम प्रांत यूनानियों के हाथ में गया था; क्योंकि सिंधु नद के पूर्वी तट पर तक्षशिला नगरी के खँडहरों में दियदात के सोने के बहुत से सिक्के मिले थे† । यूथिदिम के पुत्र दिमित्रिय के समय से यूनानी राजाओं के सिक्कों पर भारतीय भाषा और अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि मिलती है और इसी समय से प्राचीन भारतीय प्रथा के अनुसार ८० रत्ती (१४० ग्रेन) तोल के ताँबे के चौकोर सिक्कों का प्रचार आरम्भ हुआ था‡ । इन्हीं सब कारणों से यूथिदिम के पुत्र दिमित्रिय से लेकर हेरमय (Hermaios) तक यूनानी राजा लोग भारतीय यूनानी राजा माने जा सकते हैं । अब तक नीचे लिखे यूनानी राजाओं के सिक्के मिले हैं—

भारतीय नाम	यूनानी नाम
१ अर्खेबिय	Archebios
२ अगथुक्रेय	Agathokles
३ अगथुक्रेया	Agathokleia

---

* Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore. Vol. I. p. 4.

† A Sketch of Indian Archaecoloy, by Sir John Marshall, C. I. E. p. 17.

‡ Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore. Vol. I. p 14.

४ अमित	Amyntas
५ अंतिआलिकिद	Antlalkidas
६ आर्त्तिमिदोर	Artemidoros
७ आंतिमख	Antimachos
८ अपलदत	Apollodotos
९ आपुलफिन	Apollophanes
१० एपन्द्र	Epander
११ एवुकतिद	Eukratides
१२ झोइल	Zoilos
१३ तेलिफ	Telephos
१४ थेउफिल	Theophilos
१५ दिअनिसिय	Dionysios
१६ दियमेद	Diomedes
१७ निकिय	Nikias
१८ पंतलेव	Pantaleon
१९ पलसिन	Polyxenos
२० पेउकलअ	Peukelaos
२१ [प्लत]	Plato
२२ फिलसिन	Philoxenos
२३ मेनन्द्र	Menander
२४ लिसिअ	Lysius
२५ स्रत	Strato

२६ हिपुस्रत	Hippostratos
२७ हेरमय	Hermaios
२८ हेलियक्रेय	Heliokles

हम पहले कह चुके हैं कि दिमित्रिय प्रथम यूथिदिम का पुत्र और सीरिआ के सिल्यूकवंशी राजा तृतीय आन्तियोक का दामाद था। इसी ने सबसे पहले प्राचीन भारतीय सिक्कों के ढंग पर ताँबे के चौकोर सिक्कों का प्रचार किया था और यूनानी खरोष्ठी अक्षरों में अपना नाम और उपाधि अंकित कराई थी। पाश्चात्य ऐतिहासिक स्ट्राबो और जस्टिन ने उसे भारतवर्ष का राजा कहा है। उसी समय शकों ने बारह बार वाह्लीक पर आक्रमण करके यूनानी राजाओं को बहुत तंग किया था। उस समय प्रथम यूथिदिम का चीन साम्राज्य की पश्चिमी सीमा तक विस्तृत वाह्लीक राज्य पर अधिकार था। परंतु उसकी मृत्यु के थोड़े दिनों बाद ही वक्षु (Oxus) नदी के उत्तर तट के प्रदेश पर शक जाति का अधिकार हो गया था। दिमित्रिय के साथ एवुक्रतिद (Eukratides) नामक एक यूनानी राजा का बहुत दिनों तक युद्ध हुआ था जिसके अंत में दिमित्रिय को अपना राज्य छोड़ना पड़ा था। पाश्चात्य ऐतिहासिक जस्टिन ने इस युद्ध का उल्लेख किया है। दिमित्रिय के चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। उसके चाँदी के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर हरक्यूलस की युवावस्था

की मूर्त्ति अंकित है। दूसरे प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर हरक्यूलस की मूर्त्ति के बदले में यूनानी देवी पैलास (Pallas) की मूर्त्ति है। इस तरह के सिक्के बहुत ही दुष्प्राप्य हैं और ऐसा केवल एक ही सिक्का कलकत्ते के अजायबघर में है। दिमित्रिय के छः प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पत्तयुक्त वज्र खुदा हुआ है*। इस तरह के सिक्के चौकोर हैं और इन्हीं पर सबसे पहले खरोष्ठी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि लिखी गई थी। लाहौर के अजायबघर में इस तरह का केवल एक ही सिक्का है। उसपर खरोष्ठी अक्षरों और प्राकृत भाषा में "महरजस अपरजितस दिमे [त्रियस] वा देमेत्रियुस्" लिखा है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंह का चमड़ा पहने हुए हरक्यूलस का मुख और दूसरी ओर यूनानी देवी आर्तेमिस (Artemis) की मूर्त्ति है†। मि० स्मिथ का कथन है कि इस तरह के सिक्के निकल धातु के भी बनते थे‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राक्षसमुखयुक्त

---

* Punjab Museum Catalogue, Lahore, p. 14, No. 26.

† Ibid, p. 13, Nos. 22-25; British Museum Catalogue, p. 7. Nos. 13-14; Indian Museum Catalogue, Vol. I, p. 9, No. 6.

‡ Ibid, Note I.

ढाल वा चर्म और दूसरी ओर एक त्रिशूल बना है*। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी का सिर और दूसरी ओर यूनानी देवता मर्करी (Mercury) के हाथ का एक विशिष्ट दंड (Caduceus) बना है†। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर हाथ में शूल तथा चर्म लिए हुए पैलास की मूर्त्ति है‡। छठे प्रकार के सिक्कों पर भी एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर बैठी हुई पैलास की मूर्त्ति है×। एवुक्रतिद ने दिमित्रिय को हराकर उसका राज्य ले लिया था +। कनिंघम साहब का अनुमान है कि एवुक्रतिद ईसा से पूर्व सन् १६० में सिंहासन पर बैठा था; क्योंकि पारद (Parthia) के राजा मिथ्रदात÷ (Mithradates) और बाबिरुष् के राजा टिमार्कस= (Timarchus) ने उसके सिक्कों का अनुकरण किया था। एवुक्रतिद ने पहले तो दिमित्रिय को हराकर बहुत बड़ा साम्राज्य प्राप्त किया

---

* Ibid, Vol. I. p. 9. No. 7; B. M. C., p,.7, No. 14.

† Punjab Museum Catalogue, Vol. I, p. 13, No. 21; B, M. C. p. 7, No. 16.

‡ Ibid, p. 163, pl. XXX, 1.

× Ibid, pl. XXX. 2.

\+ British Museum Catalogue of Indian Coins, Greek and Scythic Kings of Bactria and India, p. XXV.

÷ Percy Gardener, Parthian Coinage, p. 32, pl. II, 4.

= British Museum Catalogue of Indian Coins, Greek and Scythic Kings of Bactria and India, p. XXVI.

था, परन्तु उसके राजत्व काल के अंत में धीरे धीरे उसके अधिकार से बहुत से प्रदेश निकल गए थे*। पारद के राजा द्वितीय मिथ्रदात ने दो प्रदेशों पर अधिकार किया था*; और प्लेटो नामक एक विद्रोही शासनकर्त्ता ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा करके अपने नाम के सिक्के चलाना आरंभ कर दिया था†। इन सिक्कों पर किसी संवत् का १४७वाँ वर्ष अंकित है। मुद्रातत्त्व के विद्वानों का अनुमान है कि ईसा से ३१२ वर्ष पूर्व सीरिया के राजा सिल्यूक ने जो संवत् चलाया था, उसी संवत् का वर्ष इस सिक्के पर दिया गया है। यदि यह अनुमान सत्य हो तो ये सिक्के ईसा से १६५ वर्ष पहले के बने हैं। एवुक्रतिद् के पिता का नाम संभवतः हेलियक्रिय (Heliokles) और उसकी माता का नाम लाउडिकी (Laodike) था। एक अपूर्व सिक्के से इन नामों का पता चला है‡। एवुक्रतिद् के चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। उसके चाँदी के सिक्के तीन प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर यूनानी देवता अपोलो की मूर्त्ति है× इस तरह के सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि नहीं है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर अपोलो की मूर्त्ति के बदले में दो पिंड (Pilei of

* Ibid, p. XXVI; Strabo, XI, 11.

† Ibid, p. XXVI.

‡ Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore, p. 6; B. M. C., p. XXI.

×P. M. C, p. 19. No. 60; I. M. C. Vol. I, p. 11.

the diosvui) हैं और प्रत्येक पिंड के बगल में ताल वृक्ष की एक एक शाखा है*। इस पर भी खरोष्ठी लिपि नहीं है। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्ति और दूसरी ओर दो घुड़सवार बने हैं। ऐसे सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार में यूनानी अक्षरों में "Bailbus Eukratidon" लिखा है†; और दूसरे प्रकार में इन दोनों शब्दों के बीच में "Megalou" लिखा है‡। इस तरह का सोने का एक बड़ा सिक्का (Twenty stater piece) एक बार मध्य एशिया के बुखारा नगर में मिला था ×। वह इस समय पेरिस के जातीय ग्रंथागार में रखा है +। एवुकतिद के कई दुष्प्राप्य सिक्कों पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि दी हुई है। कई तरह के चाँदी के इन सिक्कों के अतिरिक्त एवुकतिद के चाँदी के और भी सिक्के मिले हैं जो आकार में उक्त सिक्कों से कुछ भिन्न हैं। इस प्रकार के सिक्के बहुत ही दुष्प्राप्य हैं। कनिंघम ने उनका संग्रह किया था। मुद्रातत्त्व-विद् ह्वाइटहेड ने उन सिक्कों की संक्षिप्त सूची तैयार की है ÷।

---

* Ibid; P. M. C; Vol. I. p. 21, Nos. 71-76.

† Ibid; p. 20, Nos 61-63.

‡ Ibid, p. 20. Nos 64-70; I. M. C; Vol. I, p. 11.

× Revue Numismatique, 1867, p. 382, pl. XII.

+ Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Vol. I, p. 5.

÷ Catalogue of Coins in the Punjab Museum, Lahore, p. 27.

एवुक्रतिद के सब मिलाकर पाँच प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर दो घुड़सवारों की मूर्त्ति है। इनके दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्के गोलाकार हैं और उनपर केवल यूनानी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि दी है*। दूसरे उपविभाग के सिक्के चौकोर हैं और उन पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों अक्षर दिए गए हैं†। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर यूनानी विजया देवी (Nike) की मूर्ति है‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है×। इस तरह के सिक्कों पर खरोष्ठी अक्षरों में लिखा है— "कविशिये नगर देवत"+। इससे अनुमान होता है कि ज्यूपिटर की, कपिशा के नगर-देवता की भाँति, पूजा होती थी। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी

---

* Ibid, p, 22, Nos. 81-86; I. M. C. Vol. I. p. 12, Nos. 14-16.

† Ibid, pp. 22-25, Nos. 87-129; I. M. C., Vol. I., pp 12-13., Nos. 17-28.

‡ Ibid, p. 13, NO. 30; P. M. C. Vol. I. p. 26. No.130.

× Ibid, p. 26. No, 131.

+J. Marquart Eranshahr, pp. 280-81; Journal of the Royal Asiatic Society, 1905, pp. 783-86.

ओर ताल वृक्ष की दो शाखाएँ हैं* । ये तीनों प्रकार के सिक्के चौकोर हैं और इन पर यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों अक्षर दिए हैं । कनिंघम ने पाँचवें प्रकार के जिन सिक्कों का आविष्कार किया था, उनपर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर अपोलो की मूर्त्ति है† ।

मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं के अनुसार पन्तलेव, अगथुक्लेय और आंतिमख नामक तीनों राजाओं के सिक्के एवुक्रतिद् के सिक्कों की अपेक्षा पुराने हैं‡ । पंतलेव और अगथुक्लेय ने तक्षशिला के पुराने कार्षापण के ढंग पर ताँबे के भारी और चौकोर सिक्के बनवाए थे× । इन लोगों के ऐसे सिक्कों पर यूनानी और ब्राह्मी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि दी हुई है+ । पंतलेव के निकल और ताँबे के सिक्के मिले हैं । निकल के सिक्कों पर एक ओर दियनिसियस (Dionysos) का मुख और दूसरी ओर एक बाघ की मूर्त्ति है÷ । पंतलेव के ताँबे के सिक्के दो प्रकार के हैं । पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर सिंहासन पर

---

* P. M. C., Vol-I. p. 26 No. 132.

† Ibid. p. 27, No. VII,

‡ Rapson's Indian Coins, p. 6.

× I. M. C., Vol. I. P, 3-4. Cunningham, Archæological Survey Reports, Vol. XIV., p. 18; pl. X.

+ Rapson's Indian Coins, p. 6.

÷ P. M. C, Vol I, p. 16.

बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है *। निकल और पहले प्रकार के सिक्कों पर केवल यूनानी भाषा है। दूसरे प्रकार के ताँबे के सिक्के चौकोर हैं। उनपर एक ओर एक नाचती हुई स्त्री की मूर्त्ति और दूसरी ओर सिंह अथवा बाघ की मूर्त्ति है। इस प्रकार के सिक्कों पर यूनानी और ब्राह्मी दोनों अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि दी है†।

अगथुक्लेय के चाँदी, निकल और ताँबे के सिक्के मिले हैं। चाँदी के सिक्के चार प्रकार के हैं। चारों प्रकार के सिक्कों पर केवल यूनानी भाषा है। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिकंदर की मूर्त्ति और नाम और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति और अगथुक्लेय का नाम है‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर दियदात का मुख और नाम और दूसरी ओर वज्र चलाने के लिये उद्यत ज्यूपिटर की मूर्त्ति और अगथुक्लेय का नाम है ×। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूथिदिम का मुख तथा नाम और दूसरी ओर पत्थर पर नंगे बैठे हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति और अगथुक्लेय का नाम है +। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और

---

* Ibid.

† P. M. C., Vol. I.. Nos. 37-40.

‡ B. M. C., p. 10; No. I; P. M. C., Vol. I., p. 16; No. 41.

× B. M. C., p. 10; No. 2.

+ Ibid. No. 3.

दूसरी ओर ज्यूपिटर और तीन मस्तकवाले हेकेट (Hecate) की मूर्त्ति है *। अगथुक्रेय के एक प्रकार के निकल के सिक्के मिले हैं। ये बिलकुल पंतलेव के निकल के सिक्कों के समान हैं†। अगथुक्रेय के चार प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के गोलाकार हैं और उन पर एक ओर दियनिसियस (Dionysos) का मुख और दूसरी ओर बाघ की मूर्त्ति है‡। इस प्रकार के सिक्कों पर केवल यूनानी भाषा है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर नाचती हुई स्त्री की और दूसरी ओर बाघ की मूर्त्ति है और इन पर यूनानी और ब्राह्मी दोनों अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि है ×। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और दूसरी ओर एक बौद्ध (?) चिह्न है +। इस तरह के सिक्कों पर केवल एक ओर खरोष्ठी अक्षरों में "हितजसमे" लिखा है। सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डा० बुलर के मत से इसका अर्थ "हितयश का आधार" है। यूनानी भाषा में "Agathocles" शब्द का वही अर्थ है÷। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और खरोष्ठी

---

* Ibid, Nos 4-5., P. M. C., Vol. I., p. 17, No, 42.

† Ibid, Nos 43-44.

‡ B. M. C., p. 11, No. 8,

× Ibid, p. 11, Nos. 9-14; P. M. C, Vol. 1, p. 17, Nos. 45-50; I. M. C, Vol. 1 p. 10, Nos 1-3.

+ P. M. C, Vol. 1. p. 18, No. 51.

÷ Vienna Oriental Journal, Vol. VIII, 1894, p. 206.

अक्षरों में "अकथुक्रेय" और दूसरी ओर बोधि वृक्ष (?) है। अंतिम तीन प्रकार के सिक्के चौकोर हैं*।

आन्तिमख के तीन प्रकार के चाँदी के सिक्के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। आन्तिमख नाम के दो राजाओं के सिक्के मिले हैं; इसलिये मुद्रातत्वविद् कहते हैं कि ये सिक्के प्रथम आन्तिमख के हैं। इन सिक्कों में केवल यूनानी भाषा का व्यवहार है। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर दियदात का मुख और नाम और दूसरी ओर वज्र चलाने के लिये तैयार ज्यूपिटर की मूर्त्ति और आन्तिमख का नाम है†। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूथिदिम का मुख और नाम और दूसरी ओर अन्तिमख का नाम है‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर यूनान देश के वरुण देवता (Poseidon) की मूर्त्ति है×। आन्तिमख के ताँबे के सिक्के गोलाकार हैं और उनपर एक ओर हाथी और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्ति है+।

पुरातत्त्व-वेत्ताओं के मतानुसार हेलियक्रेय बाह्लीक का

---

* P. M. C, Vol. 1. p. 18, Nos. 52-53; B. M. C, p. 12. No. 15.

† Ibid, p. 19.

‡ B. M. C. pl. XXX, 6.

× P, M. C; Vol, 1. pp. 18-19, Nos, 54-58; B. M. C; pl 12, Nos, 1-6,

+ Ibid, p, 19, No, 59,

अन्तिम यूनानी राजा था और उसी के समय वाह्लीक से यूनानी राज्य उठ गया था*। इस समय तक के यूनानी राजाओं के चाँदी के सभी सिक्के यूनान देश की तौल की रीति (Attic Standard) के अनुसार बने हैं†। परन्तु स्वयं हेलियक्रेय ने और उसके बाद के राजाओं ने यूनान देश की रीति के बदले में पारस्य देश की तौल की रीति के अनुसार सिक्के बनवाए थे। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का मत है कि हेलियक्रेय एवुकतिद का पुत्र था और उसने अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वाह्लीक का राज्य पाया था‡। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं को हेलियक्रेय के सिक्कों में ही इस बात का प्रमाण मिला है कि उसे विवश होकर वाह्लीक छोड़ना पड़ा था। हेलियक्रेय के कुछ सिक्के यूनान देश की तौल की रीति के अनुसार और कुछ सिक्के पारस्य देश की तौल की रीति के अनुसार बने हैं×। यूनान देश की रीति के अनुसार हेलियक्रेय ने जो सिक्के बनवाए थे, उनपर केवल यूनानी भाषा दी गई है और उनके एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर ज्यूपिटर की

---

* I, M, C, Vol, 1. p, 4; Indian Coins, p. 6,

† B, M, C; pp, L XVII–VIII.

‡ B. M, C; p, XXIX; Numismatic Chronicle, 1869, p, 240,

× Rapson's Indian Coins p, 6,

मूर्त्ति है*। बाद में जिस बर्बर जाति ने यूनानियों को वाह्लीक से भगाया था, उसने अपने ताँबे के सिक्कों में इसी तरह के सिक्कों का अनुकरण किया था†। जो सिक्के भारतीय तौल की रीति के अनुसार बने थे, उनमें एक प्रकार के चाँदी के और दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। इन सब सिक्कों पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों अक्षर दिए हैं। चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है‡। पहले प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और दूसरी ओर हाथी की मूर्त्ति है×। दूसरे प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर हाथी की और दूसरी ओर बैल की मूर्त्ति है+। ये दोनों प्रकार के सिक्के चौकोर हैं।

हेलियक्रेय के राजत्व काल के अन्तिम भाग में एशिया की जंगली शक जाति ने वाह्लीक पर अधिकार कर लिया था।

---

* P. M. C., Vol. 1, p. 27. Nos. 133–35; I. M. C. Vol. 1. p. 13, Nos. 1–2.

† P. M. C. Vol. 1. p. 28. Nos. 136–44.

‡ Ibid, p. 29. Nos. 145–47; I. M. C, Vol. 1. p 13, Nos. 3–4.

× P. M. C., Vol. 1, p. 29. No. 148; I. M. C. Vol. 1. p. 14, No. 6.

+ P. M, C. Vol 1. p. 29. No. 149; कलकत्ते के अजायबघर में हेलियक्रेय का एक और प्रकार का ताँबे का सिक्का है। यह गोलाकार है और इसके एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर घोड़े की मूर्त्ति है।

उसी समय से पश्चिम के यूनानियों के साथ पूरब के यूनानियों का सम्बन्ध टूट गया था और इसके बाद से पश्चिमी यूनानियों के इतिहास में पूर्वी यूनानी राज्यों का वर्णन बहुत कम मिलता है। हेलिक्रेय के बाद के यूनानी राजाओं में आन्तिआलिकिद, आपलदत, मेनन्द्र और हेरमय के नाम विशेष उल्लेखयोग्य हैं। सन् १९०९ में मालव देश के वेश नगर में एक शिलास्तम्भ मिला था। उस शिलास्तम्भ पर ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी का खुदा हुआ एक लेख है। उससे पता चलता है कि यह स्तम्भ वासुदेव के किसी गरुड़ध्वज और तक्षशिला निवासी भगवद्भक्त दिय (Dion) के पुत्र हेलिउदोर (Hellodors) नामक यवन दूत का बनवाया हुआ है। राजा आन्तिआलिकिद के यहाँ से राजा काशीपुत्र भागभद्र के यहाँ उनके राजत्व काल के चौदहवें वर्ष में हेलिउदोर आया था*। यह अन्तिआलिकिद और सिक्कोंवाला आन्तिआलिकिद दोनों एक ही व्यक्ति हैं। आन्तिआलिकिद के तीन प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर पगड़ी बाँधे हुए राजा का मुख और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्युपिटर की मूर्त्ति, उनके दाहिने विजया देवी की मूर्त्ति और एक हाथी की मूर्त्ति है†। ऐसे सिक्कों के दो उप-

---

*Journal of the Royal Asiatic Society, 1909. p. 1055-56; Epigraphica Indica, Vol. X. App, p. 63 No. 669.

† P. M. C., Vol. 1. pp. 32-34; I. M. C. Vol. 1. p. 15-16.

विभाग हैं। पहले उपविभाग में मुकुट पहने हुए राजा की मूर्त्ति* और दूसरे उपविभाग में पगड़ी बाँधे हुए राजा की मूर्त्ति है†। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर ज्यूपिटर, विजया और हाथी की मूर्त्ति है ‡। आन्तिआलिकिद के दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर ज्यूपिटर की मूर्त्ति और दूसरी ओर दो पिण्ड और ताल वृक्ष की दो शाखाएँ हैं ×। इसमें भी दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्के गोलाकार+ हैं और दूसरे उपविभाग के चौकोर हैं÷। दूसरे प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर हाथी की मूर्त्ति है=। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं के मतानुसार लिसिय के साथ आन्तिआलिकिद का सम्बन्ध था; क्योंकि ताँबे के एक

---

* P. M. C., Vol. 1. pp. 33-34, Nos. 184-89. I. M. C. Vol. 1. p. 15, Nos. 1-3.

† P. M. C., Vol. 1. pp. 32-33. Nos. 167-83; I. M. C., Vol. I. pp, 15-16. Nos. 4-16.

‡ P. M. C., ,Vol. 1, p. 34, Nos. 190-92.

× P. M. C. Vol, 1 pp. 34-35.

+ Ibid, Nos. 193-96; I. M. C. Vol. I. p. 16 No. 17.

÷ P. M. C., Vol. 1. p. 35. Nos. 197-211; I. M. C. Vol. 1, p. 16. Nos. 18-23.

=P. M. C., Vol. 1. p. 36. No, 212.

सिक्के पर एक ओर यूनानी अक्षरों में लिसिय का नाम और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में आन्तिआलिकिद् का नाम है*।

आपलदत के कई प्रकार के सिक्के पंजाब और अफगानिस्तान में मिले हैं; परन्तु आपलदत के सम्बन्ध में अब तक किसी बात का पता ही नहीं लगा। कनिंघम का अनुमान है कि आपलदत एवुक्रतिद का पुत्र था†। विन्सेन्ट स्मिथ ने भी इस अनुमान को ठीक मान लिया है‡। कुछ लोगों का अनुमान है कि आपलदत नाम के दो राजा हुए हैं; परन्तु विन्सिेन्ट स्मिथ× और ह्वाइट हेड+ यह बात नहीं मानते। आपलदत के दो प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है÷। ऐसे सिक्कों के दो उपविभाग हैं। पहले उपभिवाग के सिक्के गोलाकार= और दूसरे उपविभाग के चौकोर हैं**। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर

---

* Numismatic Chrontcle, 1869, p. 300. pl. IX. 4.

† Ibid, Vol. X.-p.-66.

‡ I. M. C. Vol. 1, p. 18.

× Ibid, pp, 18-2I.

\+ P. M. C, Vol. I. p. 7.

÷ Ibid, pp. 40-41; I. M. C. Vol. 1. pp. 18-19.

= Ibid, p. 18, Nos. 10-11; P. M. C., Vol. 1. p. 40. Nos. 231-32.

** Ibid, pp. 40-41, Nos. 233-53; I. M. C., Vol. 1. p. 19. Nos. 12-32.

मुकुट पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर यूनानी देवता पैलास की मूर्त्ति है *। इनमें भी दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग पर Soter "त्राता" उपाधि† और दूसरे उपविभाग में Philopator उपाधि है‡। आपलदत के दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार में एक ओर यूनानी देवता अपोलो और दूसरी ओर एक त्रिपद वेदी है× । इनके भी दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्के चौकोर+ और दूसरे विभाग के गोलाकार÷ हैं। दूसरे विभाग में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार ह्वाइटहेड ने उन सिक्कों के तीन उपविभाग किए हैं= । इस तरह के सिक्कों में से कई सिक्के बड़े और भारी हैं**। पहले विभाग के सिक्कों के भी उनके लेख के अनुसार ह्वाइटहेड ने दो उपविभाग किए हैं††। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर साँड़ की

---

* Ibid, p. 18. Nos, 1-2; P. M. C. Vol. 1, pp. 41-43.

† Ibid, pp. 41-42, Nos. 254-63.

‡ Ibid, pp. 42-43, Nos. 264-92.

× I. M. C., Vol. 1, p. 20. P. M. C. Vol, 1. pp. 43-45;

+ Ibid, Nos. 293-317; I. M. C. Vol. 1. p. 20, No, 37;

÷ Ibid, Nos. 33-36; P. M. C; Vol. I, pp. 46-47, Nos, 322-38.

= Ibid, pp. 46-47.

** Ibid, p. 47, No. 333.

†† Ibid, pp. 47-49.

मूर्ति और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है*। आपलदत के कुछ सिक्कों पर केवल खरोष्ठी अक्षर मिलते हैं†। कनिंघम ने बहुत ढूँढ़ने पर दो ग्रन्थों में आपलदत के नाम का उल्लेख पाया है। ऐतिहासिक ट्रागस (Trogus Pompeius) ने भारत के यूनानी राजाओं में मेनन्द्र और आपलदत नाम के दो प्रसिद्ध राजाओं का उल्लेख किया है‡। ईसवी पहली शताब्दी के एक यूनानी नाविक ने लिखा है कि उस समय भरुकच्छ (भृगु-कच्छ वा भड़ौच) में आपलदत और मेनन्द्र के सिक्के चलते थे×।

मेनन्द्र के कई प्रकार के सिक्के अफगानिस्तान और भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में मिले हैं। मैसन ने काबुल के उत्तर ओर बेग्राम नामक स्थान में मेनन्द्र के १५३ सिक्के पाए थे+ और कनिंघम ने मेनन्द्र के १००० से अधिक सिक्के एकत्र किए थे÷। भारत में मथुरा, रामपुर, आगरे के समीप भूतेश्वर और शिमले जिले के साबाथूत नामक स्थान में मेनन्द्र के बहुत से सिक्के

* Ibid, p. 45. Nos. 318–21; I. M. C, Vol. 1. p. 21. No. 53.

† P. M. C. Vol. 1. p. 49.

‡ Numismatic Chronicle, 1870, p. 79.

× Periplus of the Erythraean Sea Edited by Dr. Schoff.

\+ Numismatic Chronicle, 1870, p. 220, Wilson's Ariana Antiqua. p. 11.

÷ Numismatic Chronicle, Vol. X, p. 220.

मिले हैं। स्ट्रैबो (Strabo) ने आपलोदोरस (Apollodoros) रचित पारद देश के इतिहास के आधार पर लिखा है कि वाहीक के यूनानी राजाओं में से कुछ राजाओं ने सिकन्दर से भी अधिक राज्य जीते थे। और मेनन्द्र हाईपानिआ नदी पार करके पूर्व की ओर इसामस-तीर तक पहुँचा था*। अब तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इसामस नदी कहाँ है। कनिंघम का अनुमान है कि इसामस शोण का अपभ्रंश है†। डाक्टर कर्न ने गार्गी संहिता में यवन जाति के द्वारा साकेत, मथुरा, पंचाल और पुष्पपुर वा पाटलिपुत्र पर आक्रमण होने का उल्लेख ढूँढ़ निकाला है‡। गोल्डस्टकर (Goldstucker) ने पतंजलि के महाभाष्य में यवनों द्वारा अयोध्या और माध्यमिक अथवा मध्य देश पर आक्रमण होने का उल्लेख ढूँढ़ निकाला है×। महाकवि कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक में लिखा है

---

* Ibid, p. 223,

† Ibid, p. 224.

‡ ततः साकेतमाक्रम्य पंचालान् मथुरां तथा।
यवना दुष्टविक्रान्ताः प्राप्स्यन्ति कुसुमध्वजम् ॥
ततः पुष्पपुरे प्राप्ते कर्दमे (?) प्रथिते हिते (?)
आकुला विषयाः सर्वे भविष्यन्ति न संशयः ॥

—Kern's बृहत्संहिता p. 37.

संभवतः यही मेनन्द्रका आक्रमण है। परन्तु श्रीयुत काशीप्रसाद जायसवाल का अनुमान है कि यह दिमित्रिय के आक्रमण की बात है।

× Goldstucker's पाणिनि p. 230.

कि जिस समय सुंग-वंशीय पुष्पमित्र का पोता वसुमित्र अश्व-मेध के घोड़े के साथ घूमने निकला था, उस समय सिन्धु के किनारे यवन घुड़सवारों की सेना ने उस पर आक्रमण किया था *। तिब्बत देश के ऐतिहासिक तारानाथ ने लिखा है कि पुष्पमित्र के राजत्व-काल में भारत पर सबसे पहले विदेशी जाति का आक्रमण हुआ था †। "मिलिन्द पंचहो" नामक पाली ग्रन्थ में वह कथोपकथन लिखा है जो शागल वा शाकल देश के मिलिन्द नामक राजा और बौद्धाचार्य्य नाग-सेन में हुआ था‡। काश्मीर के कवि क्षेमेन्द्र के "बोधि-सत्वा-वदान कल्पलता" में "मिलिन्द" के स्थान में "मिलिन्द्र" मिलता है ×। ऐतिहासिक प्लूटार्क लिख गया है कि मेनन्द्र के मरने पर उसका भस्मावशेष भिन्न भिन्न नगरों में बँटा था +। मेनन्द्र और आपलदत के सिक्के ईस्वी पहली शताब्दी तक भड़ोच में चलते थे। उन सिक्कों का इतना अधिक प्रचार था कि ईस्वी आठवीं शताब्दी तक गुजरात के प्राचीन राजा लोग उनका अनुकरण

---

* मालविकाग्निमित्र (Bombay Sanskrit Series) पृ० १५१.

† Numismatic Chronicle Vol. X. p. 227.

‡ मिलिन्द पंचहो (परिषद् ग्रन्थावली २१) पृ० ४–४०.

× Journal of the Budhist Text Society, 1904, Vol. VII, pt. iii, pp. 1–6.

+ Numismatic Chronicle, Vol. X. p. 229.

करते थे। मेनन्द्र के पाँच प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर यूनानी देवता पैलास की मूर्त्ति है *। इनके छोटे और बड़े इस प्रकार दो उपविभाग हैं। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति है †। इसके भी छोटे और बड़े दो विभाग हैं। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए और हाथ में शूल लिए हुए राजा का आधा शरीर और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति है ‡। इसके भी तीन उपविभाग हैं—एक छोटे सिक्कों का, दूसरा बड़े सिक्कों का और तीसरा उन सिक्कों का जिनमें राजा के मस्तक पर मुकुट के बदले शिरस्त्राण है ×। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर पैलास की और दूसरी ओर उल्लू की मूर्त्ति है ÷। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा

---

* P. M. C., Vol. I, p. 54. Nos. 373–78, I, M. C., Vol. 1, pp. 23–24, Nos. 25–45.

† Ibid, pp. 22–23, Nos. 1–23; P. M. C., Vol. 1, p. 54. Nos. 379–81.

‡ Ibid, p. 55, No. 382. I. M. C., Vol. 1, pp. 24–26; Nos. 46–47.

× Ibid, p, 58. No. 479.

÷ Ibid, p. 26, Nos 77–78. P. M. C. Vol. 1, p. 59. No. 480.

का मस्तक और दूसरी ओर पत्नयुक्त देवमूर्त्ति है*। इन पाँच प्रकार के सिक्कों के अतिरिक्त मेनन्द्र के और भी दो प्रकार के सिक्के मिले हैं जो बहुत ही दुष्प्राप्य हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर एक घुड़सवार की मूर्त्ति † और दूसरे प्रकार के सिक्कों पर सवार के बदले में केवल घोड़े की मूर्त्ति है ‡। साधारणतः मेनन्द्र के सात प्रकार के ताँबे के सिक्के दिखाई पड़ते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूनानी देवता पैलास और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है ×। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर चर्म्म पर राक्षस का मुख है +। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर साँड़ की मूर्त्ति और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है ÷। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मुख और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति

---

* Ibid, No. 481.

† Ibid, p. 63.

‡ Ibid,

× Ibid, pp. 59–60. Nos. 482–94; I. M. C. Vol. 1. p. 26, Nos. 78–82.

+ Ibid, Nos. 83–84; P. M. C., Vol 1. p. 60. Nos. 495–99.

÷ Ibid. p. 61, Nos. 500–02, I. M. C., Vol. 1, p. 27, No 594–95 A.

है*। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति है†। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी का मस्तक और दूसरी ओर एक गदा है‡। सातवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर योद्धा के वेश में राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक बाघ की मूर्त्ति है×। इनके अतिरिक्त मेनन्द्र के ताँबे के कुछ दुष्प्राप्य सिक्के भी हैं, जिनकी सूची ह्वाइटहेड ने दी है। इनमें से छः प्रकार के सिक्के दूसरी तरह के सिक्के कहे जा सकते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर चक्र और दूसरी ओर तालवृक्ष की शाखा है+। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर हरक्यूलस का सिंहचर्म है÷। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर अंकुश है=। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सूअर का मस्तक और दूसरी ओर तालवृक्ष की

---

* P. M. C., Vol. 1. p. 61, Nos, 503–05.

† P. M. C. Vol. 1, p. 61, No, 506.

‡ I. M. C. Vol. 1, p. 27, Nos. 85–93; P. M. C. Vol. 1, p. 62, Nos. 507–14.

× Ibid, No. 515.

+ B. M. C., Vol. XII. 7.

÷ P. M. C. Vol. 1, p. 63, No. X.

= B. M. C., pl. XXXI. 11.

जाता है *। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर वाह्लीक देश के ऊँट की मूर्त्ति और दूसरी ओर बैल का सिर है †। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर खरगोश है‡।

मेनन्द्र के बाद के यूनानी राजाओं में जोइल, द्वितीय आन्तिमख, अमित और हेरमय के सिक्के उल्लेख-योग्य हैं। जोइल, के दो प्रकार के चाँदी के और तीन प्रक.र के ताँबे के सिक्के मिले हैं। उसके चाँदी के सिक्के गोलाकार हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर हरक्यूलस की मूर्ति × और दूसरे प्रकार के सिक्कों पर हरक्यूलस की मूर्त्ति के बदले में पैलास की मूर्ति है+। पहले प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर अपोलो की मूर्त्ति और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है ÷ । दूसरे प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर त्रिपद

---

* Ibid, XXXI. 12.

† Ibid, XXXI. 10; I. M. C. Vol. 1, p. 27, No. 96.

‡ B. M. C. XXXI. 9.

× P. M. C. Vol. 1, p. 65, Nos. 522–25; I. M. C., Vol. 1, p. 28, Nos. 3–4.

+ Ibid, Nos. 1–2, P. M. C. Vol. 1, pp. 65–67, Nos. 526–40.

÷ Ibid, p. 67, No. 541–45; I. M. C. Vol. 1, p. 29, No. 5.

वेदी है*। तीसरे प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर सिंह के चमड़े का शिरस्त्राण पहने हुए हरक्यूलस का मस्तक और दूसरी ओर कोषबद्ध धनु और गदा है †। आन्तिमख के एक प्रकार के चाँदी के सिक्के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। चाँदी के सिक्कों पर एक ओर विजया देवी और दूसरी ओर घुड़सवार की मूर्ति है ‡। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर राक्षस का मुख (Gorgon's Head) और दूसरी ओर माला है ×। अमित के दो प्रकार के चाँदी के सिक्के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर ज्यूपिटर की मूर्त्ति है +। दूसरे प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर हाथ में राजदण्ड लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति है ÷। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पैलास की मूर्त्ति है। ये सिक्के चौकोर हैं =।

---

* P. M. C., Vol. 1, pp. 67-68, Nos. 546-49.

† Ibid, p. 68, No. ii.

‡ Ibid, p. 70, Nos. 557-72; I. M. C. Vol. I, p. 29, Nos. 1-14.

× P. M. C., Vol. 1, pp. 70-71, Nos. 573-74.

\+ Ibid, p. 78, Nos. 635-36; I. M. C., Vol. 1, p. 31, No. 1

÷ P. M. C. Vol. 1, p. 78, No. 637.

= Ibid, p. 79, Nos. 638-39; I. M. C. Vol. 1, p. 31, Nos. 2-3.

हेरमय सम्भवतः भारत का अंतिम यूनानी राजा था; क्योंकि उसके तांबे के कई सिक्कों पर एक ओर यूनानी भाषा में उसका नाम और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों और प्राकृत भाषा में कुषणवंशी राजा कुयुल कदफिस का नाम है। इससे सिद्ध होता है कि जब शक जाति ने अफगानिस्तान और पंजाब पर अधिकार कर लिया था, उसके बाद भी उन देशों पर यूनानी राजाओं का अधिकार था। क्योंकि कुषणवंशी शक जाति के आक्रमण से पहले बहुत दिनों तक दूसरी शक जाति के राजाओं ने उत्तरापथ पर अधिकार कर रखा था। हेरमय के तीन प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा और उसकी स्त्री 'केलियप' (Kalliope) की मूर्त्ति और दूसरी ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है†। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर शिरस्त्राण पहने हुए राजा के मस्तक के बदले में मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक है‡। हेरमय के चार प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों

---

* Ibid, p. 31, Nos. 1-2, P. M. C. Vol. 1, p. 86, Nos. 693-98.

† I. M. C., Vol. 1, p. 32, Nos. 2-9.

‡ Ibid, No. 1; P. M. C., Vol. 1, pp. 82-83, Nos. 648-62.

पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है†। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर एक घोड़े की मूर्त्ति है‡। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और यूनानी भाषा में राजा का नाम और उपाधि और दूसरी ओर मुकुट पहने हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति और खरोष्ठी अक्षरों और प्राकृत भाषा में "कुजुलकससकुषण यवुगसध्रम ठिदस" लिखा है×।

---

* Ibid, pp. 83-84, Nos. 663-78; I. M. C. Vol. 1, pp. 32-33. Nos. 10-21A.

† Ibid, p. 33, No. 22, P. M. C. V0l. 1, p. 85, Nos. 682-92.

‡ Ibid, p. 84, Nos. 679-81, I. M. C. Vol. 1, p. 33, Nos, 23-26.

× Ibid pp. 33-34, Nos. 1-15; P. M. C., Vol. 1, pp. 178-79, Nos. 1-7.

चौथा परिच्छेद

विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(ख) शक राजाओं के सिक्के

ईसा के जन्म से प्रायः दो सौ वर्ष पहले तक उत्तरापथ पर केवल यूनानियों का ही आक्रमण नहीं हुआ था, बल्कि कई बार अनेक बर्बर जातियों ने भी भारत पर अपना प्रभुत्व जमाया था। प्राचीन मुद्राओं से इन सब जातियों के राजाओं के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है। उत्तरापथ में बर्बर राजाओं के हजारों सिक्के मिले हैं। इन सब सिक्कों से मुद्रातत्त्वविद् लोगों ने कम से कम तीन भिन्न बर्बर राजवंशों का पता लगाया है। यद्यपि इन सब बर्बर जातियों के तुषार, गर्दभिल्ल आदि अलग अलग नाम थे, तथापि उत्तरापथ में इन सबको लोग शक ही कहते थे। जिस प्रकार मुगल साम्राज्य के अंतिम समय में पठानों के अतिरिक्त एशिया के अन्यान्य देशों के सभी मुसलमान मुगल कहलाते थे, उसी प्रकार मुसलमानों के आने से पहले भारतवासी सभी विदेशी जातियों को शक कहा करते थे। भविष्य पुराण आदि अपेक्षाकृत हाल के पुराणों से पता चलता है कि जम्बू द्वीप अर्थात् भारतवर्ष से सटा हुआ देश ही शक द्वीप है*। शक द्वीप का विवरण देखने से साफ

*Indian Antiquary, 1908, p.42; भविष्यपुराण, १४६ अध्याय।

मालूम होता है कि किसी समय प्राचीन ईरान या फारस तक का प्रदेश शक द्वीप के अन्तर्गत माना जाता था। पहले मुद्रा-तत्त्वविद् लोग शक जातीय राजाओं को दो भागों में विभक्त किया करते थे—प्राचीन शक और कुषण। परन्तु अब ये राजा लोग तीन भागों में विभक्त किए जाते हैं—शक, पारद और कुषण। जो जाति भारत के इतिहास में प्राचीन शक जाति कही गई है, वह पहले चीन राज्य की सीमा पर रहा करती थी। जब ईयूची जाति ने उस जाति को हरा दिया, तब उसने वहाँ से हटकर वक्षु नदी के उत्तर किनारे पर उपनिवेश स्थापित किया था*। एक बार फारस के हखामानोषीय वंश और यूनानी राजाओं के साथ इस जाति के लोगों का कुछ झगड़ा भी हुआ था†। वक्षु नदी का उत्तर तीर शक जाति का निवास-स्थान था, इसलिये भारतवासी उसे शक द्वीप कहते थे और यूनानी लोग उसे सोगडियाना (Soghdiana) कहते थे।

मुद्रातत्त्वविद् लोग अनुमान करते हैं कि ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी के अन्त में वाह्लीक अथवा बैक्ट्रिया देश पर शक जाति ने अधिकार कर लिया था। चीन देश के कई इतिहासकार लिख गए हैं कि ईसा पूर्वाब्द १६५ के उपरान्त

---

* Indian Antiquary, 1908, p. 32.
† Indian Coins, p. 7.

ईयूची जाति ने शक लोगों पर आक्रमण करके उन्हें वाह्लीक देश पर अधिकार करने के लिये विवश किया था *। शक राजाओं ने पहले पूर्ववर्त्ती यूनानी राजाओं की मुद्रा का अनुकरण करना आरम्भ किया था † और तब पीछे से वे स्वयं अपने नाम से स्वतंत्र मुद्राएँ अंकित करने लगे थे। शक-वंशी राजाओं के जो सिक्के अब तक मिले हैं, उनमें से मोअर नाम का सिक्का सबसे अधिक प्राचीन है ‡। प्रायः ५० वर्ष पहले प्राचीन तक्षशिला के खँड़हरों में एक ताम्रलेख मिला था जिसमें मोग नामक एक राजा के ७८ वें वर्ष का उल्लेख था ×। कुछ पुरातत्त्व लोग अनुमान करते हैं कि उक्त ताम्रपत्र मोग के राजत्व काल में किसी अज्ञात संवत् के ७८ वें वर्ष में खोदा गया होगा +। दूसरे पक्ष के मत से यह ताम्रपत्र मोग के संवत् के ७८ वें वर्ष का खोदा हुआ है ÷। ताम्रलिपि का मोग और सिक्कों पर का मोअ एक ही व्यक्ति हैं। परन्तु डाक्टर फ्लीट आदि कुछ पुरातत्त्ववेताओं के मत से मोग और मोअ दोनों अलग अलग व्यक्ति हैं =। तक्षशिला

---

* Indian Antiquary, 1908, p. 32.

† Coins of Ancient India, p. 35.

‡ Indian Coins. p. 7.

× Epigraphia Indica, Vol, IV, p. 54.

+ Journal of the Royal Asiatic Society, 1914, p. 995.

÷ Ibid, p. 986.

= Ibid, 1907, pp. 1013-40.

की ताम्रलिपि और सिक्कों के अतिरिक्त मोग अथवा मोअ का अस्तित्व प्रमाणित करनेवाला और कोई प्रमाण अब तक नहीं मिला है। मोग अथवा मोअ के अब तक दो प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में राजदंड लिए ज्यूपिटर की मूर्ति और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्ति है *। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंहासन पर बैठी हुई देव मूर्ति और दूसरी ओर विजया देवी को हाथ में लेकर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है †। मोग के १४ प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी का मस्तक और दूसरी ओर ग्रीक देवता मर्करी के हाथ का दण्ड (Caduceus) है ‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों में एक ओर ग्रीक देवता आर्तमिस् और दूसरी ओर वृष या साँड़ की मूर्त्ति है ×। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर चंद्र देवता और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है +। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंहासन पर

---

* P. M. C. Vol. 1, p. 98, Nos 1-3; I. M. C., Vol 1, p. 39. Nos. 6-6 A.

† P. M. C. Vol. 1, p. 98, No. 4.

‡ P. M. C., Vol. 1, p. 98, Nos. 5-9; I. M. C., Vol. 1. p. 38. Nos. 1-5.

× Ibid, p. 39, Nos. 7-10; P. M. C., Vol. 1, p. 99, Nos. 10-12.

+ Ibid, Nos. 13-14.

बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति और दूसरी ओर नगर-देवता की मूर्त्ति है *। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर ज्यूपिटर और एक किसी दूसरे देवता की मूर्त्ति और दूसरी ओर किसी और देवता की मूर्त्ति है †। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर अपोलो और दूसरी ओर त्रिपद वेदी है ‡। सातवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर वरुण (Poseidon) और दूसरी ओर एक स्त्री की मूर्त्ति है। इस प्रकार के सिक्कों के दो उपविभाग हैं। प्रथम विभाग में वरुण के हाथ में त्रिशूल × और दूसरे विभाग में उसके बदले में वज्र + मिलता है। आठवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर गदाधारी देवमूर्त्ति और दूसरी ओर देवीमूर्त्ति है ÷। नवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है =। दसवें प्रकार के सिक्कों पर विजया देवी की मूर्त्ति के बदले में किसी और अज्ञात देवी की मूर्त्ति है**। ग्यारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर एक हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर

---

* Ibid, No. 15.

† Ibid, p. 100, No. 16.

‡ Ibid, Nos. 17-19.

× Ibid, Nos. 20-22.

+ Ibid, p. 101, No. 23.

÷ Ibid, Nos. 25-26.

= Ibid, p. 102, No. 27.

** Ibid, No. 28.

उच्च आसन पर बैठे हुए राजा की मूर्ति है*। ये दोनों मूर्त्तियाँ चौकोर क्षेत्र में अंकित हैं। बारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है। इस प्रकार के सिक्कों के भी दो उपविभाग हैं। पहले विभाग में हाथी दौड़ता हुआ चला जाता है †; परन्तु दूसरे विभाग में वह धीरे धीरे चलता हुआ जान पड़ता है ‡। तेरहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े की मूर्त्ति और दूसरी ओर धनुष है ×। चौदहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस की और दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है + ।

रैप्सन, विन्सेन्ट स्मिथ आदि मुद्रातत्त्वविद् लोगों के मत से वोनोन (Vonones) मोअ वा मोग के ही वंश का है अथवा दोनों एक ही वंश के हैं ÷। इन लोगों के मत के अनुसार वोनोन के बाद अय हुआ है = । किंतु श्रीयुक्त ह्वाइटहेट के मत के अनुसार अय के बाद वोनोन हुआ है**। उनका कथन है—"मुद्रातत्त्वविद् लोग साधारणतः अनुमान करते हैं कि मोअ

---

* Ibid, Nos. 29-31; I. M. C., Vol. 1. p 40. Nos. 12-13.
† P. M. C., Vol. 1, p. 102, Nos, 32-33.
‡ Ibid, p. 103, No 34.
× Ibid, No. 35.
+ I. M. C., Vol. 1, p. 39, No. 11.
÷ Indian Coins, p. 8.
= I. M. C., Vol. 1, pp. 40-43.
** P. M. C., Vol. 1, pp. 103-04.

वा मोग के बाद अय हुआ है *। मोग के उपरान्त वोनोन कन्धार और सीस्तान का राजा हुआ था और अय ने पंजाब पर अधिकार प्राप्त किया था।" परन्तु यह मत साधारणतः सब लोग स्वीकृत नहीं करते। गार्डनर † और वोन्स साले इस मत के प्रवर्त्तक हैं; किन्तु आगे चलकर यह मत विशेष प्रचलित न हो सका। मोअ वा मोग, वोनोन अथवा अय के राजत्वकाल की खुदी हुई कोई लिपि अथवा लेख अब तक नहीं मिला है‡। अतः दूसरे प्रमाणों के अभाव में स्मिथ और रैप्सन का उक्त मत ग्रहण करना ही उचित जान पड़ता है। वोनोन की कोई स्वतंत्र मुद्रा अब तक नहीं मिली है। जिन मुद्राओं पर उसका नाम मिला है, उनमें से कई मुद्राओं पर एक ओर उसका नाम और दूसरी ओर उसके भाई स्पलहोर का नाम है ×। एक ओर यूनानी अक्षरों में वोनोन का नाम और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में स्पलहोर का नाम मिलता है। कई मुद्राओं में एक ओर वोनोन का नाम और दूसरी ओर स्पलहोर के पुत्र स्पलगदम का नाम भी मिलता है +। वोनोन

* Ibid, p. 92.

† B. M. C., p. xii.

‡ कुछ विद्वानों के मत से तक्षशिला में मिला हुआ ताम्रपट्ट मोग के राजत्वकाल का खुदा हुआ है।

× I. M. C., Vol. 1, pp. 40–41. Nos. 1–8; P. M. C., Vol. 1, pp. 141–142, Nos. 372–381.

+ Ibid, p. 142, Nos. 382–85; I. M. C., Vol. 1, p. 42. Nos. 1–3.

और स्पलहोर दोनों के नामवाले सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्के चाँदी के बने हुए और गोलाकार हैं *। इन पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में वज्र लिए ज्यूपिटर की मूर्त्ति मिलती है। दूसरे प्रकार के सिक्के ताँबे के बने हुए और चौकोर हैं। ऐसे सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है †। वोनोन और स्पलगदम दोनों के नामवाले सिक्के भी दो प्रकार के मिले हैं। वे सब भी सब प्रकार से वोनोन और स्पलहोर के चाँदी और ताँबेवाले सिक्कों के समान ही हैं ‡। ताँबे के कुछ सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों में स्पलहोर का नाम और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में उसके पुत्र स्पलगदम का नाम भी मिलता है ×। इस प्रकार के सिक्के भी दो तरह के हैं। एक गोलाकार और दूसरे चौकोर। इस प्रकार के कुछ सिक्कों पर स्पालिरिष नामक एक राजा का नाम भी मिलता है। कुछ सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों

---

* Ibid, p. 40, Nos. 1-3; P. M. C. Vol. I, p. 141, Nos. 372-74.

† Ibid, pp. 141-42, Nos. 375-81; I. M. C. Vol. 1, p. 41. Nos. 4-8.

‡ Ibid, p. 42, Nos. 1-3; P. M. C., Vol. 1, p. 142, Nos. 382-85.

× Ibid, p, 143, Nos. 386-93; I. M. C., Vol. 1, p. 41. Nos. 1-3.

में स्पालिरिष का नाम और उपाधि और दूसरी ओर—"महरज भ्रत ध्रमियस स्पलिरिशस" लिखा हुआ है *। ऐसे सिक्के सब प्रकार से वोनोन और स्पलहोर के नामोंवाले चाँदी के सिक्कों के समान हैं। कुछ सिक्कों पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों लिपियों में स्पालिरिष का नाम और उपाधि दी हुई है †; परन्तु उनमें स्पालिरिष का सम्पर्क बतलानेवाली कोई बात नहीं है। इस प्रकार के सिक्के ताँबे के बने हुए और चौकोर हैं। इनमें एक ओर हाथ में शूल लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है। पर चाँदी और ताँबे के कुछ सिक्कों पर एक ओर स्पालिरिष और दूसरी ओर अय का नाम भी मिलता है ‡। इस प्रकार के चाँदी के सिक्के सब प्रकार से वोनोन और स्पलहार के नामोंवाले चाँदी के सिक्कों के समान ही हैं। ताँबे के सिक्के गोलाकार हैं। उनमें एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और यूनानी अक्षरों में स्पालिरिष का नाम और उपाधि तथा दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में अय का नाम और उपाधि दी हुई मिलती है ×। इन दोनों ही प्रकार के सिक्कों पर

---

* P. M. C., Vol. 1, p. 143, No. 394.

† Ibid, p. 144, Nos. 397–98; I. M. C. Vol. 1, p. 42, Nos. 1–3.

‡ P, M. C; Vol. 1, p. 144.

× Ibid, No. 396.

खरोष्ठी अक्षरों में "महरजस," "महतकस," "अयस" लिखा रहता है। एक प्रकार के सिक्कों में एक ओर मोअ और दूसरी ओर अय का भी नाम है *। इससे मुद्रातत्त्वविद् ह्वाइटहेट अनुमान करते हैं कि वोनोन के साथ अय का कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु हम यह पहले ही बतला चुके हैं कि एक ही सिक्के पर अय के साथ स्पालिरिष का नाम भी मिलता है। स्पालिरिष का सिक्का देखने से साफ़ पता चल जाता है कि उसके साथ वोनोन का निकट सम्बन्ध था। ऐसी अवस्था में यह नहीं माना जा सकता कि वोनोन के साथ अय का कोई सम्बन्ध नहीं था अथवा वह वोनोन के बाद हुआ था।

अय का न तो कोई खुदा हुआ लेख मिलता है और न किसी पश्चिमी अथवा पूर्वी ऐतिहासिक ग्रन्थ में उसका कोई उल्लेख ही मिलता है। परन्तु अय के कई प्रकार के सिक्के मिले हैं। विन्सेन्ट स्मिथ कहते हैं कि अय नाम के दो राजा हुए थे †। परन्तु ह्वाइटहेड अय नाम के एक से अधिक राजा का अस्तित्व मानने के लिये तैयार नहीं हैं ‡। सर जान मार्शल ने तक्षशिला के खँडहरों में से खरोष्ठी लिपि में खोदा हुआ चाँदी का जो पत्तर या लेख ढूँढ़ निकाला है, उसे देखने से पता चलता है कि अय ने एक संवत् चलाया था और खुषण

---

* Ibid, p. 93.

† I. M. C., Vol. 1, pp. 43, 52.

‡ P. M. C. Vol. 1, p. 93.

(कुषण) वंशीय किसी राजा के राजत्वकाल में इस संवत् के १३५ वें वर्ष में तक्षशिला के निवासी एक व्यक्ति ने एक स्तूप में भगवान् बुद्ध का शरीरांश रखा था*। अय के तेरह प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार हाथ में शूल लिए हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में राजदण्ड लिए हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है†। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर ज्यूपिटर के हाथ में राजदण्ड के बदले वज्र है ‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर वज्र चलाने के लिये तैयार ज्यूपिटर की मूर्त्ति है × । चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में चाबुक लिए और घोड़े पर सवार राज-मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में विजया देवी को लिए हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है + । पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार हाथ में शूल लिए हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में वज्र लिए हुए पालास की मूर्त्ति है ÷ ।

---

*Journal of the Royal Asiatic Society, 1914, pp. 975-76. बहुत से लोगों को अय के चलाए हुए संवत् के सम्बन्ध में सन्देह है।

† P. M. C., Vol. 1, p. 104, No. 36.

‡ Ibid, Vol. 1. pp 104-05, Nos 41-53.

× Ibid, Vol. 1, p. 104, Nos. 37-40; I. M. C. Vol. 1, p. 43, Nos, 3-6.

+ P. M. C., pp. 106-12, Nos, 54-126.

÷ Ibid, pp. 112-14. Nos. 127-144; I. M. C., Vol. 1, p. 44, Nos. 12-16.

छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में चाबुक लिए घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है। पालास बाईं ओर खड़ा है *। सातवें प्रकार के सिक्कों पर पालास अपने दोनों हाथ फैलाए हुए खड़ा है †। आठवें प्रकार के सिक्कों पर पालास दाहिनी ओर खड़ा है ‡। नवें प्रकार के सिक्कों पर पालास दोनों हाथों में मुकुट लिए हुए उसे अपने मस्तक पर धारण कर रहा है ×। दसवें प्रकार के सिक्कों पर पालास के बदले वरुण (Poseidon) की मूर्त्ति है +। ग्यारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार हाथ में शूल लिए हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में तालवृक्ष की शाखा लिए हुए देवी की मूर्त्ति है ÷। बारहवें प्रकार के सिक्कों पर देवी के हाथ में तालवृक्ष की शाखा के बदले त्रिशूल है =। तेरहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर

---

* P. M. C., Vol. 1, p. 114, Nos. 145–48.

† Ibid, pp. 114–15, Nos. 149–65.

‡ Ibid, p. 116; No. 166; I. M. C., Vol., 1, p. 44, Nos. 17–72.

× Ibid, Nos. 9–11, P. M. C., Vol. 1, pp. 116–17, Nos. 167–76.

+ Ibid, p. 177–78; I. M. C , Vol, 1, p, 43, No. 7.

÷ P. M. C. Vol. 1, pp. 117–18. Nos. 179–84.

= I. M. C., Vol. 1. p. 43, No. 8. ये सिक्के ग्यारहवें प्रकार के सिक्के भी हो सकते हैं।

ज्यूपिटर की और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है *। अय के अब तक चौबीस प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर उच्च आसन पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर यूनानी देवता हरमिस (Hermes) की मूर्त्ति है †। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंहासन पर बैठे हुए डिमिटर (Demeter) की मूर्त्ति और दूसरी ओर हरमिस की मूर्त्ति है ‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हरमिस और दूसरी ओर डिमिटर की मूर्त्ति है ×। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंह और दूसरी ओर डिमिटर की मूर्त्ति है +। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर डिमिटर की मूर्त्ति है ÷। ये पाँचो प्रकार के सिक्के गोलाकार हैं। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर वरुण और दूसरी

---

* P. M. C. Vol. 1, p. 118, Nos. 185–87; I. M. C., Vol. 1, p. 43, Nos. 1–2.

† Ibid, p. 47, Nos. 60–74; P. M. C., Vol. 1, pp. 118–20. Nos. 188–208.

‡ Ibid, p. 120, Nos. 209–17; I. M. C., Vol. I, pp. 49–47, Nos. 49–59.

× P. M. C. Vol. 1, p. 121, Nos. 218–19.

+ Ibid, pp. 121–22, Nos. 220–30.

÷ Ibid, p. 122, Nos. 231–40.

ओर एक स्त्री की मूर्त्ति है *। सातवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर गदाधारी देवमूर्त्ति और दूसरी ओर देवी की मूर्त्ति है †। आठवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है ‡। नवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस और दूसरी ओर एक घोड़े की मूर्त्ति है ×। दसवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति है + । ग्यारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर खड़े हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति है ÷। छठे प्रकार से ग्यारहवें प्रकार तक के सिक्के चौकोर हैं। बारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर साँड़ और दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है =। तेरहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति

---

* Ibid, pp. 122-23, Nos. 241-49; I. M. C., Vol. 1, p. 48, Nos. 76-77A.

† P. M. C., Vol. 1, p. 123, No. 250.

‡ Ibid, p. 124, Nos. 251-53,

× Ibid, No. 254.

+ Ibid, No. 255; I. M. C., Vol. 1, p, 49, Nos 85-86.

÷ P. M. C., Vol. 1, p. 125, No. 256.

= Ibid, pp. 225-27, Nos. 257-82; I. M. C. Vol. 1, pp. 45-46, Nos.34-48A.

है*। चौदहवें प्रकार का सिक्का भी इसी तरह का है, परन्तु वह चौकोर है†। पन्द्रहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक साँड़ की मूर्त्ति है‡। यह भी चौकोर है। सोलहवें प्रकार का सिक्का भी ऐसा ही है, परन्तु वह गोलाकार है×। सत्रहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर ऊँट पर सवार राजा की मूर्त्ति है और दूसरी ओर एक चँवर की मूर्त्ति है+। यह भी चौकोर है। अट्ठारहवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है। यह गोलाकार है÷। उन्नीसवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूनानी देवता हेफाइस्टस (Hephaistos) और दूसरी ओर एक सिंह की मूर्त्ति है=। यह चौकोर है। बीसवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर

---

* Ibid, p. 45, Nos. 23-33; P. M. C., Vol. 1, p. 127, Nos. 283-89.

† Ibid, p. 128, No. 289A.

‡ Ibid, pp. 128-29, Nos. 290-303; I. M. C., Vol. 1, p. 48, Nos, 79-84.

× P. M. C., Vol. 1, p. 192, No. 304.

+ Ibid, Nos. 305-07; I. M. C., Vol. 1, p. 48, No 78.

÷ P. M. C., Vol. 1, p. 129, No. 308.

= Ibid, p. 130, No. 309.

एक सिंह की मूर्त्ति है*। इक्कीसवें प्रकार के सिक्कों पर एक उच्चासन बैठे हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है†। बाईसवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है‡। तेईसवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर विजया देवी को हाथ में लेकर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है×। तेइसवें प्रकार के इन सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों में और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में अय का नाम और उपाधि दी हुई है। चौबीसवें प्रकार के सिक्के गोलाकार हैं। उन पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और यूनानी अक्षरों में अय का नाम तथा उपाधि और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति तथा खरोष्ठी अक्षरों में—"इंद्रवर्म पुत्रस अस्पवर्मस स्त्रतेगस जयतस" लिखा हुआ है। इनके अतिरिक्त अय के और भी दो एक प्रकार के ताँबे के दुष्प्राप्य सिक्के हैं+। मुद्रातत्त्व-विद् ह्वाइटहेड ने उनकी सूची दी है÷। चाँदी और ताँबे के कई सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों में अय का नाम और

---

*I. M. C., Vol. 1, p. 49, No. 87.

† Ibid, p. 48, No. 75.

‡ P. M. C. Vol. 1, p. 131.

× Journal of the Asiatic Society of Bengal. N. S., Vol. VI. p. 562.

+ I. M. C., Vol. 1, pp. 52–54, Nos. 1–27; P. M. C., Vol. 1, pp. 310–18.

÷ Ibid, p. 131,

उपाधि तथा दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में अयिलिष का नाम और उपाधि है *। इस प्रकार के सिक्के बहुत ही दुष्प्राप्य हैं। इनमें तीन प्रकार के चाँदी के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों में एक ओर घोड़े पर सवार और हाथ में शूल लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में तालवृक्ष की शाखा लिए हुए देवी की मूर्त्ति है †। दूसरे प्रकार के सिक्कों में दूसरी ओर हाथ में तालवृक्ष की शाखा लिए हुए देवी की मूर्त्ति के बदले हाथ में वज्र लिए हुए पालास की मूर्त्ति है ‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में चाबुक लिए हुए घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर विजया देवी को हाथ में लिए खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है ×। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर हरक्यूलस की मूर्त्ति और दूसरी ओर घोड़े की मूर्त्ति है +।

अब तक अयिलिष के दस प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं जो सबके सब गोलाकार हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर

---

* Ibid, p. 132.

† Ibid, No. 319.

‡ Numismatic Chronicle, 1890, p. 150, pl. X. 2. (Coins, of the Sakas, pl. VII, 2.)

× B. M. C. p. 92, No.1, pl. XX, 3.

+ Journal of the Asiatic Society of Bengal, Numismatic Supplement, XIV. N. S., Vol. VI, p. 562.

एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर विजया देवी को हाथ में धारण किए खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में शूल तथा तालवृक्ष की शाखा लिए हुए दो सवार (Dioskouroi) हैं †। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर विजया देवी को हाथ में लिए सिंहासन पर बैठे हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति और दूसरे प्रकार के सिक्कों की तरह दो सवारों की मूर्त्ति है ‡ । चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में शूल लिए हुए दो सैनिकों की मूर्त्ति है ×। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है + । छठे प्रकार के सिक्कों पर पालास की मूर्त्ति के बदले में लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है ÷ । सातवें प्रकार के सिक्कों पर लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति के बदले में किसी अज्ञात देवता और देवी की मूर्त्ति है =।

---

* P. M. C., Vol. 1. p. 133, Nos, 320–22.

† Ibid, Nos. 323–24.

‡ Ibid, p. 134, Nos. 325–26.

× Ibid, Nos. 327–28.

+ Ibid, p. 135, No. 331; I. M. C.. Vol. 1, p. 49, Nos. 1–2.

÷ P. M. C. Vol. 1, p. 135, Nos. 332–33.

= Ibid, p. 334–35.

आठवें प्रकार के सिक्कों पर देवता और देवी की मूर्त्तियों के बदले में नगर देवता की मूर्त्ति है* । नवें प्रकार के सिक्कों पर नगर देवता की मूर्त्ति के बदले हाथ में तालवृक्ष की शाखा लिए हुए देवी की मूर्त्ति है †। दसवें प्रकार के सिक्कों में देवता और देवी की मूर्त्तियों के बदले हाथ में शूल लेकर खड़े हुए सैनिक की मूर्त्ति है ‡। अयिलिष के सब मिलाकर बारह प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं, जिनमें से सात प्रकार के सिक्के प्रायः देखने में आते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए नंगे हरक्यूलस की मूर्त्ति है× । दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक घोड़े की मूर्त्ति है+ । तीसरे प्रकार के सिक्कों पर दूसरी ओर घोड़े के बदले में साँड़ की मूर्त्ति है ÷ । चौथे प्रकार के सिक्कों पर साँड़ के बदले में हाथी की मूर्त्ति है = । पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर

* Ibid, p. 136, No. 336.

† Ibid, pp. 136-38, Nos. 337-52, I. M. C. Vol. 1, pp. 49-50, Nos. 3-6.

‡ P. M. C., Vol. 1, p. 134, Nos. 329-30.

× Ibid, p. 138, Nos. 353-56.

+ Ibid, No. 357.

÷ Ibid, p. 139, Nos. 358-60; I. M. C., Vol. 1, p. 50, Nos. 7-8.

= P. M. C., Vol. 1, p. 139, Nos. 361-62.

एक ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है *। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर देवी की मूर्त्ति है †। सातवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए यूनानी देवता हेफाइस्टस (Hephaistos) की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक सिंह की मूर्त्ति है‡। अयिलिष के पाँच प्रकार के दुष्प्राप्य सिक्कों की सूची मिस्टर ह्वाइटहेड ने तैयार की है ×।

मोअ, वोनोन, अय, अयिलिष आदि शक राजाओं के सिक्कों के उपरान्त मुद्रातत्त्वविद् लोग सिक्कों के आकार पर निर्भर होकर गुदुफर आदि पारदवंशी राजाओं के सिक्कों का समय निश्चित करते हैं।+ अय के एक प्रकार के ताँबे के सिक्के पर अय के साथ स्ट्रैटेगस (सेनापति, Strategos) इंद्रवर्मा के पुत्र अस्पवर्मा का नाम मिलता है। गुदुफर के बहुत से सिक्के ऐसे हैं जो कई धातुओं के मेल से बने हैं। उनमें एक ओर गुदुफर का नाम और दूसरी ओर इंद्रवर्मा के पुत्र अस्पवर्मा का नाम है ÷। मुद्रातत्त्वविद् ह्वाइटहेड ने इन सिक्कों का आकार देखते हुए निश्चित किया है कि ये सिक्के गुदुफर के

* Ibid, Nos. 363-64.
† Ibid, p. 140, Nos.365-68.
‡ Ibid Nos. 369-71.
× Ibid, p. 141.
+ Indian Coins, p. 15,
÷ P. M. C., Vol. 1. p. 150.

है*; क्योंकि इनके एक ओर जो यूनानी अक्षर हैं, वे इतने अशुद्ध हैं कि उन्हें ठीक ठीक पढ़ना असम्भव है। यदि मि० ह्वाइटहेड का यह अनुमान ठीक हो तो अय अथवा अयिलिष के बहुत ही थोड़े समय के उपरान्त गुदुफर का काल निश्चित करना पड़ता है। हम पहले अपने "शकाधिकारकाल और कनिष्क" नामक प्रबन्ध में दिखला चुके हैं कि गुदुफर के "तख्ते बहाई" वाले शिलालेख के अक्षर कनिष्क और हुविष्क के राज्यकाल के खरोष्ठी अक्षरों की अपेक्षा प्राचीन नहीं हैं†। परन्तु ईसाई धर्मशास्त्रों पर विश्वास रखते हुए पाश्चात्य विद्वान् यह मत ग्रहण नहीं कर सकते‡। कहते हैं कि ईसा का शिष्य टामस गुदुफर के राज्यकाल में भारत में आया था। इसी प्रवाद के आधार पर वे लोग ईसा की पहली शताब्दी के प्रथमार्द्ध में गुदुफर का समय निश्चित करना चाहते हैं×। परन्तु प्रत्नलिपितत्त्व के फल के अनुसार यह असम्भव है। सिक्कों के अतिरिक्त ईसा के शिष्य टामस के बनाए हुए "हैम प्रवाद" (Legenda Aurea—Golden Legend) नामक धर्मप्रचार सम्बन्धी ग्रन्थ में+ और "तख्ते-बहाई" नामक स्थान में मिले हुए किसी

---

* Ibid, Foot Note, 1.

† Indian Antiquary, 1908, pp. 47–48; साहित्य-परिषद्-पत्रिका, १४वाँ भाग, अतिरिक्त संख्या पृ० ३५.

‡ Journal of the Royal Asiatic Society, 1907, p. 1039.

× Bishop Medlycott's India and the Apostle Thomas, pp. 1–17.

+ V. S. Smith's Early History of India, pp. 231–32.

संवत् के १०३ रे वर्ष के और गुदुफर के राजत्वकाल के २६ वें वर्ष में खुदे हुए एक शिलालेख में* गुदुफर का नाम मिला है। गुदुफर का चाँदी का कोई सिक्का अभी तक नहीं मिला। हाँ, कई धातुओं के मेल से और ताँबे के बने हुए उसके बहुत से सिक्के मिले हैं। उसके मिश्र धातुओं के बने हुए सिक्के सात प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है †। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर ज्यूपिटर की मूर्त्ति के बदले में पालास की मूर्त्ति है ‡। इन दोनों प्रकार के सिक्कों पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों अक्षरों में गुदुफर का नाम और उपाधि दी हुई है। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है; किन्तु खरोष्ठी अक्षरों में— "जयतस पतरस इंद्रवर्मपुत्रस स्रतेगस अस्पवर्मस" लिखा हुआ है ×। चौथे और पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में गुदुफर के नाम और उपाधि के बाद "सस" नामक एक राजा का नाम मिलता है। यह "सस" सेनापति

---

* Journal Asiatique, 8 me Serie, tom. 15, 1890, pt. 1, p. 119, et la planche.

† P. M. C., Vol. 1, 146, Nos. 1-7.

‡ Ibid, p. 150, No. 38; I. M. C. Vol. 1, p. 54, No. 1.

× P. M. C. Vol. 1, p. 150, Nos. 35-37.

अस्पवर्मा का भतीजा था; क्योंकि तक्षशिला के खँडहरों में मिले हुए चाँदी के एक सिक्के पर "महरजस अस्पभत पुत्रस प्रतरस ससस" लिखा हुआ है *। चौथे प्रकार के सिक्के सब बातों में पहले प्रकार के सिक्कों की तरह के ही हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि चौथे प्रकार के सिक्कों में जिस ओर खरोष्ठी लिपि है, उसी ओर गुदुफर के नाम के बाद सस का नाम भी है †। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर विजया देवी को हाथ में लेकर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है ‡। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में त्रिशूल लिए हुए महादेव की मूर्त्ति है ×। सातवें प्रकार के सिक्के छठे प्रकार के सिक्कों के समान ही हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि सातवें प्रकार के सिक्कों में शिव के दाहिने हाथ में नहीं बल्कि बाएँ हाथ में त्रिशूल है +। साधारणतः गुदुफर के तीन प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और

---

* Journal of the Royal Asiatic Society, 1914, p. 980.

† P. M. C., Vol. 1, pp. 147-48, Nos, 8-19; I. M. C., Vol. 1, pp. 54-55, Nos. 2-6.

‡ Ibid, p. 55, Nos. 7-11; P. M. C. Vol. 1, pp. 148-49, Nos. 20-34.

× Ibid, p. 151, Nos. 40-44.

+ Ibid, p. 152, Nos. 45-46.

दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है†। ये दोनों प्रकार के सिक्के गोल हैं। तीसरे प्रकार के सिक्के चौकोर हैं और उनमें एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर गुदुफर का चिह्न या लांछन है‡। इसके अतिरिक्त गुदुफर के ताँबे के और भी कई दुष्प्राप्य सिक्के हैं जिनकी सूची मुद्रातत्त्वविद् ह्वाइट हेड ने तैयार की है×।

गुदुफर के उपरान्त अबदगश (Abdagases) नामक एक और राजा का राज्य हुआ था। यह गुदुफर का भतीजा था; पर अभी तक इस बात का पता नहीं लग सका है कि यह गुदुफर के कितने दिनों बाद सिंहासन पर बैठा था। किसी ऐतिहासिक ग्रन्थ अथवा शिलालेख में भी अब तक अबदगश का नाम नहीं मिला है। इसके दो प्रकार के मिश्र धातुओं के और एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर ज्यूपिटर की मूर्त्ति है+। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक

---

* Ibid, p. 151, Nos. 39-41.

† I. M. C., Vol. 1, p. 56, Nos. 12-18; P. M. C. Vol. 1, p. 152, Nos, 47-59.

‡ Ibid, p. 153.

× Ibid.

+ I. M. C., Vol. 1 p. 57, No. 2, P. M. C. Vol. 1, pp. 153-54, Nos. 61-63.

ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर विजया देवी को हाथ में लेकर खड़े हुए ज्यूपिटर की मूर्त्ति है*। इन दोनों प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों में अबदगश का नाम और उपाधि और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में "महरजस रजतिरजस गदफर भ्रतपुत्रस अबदगश" लिखा हुआ है†। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर विजया देवी की मूर्त्ति है। परन्तु उसमें खरोष्ठी लिपि में "गदफर भ्रतपुत्रस" विशेषण नहीं मिलता‡। इसके बाद अर्थाग्न (Orthagnes) या गुद्रण ×, सनबर + (Sanab.res) पकुर ÷ (Pakores) आदि राजाओं के सिक्कों के आधार पर उन लोगों का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ता है। अर्थाग्न या गुद्रण के साथ संभवतः गुदुफर का कोई सम्बन्ध था; क्योंकि इनके कई ताँबे के सिक्कों पर "गुदफरस गुदण" विशेषण है।= परन्तु अब तक यह निर्णय नहीं हुआ कि इस विशेषण का अर्थ क्या है।

---

* Ibid, p. 154, Nos. 64–65; I. M. C., Vol. 1, p. 57, No. 3.

† पहले प्रकार के सिक्कों में "रजतिरजस" के बदले "एतरस" लिखा है।

‡ I. M. C., Vol. 1, pp. 154–55, Nos. 66–71.

× Ibid, pp. 155–56; I. M. C. Vol. 1. pp. 57–58.

\+ B. M. C., p. 113.

÷ I. M. C., Vol. 1, p. 58, Nos. 1–8; P. M. C. Vol. 1, pp. 155–57, Nos. 76–81.

= Ibid, p. 155, Note 1.

मोअ, अय आदि पारद वंशीय राजाओ के अधः पतन के समय उनके प्रादेशिक शासनकर्त्ताओं ने अपने नाम से सिक्के चलाना आरम्भ कर दिया था*। इनमें से जिहुनिय (Zeionises), आर्त के पुत्र खरउस्त (Kharahostes), हगान, हगामाष, राजुवुल वा राजुल और शोडास के सिक्के मिले हैं। इनमें से राजुवुल और शोडास के नामों का पता मथुरा में मिले हुए कई शिलालेखों से चलता है†। इन सब शिलालेखों के अक्षरों को देखने से साफ मालूम होता है कि राजुवुल और शोडास वास्तव में कनिष्क, हुविष्क और वासुदेव आदि कुषणवंशीय राजाओं के पहले हुए थे और संभवतः ईसा से पूर्व पहली शताब्दी के बाद हुए थे। जिहुनिय के चाँदी और तांबे के सिक्के मिले हैं। चाँदी के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर नगर देवता के द्वारा राजा के अभिषेक का चित्र है‡। इन सब सिक्कों पर दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में "मखिगुलस छत्रपस पुत्रस छत्रपस जिहुनिअस" लिखा हुआ है। जिहुनिय के दो प्रकार के तांबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक

---

* Indian Coins. pp. 8–9.

† Epigraphia Indica, Vol. II, p. 199, No. 2; Ibid, Vol, IX, p. 246; Cunningham, Archaeological Survey Reports, Vol XX, p. 48, pl. V. 4.

‡ P. M. C. Vol, 1, p. 157, Nos. 82–83; I. M. C. Vol. 1, pp. 58–59, No. I.

ओर एक साँड़ और दूसरी ओर एक सिंह की मूर्त्ति है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है†। खरउस्त के केवल ताँबे के सिक्के मिले हैं जो दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजमूर्त्ति और दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर सिंह की मर्त्ति के बदले में देवमूर्त्ति है×। इन दोनों प्रकार के सिक्कों पर दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में "छत्रपस प्र खरउस्तस अटस पुत्रस" लिखा हुआ है। हगान, हगामाष, राजुवुल और शोडाश के सिक्के अधिक संख्या में मथुरा में ही मिले हैं; इसी लिये ये सब लोग मथुरा के छत्रप (Satrap) प्रसिद्ध हुए हैं। ताँबे के कई सिक्कों पर हगान और हगामाष दोनों के नाम एक साथ मिलते हैं+; और ताँबे के कुछ सिक्कों पर केवल हगामाष का ही नाम मिलता है÷; इन सब सिक्कों पर यूनानी लिपि के चिह्न नहीं मिलते। राजुवुल के मिश्र धातु के सिक्के मिले हैं

---

* Ibid, p. 59, Nos. 2-7; P. M, C., Vol. 1, p. 158, Nos, 84-90.

† Ibid, No, III.

‡ Ibid, p. 159, Nos, 91-92,

× Ibid, No, 93.

+ I. M. C. Vol. 1, p. 195, Nos. 1-6; Cunningham's Coins of Ancient India, p. 87.

÷ Ibid, I. M. C., Vol. 1, pp. 195-96, Nos. 1-10.

जिनमें ताँबा और सीसा दोनों धातुएँ हैं। मिश्र धातुओं के इन सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर पालास की मूर्त्ति है *। ताँबे के सिक्कों पर दोनों ओर देवी की मूर्त्ति है †। सीसे के सिक्कों पर एक ओर सिंह और दूसरी ओर हरक्यूलस की मूर्त्ति है‡। राजुबुल के सिक्कों पर एक ओर अशुद्ध यूनानी लिपि मिलती है। मथुरा में मिले हुए एक लेख से पता चलता है कि शोडास राजुबुल का पुत्र था ×। शोडास के एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। इनमें एक ओर किसी देवी की मूर्त्ति और दूसरी ओर लक्ष्मी की मूर्त्ति है+। इन सब सिक्कों पर यूनानी अक्षरों के चिह्न नहीं मिलते।

मुद्रातत्त्वविद् लोग हेरअ (Heraos) ÷, हिरकोड (Hyrkodes) =, सपलेज (Sapaleiyes)**, सेइगाचारी

---

* P. M. C., Vol. 1, p. 166, Nos. 130–32; I. M. C., Vol. 1, p. 196, Nos 1–2.

† Ibid, No. 3.

‡ P. M. C. Vol. 1, p. 166, No. 133.

× Cunningham's Archaeological Survey Reports, Vol. XX, p. 48; Coins of Ancient India, p–87.

+ I. M. C. Vol. 1, pp. 196–97, Nos. 1–6.

÷ P. M. C., Vol. 1, pp. 163–64, Nos. 115–17; I. M. C. Vol. 1, p. 94, No. 1.

= Ibid, pp. 93–94, Nos. 1–11; P. M. C., Vol. 1, pp. 164–65, Nos. 118–28.

** Ibid, p. 166; I. M. C., Vol. 1, p. 94, Nos. 1–2.

(Phseigacharis) * आदि अनेक राजाओं के नाम सिक्कों की तालिका में प्रविष्ट करा देते हैं। परन्तु अब तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला है कि ये सब राजा भारतीय थे। इन लोगों के सिक्कों में केवल यूनानी भाषा और यूनानी अक्षरों का ही व्यवहार है। इसलिये संभवतः ये लोग शकस्तान अथवा फारस के शकजातीय राजा थे। पंजाब और अफगानिस्तान में एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। उनमें से अधिकांश सिक्कों पर केवल यूनानी अक्षर ही मिलते हैं †। लेकिन किसी किसी सिक्के पर यूनानी और खरोष्ठी दोनों वर्णमालाएँ मिलती हैं‡। इन सब सिक्कों पर राजा की केवल उपाधि मिलती है, नाम नहीं मिलता। रैप्सन ने इन्हें कुषणवंशीय राजा बतलाया है ×। परन्तु विन्सेन्ट स्मिथ और ह्वाइटहेड ने पारदवंशीय राजाओं की जो सूची दी है, उसी में इन सब सिक्कों का भी विवरण दिया है +। मुद्रातत्त्वविषयक ग्रन्थों में ये राजा नामहीन राजा कहे जाते हैं ÷ ।

---

* P. M. C. Vol. 1, p. 166, No. 129.

† Ibid, p. 160, Nos. 94–95; pp. 161–63, Nos. 100–12.

‡ Ibid, pp. 160–61, Nos. 96–99; I. M. C., Vol. 1, p. 61, Nos. 32–34.

× Indian Coins, p. 16.

+ I. M. C., Vol. 1, p. 59; P. M. C. Vol. 1, p. 160.

÷ Indian Coins, p. 16.

पाँचवाँ परिच्छेद

विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(ग) कुषणवंशी राजाओं के सिक्के

पाश्चात्य ऐतिहासिक जस्टिन (Justin) लिख गया है कि ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में भिन्न भिन्न शक जातियों के आक्रमण के कारण वाह्लीक (Bactria) और शक स्थान (Soghdiana) से यूनानी राजाओं का अधिकार उठ गया था। चीन देश के प्रथम हन् राजवंश के इतिहास से पता चलता है कि ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में वाह्लीक पर आक्रमण करनेवाली बर्बर जाति का नाम इयूची था। यह जाति पहले चीन देश की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर रहा करती थी। इसके पास ही हिंग-नू नामक एक और पराक्रान्त जाति रहती थी। बाद में यही जाति पश्चिम में हन् (Hun) और भारत में हूण नाम से प्रसिद्ध हुई थी। ईसा से पूर्व सन् २०१ और १६५ में इयूची जाति को हिंग-नू जाति ने हराया था, जिसके कारण उसे अपना पुराना निवासस्थान छोड़ना पड़ा था। इयूची लोगों ने पश्चिम की ओर भागकर वक्षु (Oxus) नदी के किनारे पर अधिकार किया था। चीन के राजदूत चाङ-कियान ने ईसा से पूर्व सन् १२६ और १५५ के बीच में

किसी समय उन लोगों को वत्तु नदी के उत्तर किनारे पर देखा था। इसके थोड़े ही दिनों बाद इयूची लोगों ने वत्तु नदी पार करके वाह्लीक देश की राजधानी पर अधिकार कर लिया था। उस समय उन लोगों का अधिकार पश्चिम में पारद राज्य तक और पूर्व में काबुल की तराई तक था। उस स्थान पर ईयूची जाति छोटे छोटे पाँच राज्यों में विभक्त हो गई थी। इस घटना के प्रायः सौ वर्ष बाद इयूची जाति की कुई-शुयाङ् शाखा के अधिपति किउ चीउ किउ ने इयूची जाति की पाँचो शाखाओं को एकत्र करके हिन्दूकुश पर्वत के पूर्व ओर के कुछ प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। जब ८० वर्ष की अवस्था में किउ चीउ किउ की मृत्यु हो गई, तब उसके पुत्र येनकाउ चिङ्काई ने भारत पर अधिकार करके अपने सेनापतियों को भिन्न भिन्न प्रदेशों पर शासन करने के लिये नियुक्त किया था। चीन देश के द्वितीय हन् राजवंश के इतिहास में भारत पर इयूचा जाति के अधिकार का विवरण दिया हुआ है। जब पाश्चात्य विद्वानों ने आर्मेनिया देश के प्राचीन इतिहास में लिखे हुए कुषणवंश और चीन के इतिहास में लिखे हुए कुई-शुयाङ वंश का एक ही ठहराया, तब निश्चित हुआ कि काबुल से यूनानी राज्य उठानेवाला किउ चिउ किउ और सिक्कोंवाला कुजुलकदफिस या कुयुलकदफिस दोनों एक ही व्यक्ति हैं *।

*White Huns and Kindred Tribes in the History of the Northwest-Frontier. Indian Antiquary, 1905, pp. 75–76.

मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि कुयुलकस, कुयुलकफस और कुयुलकदफिस तीनों नाम एक ही व्यक्ति के हैं*। किउ चिउ किउ का पुत्र येन्काउचिङ्ताई और सिक्कोंवाला विमकपिश वा Ooemo Kadphises एक ही व्यक्ति हैं। विमकपिश वा विमकदफिस के उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में पुरातत्त्ववेत्ताओं में मतभेद है। रैप्सन, टामस, स्मिथ आदि विद्वानों के मतानुसार विमकदफिस का उत्तराधिकारी कनिष्क था और उसके बाद वासिष्क, हुविष्क और वासुदेव ने कुषण साम्राज्य का अधिकार प्राप्त किया था†। फ्लीट, केनेडी आदि पुरातत्त्ववेत्ता कहते हैं कि कनिष्क से वासुदेव तक के कुषण राजा कुयुलकदफिस से पहले हुए थे‡। "शकाधिकार काल और कनिष्क" नामक निबन्ध में हमें इस विषय में फ्लीट और केनेडी का मत ठीक नहीं जान पड़ा, इसलिये हमने रैप्सन और स्मिथ का ही मत ग्रहण किया है ×।

मुद्रातत्त्वविद् लोग एकमत होकर यह बात मानते हैं कि

---

* P. M. C., Vol. 1, p.173.

† Journal of the Royal Asiatic Society, 1913, p. 912, Indian Coins, pp. 16-18, I M. C., Vol. 1, pp.65-69.

‡ Journal of the Royal Asiatic Society, 1913, pp. 969-71.

× Indian Antiquary, 1908, p. 50; साहित्य परिषद् पत्रिका १५ वाँ भाग, अतिरिक्त संख्या, पृ० ३६।

कुषणवंशी राजाओं के सोने के सिक्के* तौल और आकार में रोम के सोने के सिक्कों के समान थे। रोम के सोने के सिक्के जूलियस सीज़र के राजत्व काल से ही ठीक तरह से बनने लगे थे। केनेडी ने यह प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि कनिष्क के सोने के सिक्के जूलियस सीज़र के सोने के सिक्कों की अपेक्षा पुराने हैं और वे सिक्के बनाने की माकिदिनीय (Macedonion) रीति के अनुसार बने हैं। इसलिये कुषणवंशी सोने के सिक्के रोम के सोने के सिक्कों का अनुकरण नहीं हो सकते†।

कुयुल वा कुजुलकदफिस के केवल ताँबे के ही सिक्के मिले हैं। उसके कई सिक्के हेरमय के एक प्रकार के ताँबे के सिक्कों के समान हैं। उन पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर हरक्यूलस की मूर्त्ति है; और यूनानी अक्षरों में हेरमय का नाम और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में कुयुलकदफिस का नाम है‡। इससे मुद्रातत्त्वविद् अनुमान करते हैं कि हेरमय को अपने राजत्व के अंतिम काल में कुषण राज्य की अधीनता स्वीकृत करने के लिये बाध्य होना पड़ा था। कुयुलकदफिस के समय का खुदा हुआ कोई लेख अब तक नहीं मिला। चीन के ऐतिहासिकों की बातों के आधार पर कहा जा सकता

---

* Journal of theRoyal Asiatic Society, 1913, p. 941.

† Ibid, 1912, p. 999; 1913, p. 935.

‡ P. M. C, Vol. 1, pp. 178–179, Nos. 1–7, I. M. C., Vol. 1, pp. 33–34, Nos, 1–15.

है कि कुयुलकदफिस ने ईसवी पहली शताब्दी के प्रारंभ में ही इयूची जाति की पाँचों शाखाओं को एकत्र करके काबुल पर अधिकार किया था। पहले स्मिथ ने कहा था कि कुयुल-कदफिस ईसवी पहली शताब्दी के मध्य भाग में अनुमानतः सन् ४५ में सिंहासन पर बैठा था*। परंतु पीछे से उन्होंने यह मत छोड़कर हमारा ही मत ग्रहण किया। टामस ने भी यही मत ग्रहण किया है†। क्योंकि उन्होंने यह माना है कि किउचिउकिउ ने ८० वर्ष की अवस्था में अनुमानतः ईसवी सन् ४० में शरीर-त्याग किया था‡।

कुयुलकदफिस के नाम के छः प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हेरमय का मस्तक और दूसरी ओर खड़े हुए हरक्यूलस की मूर्त्ति है। इनके दोनों ओर कुयुलकदफिस का नाम और उपाधि है×। इस तरह के सिक्के सब प्रकार से हेरमय और कुयुलकदफिस दोनों के नामोंवाले सिक्कों के समान हैं। केवल यूनानी अक्षरों में हेरमय के नाम और उपाधि के बदले में कुयुलकदफिस का नाम और उपाधि दी है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर

---

* I. M. C. Vol. 1, p. 64.

† Early History of India (3rd Edition) pp. 250–251, Note 1.

‡ Journal of the Royal Asiatic Society, 1913, p. 629.

× P. M. C. Vol. 1, p. 179 Nos. 8–15, I. M. C., Vol. 1, pp. 65–66. No. 1–4.

शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर माकिदिन देश की पैदल सेना की मूर्त्ति है*। तीसरे प्रकार के सिक्के रोम के सम्राट् आगस्टस के सिक्कों के समान हैं। उन पर एक ओर आगस्टस का मस्तक और दूसरी ओर उच्चासन पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति है†। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर साँड़ और दूसरी ओर ऊँट की मूर्त्ति है‡। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर आगस्टस का मस्तक और दूसरी ओर यूनान देश की विजया देवी की मूर्त्ति है×। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर अभय वा वरद आसन से बैठे हुए बुद्ध की और दूसरी ओर ज्यूपिटर की मूर्त्ति है+। ताँबे के इन सब सिक्कों पर जिस यूनानी भाषा का व्यवहार हुआ है, वह बहुत ही अशुद्ध है। कदफिस को Kadphizou अथवा Kadaphes लिखा है÷। खरोष्ठी अक्षरों में कदफिस के नाम के पहले वा पीछे "कुषणयवुगस ध्रमठदिस" लिखा है। इन सब सिक्कों पर कदफिस का नाम अलग अलग तरह से लिखा है:—

* Ibid, p. 66, No. 5.

† Ibid, pp. 66-67, Nos, 6-15, P. M. C., Vol. 1, p. 181. Nos. 24-28.

‡ Ibid, p. 180, Nos. 16-23; I. M. C; Vol. 1, p. 67, Nos, 16-24.

× Cunnigham's Coins of the Kushans, p. 65.

+ P. M. C., Vol. 1, pp. 181-82, Nos. 29-30,

÷ Ibid, pp. 178-181.

(१) महरयस्वरयरयस देवपुत्रस कुयुलकरकफ्सस

(२) कुयुलकरकपस महरयस रजतिरयस

(३) महरजस महतस कुषण कुयुलकफ्स

(४) महरजस रजतिरयस कुयुलकफ्स*

(५) (महरजस रजतिरजस) कुजुलकसस कुषण यवुगस ध्रमठिदश† ।

कुयुलकदफिस के पुत्र येन-काउ-चिङ-ताई वा विमकदफिस के राजत्वकाल से सम्भवतः कुषण राजा लोग सोने के सिक्के बनवाने लगे थे। विमकदफिस के सोने के कई बहुत बड़े बड़े सिक्के मिले हैं। ऐसे पाँच प्रकार के सोने के सिक्के देखने में आते हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा शिरस्त्राण और बहुत बड़ा परिच्छेद पहने हुए खाट पर बैठा है और दूसरी ओर महादेव हाथ में त्रिशूल लिए बैल के पास खड़े हैं। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा मुकुट और शिरस्त्राण पहने हुए मेघ पर बैठा है और दूसरी ओर महादेव पहले की तरह बैल की बगल में खड़े हैं× । तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर चौकोर क्षेत्र में राजा का मस्तक

---

* I. M. C., Vol. 1, p,67, Note 1.

† Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, (New Series) Vol. IX, p. 81.

‡ P. M. C., Vol. 1, p. 183, No. 31.

× Ibid, p. 214, No. ii; B. M. C., p. 124, No. 2.

है* । चौथे† और पाँचवें‡ प्रकार के सिक्कों का विस्तृत वर्णन अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। ये सब सिक्के डबल स्टेटर (Double Stater) कहलाते हैं। इन पर एक ओर यूनानी अक्षरों में Basileus Ooemo Kadphises और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में—"महरजसरजतिस सर्वलोक ईश्वरस महिश्वरस विम कद्फिसस" लिखा है। स्टेटर कहलाने-वाले सोने के छोटे सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर हाथ में त्रिशूल लेकर खड़े हुए शिव की मूर्ति है×। तौल में इससे आधे और सोने के सबसे छोटे सिक्कों पर एक ओर चौकोर क्षेत्र में राजा का मुख और दूसरी ओर वेदी पर त्रिशूल है+। विमकद्फिस का अब तक चाँदी का केवल एक ही सिक्का मिला है÷। ह्वाइटहेड का अनुमान है कि यह सिक्का नहीं है, बल्कि सोने वा ताँबे के सिक्कों की परीक्षा करने के लिये चाँदी का ढला हुआ साँचा है=। विमकद्फिस के एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर शिर-

---

* Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, (New Series) Vol. VI, p. 564.

† Cunningham's Coins of the Kushans, pl. XV. 3.

‡ Ibid, pl, XV, 5.

× P. M. C. Vol. 1, p. 183, Nos. 32-33, I. M. C. Vol. 1, p. 68. Nos. 1-4.

+ Ibid, No. 5, P. M. C., Vol. 1, p. 184, Nos. 34-35.

÷ B. M. C. p, 126, No. 11.

= P. M. C. Vol. 1, p. 174.

ऊाए और बहुत बड़ा परिच्छद पहने हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में त्रिशूल लेकर खड़े हुए शिव की मूर्त्ति है। आकार के अनुसार इस प्रकार के सिक्कों के तीन विभाग किए गए हैं—बड़े *, मझोले† और छोटे ‡। इनके अतिरिक्त विमक-द[illegible]ज के सोने और तांबे के दुष्प्राप्य सिक्के भी हैं जिनकी [illegible] हाइटहेड ने तैयार की है ×।

हम पहले कह आए हैं कि अधिकांश पुरातत्त्व-वेत्ताओं के मत[illegible]नुसार कनिष्क विमकद्फिस का उत्तराधिकारी था। भार[illegible] के अनेक स्थानों में कनिष्क के राज्यकाल के खुदे हुए शिला[illegible] और ताम्रपत्र मिले हैं। कनिष्क के नाम का एक शिलाले[illegible] रावलपिंडी के पास मणिक्याला नामक स्थान में एक स्तूप में मिला है +। बहावलपूर के पास सूईविहार नामक स्थान में कनिष्क के नाम का एक ताम्रपट्ट ÷ और पेशावर में एक बड़े स्तूप के ध्वंसावशेष में धातु का बना हुआ एक शरीर-निधान = (Relic Casket) मिला है। ये तीनों लेख

---

* Ibid, p. 184, Nos, 36–46, I. M. C. Vol. I. pp 68–69. Nos. 6–12.

† Ibid, p. 185–Nos. 47–48.

‡ Ibid, Nos. 49–52; I. M. C. Vol. I, p. 69, Nos. 13–16.

× Ibid, Nos. i–xiii.

\+ Journal Asiatique 9 me Serie Tome VII p. 1, pl, 1–2.

÷ Indian Antiquary Vol. X, p. 324, Vol. XI. p. 128.

= Annual Report of the Archaeological Survey of India, 1908–09, pp. 48–49.

खरोष्ठी अक्षरों में हैं। मथुरा में मिली हुई बहुत सी बौद्ध और जैन मूर्त्तियों के पादपीठ पर जो लेख हैं, उनमें कनिष्क का नाम और राज्यांक दिया हुआ है। ये सब मूर्त्तियाँ कनिष्क के पाँचवें से लेकर दसवें राज्यांक* के बीच में प्रतिष्ठित हुई थीं। कनिष्क के तीसरे राज्यांक में वाराणसी में प्रतिष्ठि[illegible]क बोधिसत्त्वमूर्त्ति के पादपीठ पर खुदे हुए लेख† से [illegible] होता है कि उस समय वाराणसी कनिष्क के साम्राज्य में थ[illegible]। बौद्ध धर्म्म के महायान मत के ग्रन्थों में और चीन तथा तिब्बत के इतिहासों में कई स्थानों पर कनिष्क का उल्लेख कि[illegible] है। परन्तु उन सब ग्रन्थों में अब तक कोई ऐसा [illegible]नीय प्रमाण नहीं मिला जिससे कनिष्क का समय निर्णय हो सकता हो। कनिष्क के समय के सम्बन्ध में किसी समय पुरातत्त्ववेत्ताओं में बहुत अधिक मतभेद था। हमने जिस समय "शकाधिकारकाल और कनिष्क" नामक निबन्ध लिखा था, उस समय कनिष्क के अभिषेक काल के सम्बन्ध में कम से कम ११ भिन्न भिन्न मत प्रचलित थे‡। परन्तु अब उनमें से केवल दो मत प्रचलित हैं—

(१) कनिष्क ईसवी सन् ७८ में सिंहासन पर बैठा था।

---

* Epigrapia Indica, Vol. X, app. p. 3, No. 18; p. 4, Nos. 21–22, p. 5, No. 23.

† Ibid, Vol. VIII, p. 176.

‡ Indian Antiquary, 1808, pp. 27–28.

है*। भिन्न भिन्न जातियों के देवताओं का ऐसा अपूर्व समा-
वेश शायद पहले कभी नहीं देखा गया था। रोम के सम्रा-
डेखिय गावालस् ने जिस समय रोम साम्राज्य के भिन्न भिन्न
प्रदेशों के देवताओं को रोम नगर के कैपिटल पर्वत-शीर्षवाले
मन्दिर में कृष्णवर्ण पत्थर एगेसार के प्रति सम्मान प्रदर्शि
कराने के लिये मँगवाया था, केनेडी का कथन है कि इ
समय एक बार भिन्न भिन्न देश ब्राज्य के भिन्न भिन्न जातियों
देवताओं का इस प्रकार अ कार यह नि हुआ था†। कनि
के सोने के सिक्के दो प्रकार । कुषण प्रकार के सिक्के
स्टेटर और दूसरे प्रकार के नाम मि के चौथाई हैं। इन
सिक्कों पर दूसरी ओर नीचे देवताओं की
मिलती हैं‡।

(१) Ardochsho.
(२) Arooaspo.
(३) Athsho = आतेस (आतिश) = अग्नि।
(४) Beddo = बुद्ध।
(५) Helios = सूर्य।
(६) Hephaistos.

---

* Ibid, 18 Indica Vol. X, rnal of the Royal Asiatic Society 1897, p n Antiquary,
† Ibid, 1912 Royal Asia
‡ P, M. C; Vo y Vol. X

(७) Manaobago.

(८) Mao = माह = चन्द्र ।

(९) Miiro = मिहिर = सूर्य ।

(१०) Mithro=मिथ्र=मित्र=सूर्य ।

(११) Mozdooano.

(१२) Nana.

(१३) Nanaia

(१४) Nanas

(१५) Oesho [illegible] पहेश ।

(१६) Orlagn

(१७) Pharro = [illegible] ।

(१८) Salene = चन्द्र ।

इन सब सिक्कों पर यूनानी अक्षरों और पारस्य भाषा में राजा का नाम और उपाधि दी हुई है। कनिष्क के तांबे के सिक्के तीन प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्के सोने के सिक्कों के समान हैं, परंतु उन पर यूनानी अक्षरों और यूनानी भाषा में राजा का नाम और उपाधि दी है*। दूसरे प्रकार के सिक्के भी ऐसे ही हैं, परंतु उन पर यूनानी अक्षरों और पारस्य भाषा में राजा का नाम [illegible] उप[illegible] है। तीसरे प्रकार के सिक्के

* Ibid, pp. [illegible] I. M. C., Vol. 1, pp. 71–72, Nos. 15–23.

† Ibid, pp. 72–75, [illegible]; P. M. C., Vol. 1, pp. 188–93, Nos. 68–113.

कुछ अधिक दुष्प्राप्य हैं। उन पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति के बदले में सिंहासन पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति है*। दूसरी ओर सोने के सिक्कों और पहले तथा दूसरे प्रकार के तांबे के सिक्कों की तरह भिन्न भिन्न देवताओं और देवियों की मूर्त्तियाँ हैं। अभी तक इस बात का निर्णय नहीं हुआ कि इस तरह के सिक्कों पर किस भाषा का व्यवहार होता था।

कनिष्क के बाद कुषण साम्[illegible] का अधिकार हुविष्क को मिला था। अब तक किसी प्र[illegible]श्चय नहीं हुआ है कि उसका राज्य कहाँ तक था[illegible] सम्वत् ३-१८ तक के खोदे हुए लेखों में कनिष्क का [illegible]मिलता है†। मथुरा के पास ईसापुर गाँव में मिले हुए एक शिलालेख में जो उक्त संवत् के २४ वें वर्ष खोदा गया था, वासिष्क नामक एक राजा का उल्लेख मिलता है‡। वासिष्क का अब तक कोई सिक्का नहीं मिला। कुषण संवत् के २८ वें वर्ष में खोदे हुए शिलालेख में जो मथुरा में मिला था, जान पड़ता है कि इसी वासिष्क का उल्लेख है×। परंतु कुषण संवत् के ३९ वें वर्ष से लेकर ६० वें वर्ष तक के खुदे हुए जो शिलालेख मथुरा में

---

* Ibid, p. 193, Nos. 114[illegible]

† Epigraphia [illegible] No. 925; pp. 4–5, Nos. 18–23; India[illegible] 1908, p. 67, Nos. 4–6.

‡ Journal of the [illegible]atic Society, 1910, p. 13[illegible]

× Indian Antiqua[illegible]XXXIII. p. 38, No. 8.

मिले हैं, उनमें केवल हुविष्क का ही उल्लेख मिलता है*। मथुरा के सिवा भारत के और किसी स्थान में हुविष्क का और कोई शिलालेख नहीं मिला। अफगानिस्तान में काबुल के उत्तर वारडाक नामक स्थान में मिले हुए शरीर-निधान पर के लेख से पता चलता है कि यह कुषण संवत् के ५१ वें वर्ष में हुविष्क के राज्यकाल में स्तूप में स्थापित हुआ था†। इससे सिद्ध होता है कि अफगानिस्तान का कुछ अंश भी हुविष्क के अधिकार में था। हुविष्क के सोने और ताँबे के बहुत से सिक्के मिले हैं। सोने के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर यूनानी, हिन्दू और पारसी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिलती हैं‡।

(१) Araeichsho.

(२) Ardochsho.

(३) Arooaspo.

(४) Athsho = आतिश = अग्नि।

(५) Ckando Komara Bizago = स्कन्दकुमार विशाख।

---

* Epigraphia Indica, Vol. X, app. pp. 8–11, Nos. 38–56.

† Ibid, Vol. XI, pp. 210–11.

‡ I. M. C., Vol. 1, pp. 76–79, Nos. 1–20, P. M. C., Vol. 1, pp. 194–97, Nos. 116–36.

(६) Ckando ·Komaro Bizago Maaceno = स्कन्द कुमार विशाख महासेन।

(७) Erakil = Hercules.

(८) Hero.

(९) Maaceno = महासेन।

(१०) Manaobago.

(११) Mao = माह = चंद्र।

(१२) Miiro = मिहिर् = सूर्य।

(१३) Miro + Mao = मिहिर और माह=सूर्य और चंद्र।

(१४) Mithro = मित्र = सूर्य।

(१५) Nana.

(१६) Nana + Oesho.

(१७) Nanashao.

(१८) Oachsho.

(१९) Oanindo.

(२०) Oesho = अहीश = महेश।

(२१) Pharro = अग्नि।

(२२) Riom.

(२३) Sarapo = शरभ।

(२४) Shaophoro.

(२५) Uron = वरुण।

हुविष्क के सोने के सिक्कों पर पहली ओर राजा का

मस्तक चार भिन्न भिन्न प्रकार से अंकित है * और उन पर यूनानी अक्षरों तथा प्राचीन पारसी भाषा में राजा का नाम और उपाधि दी है :—

Shaonano Shao Ooeshke Koshano = शाहंशाह हुविष्क कुषण=राजाधिराज कुषणवंशी हुविष्क।

साधारणतः हुविष्क के पाँच प्रकार के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। सभी सिक्कों पर दूसरी ओर भिन्न भिन्न देवी देवताओं की मूर्त्तियाँ हैं। केवल पहली ओर कुछ भेद है। पहले प्रकार के सिक्कों पर हाथी पर सवार हाथ में शूल और अंकुश लिए हुए और सिर पर मुकुट पहने हुए राजा की मूर्त्ति है †। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर खाट वा सिंहासन पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति है ‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर ऊँचे आसन पर बैठे हुए और मुकुट पहने हुए राजा की मूर्त्ति है ×। चौथे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर दक्षिण की तरफ

---

* I. M. C., Vol. 1, pp. 75-76; Numismatic Chronicle, 1892, p. 98.

† I. M. C., Vol. 1, pp. 79-81, Nos. 21-46; P. M. C. Vol. 1, pp. 198-202, Nos 137-172.

‡ Ibid, pp. 202-03, Nos. 173-85, I. M. C. Vol. 1. pp 82-83, Nos. 55-63.

× Ibid, p. 82, Nos. 47-54, P. M. C., Vol. 1, pp. 204-05, Nos. 186-202.

मुँह करके राजा बैठा हुआ है*। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर आसन पर बैठे हुए और बाँहें ऊपर उठाए हुए राजा की मूर्त्ति है †। इनके अतिरिक्त कनिंघम ने हुविष्क के ताँबे के कुछ दुष्प्राप्य सिक्के भी एकत्र किए थे‡।

हुविष्क के बाद वासुदेव (Bazdeo या Bazodeo) ने कुषण साम्राज्य का अधिकार पाया था। उसी समय से कुषण साम्राज्य की अवनति का आरम्भ हुआ था। मथुरा के सिवा और कहीं वासुदेव के खुदवाए हुए लेख नहीं मिले और न खरोष्ठी लेखों में वासुदेव का कोई उल्लेख मिलता है ×। इससे अनुमान होता है कि उस समय उत्तरापथ का पश्चिमांश और अफगानिस्तान कुषण राजाओं के हाथ से निकल गया था। कुषण सम्वत् के १४ वें वर्ष से लेकर ९८वें वर्ष तक के खुदे हुए और मथुरा में मिले हुए शिलालेखों में वासुदेव का नाम मिलता है +। हुविष्क और वासुदेव के एक प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि का व्यवहार मिलता है। हुविष्क के सिक्कों पर "गणेश" ÷ और वासुदेव के सिक्कों पर उसके

---

* Ibid, pp. 205-06, Nos. 203-05; I. M. C. Vol. 1, pp. 83-84, Nos. 64-76.

† P. M. C., Vol. 1, p. 206.

‡ Ibid, p. 207.

× Indian Antiquary, 1908, pp. 67-68.

+ Epigraphia Indica, Vol. X, App. pp. 1215, Nos. 60-77.

÷ I. M. C., Vol. 1, p. 81, Nos. 46.

नाम के शुरू के दो अक्षर* लिखे हैं। वासुदेव के सोने के सिक्कों पर केवल महादेव और नाना की मूर्त्ति मिलती है†। इन सब सिक्कों पर एक ओर अग्नि की वेदी के सामने खड़े हुए शिरस्त्राण और वर्म पहने हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर महादेव अथवा नाना की मूर्त्ति है। उसके ताँबे के सिक्कों पर दूसरी ओर महादेव की मूर्त्ति ‡ और दूसरे प्रकार के सिक्कों पर उसके बदले में सिंहासन पर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है×।

वासुदेव की मृत्यु अथवा राज्यच्युति के कुछ ही दिनों बाद, जान पड़ता है, कुषण साम्राज्य बहुत से छोटे छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था। कनिष्क और वासुदेव के सिक्कों के ढंग पर कनिष्क नाम के एक व्यक्ति ने और वासुदेव नाम के दो व्यक्तियों ने सिक्के बनवाए थे। ये लोग द्वितीय कनिष्क और द्वितीय तथा तृतीय वासुदेव कहलाते हैं। खरोष्ठी लेख का फिर से सम्पादन करते समय डा० लूडर्स ने कहा था कि यह कुषण वंश के कनिष्क नामक किसी दूसरे राजा के राज्य-काल में खोदा गया था+। उनके मतानुसार इस

---

* P. M. C. Vol. 1, p. 214, Nos. XI1.

† Ibid, pp. 208-09, Nos. 209-15; B. M. C, p. 159.

‡ P. M. C. Vol. 1, pp. 209-10, Nos. 215-26; I. M. C. Vol. 1, pp. 84-86, Nos. 8-34.

× Ibid, p. 86, Nos. 35-43, P. M. C., Vol. 1, pp. 210-11, Nos. 227-30.

\+ Indian Antiquary, 1913, p. 135.

द्वितीय कनिष्क ने वासिष्क के बाद पंजाब के पश्चिमी अंश पर अधिकार किया था। भारत के इतिहास का यह अंश अब तक अंधकारमय है। कुषण संवत् ३ से १० तक मथुरा में प्रथम कनिष्क का अधिकार था*। पंजाब का पश्चिमी अंश कुषण संवत् के १८ वें वर्ष में कनिष्क के अधिकार में था; क्योंकि उक्त संवत् में खुदे हुए मणिक्यलावाले स्तूप में मिले हुए एक शिलालेख में कनिष्क का उल्लेख है†। कुषण संवत् के २४ वें वर्ष में मथुरा में वासिष्क नाम के एक और राजा का राज्य था‡। संभवतः कुषण संवत् २८ तक मथुरा में उसी का राज्य था×। कुषण संवत् ३३ से ६० तक मथुरा में हुविष्क का अधिकार था+। पंजाब के पश्चिमी प्रान्त में कुषण संवत् १८ के बाद उक्त संवत् ४१ तक किसी लेख में कुषणवंशी किसी राजा का उल्लेख नहीं है। डा० लूडर्स ने दो कारणों से कुषण संवत् ४१ में कनिष्क नामक दूसरे राजा के होने की कल्पना की है। पहला कारण तो यह है कि आरे के शिलालेख में कनिष्क के पिता का नाम दिया है। हमने उसे "वसिष्प" पढ़ा था ÷। परन्तु डा० लूडर्स के मत से वह

---

*Epigraphia Indica Vol. X, App, pp. 3-5.

† Journal Asiatique, 9 me Serie Tome, VII, p. 1.

‡ Journal of Royal Asiatic Society, 1910, p, 1311.

× Inidan Antiquary, 1904, p. 38.

\+ Epigraphia Indica Vol. X, pp. 8-11.

÷ Indian Antiquary, 1908, p, 58.

"चमेष्प" है*। डा० लूडर्स ने जो पाठ उद्धृत किया है, वह मूल के अनुसार नहीं है; क्योंकि इससे पहले किसी शिलालेख अथवा प्राचीन सिक्के में इस तरह का "क्ष" नहीं देखा गया। अशोक के शहबाजगढ़ी†; और मानसेरा के अनुशासन में और यूनानी राजा क्षोइल के सिक्कों‡ में "क्ष" है। परन्तु आरे के शिलालेख के अक्षर के साथ अशोक के अनुशासन अथवा क्षोइल के सिक्के के अक्षर का कोई सादृश्य नहीं है। डा० लूडर्स का दूसरा कारण यह है कि मणिक्यालावाले शिलालेख के समय के बाद २३ वर्ष तक के किसी और शिलालेख में कनिष्क का नाम नहीं मिलता। परन्तु ये दोनों कारण ठीक नहीं जान पड़ते। पहली बात तो यह है कनिष्क के नाम के दो प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के बढ़िया बने हैं और उन पर केवल यूनानी अक्षरों का व्यवहार है। किन्तु दूसरे प्रकार के सिक्के पहले प्रकार के सिक्कों की तरह बढ़िया नहीं बने हैं और उन पर यूनानी तथा ब्राह्मी दोनों वर्णमालाएँ हैं। यदि दूसरे प्रकार के सिक्कों के साथ प्रथम वासुदेव के सिक्कों की तुलना की जाय, तो साफ पता लग जाता है कि कनिष्क के दूसरे प्रकार के सिक्के कभी प्रथम कनिष्क के सिक्के नहीं हो सकते; और साथ ही वे प्रथम वासुदेव के

---

* Ibid, 1913, p. 133.

† Epigraphia Indica, Vol. II, p. 455.

‡ P. M. C. Vol, 1, pp. 65-8.

राज्य काल के बाद बने हैं। अतः मुद्रातत्त्व की प्रचलित प्रणाली के अनुसार हमने इस तरह के सिक्के द्वितीय कनिष्क के सिक्के माने थे*। बहुत पहले कनिंघम ने भी सिक्कों के प्रमाण पर द्वितीय कनिष्क † और द्वितीय वासुदेव ‡ का अस्तित्व स्वीकृत किया था। मणिक्यालावाले शिलालेख के २३ वर्ष बाद का प्रथम कनिष्क का शिलालेख मिलना आश्चर्यजनक नहीं है। यदि द्वितीय कनिष्क का अस्तित्व मान भी लिया जाय, तो भी यह मानना पड़ेगा कि कुषण संवत् के प्रथमार्ध के अन्तिम भाग में प्रथम कनिष्क का साम्राज्य कम से कम दो भागों में विभक्त हो गया था। क्योंकि मथुरा में हुविष्क के राज्यकाल में कुषण संवत् ३८ और ४५ × में खुदा हुआ शिलालेख मिला है और आरे का शिलालेख उक्त संवत् के ४१वें वर्ष का खुदा हुआ है। आरे के शिलालेख में किसी कनिष्क के पिता का नाम है, किन्तु प्रथम कनिष्क के किसी शिलालेख में उसके पिता का नाम नहीं मिला। इसी लिये आरे के शिलालेखवाले कनिष्क को द्वितीय कनिष्क कहना युक्तिसंगत नहीं है। मुद्रातत्त्व के अनुसार द्वितीय कनिष्क प्रथम

---

* Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IV, p. 82.

† Numismatic Chronicle, 1893, pp. 118–19.

‡ Ibid.

× Epigrapia Indica, Vol. X, App. pp. 8–9.

वासुदेव के बाद हुआ था। इसलिये वह आरे के शिलालेख-वाला कनिष्क नहीं माना जा सकता।

जान पड़ता है कि प्रथम वासुदेव की मृत्यु के उपरांत द्वितीय वासुदेव कुषण साम्राज्य का अधिकारी हुआ था। उसके केवल सोने के सिक्के मिले हैं। ये सिक्के सीसतान, अफगानिस्तान और पंजाब में मिले हैं। इन सब सिक्कों पर राजा की बाईं ओर नीचे ब्राह्मी अक्षरों में "वसु" लिखा है*। इसके अतिरिक्त दोनों पैरों के बीच में और दाहिने हाथ के नीचे कई ब्राह्मी अक्षर हैं। जान पड़ता है, द्वितीय वासुदेव के उपरान्त द्वितीय कनिष्क सिंहासन पर बैठा था। अफगानिस्तान और पंजाब के अतिरिक्त और किसी स्थान में उसके सिक्के नहीं मिलते। उसके सिक्कों पर भी कई स्थानों में कई ब्राह्मी अक्षर हैं†। कनिंघम ने लिखा है कि द्वितीय कनिष्क के कई सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में "वसु" लिखा है‡। इससे अनुमान होता है कि द्वितीय वासुदेव ने कुछ समय के लिये द्वितीय कनिष्क की अधीनता स्वीकृत कर ली थी। द्वितीय कनिष्क के उपरांत संभवतः तृतीय वासुदेव सिंहासन पर

---

* I. M. C. Vol. 1, p. 87, Nos. 1-7; P. M. C. Vol. 1, p. 212, Nos. 236-37.

† Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IV, p. 84.

‡ Numismatic Chronicle, 1893, pp. 118-19.

बैठा था। द्वितीय कनिष्क और तृतीय वासुदेव के राज्यकाल के उपरांत कुषण राजाओं का अधिकार बहुत से छोटे छोटे खण्ड राज्यों में विभक्त हो गया था; क्योंकि उनके सोने के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे प्रायः कई ब्राह्मी अक्षर मिलते हैं। संभवतः ये सब अक्षर अधीनस्थ राजाओं के नामों के आदि के अक्षर हैं। मही, विरु और भृ* संभवतः महीधर, विरूटक और भृगु आदि करद राजाओं के नाम हैं। बाद के गुप्त सम्राटों के राजत्व काल में इसी स्थान पर अर्थात् राजा के बाएँ हाथ के नीचे समुद्र, चन्द्र, कुमार आदि गुप्त राजाओं के नाम दिए जाते थे। इस तुलना से पता लग जाता है कि कुषण वंश के अंतिम राजाओं के राजत्व काल में भिन्न भिन्न प्रादेशिक शासन-कर्ताओं या सम्राटों ने सिक्कों पर अपना नाम लिखने की प्रथा चलाई थी। तीसरे वासुदेव की मृत्यु के समय अथवा उसके थोड़े ही दिनों बाद कनिष्क के वंश का राज्य नष्ट हो गया था अथवा बहुत ही थोड़ी दूर तक रह गया था। उसी समय प्रादेशिक शासकों अथवा सामन्तों ने अपने नाम के सिक्के चलाना आरम्भ कर दिया था। ऐसे सिक्कों पर राजा का नाम पहले की तरह राजमूर्त्ति के बाएँ हाथ के नीचे लिखा रहता है। भद्र, पासन, वचर्ण, सयथ,

---

* Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IV, pp. 84-85.

सित, सेन या सेण और छू* आदि बहुत से राजाओं के नामों का पता चला है। ईसवी चौथी शताब्दी में किदर कुषण नामक एक जाति अथवा राजवंश ने अफगानिस्तान पर अपना अधिकार जमाया था। उसके सिक्के कुषण राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हैं और उन पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे राजा के नाम के बदले में जाति अथवा वंश का नाम किदर लिखा है†। कुछ सिक्कों पर किदर के बदले में "गडहर" लिखा है‡। इन सब सिक्कों पर दूसरी ओर राजा का नाम दिया है। किदर जाति या वंश के कृतवीर्य्य, सर्वयश, भास्वन्, शिलादित्य, प्रकाश, कुशल आदि राजाओं के सिक्के मिले हैं×। सिजिस्तान् या सीस्तान के प्रादेशिक राजा लोग बहुत दिनों तक सभी वासुदेवों के सिक्कों के ढंग पर सोने के सिक्के बनवाते थे+। ईसवी तीसरी और चौथी शताब्दी में पारस्य के राजा द्वितीय हुर्मज़्द÷ और प्रथम वराहराण= ने अपने नाम

---

* I. M. C. Vol. 1. pp. 88-89.

† Ibid, pp. 89-90.

‡ Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. IY, p. 92.

× Ibid, pp. 91-92.

+ I. M. C., Vol. 1, pp. 91-92, Nos, 1-5; P. M. C., Vol. 1, p. 212, Nos. 238-39.

÷ P. M. C., Vol. 1, p. 213, No. 240.

= Ibid, No. 241.

के इसी तरह के सिक्के बनवाए थे। उड़ीसा में कुषण राजाओं के ताँबे के सिक्कों के ढंग पर बने हुए एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं *; परन्तु ऐसे सिक्कों पर कुछ लिखा हुआ नहीं मिलता।

---

* I. M. C., Vol. 1, pp. 92-3, No. 1-9; Indian Coins, pp. 11 14.

छठा परिच्छेद

विदेशी सिक्कों का अनुकरण

(घ) जानपदों और गण राज्यों के सिक्के

ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी से ईसवी तीसरी या चौथी शताब्दी तक भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में नगर वा प्रदेश के अधिपति लोग अथवा साधारण तंत्र के अधिकारी लोग चाँदी अथवा ताँबे के सिक्के चलाया करते थे। ये सिक्के विदेशी सिक्कों का अनुकरण होते थे; क्योंकि यद्यपि कहीं कहीं ऐसे सिक्कों का आकार चौकोर होता है, तो भी उन पर कुछ न कुछ लिखा रहता है। साधारणतः ऐसे सिक्के बहुत दुष्प्राप्य हैं और उनका समय निश्चित करना बहुत ही कठिन है। इस तरह के सिक्कों में से तक्षशिला के सिक्के सबसे अधिक प्राचीन हैं। प्रोफेसर रेप्सन का अनुमान है कि सबसे पहले तक्षशिला में सिक्के बनाने के लिये साँचे या ठप्पे (die) का व्यवहार हुआ था*। पहले सिक्कों के एक ही ओर ठप्पे लगाया जाता था†। सम्भवतः धातु के पूरी तरह से जमने के कुछ पहले ही उन पर ठप्पा लगाया जाता था। इसी लिये ऐसे सिक्कों के सब किनारे

---

* Indian Coins, p. 14.

† Coins of Ancient India, pl. II.

कुछ ऊँचे रहते हैं*। पन्तलेव और अगथुक्लेय के ताँबे के सिक्के (जिन पर ब्राह्मी अक्षर हैं) इसी तरह के सिक्कों के ढंग पर बने हैं†। इसके बाद तक्षशिला के सिक्कों पर दोनों ओर ठप्पा लगाया जाता था‡। प्रोफेसर रेप्सन का अनुमान है कि इस तरह के सिक्कों पर यूनानी शिल्प का चिह्न मिलता है×। तक्षशिला के सिक्कों पर कुछ लिखा हुआ नहीं मिलता+ ।

प्राचीन काल में अयोध्या के सिक्के ठप्पे से नहीं बनते थे, बल्कि साँचे में ढलते थे। उन पर भी कुछ लिखा हुआ नहीं मिलता÷। इसके बाद के सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में राजा का नाम लिखा हुआ मिलता है। ये सब सिक्के भी साँचे में ढले हुए हैं। अयोध्या के अधिकांश राजाओं के नाम के अंत में "मित्र" शब्द मिलता है=। पंचाल के प्राचीन सिक्कों पर भी

---

* Indian Coins, p. 14.

† Ibid.

‡ Coins of Ancient India, pl. III.

× Indian Coins, p. 14.

+ कनिंघम ने तक्षशिला में मिले हुए ताँबे के कुछ सिक्कों पर ब्राह्मी और खरोष्ठी अक्षरों में "नेकम" वा "नेगम" लिखा देखकर अनुमान किया था कि ये सिक्के तक्षशिला के हैं। Coins of Ancient India, pp. 63-64; परन्तु वास्तव में ये "कुलकनिगम" चिह्न हैं। देखो Indian Coins, p. 3, और पृष्ठ ११ ।

÷ Indian Coins p. 11.

= Coins of Ancient India, pp. 93-94.

इसी तरह मित्र शब्द का व्यवहार है। परन्तु अब तक यह निर्णय नहीं हो सका कि अयोध्या के राजाओं के साथ पंचाल के राजाओं का सम्बन्ध था या नहीं। मूलदेव, वायदेव, विशाखदेव, धनदेव, सत्यमित्र, शिवदत्त, सूर्यमित्र, संघमित्र, विजयमित्र, माधव वर्म्मा, बहसतिमित्र, अयुमित्र, देवमित्र, इंद्रमित्र, कुमुदसेन और अजवर्म्मा * नामक राजाओं के सिक्के मिले हैं। इसी लिये ये लोग अयोध्या के राजा माने जाते हैं। इन लोगों के सिक्कों पर केवल ब्राह्मी अक्षरों का व्यवहार है।

युक्त प्रदेश के अलमोड़े जिले में मिश्र धातु के बने हुए एक नए प्रकार के सिक्के मिले हैं जो अन्यान्य भारतीय सिक्कों की अपेक्षा भारी हैं और जिन पर ब्राह्मी अक्षरों में शिवदत्त और शिवपालित नामक दो राजाओं के नाम लिखे मिलते हैं†। कई सिक्कों पर "महरजस अपलातस" लिखा है‡। कुछ लोगों का अनुमान है कि ये प्राचीन अपरांत देश के सिक्के हैं। परन्तु अपलात किसी व्यक्ति का भी नाम हो सकता है। मध्य प्रदेश के सागर जिले के पेरन नामक स्थान में एक प्रकार के बहुत पुराने ताँबे के सिक्के मिले हैं। प्रोफेसर रेप्सन के मत से इस तरह के सिक्के प्राचीन पुराण और नवीन ठप्पे से बने हुए

---

* I. M. C. Vol. 1, pp. 148–51; Coins of Ancient India, pp 91–94.

† Indian Coins, pp. 10–11.

‡ Coins of Ancient India, pp. 103–04.

सिक्कों के मध्यवर्त्ती हैं*। कभी कभी ऐसे सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि भी मिलती है। ताँबे के कुछ सिक्कों पर ब्राह्मी अथवा खरोष्ठी अक्षरों में 'राञ्ञ जनपदस" लिखा रहता है†। इसका अर्थ अब तक निश्चित नहीं हुआ। मि० स्मिथ का अनुमान है कि राञ्ञ शब्द का असली पाठ "राजञ्ञ" अर्थात् "क्षत्रिय" है‡। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में गांधार और यौधेय जातियों के साथ राजन्य जाति का भी उल्लेख है×। साँचे में ढले हुए ताँबे के कुछ सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में "काडस" भी लिखा रहता है+। बुहलर का अनुमान था कि "काट" या "काल" किसी विशिष्ट व्यक्ति का नाम है÷।

प्राचीन कौशाम्बी के खँडहरों में साँचे में ढले हुए ताँबे के बहुत से सिक्के मिलते हैं। उनमें से अनेक सिक्कों पर कुछ भी

---

* Indian Coins p. 11.

† Ibid, p. 12.

‡ I. M. C., Vol. 1, pp. 179-80. इस जाति के एक प्रकार के सिक्के पर ब्राह्मी और खरोष्ठी अक्षर मिलते हैं।

× गान्धारयशोवति-
हेमताक्षराजन्यखचरगव्याश्च।
यौधेयदासमेयाः
श्यामाकाः क्षेमधूर्ताश्च॥
—बृहत्संहिता १४-२८ Kern's Edition p. 92.

+ Coins of Ancient India p. 62.

÷ Iindian Coins p. 12.

लिखा नहीं रहता *। संयुक्त प्रदेश के इलाहाबाद जिले के पभोसा (प्राचीन प्रभास) गाँव के पास प्रभास पर्वत की एक गुफा के शिलालेख में राजा गोपालपुत्र वहसतिमित्र का उल्लेख है †। जिन सिक्कों पर कुछ लिखा है, उन पर वहसत-मित्र, अश्वघोष, पवत और जेठमित्र आदि राजाओं का नाम मिलता है ‡। मथुरा के खँड़हरों में से यूनानी और शक राजाओं के सिक्कों के साथ ताँबे के बहुत से प्राचीन सिक्के भी मिले हैं। इन सब सिक्कों पर वलभूति, पुरुषतत्व, भवदत्त, उत्तमदत्त, रामदत्त, गोमित्र, विष्णुमित्र, शेषदत्त, शिशुचन्द्रदत्त, कामदत्त, शिवदत्त, ब्रह्ममित्र और वीरसेन × आदि राजाओं के नाम और हगान, हगामाष और शोडास+ आदि शक जातीय क्षत्रपों के नाम मिलते हैं। इन सब सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों का व्यवहार है। केवल राजुवुल के सिक्कों पर यूनानी खरोष्ठी और ब्राह्मी तीनों वर्णमालाओं का व्यवहार है। संयुक्त प्रदेश के बरेली जिले में प्राचीन अहिच्छत्र के खँड़हरों में ताँबे

* Coins of Ancient India, p. 73.

† Epigraphia Indica, Vol. II, p. 242.

‡ Ibid, pp. 74–75; I. M. C. Vol. 1, p. 135, Nos. 1–4.

× Ibid, pp. 192–94; Coins of Ancient India, pp. 87–89. इलाहाबाद जिले के भंकाट नामक स्थान में वीरसेन नामक किसी राजा का एक शिलालेख मिला है। उस पर खुदे हुए अक्षर ईसा से पूर्व पहली शताब्दी के हैं। Epigraphia Indica, Vol. XI, p. 85.

+ देखो पृष्ठ ६६ ।

के बहुत पुराने सिक्के मिले हैं। इन सब सिक्कों पर जिन राजाओं के नाम मिलते हैं, उनके नाम के अन्त में "मित्र" शब्द भी है। ऐसे सिक्कों पर अग्निमित्र का नाम देखकर कुछ लोगों ने उन सिक्कों को पुष्यमित्र अथवा पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र के सिक्के माना है*। किन्तु मालव देश की वेत्रवती अथवा वेतवा नदी के किनारे विदिशा नगर में अग्निमित्र की राजधानी थी। विदिशा नगर से बहुत दूर अहिच्छत्र के खँड़हरों में अग्निमित्र के नाम के सबसे अधिक सिक्के मिले हैं। इसलिये ताँबे के ऐसे सिक्के सुंगवंशी अग्निमित्र के सिक्के नहीं हो सकते। इसी प्रमाण के आधार पर कनिंघम उन राजाओं को सुंगवंशी मानने के लिये तैयार नहीं हुए जिनके ताँबे के सिक्के अहिच्छत्र के खँड़हरों में मिले हैं†। रामनगर अथवा अहिच्छत्र के खँड़हरों में इस तरह के सिक्के बहुत अधिक संख्या में मिले हैं। परन्तु संयुक्त प्रदेश के अनेक स्थानों में इस प्रकार के सिक्के प्रति वर्ष मिला करते हैं। इन सब सिक्कों पर राजा के नाम के ऊपर तीन चिह्न मिलते हैं‡। पुरातत्त्व-विभाग के भूतपूर्व सहकारी अध्यक्ष कारलाइल का मत है कि ये तीनों चिह्न बोधिवृक्ष, नाग लिपटे हुए शिवलिंग और छत्रयुक्त स्तूप हैं×। अहिच्छत्र प्राचीन पंचाल राज्य की

---

* Indian Coins, p. 13.

† Coins of Ancient India, p. 80.

‡ I. M. C., Vol, 1, p. 186.

× Ibid, Note 2.

राजधानी था। अहिच्छत्र में इस तरह के सिक्के बहुत अधिक संख्या में मिले हैं; इसलिये कनिंघम ने उन्हें पंचाल के सिक्के माना है। पञ्चाल के सिक्कों में अग्निमित्र, भद्रघोष, भूमिमित्र, इन्द्रमित्र, फाल्गुणी मित्र, सूर्यमित्र, ध्रुवमित्र, भानुमित्र, विष्णुमित्र, विश्वपाल, जयामित्र, अग्नुमित्र, बृहस्पतिमित्र और रुद्रगुप्त* नामक राजाओं के सिक्के मिले हैं। ये सब सिक्के तौल में साधारणतः २५० ग्रेन से कम नहीं हैं†। कनिंघम ने लिखा है कि अग्निमित्र का एक सिक्का तौल में २६१ ग्रेन था‡। अहिच्छत्र में अच्युत नाम के किसी राजा के तांबे के छोटे सिक्के भी मिलते हैं×। हरिषेण रचित समुद्रगुप्त की प्रशस्ति से पता चलता है कि आर्यावर्त्त के अच्युत नामक किसी राजा का समुद्रगुप्त ने सर्वस्व नष्ट कर दिया था+। स्मिथ का अनुमान है कि समुद्रगुप्त ने जिस अच्युत को हराया था, ये सब सिक्के उसी के हैं÷। अच्युत के दो प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के सम्भवतः ठप्पे के बने हैं और उनपर

---

* Ibid, pp. 986–88; Coins of Ancient India, pp. 81–84.

† I. M. C. Vol. I, p. 186, No. 1, p. 187, No. 3, (Bhanumitra)

‡ Coins of Ancient India, p. 83.

× I. M. C., Vol. 1, pp. 185–86.

+ Fleet's Gupta Inscriptions, p. 7.

÷ I. M. C., Vol. 1, pp. 132–5, Nos. 1–36.

एक ओर रोमक सिक्कों की तरह राजा का मस्तक और दूसरी ओर चक्र वा सूर्य्य है*। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर राजा का मस्तक नहीं है; परन्तु दोनों प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर ईसवी चौथी शताब्दी के अक्षरों में राजा का नाम दिया है†।

त्रिपुरी चेदि राजवंश की राजधानी थी। ताँबे के कई सिक्कों पर ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी के अक्षरों में यह नाम लिखा है‡। उज्जयिनी के सिक्कों पर साधारणतः एक चिह्न मिलता है×। परन्तु कुछ दुष्प्राप्य सिक्कों पर ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी के अक्षरों में "उजेनिय" लिखा है+। साधारणतः उज्जयिनी के सिक्कों पर एक ओर हाथ में सूर्य-ध्वज लिए हुए मनुष्य की मूर्त्ति और दूसरी ओर उज्जयिनी का चिह्न रहता है÷। किसी किसी सिक्के पर एक ओर घेरे में साँड़= बोधिवृक्ष** अथवा सुमेरु पर्वत†† आदि चिह्न

---

* Ibid, p. 188, No. 1.

† Ibid, pp. 188-9, Nos. 2-10.

‡ Indian Coins, p. 14.

× I. M. C. Vol. 1, p. 152-5, Nos. 1-36.

+ Coins of Ancient India, p. 98.

÷ I. M. C. Vol. 1, pp. 152-53, Nos, 1-8, 12-18.

= bld, pp. 153-54, Nos. 10-11, 21-29.

** Ibid, pp. 154-55, No, 30-34.

†† Ibid, p. 155, No. 35.

अथवा लक्ष्मी की मूर्त्ति * मिलती है। उज्जयिनी के कुछ सिक्के चौकोर † और कुछ गोलाकार हैं ‡।

विदेशी सिक्कों के ढंग पर भारत की अनेक भिन्न भिन्न जातियों ने चाँदी और तांबे के सिक्के बनवाए थे। ऐसे सिक्कों पर साधारणतः जाति का नाम लिखा रहता है और कभी कभी जाति के नाम के साथ राजा का नाम भी मिलता है। अर्जुनायन, कुनिन्द, मालव, यौधेय आदि भिन्न भिन्न जातियों के सिक्के मिले हैं। इनमें से अर्जुनायन जाति के सिक्के बहुत कम मिलते हैं ×। कनिंघम ने लिखा है कि इस तरह के सिक्के मथुरा में मिलते हैं +। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में त्रैगर्त, पौरव, यौधेय, आदि जातियों के साथ अर्जुनायन जाति का भी उल्लेख है ÷। इसी लिये आगरे और मथुरा के पश्चिम ओर वर्तमान भरतपुर और अलवर राज्य में अर्जुनायन जाति का प्राचीन निवासस्थान निश्चत हुआ है हरिषेण रचित

* Ibid, pp. 153–54, Nos. 19–20.

† Ibid, pp. 152–53, Nos. 1–11.

‡ Ibid, pp. 153–55, Nos. 12–36.

× Ibid, p. 160.

+ Coins of Ancient India, pp. 89–90.

÷ त्रैगर्त्तपौरवाम्बष्ठ-
पारता वाटधानयौधेयाः।
सारस्वतार्जुनायन-
मत्स्यार्द्धग्रामराष्ट्राणि।
—बृहत्संहिता १६-२२ Kern's Ed. p. 103.

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति में भी अर्जुनायन जाति का उल्लेख है*। ऐसे दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए मनुष्य की मूर्त्ति और दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है†। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक वेष्टनी या घेरा और दूसरी ओर बोधिवृक्ष मिलता है‡। दोनों ही प्रकार के सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में "अर्जुनायनानां जय" लिखा रहाता है।

औदुम्बर या उदुम्बर जाति के सिक्के पंजाब के पूर्व ओर काँगड़े और गुरदासपुर जिले में और कभी कभी होशियारपुर जिले में भी मिलते हैं×। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में कपिष्ठल जाति के साथ उदुम्बर जाति का भी उल्लेख है+। विष्णु पुराण में त्रैगर्त्त और कुलिन्द गणों के साथ भी इस जाति का उल्लेख है÷। उदुम्बर जाति के चाँदी और ताँबे के सिक्के

* Fleet's Gupta Inscriptions, p. 8.

† I. M. C., Vol. 1, p. 166, No. 1.

‡ Ibid, No. 2.

× Ibid, pp. 160–61.

\+ साकेतकंकङकालकोटि-
कुकुराश्च पारियात्रनगः।
उदुम्बरकापिष्ठल-
गजाह्वयाश्चेति मध्यमिदम्॥
—बृहत्संहिता १४-४, Kern's Edition, p. 88.

÷ देवला रेखवश्चैव याज्ञवल्क्यापमर्धनाः।
उदुम्बराश्चाविष्णातास्तारकायणचंचला। हरिवंश॥ १४–६६

मिले हैं। चाँदी के सिक्कों पर उदुम्बर जाति के साथ धरघोष और रुद्रवर्म्मा नामक दो राजाओं का उल्लेख है। धरघोष के सिक्कों पर एक ओर कन्धे पर बाघ का चमड़ा रखे शिव या हरक्यूलस की मूर्त्ति और खरोष्ठी अक्षरों में "महदेवस रञ धरघोषस उदुम्बरिस" और "विश्पमित्र" लिखा है। दूसरी ओर घेरे में बोधिवृक्ष, परशुयुक्त त्रिशूल और ब्राह्मी अक्षरों में पहले की तरह जाति और राजा का नाम लिखा है*। रुद्रवर्म्मा के सिक्कों पर एक ओर साँड़ और दूसरी ओर ब्राह्मी अक्षरों में "रञ वमकिस रुद्रवर्मस विजयत" लिखा है†। कनिंघम ने रुद्रवर्म्मा, अजमित्र, महिमित्र, भानुमित्र, वीरयश और वृष्णि नामक राजाओं को उदुम्बर जाति के राजा लिखा है‡। स्मिथ और ह्वाइटहेड ने इसी मत को ठीक मानकर कलकत्ते और लाहौर के अजायबघरों के सिक्कों की सूचियों में भानुमित्र और रुद्रवर्मा को उदुम्बर जाति के राजा लिखा है×। परन्तु इन राजाओं के सिक्कों पर उदुम्बर जाति का नाम नहीं है; इसलिये यह समझ में नहीं आता कि इन लोगों ने क्यों उदु-

---

* P. M. C., Vol. 1, p. 167, No, 136.

† Ibid, No. 137.

‡ Coins of Ancient India, pp. 68-70.

× I. M. C., Vol. 1, p. 166, Nos. 2-4; P. M. C. Vol. 1, p. 167, No. 137.

म्बर जाति के राजाओं में स्थान पाया है। वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो यह नहीं माना जा सकता कि धरघोष के अतिरिक्त उदुम्बर जाति के और भी किसी राजा के चाँदी के सिक्के मिले हैं। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का विश्वास है कि उदुम्बर जाति के ताँबे के सिक्के तीन प्रकार के हैं। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि जिन सिक्कों पर उदुम्बर जाति का नाम नहीं मिलता, वे सिक्के क्योंकर उदुम्बर जाति के माने गए हैं। स्मिथ ने ताँबे और पीतल के बने हुए बहुत से छोटे छोटे गोलाकार सिक्कों को उदुम्बर जाति के सिक्के माना है; परन्तु उन्होंने इसका कोई कारण नहीं बतलाया। दो प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर उदुम्बर जाति का नाम मिलता है। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी, घेरे में बोधि वृक्ष और नीचे एक साँप है। दूसरी ओर दो-तल्ला या तीन तल्ला मन्दिर, स्तम्भ के ऊपर स्वस्तिक और धर्म्म-चक्र है। ऐसे सिक्कों पर पहली ओर खरोष्ठी अक्षरों में उदुम्बर जाति का नाम भी है *। दूसरे प्रकार के सिक्के बहुत ही थोड़े दिनों पहले मिले हैं। सन् १९१२ में पंजाब के काँगड़े जिले में इस तरह के २६३ सिक्के मिले थे†। ये सिक्के चौकोर हैं और

---

* Coins of Ancient India, p. 68

† Journal of Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. X, Numismatic Supplement, No. XXIII, p. 247.

इनमें से प्रत्येक पर एक ओर ब्राह्मी में और दूसरी ओर खरोष्ठी में उदुम्बर जाति का नाम लिखा है। सिक्कों पर पहली ओर घेरे में बोधिवृक्ष, एक हाथी का अगला भाग और नीचे साँप है। दूसरी ओर एक मन्दिर, त्रिशूल और साँप है*। इनमें से कुछ सिक्कों पर धरघोष, शिवदास और रुद्रदास नामक उदुम्बर जाति के तीन राजाओं के नाम मिलते हैं†। इनमें से धरघोष का नाम तो पूर्व-परिचित है, परन्तु शिवदास और रुद्रदास के नाम इससे पहले नहीं सुने गए थे। इन सब सिक्कों पर पहली ओर ब्राह्मी और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में "महदेवस रञ्ञ धरघोषस वा शिवदसस वा रुद्रदसस उदुम्बरिस" लिखा रहता है‡।

कुणिन्द जाति वराहमिहिर के समय मद्र जाति के पास ही रहती थी ×। बृहत्संहिता में और एक स्थान पर कुलूत और सैरिन्ध गणों के साथ इनका उल्लेख मिलता है+। कुणिन्द

---

* Ibid, pp. 249–50.

† Ibid, p. 248.

‡ Ibid, p. 249.

× आवन्तोऽथानर्त्तो-
  मृत्युञ्चायाति सिन्धु सौवीरः।
  राजाच हारहौरो
  मद्रेशोऽन्यश्च कौणिन्दः॥
  —बृहत्संहिता १४।३३ Kern's Edition, p. 93.

+ Coins of Ancient India, p. 71.

लोग शायद आजकल कुणैत कहलाते हैं। कुणिन्द जाति के बहुत से सिक्के मिले हैं। ये सिक्के दो भागों में विभक्त हो सकते हैं। पहले भाग के सिक्के प्राचीन हैं और उनपर ब्राह्मी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों का व्यवहार मिलता है* । इन पर पहली ओर एक स्त्री की मूर्त्ति, एक मृग, एक चौकोर स्तूप और एक चक्र मिलता है। दूसरी ओर सुमेरु पर्वत, बोधिवृक्ष, स्वस्तिक और नन्दिपाद है। इस तरह के केवल ताँबे के सिक्के मिले हैं। जिस समय ये सिक्के बने थे, उस समय अमोघभूति नामक एक राजा कुछ समय के लिये कुणिन्द जाति का अधिपति हो गया था। अमोघभूति के नाम के कुणिन्द जाति के चाँदी के कुछ सिक्के मिले हैं। ये सब प्रकार से उल्लिखित ताँबे के सिक्कों के समान ही हैं; परन्तु इन पर खरोष्ठी और ब्राह्मी अक्षरों में जो कुछ लिखा है, वह तो पढ़ा जाता है; पर ताँबे के सिक्कों पर लिखा हुआ बिलकुल नहीं पढ़ा जाता। अमोघभूति के सिक्कों पर एक ओर ब्राह्मी अक्षरों में "अमोघभूतिस महरजस राञ कुणिन्दस" और दूसरी ओर खरोष्ठी अक्षरों में "रंञ कुणिदस अमोघभतिस महरजस" लिखा रहता है†। अमोघभूति के अतिरिक्त कुणिन्द जाति के छत्रेश्वर नामक एक और राजा का नाम मिला है।

---

* I. M. C. Vol. 1, p. 168, Nos. 9-10.

† Ibid, pp. 167-68, Nos 1-8.

इसके केवल ताँबे के सिक्के मिले हैं*। कुणिन्द जाति के बाद के समय के सिक्के अमोघभूति के चाँदी के सिक्कों के समान ही हैं; परन्तु उनपर केवल ब्राह्मी अक्षरों का व्यवहार मिलता है†। एक प्रकार के सिक्कों पर तो कुछ लिखा हुआ ही नहीं मिलता‡।

बहुत प्राचीन काल से मालव जाति भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम प्रान्त में रहती है। सिकन्दर ने जिस समय पञ्चनद पर आक्रमण किया था, उस समय मालव जाति के साथ उसका युद्ध हुआ था×। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में मद्र और पौरव जाति के साथ मालव जाति का भी उल्लेख है+। किसी समय यह जाति अवन्ति देश में निवास करती थी। इसी लिये प्राचीन अवन्ति वा उज्जयिनी को बाद के इतिहास में मालव देश कहने लगे थे। अब भी युक्त प्रदेश अथवा पञ्चनद के अनेक स्थानों में मालवा और मालव नाम के बहुत से गाँव

---

* Ibid p. 170. Nos, 36–37.

† Ibid, pp. 168–69, Nos. 21–29.

‡ Ibid, p. 169, Nos. 30–35.

× Early History of India, 3rd Ed. pp. 94–7.

\+ अम्बरमद्रकमालव-
पौरवकच्छारदण्डपिंगलकाः।
माणहलहूणकोहल-
शीतकमाण्डव्यभूतपुराः॥

—बृहत्संहिता १४–२७ Kern's Ed. p. 92,

तथा नगर हैं। इस मालव जाति के बहुत से पुराने सिक्के राजपूताने के पूर्वी प्रान्त में मिले हैं *। कारलाइल ने जयपुर राज्य के नागर नामक स्थान में एक प्राचीन नगर के खँडहरों में से मालव जाति के ताँबे के ६००० सिक्के ढूँढ़ निकाले थे†। मालव जाति के सिक्के साधारणतः दो भागों में विभक्त होते हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर केवल जाति का नाम लिखा है‡। ऐसे कुछ सिक्के गोलाकार और बाकी चौकोर हैं। दूसरे विभाग के सिक्कों पर मालव जाति के राजाओं के नाम भी मिलते हैं। ऐसे सिक्कों पर केवल ब्राह्मी अक्षरों का व्यवहार है और पुरातत्त्व के सिद्धान्तों के अनुसार कहा जा सकता है कि ये सिक्के ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर ईसवी चौथी शताब्दी तक प्रचलित थे ×। मालव जाति के सिक्के आकार में बहुत छोटे हैं। इनमें से पुराने सिक्के कुछ बड़े हैं और उनका व्यास आध इंच से अधिक नहीं है। ऐसे सिक्के तौल में साढ़े दस ग्रेन से अधिक नहीं हैं और सबसे छोटे सिक्के तौल में डेढ़ ग्रेन से अधिक नहीं हैं + । स्मिथ का अनुमान है कि ये सिक्के संसार में सबसे अधिक छोटे आकार के हैं।

---

* Cunningham's Archaeological Survey Reports, Vol. VI, pp. 165–74, Vol. XIV, p. 149.

† I. M. C. Vol. 1, p. 162.

‡ Ibid, pp. 170–74.

× Ibid, p. 162.

+ Ibid, p. 163,

मालव जाति के पहले विभाग के सिक्कों में भिन्न भिन्न आठ उपविभाग मिलते हैं। पहले उपविभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर सूर्य्य और सूर्य्य का चिह्न ओर पहली ओर कभी कभी घेरे में बोधिवृत्त मिलता है*। दूसरे उपविभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर एक घड़ा है†। तीसरे उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर घेरे में बोधिवृत्त और दूसरी ओर घड़ा है। ऐसे सिक्के दो प्रकार के हैं—चौकोर‡ और गोलाकार×। चौथे उपविभाग के सिक्के चौकोर हैं और उन पर दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है+। पाँचवें उपविभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर साँड़ की मूर्त्ति है। ये भी दो प्रकार के हैं—गोलाकार÷ और चौकोर=। छठे उपविभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर राजा का मस्तक है**। सातवें उपविभाग के सिक्कों पर इसकी जगह मोर की मूर्त्ति है††। आठवें उपविभाग के सक्के बहुत छोटे हैं और उन पर दूसरी ओर सूर्य्य, नन्दिपाद,

---

* Ibid, pp. 170-71, Nos. 1-11.
† Ibid, p. 171, Nos. 12-13.
‡ Ibid. Nos. 14-22.
× Ibid, p. 172, Nos. 23-25.
+ Ibid, Nos. 26-36.
÷ Ibid, p. 173, Nos. 40-57.
= Ibid, p. 172, Nos. 37-41.
** Ibid, p. 173. Nos. 58-61.
†† Ibid, p. 174, Nos. 62-63.

सर्प आदि भिन्न भिन्न मूर्तियाँ और चिह्न मिलते हैं* । इन सब उपविभागों के किसी किसी सिक्के पर पहली ओर घेरे में बोधिवृक्ष भी मिलता है। मालव जाति के जो सिक्के मिले हैं, उनमें से पहले विभाग के सिक्कों पर "मालवानांजयः" अथवा "जय मालवानां जयः" लिखा है। दूसरे विभाग के सिक्कों पर जाति के नाम के बदले में मालव जाति के राजाओं के नाम मिलते हैं। अनुमान होता है कि ये सब नाम विदेशी भाषाओं के हैं†। कारलाइल ने ४० राजाओं के नामों के सिक्के ढूँढ़ निकाले थे‡। परन्तु आजकल इनमें से केवल नीचे लिखे २० राजाओं के सिक्के मिलते हैं:—

१ भपंयन	९ गोजर
२ यम वा मय	१० माशप
३ मजुप	११ मपक
४ मपोजय	१२ यम
५ मपय	१३ पच्छ
६ मगजश	१४ मगच्छ
७ मगज	१५ गजव
८ मगोजव	१६ जामक

* Ibid, Nos. 64–67 B.
† Ibid, p. 162.
‡ Ibid, p. 163.

१७ जमपय	१६ महाराय
१८ पय	२० मरज*

जान पड़ता है कि इन नामों में से "महाराय" नाम नहीं है, उपाधि है। ताँबे के कुछ छोटे सिक्कों पर कुछ भी लिखा नहीं मिलता। परन्तु बोधिवृक्ष और घट आदि जो सब चिह्न मालव जाति के सिक्कों पर मिलते हैं, उन्हीं चिह्नों को देख-कर स्मिथ ने इन सिक्कों को भी मालव जाति के सिक्के ही ठहराया है†। कुणिन्द और मालव जाति की तरह बहुत प्राचीन काल से यौधेय जाति भी भारतवर्ष के उत्तम-पश्चिम प्रान्त में रहती आई है। गिरनार पर्वत पर ईसवी दूसरी शताब्दी के मध्य भाग में खुदा हुआ महाक्षत्रप रुद्रदाम का जो शिलालेख है, उससे पता चलता है कि रुद्रदाम ने शक संवत् ७२ से पहले यौधेय जाति को परास्त किया था‡। बृहत्सं-हिता में गान्धार जाति के साथ यौधेय लोगों का भी उल्लेख है×। हरिषेण रचित समुद्रगुप्त की प्रशस्ति में लिखा है कि यौधेय जाति समुद्रगुप्त को कर दिया करती थी+। भरतपूर

---

* Ibid, pp. 174-77, Nos. 68-103.

† Ibid, p. 178, Nos. 104-10.

‡ Epigraphia India, Vol. VIII, p. 9.

× Fleet's Gupta Inscriptions, p. 8.

+ गांधारयशोवति-

हेमताबराजन्यसचरगव्याव ।

राज्य के विजयगढ़ नामक एक स्थान के शिलालेख में यौधेय लोगों के अधिपति "महाराज महासेनापति" उपाधिधारी एक व्यक्ति का उल्लेख है*। पंजाब की बहावलपूर रियासत में रहने-वाली योहिया नामक जाति यौधेय लोगों की वंशधर मानी जाती है†। बहावलपुर राज्य में योहियावार नाम का एक प्रदेश भी है। यौधेय जाति के सिक्के पञ्जाब के पूर्व भाग में अधिक संख्या में मिलते हैं। शतद्रु (सतलज) और यमुना के बीच के प्रदेश में तो ये सिक्के बराबर मिला करते हैं। पंजाब के पास सोनपत नामक स्थान में यौधेय जाति के दो बार बहुत से सिक्के मिले हैं ‡। यौधेय जाति के सिक्के साधारणतः तीन भागों में विभक्त होते हैं। पहले विभाग के सिक्के सबसे पुराने हैं। उन पर एक ओर साँड़ और स्तम्भ (?) और दूसरी

यौधेयदासमेयाः
श्यामाकाः क्षेमधूर्ताश्च ॥

—बृहत्संहिता १४।२८ Kern's Ed. p. 92.

त्रैगर्त्तपौरवाम्बष्ठ-
पारता वाटधानयौधेयाः।
सारस्वतार्जुनायन-
मत्स्यार्द्धग्रामराष्ट्राणि ॥

—बृहत्संहिता १६।२२ Kern's Ed. p. 103.

* Fleet's Gupta Inscriptions p. 252.

† Cunningham's Ancient Geography, p. 245.

‡ I. M. C., Vol. 1, p. 165; Coins of Ancient India, p. 76.

ओर हाथी की मूर्त्ति और नन्दिपाद चिह्न है*। पहली ओर ब्राह्मी अक्षरों में "यधेयन (यौधेयानां)" लिखा है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर पद्म पर खड़े हुए षड़ानन कार्त्तिकेय और दूसरी ओर बोधिवृक्ष, सुमेरु पर्वत, नन्दिपाद चिह्न और षड़ानन देवी (कार्त्तिकेयानी) की मूर्त्ति है। पहली ओर ब्राह्मी अक्षरों में यौधेय जाति के ब्रह्मण्यदेव नामक एक राजा का नाम मिलता है†। इस ब्राह्मी लिपि का पूरा पाठ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है‡। किसी सिक्के पर "ब्रह्मण्य-देवस्य भागवतः" × किसी सिक्के पर "स्वामिभागवतः" +, किसी सिक्के पर "भागवतः यधेयनः" ÷ और किसी सिक्के पर "भागवतो स्वामिन ब्रह्मण्य यौधेय" = लिखा है। किसी किसी सिक्के पर कार्त्तिकेय का नाम "कुमारस" भी लिखा है**। तीसरे प्रकार के सिक्के कुषणवंशी सम्राटों के सिक्कों के ढंग पर बने हुए जान पड़ते हैं††। उनपर एक ओर हाथ

---

* I. M. C., Vol. 1, pp. 180-181, Nos. 1-7.

† Ibid, pp. 181-182, Nos. 8-20.

‡ Ibid, p. 181, Note 1.

× Ibid, No. 8.

+ Ibid No. 12.

÷ Rodger's Catalogue of Coins, Lahore Museum.

= Coins of Ancient India, p. 78.

** I. M. C., Vol. 1, p. 182, Nos. 15-17.

†† Indian Coins, p. 15.

में शूल लेकर खड़े हुए कार्त्तिकेय और उनकी बाँई ओर मोर और दूसरी ओर खड़ी हुई देवमूर्त्ति है*। यह देवमूर्त्ति कुषणवंशीय सम्राटों के सिक्कों के मिहिर या सूर्यदेव की मूर्त्ति के समान ही है†। ऐसे सिक्कों के तीन विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर संख्यावाचक कोई शब्द नहीं है‡; परन्तु द्वितीय और तृतीय विभाग के सिक्कों पर "द्वि"× और "तृ"+ लिखा है। इस तरह के प्रत्येक विभाग के सिक्कों पर ब्राह्मी अक्षरों में "यौधेयगणस्य जयः" लिखा है।

पद्मावती वा नलपुर (वर्त्तमान नरवर) किसी समय नागवंशी राजाओं की राजधानी था। पुराणों में नागवंशीय नौ राजाओं का उल्लेख है÷। इस वंश का गणपतिनाग समुद्रगुप्त से परास्त हुआ था=। गणपतिनाग, देवनाग आदि छः नाग-वंशीय राजाओं के सिक्के मिले हैं**। गणपति नाग का दूसरा

* मुद्रातत्त्व के ज्ञाता लोग इस सिक्के की पहली ओर हाथ में शूल लिये राजा की मूर्त्ति और उसकी बाईं ओर कुक्कुट की मूर्त्ति समझते हैं। परन्तु यह अधिकतर सम्भव है कि वह कार्त्तिकेय की मूर्त्ति हो और उसके बाएँ मोर हो। I. M. C., Vol. 1, pp. 182-83, No. 21-35.

† Ibid, p. 182 No. 21, reverse.

‡ Ibid, pp. 182-83, Nos. 21-26.

× Ibid, p. 183, Nos. 27-30.

+ Ibid, Nos. 31-35.

÷ Indian Coins p. 28.

= Fleet's Gupta Inscriptions, p. 7.

** Indian Coins, p. 28,

नाम गणेन्द्र था। उसके सिक्कों पर एक ओर ब्राह्मी अक्षरों में "महाराज श्रीगणेन्द्र" और दूसरी ओर घेरे में साँड़ की मूर्त्ति है *। देवनाग के सिक्कों पर एक ओर ब्राह्मी अक्षरों में "महाराज श्रीदेवनागस्य" लिखा है और दूसरी ओर एक चक्र है† ।

——:o:——
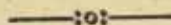
* I. M C. Vol, Vol. 1, pp. 178-79, Nos. 1-15.

† Ibid, No. l.

सातवाँ परिच्छेद

नवीन भारतीय सिक्के

गुप्त सम्राटों के सिक्के

ईसवी चौथी शताब्दी के प्रथम पाद में लिच्छवि राजवंश के जामाता घटोत्कच गुप्त के पुत्र प्रथम चंद्रगुप्त ने एक नया राज्य स्थापित किया था। सम्भवतः इस नए राज्य के सिंहासन पर चंद्रगुप्त के अभिषिक्त होने के समय से गौताब्द और गौप्त संवत् चला था। गुप्त वंशीय सम्राटों के शिलालेखों में चंद्रगुप्त के पिता घटोत्कच गुप्त और पितामह श्रीगुप्त के नाम के साथ केवल महाराज की उपाधि है *। इससे अनुमान होता है कि वे लोग करद राजा अथवा साधारण भूस्वामी थे। श्रीगुप्त का अब तक कोई सिक्का नहीं मिला। घटोत्कच गुप्त के नाम का सोने का केवल एक सिक्का मिला है जो सेन्टपिटर्सबर्ग या लेनिनग्रेड के अजायबखाने में रखा है †। मुद्रातत्त्वविद् जान एलन के मतानुसार यह सिक्का सम्राट् प्रथम चंद्रगुप्त के पिता घटोत्कच गुप्त का नहीं है, बल्कि उसके बाद का

---

* Fleet's Gupta Inscriptions, pp. 8,27,43,50,53.

† British Museum Catalogue of Indian Coins. Gupta Dynasties, p. 149.

है *। प्रथम चंद्रगुप्त के नाम के एक प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। उन पर पहली ओर चंद्रगुप्त और उसकी स्त्री कुमार देवी की मूर्त्ति और चौथी शताब्दी के ब्राह्मी अक्षरोंमें "चंद्रगुप्त" और "श्री कुमारदेवी" लिखा है। दूसरी ओर सिंह की पीठ पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्ति और "लिच्छवयः" लिखा है†। मि० एलन का कथन है कि समुद्रगुप्त का वह सिक्का सब से अधिक संख्या में मिलता है, जिस पर हाथ में शूल लिए हुए राजा की मूर्त्ति है। ऐसे सिक्के बाद के कुषण राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने थे। चंद्रगुप्त और कुमारदेवी की मूर्ति-वाले सिक्के इस तरह के नहीं हैं। प्रथम चंद्रगुप्त का अब तक कोई ऐसा सिक्का नहीं मिला जिस पर हाथ में शूल लिए हुए राजा की मूर्त्ति हो। इसलिये समुद्रगुप्त का हाथ में शूल लिए हुए राजमूर्त्ति-वाला सिक्का चंद्रगुप्त के इस तरह के सिक्कों के ढंग पर बना हुआ नहीं है। अतः प्रथम चन्द्रगुप्त के सिक्कों की विशेषता देखते हुए इस बात का कोई सन्तोषजनक कारण नहीं मिलता कि उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने बाद के कुषण राजाओं के सिक्कों के ढंग पर अपने सिक्के क्यों बनवाए थे ‡। इन सब कारणों से मि० एलन का अनुमान है कि समुद्रगुप्त ने

---

* Ibid, p. liv.

† Ibid, pp. 8-11, Nos. 23-31, I. M. C., Vol. 1, pp. 99-100, Nos. 1-6.

‡ Allan, B. M. C. p. lxv.

लिच्छवि वंश में उत्पन्न होने और पिता चंद्रगुप्त तथा माता कुमार देवी के स्मरणार्थ सिक्के बनवाए थे *। गुप्तवंशीय सम्राटों के सिक्कों के संबंध में मि० एलन के ग्रंथ के प्रकाशित होने से पहले स्मिथ †, रैप्सन ‡ आदि प्रसिद्ध मुद्रातत्त्वविद् लोग इस तरह के सिक्कों को प्रथम चंद्रगुप्त के सिक्के ही मानते थे।

चंद्रगुप्त और कुमार देवी के पुत्र ने अपने खुदवाए हुए लेखों में अपने आपको "लिच्छवि दौहित्र" अथवा लिच्छवियों का नाती बतलाया है। समुद्रगुप्त ईसवी चौथी शताब्दी के मध्य भाग में सिंहासन पर बैठा था। उसने सब से पहले आर्यावर्त्त के दूसरे राजाओं को नष्ट करना आरंभ किया था और रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चंद्रवर्म्म, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नंदी, बलवर्मा आदि राजाओं के राज्य नष्ट किए थे। आर्यावर्त्त के अधिकृत हो जाने पर आटविक अर्थात् वनमय प्रदेशों के राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकृत की थी। सारे उत्तरापथ को जीतकर समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ को जीतने का उद्योग किया था। उसने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से चलकर मगध और उड़ीसा के बीच के वनमय प्रदेश के दो राजाओं को परास्त किया था। इन दोनों राजाओं में

---

* Ibid, p. lxviii.

† I. M. C. Vol, 1, p. 95.

‡ Indian Coins p. 24.

से पहला दक्षिण कोशलराज महेंद्र और दूसरा महाकान्तार या भीषण वन का अधिपति व्याघ्रराज था। इसके बाद उसने कौरल देश के अधिपति मंटराज को परास्त करके कलिंग देश की पुरानी राजधानी पिष्टपुर (आधुनिक पिट्टपुरम्) महेंद्रगिरि और कोट्टुर के किलों पर अधिकार किया था। कोट्टुर और पिष्टपुर के अधिपति स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के राजा दमन, काञ्चिनगर के अधिपति विष्णुगोप, अवमुक्त के राजा नीलराज, वेंगिनगर के अधिपति हस्तिवर्मा, पलक्क के राजा उग्रसेन, देवराष्ट्र के अधिपति कुबेर और कुस्थलपुर के राजा धनंजय आदि दक्षिणपथ के सब राजा लोग समुद्र-गुप्त के द्वारा परास्त हुए थे। समतट (दक्षिण अथवा पूर्व बंग) डवाक (सम्भवतः ढाका) कामरूप, नेपाल, कर्तृपुर, (वर्त्तमान कुमाऊँ और गढ़वाल) आदि सीमान्त राज्यों के राजा लोग और मालव, अर्जुनायन, यौधेय, मद्रक, आभीर, प्रार्जुन, शणकानीक*, काक, खरपरिक आदि जातियाँ उसे कर दिया करती थीं।

सारे उत्तरापथ में प्रति वर्ष समुद्रगुप्त के बहुत से सिक्के मिला करते हैं। अब तक समुद्रगुप्त के केवल सोने के सिक्के ही मिले हैं। प्रसिद्ध मुद्रातत्त्वविद् जान एलन ने इन सब सिक्कों को आठ भागों में विभक्त किया है:—

---

* "बाँगालार इतिहास" प्रथम भाग, पृ० ४६।४७।

(१) हाथ में गरुड़ध्वज लिए राजमूर्त्ति युक्त
(२) हाथ में धनुषबाण लिए राजमूर्त्तियुक्त
(३) प्रथम चन्द्रगुप्त और कुमारदेवी की मूर्त्ति से युक्त
(४) हाथ में परशु लिए राजमूर्त्तियुक्त
(५) हाथ में चक्रध्वज लिए राजमूर्त्तियुक्त
(६) हाथ में वीणा लिए राजमूर्त्तियुक्त
(७) बाघ को मारते हुई राजा की मूर्त्ति से युक्त
(८) अश्वमेध के घोड़े और प्रधान महिषी की मूर्त्ति से युक्त

गुप्तवंशी सम्राटों के राजत्व काल में उन लोगों के नामों के सोने और ताँबे के सिक्कों का बहुत प्रचार था। यद्यपि गुप्त सम्राटों के सिक्के बाद के कुषणवंशी राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने थे, तथापि उन सिक्कों में शिल्प का यथेष्ट कौशल मिलता है *। गुप्तवंशी सम्राटों के सोने के सिक्कों में भारतीय शिल्प का चरम उत्कर्ष दिखाई देता है। कुमारगुप्त का कार्त्तिकेय की मूर्त्तिवाला सिक्का भारत के प्राचीन सिक्कों में कला-कौशल की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। समुद्रगुप्त के पुत्र द्वितीय चंद्रगुप्त ने सौराष्ट्र का शक राज्य नष्ट करके उक्त प्रदेश को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया था। उस समय प्रादेशिक सिक्कों के ढंग पर चाँदी के सिक्के बनने लगे थे †। गुप्त सम्राटों के सोने के सिक्के पहले कुषण राजाओं के सोने के सिक्कों के ढंग पर

* Indian Coins p. 25.
† Allan, B. M. C. p. lxxxvi.

रोम देश की तौल की रीति के अनुसार बनते थे। बाद के सम्राटों के राजत्व काल में रोम की तौल की रीति के बदले में प्राचीन भारत की तौल की रीति का अवलंबन होने लगा था। रोम की तौल की रीति के अनुसार बने हुए सोने के सिक्के तौल में १२४ ग्रेन हैं : परंतु भारतीय तौल की रीति के अनुसार बने हुए सोने के सिक्के तौल में १४६० ग्रेन हैं। संभवतः कुछ दिनों तक दोनों प्रकार की तौल की रीति के अनुसार बने हुए सोने के सिक्के गुप्त साम्राज्य में प्रचलित थे और वे दीनार तथा सुवर्ण कहलाते थे। द्वितीय चंद्रगुप्त और प्रथम कुमारगुप्त के दोनों प्रकार की तौल की रीति के अनुसार बने हुए सोने के सिक्के मिले हैं। स्कंदगुप्त के राज्यकाल में केवल प्राचीन भारतीय तौल की रीति का ही व्यवहार मिलता है। द्वितीय चंद्रगुप्त के राजत्व काल में मालव और सौराष्ट्र में गुप्त सम्राट लोग चाँदी के सिक्के भी बनवाने लगे थे। प्रथम कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त के राजत्व काल में उत्तरापथ में भी चाँदी के सिक्के बने थे। उत्तरापथ के चाँदी के सिक्के सौराष्ट्र के चाँदी के सिक्कों से भिन्न हैं *। गुप्तवंशीय सम्राटों के ताँबे के सिक्कों में भी शिल्पियों की विशेषता मिलती है।

समुद्रगुप्त के पहले प्रकार के सोने के सिक्के देखने से पहले तो यही जान पड़ता है कि इनपर हाथ में शूल लिए राजा की मूर्त्ति है। परंतु वास्तव में ऐसे सिक्कों पर पहली ओर हाथ

---

* Indian Coins p. 25.

में ध्वजा लिए राजा की मूर्त्ति है*। राजा दाहिने हाथ से अग्नि-कुंड में धूप डाल रहा है और उसके बाएँ हाथ में ध्वज और दाहिनी ओर गरुड़ध्वज है। राजा के बाएँ हाथ के नीचे एक अक्षर के ऊपर दूसरा अक्षर लिखकर राजा का नाम दिया है। दूसरी ओर सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी की मूर्त्ति और "परा-क्रमः" लिखा है। पहली ओर राजा की मूर्त्ति के चारों ओर उपगीति छंद में

"समरशतवितत‌विजयी
जितारिपुरजितो दिवं जयति"

लिखा है।† ऐसे सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे स
मु
द्र

लिखा है ‡; परंतु दूसरे विभाग के सिक्कों पर स गु
मु प्त
द्र

लिखा है ×। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर दाहिने हाथ

---

* Allan, B. M. C. p. lxviii.

† Ibid, p. 1.

‡ Ibid, pp. 1-4 Nos. 1-13; I. M. C. Vol. 1, pp. 102-03. Nos. 6-21.

× Ibid, p. 103, Nos. 22-24; Allan, B. M. C. pp. 4-5 Nos. 14-17.

में बाण और बाएँ हाथ में धनुष लेकर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति है और बाईं ओर गरुड़ध्वज है। राजा के बाएँ हाथ के नीचे पहले की तरह स
मु
द्र
लिखा है और राजमूर्त्ति के चारों ओर उपगीति छंद में

"अप्रतिरथो विजित्य क्षितिं
सुचरितैर्दिवं जयति"

लिखा है।* दूसरी ओर सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी की मूर्त्ति और दाहिनी ओर "अप्रतिरथः" लिखा है। इस तरह के किसी। सिक्के पर उपगीति छंद में

"अप्रतिरथो विजित्य क्षितिम्
अवनिपतिर्दिवं जयति"

लिखा रहता है†। तीसरे प्रकार के सिक्के प्रथम चन्द्रगुप्त और कुमार देवी के हैं। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में परशु लिए राजा की मूर्ति और उसकी दाहिनी ओर एक बालक की मूर्ति और राजा के बाएँ हाथ के नीचे पहले की तरह अक्षरों पर अक्षर देकर राजा का नाम लिखा है। दूसरी ओर हाथ में नालयुक्त कमल लिए सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्ति है और उसकी दाहिनी ओर "कृतान्त

---

* Ibid, pp. 6-7 Nos. 18-22; I. M. C. Vol. 1, pp. 103-04. Nos. 25-28.

† Allan, B. M. C., p. 7.

परशुः" लिखा हुआ मिलता है *। इस तरह के सिक्कों के चार विभाग हैं। पहले विभाग में राजा के बाएँ हाथ के नीचे स
मु
द्र †

और दूसरे विभाग में स गु
मु प्त
द्र

लिखा है ‡। तीसरे विभाग के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "कु" लिखा है ×। चौथे विभाग के सिक्कों पर राजा और बालक की मूर्ति के बीच में पहले की तरह राजा का नाम लिखा है +। इस प्रकार के सिक्कों पर राजा की मूर्ति के चारों ओर पृथ्वी छन्द में

"कृतान्तपरशुर्जयत्य
जितराज जेताजितः"

लिखा है ÷। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में चक्रध्वज लिए राजा अग्निकुण्ड में धूप फेंक रहा है और दूसरी ओर हाथ में फल लिए लक्ष्मी देवी खड़ी मिलती है। राजा के बाँए हाथ के नीचे "काच" और लक्ष्मी देवी की दाहिनी

---

* Ibid, p. 12.

† Ibid, pp. 12-14, Nos. 32-38; I. M. C. Vol, 1. p. 104, No. 29.

‡ Allan, B. M. C. pp. 14-15, Nos. 39-40.

× Ibid, p. 14, Nos. 37-38.

+ Ibid. p. 15; Ariana Artiqua, pp. 424-25 pl. xviii. 10.

÷ Allan, B. M. C. p. 12.

ओर "सर्वराजोच्छेत्ता" लिखा है। इसके अतिरिक्त राजमूर्ति के चारों ओर उपगीति छन्द में

"काचोगामवजित्य दिवं
कर्मभिरुत्तमैर्जयति"

लिखा है *। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा बाईं ओर खड़ा होकर दाहिनी ओर के बाघ पर तीर चला रहा है। बाघ के पीछे शशांकध्वज है। दूसरी ओर मगर की पीठ पर गंगादेवी की मूर्ति और शशांकध्वज है †। ऐसे सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग में एक ओर "व्याघ्र-पराक्रमः" और दूसरी ओर "राजा समुद्रगुप्तः" लिखा है ‡। परन्तु दूसरे विभाग के सिक्कों पर दोनों ही ओर "व्याघ्र पराक्रमः" लिखा है ×। सातवें प्रकार के सिक्कों पर खाट पर बैठे हुए और हाथ में वीणा लिए हुए राजा की मूर्ति है और दूसरी ओर बेंत के बने हुए आसन पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्ति है। पहली ओर "महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्तः" लिखा है; और राजा के पैर के नीचे "सि" और दूसरी ओर "समुद्रगुप्त" लिखा है +। ऐसे सिक्के दो प्रकार के हैं।

---

* Ibid, pp. 15-17, Nos. 41-47; I. M. C., Vol. 1, p. 100, Nos. 1-2.

† Allan, B. M. C. p. 17.

‡ Ibid, No. 48.

× Ibid, p, 18. No. 49.

+ Ibid, pp, 18-20, Nos. 50-45; I. M. C. Vol. 1, pp. 101-02. Nos. 3-5.

छोटे * और बड़े †। आठवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर पताका-युक्त यज्ञयूप में बँधे हुए यज्ञीय घोड़े की मूर्ति और दूसरी ओर हाथ में चँवर लिए प्रधान महिषी की मूर्ति और बाईं ओर एक शूल है। ऐसे सिक्कों पर घोड़े की मूर्ति के चारों ओर उपगीति छन्द में

"राजाधिराज पृथिवीमवित्वा
दिवं जयत्यप्रतिवार्यवीर्यः" ‡

अथवा "राजाधिराज पृथिवीं विजित्य
दिवं जयत्याहृतवाजिमेधः" ×

लिखा रहता है।

समुद्रगुप्त के बहुत से पुत्रों में से द्वितीय चन्द्रगुप्त ही सिंहासन के योग्य समझा गया था+। चन्द्रगुप्त के राज्य-काल में मालव और सौराष्ट्र गुप्त साम्राज्य में मिलाया गया था। "मालव के उदय गिरि पर्वत की गुफाओं में से शाव ने, जिसका दूसरा नाम वीरसेन था, शिव की पूजा के लिये एक गुफा उत्सर्ग की थी। वीरसेन अपने खुदवाए हुए लेख में कह गया है कि "राजा जिस समय पृथ्वी जीतने के लिये आया

---

* Ibid, Nos, 3–5, Allan, B. M. C. pp. 18–19, Nos. 50–54.

† Ibid p. 20. No. 55., I. M. C. Vol. I, p. 102. No 5.

‡ Allan, B. M. C., p. 21.

× Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, New series, Vol. X. p. 256.

+ Allan, B. M. C., p. XXXV

था, उस समय वह (मैं) भी उसके साथ इस देश में आया था।" इससे सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त ने स्वयं मालव और सौराष्ट्र पर आक्रमण किया था। साँची और उदय गिरि के तीन शिलालेखों से प्रमाणित होता है कि "द्वितीय चन्द्रगुप्त के राजत्व काल में ईसवी सन् ४०१ से पहले अर्थात् ईसवी चौथी शताब्दी के अन्तिम पाद में मालव पर गुप्त सम्राट् का अधिकार हुआ था।"

"मालव पर अधिकार होने के थोड़े ही दिनों बाद सौराष्ट्र के शक जातीय प्राचीन क्षत्रप उपाधिधारी राजवंश का अधिकार नष्ट हुआ था। कुषण वंशीय सम्राट् प्रथम वासुदेव के राजत्व काल में अथवा हुविष्क और प्रथम वासुदेव के राजत्व काल के बीच के समय में उज्जयिनी के क्षत्रप चष्टन के पौत्र रुद्रदाम ने अन्ध्र के राजा द्वितीय पुलुमायिक को परास्त करके कच्छ, सौराष्ट्र और आनर्त्त देश में एक नवीन राज्य स्थापित किया था। रुद्रदाम के वंशधरों और वहाँ के अभिषिक्त राजाओं ने शक सम्वत् ३१० (ईसवी सन् ३८८) तक सौराष्ट्र देश पर राज्य किया था। महाक्षत्रप सत्यसिंह के पुत्र ने शक सम्वत् ३१० में अपने नाम के चाँदी के सिक्के बनवाए थे। गौप्त संवत् ६० से द्वितीय चन्द्रगुप्त ने सौराष्ट्र के शक राजाओं के ढंग पर अपने नाम के चाँदी के सिक्के बनवाना आरम्भ किया था। इससे अनुमान होता है कि शक संवत् ३१० और गौप्त संवत् ६० (ई० सन् ३८८ से ४०६ तक) के बीच के समय में महा-

क्षत्रप रुद्रसिंह का अधिकार वा राज्य गुप्त साम्राज्य में मिलाया गया था *।"

द्वितीय चन्द्रगुप्त के पाँच प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के दो तरह के हैं। इनमें से प्रथम विभाग में चार उपविभाग हैं। इस विभाग के सिक्कों पर एक ओर बाएँ हाथ में धनुष और दाहिने हाथ में तीर लिए हुए राजा की मूर्त्ति है और उसके चारों ओर "देवश्री महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्तः" लिखा है। दूसरी ओर सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है और उसकी दाहिनी ओर "श्रीविक्रम" लिखा है †। पहली ओर अक्षर के ऊपर अक्षर देकर "चन्द्र" लिखा है। पहले उपविभाग में धनुष की डोरी राजा के शरीर की ओर है और राजा के शरीर तथा डोरी के बीच में "च

न्द्र"

लिखा है ‡। दूसरे उपविभाग में धनुष और डोरी के बीच में "चन्द्र" लिखा है ×। तीसरे उपविभाग में धनुष राजा के शरीर की ओर है और उसकी डोरी दूसरी ओर है। इनमें

---

* "बाँगालार इतिहास" प्रथम भाग पृ० ५०-५२।

† Allan B. M. C. p. 24.

‡ Ibid, Nos. 63-64.

× Ibid, p. 25, Nos. 65-66.

धनुष की दाहिनी ओर राजा का नाम लिखा है *। चौथे उप-विभाग के सिक्के पहले उपविभाग के सिक्कों की तरह हैं। इनमें केवल दूसरी ओर लक्ष्मी देवी साधारण आसन पर बैठी हैं †। दूसरे विभाग के सिक्कों में भी चार उपविभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्कों पर राजा जमीन पर रखे हुए तर्कश में से तीर निकाल रहा है और दूसरी ओर लक्ष्मी देवी पद्मासन पर बैठी हैं ‡। दूसरे उपविभाग के सिक्के पहले विभाग के पहले उपविभाग के सिक्कों की तरह हैं। उन पर लक्ष्मी देवी सिंहासन के बदले में पद्मासन पर बैठी हैं ×। तीसरे उपविभाग के सिक्कों पर एक ओर दाहिनी तरफ राजा खड़ा है। उसके बायें हाथ में धनुष और दाहिने हाथ में तीर है और दूसरी ओर पद्मासन पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है +। चौथे उपविभाग के सिक्के सब प्रकार से तीसरे उपविभाग के सिक्कों की तरह हैं। केवल उनपर राजा के बायें हाथ के बदले में दाहिने हाथ में धनुष है ÷। दूसरे प्रकार के सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग में पहली ओर "देवश्री महाराजाधिराज

---

* Ibid, Nos. 67–68.

† Ibid, p. 26, No. 69.

‡ Ibid, pp. 26–27, Nos. 70.

× Ibid, pp. 27–32, Nos. 71–99.

+ Ibid p. 32, No. 100.

÷ Ibid, p. 33. No. 101.

श्री चंद्रगुप्तस्य"* और दूसरे विभाग के सिक्कों पर "देवश्री महाराज श्रीचंद्रगुप्तस्य विक्रमादित्यस्य" लिखा है †। दोनों ही विभागों के सिक्कों पर एक ओर खाट पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी की मूर्त्ति है; और लक्ष्मी की मूर्त्ति की दाहिनी ओर "श्रीविक्रम" लिखा है। दूसरे विभाग के सिक्कों पर खाट के नीचे "रूपाकृति" लिखा है‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर अग्नि-कुण्ड के सामने खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और उसके पीछे छत्र लिए हुए बालक अथवा गण की मूर्त्ति और दूसरी ओर पद्म पर खड़ी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। लक्ष्मी की मूर्त्ति की दाहिनी ओर "विक्रमादित्यः" लिखा है ×। ऐसे सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर राजा की मूर्त्ति के चारों ओर "महाराजाधिराज श्रीचंद्रगुप्तः" लिखा है +। दूसरे विभाग के सिक्कों पर इसके बदले में उपगीति छन्द में

"क्षितिमवजित्य सुचरितै-
र्दिवं जयति विक्रमादित्यः"

---

* Ibid, No. 102.

† Ibid, p. 34; I. M. C. Vol. 1. p. 104, No. 1.

‡ Journal of the Asiatic Society of Bengal 1891, pt. 1, p. 117.

× Allan B. M. C. p. 34; I. M. C. Vol. 1. p. 109, No. 52.

+Ibid.

लिखा है *। चौथे प्रकार के सिक्कों पर सिंह को मारते हुए राजा की मूर्त्ति है। इसके चार विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर हाथ में तीर कमान लिए सिंह को मारते हुए राजा की मूर्त्ति है और दूसरी ओर सिंह पर बैठी हुई अम्बिका देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर राजमूर्त्ति के चारों ओर वंशस्थविल छंद में

"नरेंद्रचंद्र प्रथित (गुण) दिवं
जयत्यजेयो भुविसिंहविक्रमः"

और दूसरी ओर "सिंहविक्रमः" लिखा है †। इस विभाग के सिक्कों के आठ उपविभाग हैं। पहले उपविभाग में एक ओर दाहिनी तरफ राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर अम्बिका देवी के हाथ में धान्य (?) का शीर्ष अथवा बाल है ‡। दूसरे उपविभाग के सिक्कों पर देवी के हाथ में धान्य की बाल के बदले पद्म है ×। इन दोनों उपविभागों में दूसरी ओर जमीन पर सिंह बैठा हुआ है; परंतु तीसरे उपविभाग में सिंह अपनी पीठ पर अम्बिका देवी को लिए हुए दक्षिण ओर जा रहा है +। चौथे उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर राजा दाहिनी तरफ के बदले

* Allan, B. M. C. pp. 35–37, Nos. 103–08; I. M. C. Vol. 1, p. 109, No. 55.

† Allan, B. M. C. p. 38.

‡ Ibid Nos. 109–10.

× Ibid p. 39, Nos. 111–12.

+ Ibid, p. 40; I. M. C. Vol. 1, p. 108, No. 49.

में बाई तरफ खड़ा है*। पाँचवें उपविभाग के सिक्कों में लक्ष्मी देवी घोड़े की तरह सिंह की पीठ पर सवार है†। छठे उपविभाग के सिक्कों पर अम्बिका देवी के हाथ में पद्म और पाश (?) है और राजा के पैर के नीचे सिंह की मूर्ति है‡। सातवें उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर दाहिनी तरफ और दूसरी ओर बाईं तरफ पद्म लिए हुए अम्बिका की मूर्त्ति है×। आठवें उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर सिंह की पीठ पर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति है और सिंह घायल होकर भाग रहा है+। दूसरे विभाग के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और घायल होकर गिरते हुए सिंह की मूर्त्ति है और दूसरी ओर बैठे हुए सिंह की पीठ पर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर "नरेंद्रसिंह चंद्रगुप्तः पृथिवीं जित्वा दिवं जयति" और दूसरी ओर "सिंहचंद्रः" लिखा है÷। पहली ओर के लेख का पाठ बहुत से अंशों में आनुमानिक है। तीसरे विभाग के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति और भागते हुए सिंह की मूर्त्ति है और दूसरी ओर सिंह की पीठ

---

* Allan B. M. C. p. 39.

† Ibid, p. 40, No. 113.

‡ Ibid, pp. 41–42, Nos. 114–16.

× Ibid, p. 42, Nos. 117–18.

+ Ibid, p. 43.

÷ Ibid, No. 119.

पर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है*। इस विभाग के दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग में "महाराजाधिराज श्री चंद्रगुप्तः" लिखा है; और दूसरी ओर बैठे हुए सिंह की पीठ पर हाथ में पाश(?) लेकर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है और उसकी दाहिनी ओर "श्रीसिंहविक्रमः" लिखा है†। दूसरे उपविभाग में पहली ओर "देवश्री महाराजाधिराज श्रीचंद्रगुप्तः" लिखा है‡; और दूसरी ओर दाहिनी तरफ दौड़ते हुए सिंह की पीठ पर सवार देवी की मूर्त्ति है और उसकी दाहिनी ओर "सिंह विक्रमः" लिखा है। चौथे विभाग के सिक्कों पर एक ओर हाथ में तलवार लिए हुए राजा की मूर्त्ति और भागते हुए सिंह की मूर्त्ति है और दूसरी ओर बैठे हुए सिंह की पीठ पर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है ×। पाँचवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घोड़े की पीठ पर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर पद्मवन में बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर "परम भागवत महाराजाधिराज श्रीचंद्रगुप्तः" और दूसरी ओर "अजित विक्रमः" लिखा है +।

---

* Ibid, p. 44, No. 120.

† Ibid.

‡ Numismatic Chronicle, 1910, p. 406.

× Allan, B. M. C. p. 45.

+ Ibid, pp. 45-49, Nos. 121-32; I. M. C., Vol. 1, pp. 107-08. Nos. 37-41.

द्वितीय चंद्रगुप्त के चाँदी के सिक्के सौराष्ट्र के नए जीते हुए प्रदेश में चलाने के लिये बने थे। आगे के परिच्छेद में सौराष्ट्र के भिन्न भिन्न शताब्दियों के सिक्कों के साथ इनका विवरण दिया जायगा। उसके नौ तरह के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति है जिसके नीचे "महाराज चंद्रगुप्तः" लिखा है *। दूसरे प्रकार के सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर अग्नि-कुण्ड के सामने खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और उसके पीछे छत्रधारियों की मूर्त्ति और दूसरी ओर पंख और हाथोंवाले गरुड़ की मूर्त्ति है। गरुड़ की मूर्त्ति के नीचे "महाराज श्रीचन्द्रगुप्तः" लिखा है †। दूसरे विभाग के सिक्कों पर गरुड़ के पंख तो हैं, पर हाथ नहीं हैं‡। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति का ऊपरी भाग और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति है जिसके नीचे "श्रीचंद्रगुप्तः" लिखा है ×। चौथे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा की मूर्त्ति का ऊपरी आधा भाग और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति और "श्रीचंद्र-

---

* Allan, B. M. C. p. 52, No. 141.

† Ibid pp. 52–53, Nos. 142–143, I. M. C. Vol. 1, p. 109, No. 58.

‡ Allan, B M. C. p. 53, Nos. 144–47.

× Ibid, pp: 54–55, Nos. 148–59.

गुप्तः" लिखा है*। पाँचवें प्रकार के सिक्के चौथे प्रकार के सिक्कों की तरह हैं। केवल राजा का बायाँ हाथ उसकी छाती पर है और दूसरी ओर गरुड़ वेदी पर बैठा है और उसके नीचे "चंद्रगुप्तः" लिखा है †। छठे प्रकार के सिक्के पाँचवें प्रकार के सिक्कों की तरह हैं। उनपर दूसरा ओर केवल वेदी नहीं है और राजा के नाम के पहले "श्री" ‡ है। सातवें प्रकार के सिक्के बहुत छोटे हैं। उनपर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर सर्पधारी गरुड़ की मूर्त्ति है जिसके नीचे "चंद्रगुप्तः" लिखा है ×। आठवें प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर "श्रीचंद्र" और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति है जिसके नीचे "गुप्त" लिखा है +। नवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर चंद्रकला है और "चंद्र" लिखा है और दूसरी ओर एक घड़ा है ÷ ।

"द्वितीय चंद्रगुप्त की पत्नी का नाम ध्रुव देवी या ध्रुव स्वामिनी था। ध्रुवस्वामिनी के गर्भ से उसे कुमारगुप्त और

---

* Ibid, p. 56, No. 160.

† Ibid, No. 161.

‡ Ibid, No. 162.

× Ibid, pp. 57–59, Nos. 163–81, I. M. C. Vol. 1, p. 110, Nos. 64–70.

+ Allan, B. M. C. p. 59, No. 182.

÷ Ibid, p. 60, Nos. 183–89; I. M. C. Vol. 1. p. 110, Nos. 71–72.

गोविंद नाम के दो पुत्र हुए थे। अपने पिता की मृत्यु के उपरांत कुमारगुप्त सिंहासन पर बैठा था"*। "प्रथम कुमार गुप्त के राजत्व काल के अन्तिम भाग में गुप्त साम्राज्य पर पुश्यमित्रीय और हूण जाति ने आक्रमण किया था। जब पुश्यमित्रीय सेनाओं से युद्ध में सम्राट् की सेना हार गई, तब युवराज भट्टारक स्कंदगुप्त ने बड़ी कठिनता से पुश्यमित्रीय लोगों को परास्त किया था। मध्य एशिया निवासी हूण जाति ने उसी समय मरुस्थल का निवास छोड़कर पश्चिम में रोमक साम्राज्य पर और पूर्व में गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण किया था। ईसवी पाँचवीं शताब्दी के मध्य में गुप्त वंशीय सम्राट् लोग इन जंगली जातियों के आक्रमण से बहुत दुःखी हुए थे। गौप्त संवत् १३१ से १३६ (सन् ४५०—४५५ ईसवी) के बीच में किसी समय महाराजाधिराज प्रथम कुमारगुप्त की मृत्यु हुई थी। कुमारगुप्त के कई विवाह हुए थे और उसके सोने के सिक्कों पर राजमूर्त्ति के साथ दो पटरानियों की मूर्त्तियाँ मिलती हैं। इससे पुरातत्ववेत्ता लोग अनुमान करते हैं कि कुमारगुप्त ने वृद्धावस्था में किसी युवती से विवाह किया था और उसके बहुत आग्रह करने पर पहली पटरानी के जीवन काल में ही नव विवाहिता महादेवी को भी उसे विवश होकर पटरानी बनाना पड़ा था †"। कुमारगुप्त के नौ प्रकार के सोने

* "बाँगालार इतिहास" प्रथम भाग, पृ० ४१।

† "बाँगालार इतिहास" प्रथम भाग, पृ० ४८।४६।

के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों के सात उपविभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्कों पर एक ओर हाथ में धनुष-बाण लिए हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पाश लिए पद्मासन पर बैठी हुई देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "कु" और राजमूर्त्ति के चारों ओर उपगीति छंद में

"विजितावनिरवनिपतिः
कुमारगुप्तोदिवं जयति"

और दूसरी ओर "श्रीमहेंद्र" लिखा है*। दूसरे उपविभाग के सिक्कों पर राजा के चारों ओर "जयति महीतलम...... कुमारगुप्तः" लिखा है। इसकी दूसरी ओर देवी का हाथ खाली है†। तीसरे उपविभाग के सिक्कों पर देवी के हाथ में नाल सहित कमल है ‡। चौथे उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर "परमराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तः" लिखा है और दूसरी ओर देवी के हाथ में पाश और पद्म है×। पाँचवें उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर राजा की मूर्त्ति के चारों ओर "महा-राजाधिराज श्रीकुमारगुप्तः" और राजा के बाएँ हाथ के नीचे अक्षरों पर अक्षर बैठाकर कु
मा
र

---

* Allan B. M. C., pp. 61-62, Nos. 190-91.
† Ibid, pp. 62-63, Nos. 192-93.
‡ Ibid, p. 63.
× Ibid, No. 194; I. M. C., Vol. 1, p. 111. Nos. 2-4.

लिखा है *। छठे उपविभाग के सिक्कों पर राजा की मूर्त्ति के चारों ओर "गुणेशोमहीतलं जयति कुमार" लिखा है †। सातवें उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर "महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तः" लिखा है और दूसरी ओर पद्मासन पर लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है ‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में तलवार लेकर अग्नि कुंड के सामने खड़े हुए राजा की मूर्त्ति है और दूसरी ओर हाथ में पाश तथा पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर उपगीति छंद में राजा की मूर्त्ति के चारों ओर

"गामवजित्य सुचरितैः
कुमारगुप्तो दिवं जयति"

और राजा की दाहिनी ओर "कु" और सिक्के की दूसरी ओर "श्रीकुमारगुप्तः" लिखा है ×। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर यज्ञ-यूप में बँधा हुआ अश्वमेध का घोड़ा और दूसरी ओर हाथ में चँवर लिए हुए पटरानी की मूर्ति है +। घोड़े के चारों ओर जो कुछ लिखा है, वह अभी तक पढ़ा नहीं गया। एक सिक्के पर "जयतिदिवं कुमार" ÷ और एक

---

* Ibid, p. 112, Nos. 8-10; Allan, B. M. C., p 64. No. 195.

† Ibid, p. 65, Nos. 196-97.
‡ Ibid, p. 66, Nos. 198-200.
× Ibid, pp. 67-68, Nos. 201-02.
+ Ibid, p. 68.
÷ Ibid, No. 203.

दूसरे सिक्के पर घोड़े के नीचे "अश्वमेध" लिखा मिलता है*। दूसरी ओर "श्रीअश्वमेध महेन्द्र" लिखा है। इन सिक्कों के अतिरिक्त अब तक इस बात का और कोई प्रमाण नहीं मिला कि कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया था। चौथे प्रकार के सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति है। राजा दाहिनी ओर जा रहा है और उसके चारो ओर "पृथ्वीतल...दिवं जयत्यजितः" लिखा है। अब तक यह पूरा पढ़ा नहीं गया। दूसरी ओर ऊँचे आसन पर बैठी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति और उसकी दाहिनी ओर "अजितमहेन्द्रः" लिखा है। लक्ष्मी देवी के हाथ में नाल सहित कमल है†। दूसरे उपविभाग के सिक्कों पर लक्ष्मी देवी के दाहिने हाथ में पाश और बाएँ हाथ में नाल सहित कमल है। इस उपविभाग में पहली ओर राजमूर्त्ति के चारो ओर उपगीति छंद में—

"क्षितिपतिरजितो विजयी
कुमारगुप्तो दिवं जयति"

लिखा है‡। तीसरे उपविभाग के सिक्कों पर पहली ओर राजा के मस्तक के पीछे प्रभामण्डल है और दूसरी ओर लक्ष्मीदेवी हाथ में फल लेकर एक मोर को खिला रही हैं×।

---

* Ibid, p. 69.
† Ibid, p. 69, No. 204.
‡ Idid, pp. 70–71 Nos. 205–09.
× Ibid, pp. 71–73 Nos. 210–218.

दूसरे विभाग के दो उपविभाग हैं। दूसरे विभाग के पहले उपविभाग के सिक्कों पर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति के चारो ओर उपगीति छंद में

"गुप्तकुलव्योमशशि
जयत्यजेयो जितमहेन्द्रः"

लिखा है। ये सिक्के पहले विभाग के तीसरे उपविभाग के सिक्कों की तरह हैं *। दूसरे उपविभाग के सिक्कों पर एक ओर राजा घोड़े पर सवार होकर बाईं ओर जा रहा है और दूसरी ओर लक्ष्मीदेवी मोर को खिला रही है। ऐसे सिक्कों पर राजा के चारों ओर उपगीति छंद में

"गुप्तकुलामल चंद्रो
महेंद्रकर्म्माजितो जयति"

लिखा है †। पाँचवें प्रकार के सिक्कों के पाँच विभाग हैं। इन सब सिक्कों पर पहली ओर सिंह को मारते हुए राजा की मूर्त्ति है। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और उसके चारों ओर उपगीति छंद में

"साक्षादिवनरसिंहो सिंह—
महेंद्रो जयत्यनिशं"

लिखा है। दूसरी ओर बैठे हुए सिंह की पीठ पर बैठी हुई अंबिका देवी की मूर्त्ति है और उसके बगल में "श्रीमहेंद्रसिंहः"

---

* Ibid, pp. 73-74, Nos. 219-25.
† Ibid, pp. 75-76, Nos. 226-30.

लिखा है *। दूसरे विभाग के सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति के चारों ओर उपगीति छंद में

"क्षितिपतिरजित महेन्द्रः
कुमारगुप्तो दिवं जयति"

लिखा है †। तीसरे विभाग के सिक्कों पर उपगीति छन्द में

"कुमारगुप्तो विजयी
सिंहमहेन्द्रो दिवं जयति"

लिखा है और दूसरी ओर "सिंहमहेंद्रः" लिखा है ‡। चौथे विभाग के सिक्कों पर वंशस्थविल छंद में

"कुमारगुप्तो
युधिसिंह विक्रमः"

लिखा है ×। पाँचवें विभाग के सिक्कों पर इसके बदले में

"कुमागुप्तो
युधिसिंह विक्रमः"

लिखा है +। छठे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर मरे हुए बाघ पर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति है और राजा एक दूसरे बाघ पर तीर चला रहा है। राजा की मूर्त्ति के चारों ओर "श्रीमां व्याघ्रबल पराक्रमः" लिखा है। दूसरी ओर पद्मवन में खड़ी लक्ष्मी

---

* Ibid, pp. 77-78, Nos 231-35.
† Ibid, pp. 78-79, Nos. 226-27.
‡ Ibid, p. 79, Nos. 238-39.
× Ibid, p. 80, Nos. 240-41
+ Ibid, p. 81 No. 242.

देवी एक मोर के खिला रही हैं और उनके बगल में "कुमार गुप्तोधिराजा" लिखा है *। ऐसे सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर पहली ओर राजा के नाम का पहला अक्षर नहीं है†। परन्तु दूसरे विभाग के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "कु" लिखा है‡। सातवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा खड़ा होकर एक मोर को खिला रहा है और राजा के चारों ओर "जयतिस्वभूमौगुणराशि... महेंद्रकुमारः" लिखा है। दूसरी ओर परवाणि नामक मोर पर सवार कार्त्तिकेय की मूर्त्ति है ×। आठवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर दो स्त्रियों के बीच में राजा खड़ा है और राजा के एक ओर "कुमार" और दूसरी ओर "गुप्त" लिखा है। दूसरी ओर हाथ में पद्म लिये पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है और उसकी दाहिनी ओर "श्रीप्रतापः" लिखा है +। नवें प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी की पीठ पर राजा और उसके पीछे हाथ में छत्र लिये एक आदमी बैठा है और दूसरी ओर पद्म के ऊपर खड़ी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। लक्ष्मी के एक हाथ में नालसहित कमल और दूसरे हाथ में घट है ÷। इस तरह

---

* Ibid, p. 18.

† Ibid, No. 243.

‡ Ibid. pp. 82–83, Nos. 244–47; I. M. C, Vol. 1, p. 114, No. 36.

× Allan. B. M. C. pp. 84–86, Nos 248–56.

+ Ibid, p. 88

÷ Ibid, p. 88.

का केवल एक ही सिक्का मिला है। इस पर जो कुछ लिखा है, वह अभी तक पढ़ा नहीं गया। यह सिक्का हुगली जिले के महानाद गाँव में प्रथम कुमारगुप्त के एक और स्कन्दगुप्त के एक सोने के सिक्के के साथ मिला था* और अब यह कलकत्ते के सरकारी अजायब घर में रखा है†।

सौराष्ट्र और मालव में चलाने के लिये प्रथम कुमारगुप्त ने चाँदी के जो सिक्के बनवाए थे, उनका विवरण आगे के अध्याय में दिया गया है। ऐसे सिक्कों के ढंग पर मध्य प्रदेश में भी चलाने के लिये एक प्रकार के चाँदी के सिक्के बनवाए गए थे। ऐसे सिक्कों के चार विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और ब्राह्मी अक्षरों में संवत् है। इन पर यूनानी अक्षरों का कोई चिह्न नहीं है। दूसरी ओर एक मोर और एक पद्म है और उनके चारों ओर उपगीति छंद में

"विजितावनिरवनिपतिः
कुमारगुप्तो दिवं जयति"

लिखा है‡। दूसरे विभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर पद्म नहीं

---

* बाँगलार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६१; Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, 1882, pp. 91, 104.

† I. M. C. Vol. 1, p. 115, No. 38.

‡ Allan, B. M. C. pp. 107–08, Nos. 385–90.

है *। तीसरे विभाग के सिक्कों पर न पद्म है और न मार है†। चौथे विभाग के सिक्के तीसरे विभाग के सिक्कों की तरह हैं; परंतु उन पर लेख में "दिवं" के स्थान पर दिवि" मिलता है ‡। प्रथम कुमारगुप्त के ताँबे के तीन प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रचार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति है। गरुड़ की मूर्त्ति के नीचे "कुमारगुप्त" लिखा है ×। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर एक वेदी और उसके नीचे "श्री कु" और दूसरी ओर सिंह की पीठ पर बैठी हुई अम्बिकादेवी की मूर्त्ति है +। तीसरे प्रकार के सिक्के चाँदी के सिक्कों की तरह के हैं। उन पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर मोर बना है ÷। पहले प्रकार के ताँबे के एक सिक्के पर दूसरी ओर "श्रीमहाराजा श्रीकुमारगुप्तस्य" लिखा है =।

"महाराजाधिराज प्रथम कुमारगुप्त की मृत्यु के उपरान्त उनका बड़ा बेटा स्कंदगुप्त सिंहासन पर बैठा था। स्कंदगुप्त ने युवराज रहने की अवस्था में पुश्यमित्रिय और हूण

*Ibid, p. 108, Nos. 391-92.

† Ibid, pp. 109-10 Nos. 393-402.

‡ Ibid, No. 403.

× Ibid, p. 113.

+ I. M. C, Vol. 1, p. 120, No. 3.

÷ Ibid. p 116, No. 54.

= Ibid, No. 55.

लोगों को परास्त करके अपने पिता के राज्य की रक्षा की थी। कहा जाता है कि युवराज भट्टारक स्कंदगुप्त ने अपने पितृ-कुल की विचलित राजलक्ष्मी को स्थिर करने के लिये तीन रातें जमीन पर सोकर बिताई थीं। पहली बार परास्त होकर ही हूण लोग उत्तरापथ पर आक्रमण करने से बाज नहीं आए थे। प्राचीन कपिशा और गांधार पर अधिकार करके उन लोगों ने एक नया राज्य स्थापित किया था" *। "ईसवी संवत् ४५७ में भी अन्तर्वेदी पर स्कंदगुप्त का अधिकार था। उस समय से भीतरी विद्रोह और बाहरी शत्रुओं के आक्रमण के कारण गुप्त वंश के सम्राटों की शक्ति घटने लगी थी। प्रादेशिक शासकों ने बिना सम्राट् का नाम लिए ही लोगों को जमीनें देना आरम्भ कर दिया था। परिव्राजकवंशी हस्ती और संक्षोभ, उच्छ्रकल्प के जयनाथ और सर्वनाथ और वलभीर धरसेन आदि सामान्य राजाओं के ताम्रलेख इसके प्रमाण हैं। ईसवी सन् ४६५ के बाद हूण लोग फिर भारतवर्ष में आए थे और उन्होंने कई बार गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण किए थे। देश-रक्षा के लिये बहुत दिनों तक युद्ध करके महाराजाधिराज स्कंदगुप्त ने अंत में हूण युद्ध में ही अपने प्राण दिए थे"†।

स्कंदगुप्त के दो प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सोने के सिक्कों पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिए

---

* बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६२–६३

† बाँगालार इतिहास, पृ० ६४–६५

राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर राजा के बाएँ हाथ के नीचे स्क न्द और राजमूर्त्ति की दाहिनी ओर "जयतिमहीतलं" और बाईं ओर "सुधन्वी" लिखा है। दूसरी ओर लक्ष्मीदेवी की मूर्त्ति की दाहिनी ओर "श्रीस्कंदगुप्तः" लिखा है। ऐसे दो प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के तौल में १३२ ग्रेन * और दूसरे प्रकार के सिक्के १४८·४ ग्रेन हैं। दूसरे प्रकार के इन सिक्कों पर लेख भी अलग है। इन पर पहली ओर "जयतिदिवं श्रीक्रमादित्य" और दूसरी ओर "क्रमादित्य" लिखा है †। स्कंदगुप्त के दूसरे प्रकार के सोने के सिक्कों पर एक ओर राजा और लक्ष्मी की मूर्त्ति और दूसरी ओर पद्मासना लक्ष्मी की मूर्त्ति है। ऐसे सिक्कों पर जो कुछ लिखा है, वह पहले प्रकार के सिक्कों के लेख के समान ही है ‡। सौराष्ट्र और मालव में चलाने के लिये स्कंदगुप्त ने चाँदी के जो सिक्के बनवाए थे, उनका विवरण आगे के परिच्छेद में दिया जायगा। मध्य प्रदेश में चलाने के लिये चाँदी के जो सिक्के बने थे, वे दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और ब्राह्मी अक्षरों में संवत् और दूसरी ओर मोर की मूर्त्ति और उसके चारों ओर "विजितावनिरवनिपतिर्जयति

---

* Allan, B. M. C. pp. 114–15, Nos. 417–21.

† Ibid, pp. 117–19, Nos 424–31.

‡ Ibid, pp. 116–17, Nos 422–23.

दिवं स्कंदगुप्तोयं" लिखा है *। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर दूसरी ओर मोर के चारों तरफ "विजितावनिरवनिपति श्री-स्कंदगुप्तो दिवं जयति" लिखा है †।

"स्कन्दगुप्त की मृत्यु के उपरान्त उसका सौतेला भाई पुरगुप्त सिंहासन पर बैठा था। जान पड़ता है कि प्रथम कुमारगुप्त की मृत्यु के उपरान्त सिंहासन के लिये दोनों भाइयों में झगड़ा हुआ था; क्योंकि पुरगुप्त के पोते द्वितीय कुमारगुप्त की राजमुद्रा पर स्कन्दगुप्त का नाम नहीं है" ‡। बंगाली "बाँगालार इतिहास" के पहले भाग में लिखा है—"अब तक पुरगुप्त का कोई सिक्का या लेख नहीं मिला" ×। परन्तु ब्रिटिश म्यूजिअम में पुरगुप्त के नाम के सोने के कई सिक्के रखे हैं +। सोने के ऐसे सिक्के दो प्रकार के हैं। दोनों प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिये राजा की मूर्त्ति और दूसरे हाथ में पद्म लिये पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। पहले प्रकार के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे पुर लिखा है ÷। पर दूसरे प्रकार के सिक्कों पर यह नाम नहीं है =।

---

* Ibid, 129-32, Nos 523-46.

† Ibid, pp. 132-33, Nos. 547-49.

‡ बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६५

× " " पृ० ६६

\+ Allan B. M. C., p. 134.

÷ Ibid,

=Ibid, pp. 134-35. Nos. 550-51.

दोनों ही प्रकार के सिक्कों पर लक्ष्मी देवी की दाहिनी ओर 'श्री विक्रमः" लिखा है। सोने के कई सिक्कों पर प्रकाशादित्य नाम के एक राजा का नाम मिलता है। सम्भवतः यही पुरगुप्त के सिक्के हैं। ऐसे सिक्कों पर एक ओर घोड़े पर सवार राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। घोड़े के नीचे "रु" अथवा "ऊ" और घोड़े के चारों ओर "विजित्यवसुधां दिवं जयति" लिखा है। दूसरी ओर लक्ष्मी देवी के दाहिने "श्री प्रकाशादित्यः" लिखा है *। "पुरगुप्त की स्त्री का नाम वत्सदेवी था। वत्स देवी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र नरसिंहगुप्त अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त सिंहासन पर बैठा था। कुछ लोगों का अनुमान है कि नरसिंहगुप्त ने मालव के राजा यशोधर्मदेव के साथ मिलकर उत्तरापथ में हूण साम्राज्य नष्ट किया था †।" नरसिंह गुप्त के एक प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। पहली ओर राजा के बाएँ हाथ के नीचे न/र दोनों पैरों के बीच में "गो" और चारों ओर "जयति नरसिंह गुप्तः" लिखा है। दूसरी ओर लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति के दाहिने "बालादित्यः" लिखा है ‡। "नर-

* Ibid, pp. 135–36. Nos. 552–57.

† बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६७

‡ Allan, B. M. C., 137–39, Nos. 558–69. I. M. C., Vol. I, pp. 119–20, Nos. 1–6.

सिंह गुप्त की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र द्वितीय कुमारगुप्त सिंहासन पर बैठा था *।" द्वितीय कुमारगुप्त के एक प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। ऐसे सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "कु" और लक्ष्मी देवी के दाहिने "क्रमादित्यः" लिखा है †। दूसरे विभाग के सिक्कों पर पहली ओर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "कु", दोनों पैरों के बीच में "गो" और चारों ओर "महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तक्रमादित्यः" लिखा है; और दूसरी ओर "श्रीक्रमादित्य :" लिखा है ‡। तृतीय चन्द्रगुप्त द्वादशादित्य, विष्णुगुप्त चन्द्रादित्य और जयगुप्त प्रकाण्डयशाः नाम के तीन राजाओं के सिक्के देखने से अनुमान होता है कि ये लोग भी गुप्त वंश के ही थे। परन्तु अब तक किसी लेख में उनका कोई उल्लेख नहीं मिला। इसी लिये यह निश्चय नहीं हो सका है कि गुप्त राजवंश के साथ उनका क्या सम्बन्ध था। सम्भवतः ये लोग द्वितीय कुमारगुप्त के वंशज थे ×। ईसवी सन्

* बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६८

† Allan, B. M. C. p. 140, Nos 570-71; I. M. C. Vol. 1, p. 120, Nos 1-2.

‡ Allan. B. M, C. pp. 141-43 Nos. 572-87

× बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ७१। मुद्रा तत्व के बहुत

१७८३ में कलकत्ते के पास काली घाट में तृतीय चन्द्रगुप्त और विष्णुगुप्त के बहुत से सिक्के मिले थे *। इन तीनों राजाओं के सिक्कों पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। तृतीय चन्द्रगुप्त के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "चन्द्र", दोनों पैरों के नीचे "भा" और चारों ओर "द्वादशादित्य: " लिखा है। दूसरी ओर "श्रीद्वादशादित्य:" लिखा है †। विष्णुगुप्त के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "विष्णु", दोनों पैरों के बीच में "रु" और लक्ष्मी देवी के दाहिने "श्रीचन्द्रादित्य: " लिखा है ‡। जयगुप्त के सिक्कों पर राजा के बाएँ हाथ के नीचे "जय" और लक्ष्मी देवी के दाहिने "श्रीप्रकाण्डयशा:" लिखा है ×।

गौड़राज शशांक भी सम्भवत: गुप्तवंश का ही था +। शशांक के एक प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर बैल के बगल में बैठे हुए शिव की मूर्ति, दाहिनी ओर "श्रीश"

बड़े पण्डित जान एलन का अनुमान है कि तृतीय चन्द्रगुप्त और प्रकाशादित्य सम्भवत: स्कन्दगुप्त के वंशज थे और विष्णुगुप्त द्वितीय कुमारगुप्त के वंशज थे।

* Allan B. M. C. pp. CXXIV—CXXV.

† Ibid, p. 144, Nos. 588—90

‡ Ib,di pp. 145—46, Nos. 591—605.

× Ibid, pp. 150—51, Nos. 613—514.

+ बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ८३

और बैल के नीचे "जय" लिखा है। दूसरी ओर पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्ति है। दो हाथी कलसों से उनके मस्तक पर जल गिरा रहे हैं और देवी के दाहिने "श्री शशांकः" लिखा है *। कलकत्ते के अजायब घर में दो प्रकार के सोने के ऐसे दो सिक्के हैं जिन पर "नरेंद्र" नाम लिखा है। सम्भवतः ये सिक्के भी शशांक के ही हैं। इन दो सिक्कों में से एक सिक्का यशोहर जिले के मुहम्मदपुर के पास अरुणखाली नदी के किनारे किसी जगह मिला था †। उसके साथ शशांक का भी सोने का एक सिक्का मिला था। उस पर एक ओर खाट पर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति और उसके दोनों तरफ एक एक स्त्री की मूर्त्ति है; और दूसरी ओर पद्म के ऊपर खड़ी हुई लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है और उनके पैरों के नीचे हंस की मूर्त्ति है। पहली ओर राजा के मस्तक के ऊपर "यम" और खाट के नीचे "ध" और दूसरी ओर "श्री नरेंद्रविनत" लिखा है ‡। दूसरे सिक्के के मिलने का स्थान मालूम नहीं है। उस पर एक ओर हाथ में धनुष बाण लिए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर हाथ में पद्म लिए पद्मासाना लक्ष्मी देवी की मूर्ति है। पहली ओर राजा के बाएँ हाथ

---

* Allan, B. M. C. pp. 147–48, Nos. 606–12; I. M. C. Vol, 1. pp. 121–22, Nos 1–8.

† Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XXI, p. 401, pl. XII, Nos. 9–12.

‡ I. M. C. Vol. 1, p. 112. Uncertains, No. 1.

के नीचे "यम", दोनों पैरों के बीच में "व" और दूसरी ओर "श्री नरेन्द्रविनत" लिखा है *।

जयगुप्त † और हरिगुप्त ‡ के नाम का ताँबे का एक एक सिक्का मिला है। मुर्शिदाबाद जिले के राँगामाटी गाँव में रविगुप्त नाम के किसी राजा का सोने का एक सिक्का मिला है×। घटोत्कच नामक किसी राजा का सोने का एक सिक्का सेन्ट-पिटर्सबर्ग या लेनिनग्रेड के अजायबघर में रखा है+। अब तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इन सब राजाओं का प्राचीन गुप्त वंश के साथ क्या सम्बन्ध था। गुप्त साम्राज्य नष्ट होने पर मध्य प्रदेश में प्रचलित गुप्त सम्राटों के चाँदी के सिक्कों के ढंग पर भिन्न भिन्न वंशों के राजाओं ने अपने सिक्के बनवाए थे। मौखरीवंशी, ईशान वर्म्मा ÷ और शर्ववर्म्मा = और शिलादित्य **(सम्भवतः हर्षवर्द्धन) ने इस तरह के सिक्के बनवाए

---

* Ibid, p. 120. Uncertains, No. 1.

† Ibid, p. 121. No. 1.

‡ Cunningham's Coins of Mediaeval India hl. 11. 6, p. 19.

× बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ७४

+ Allan, B. M. C. p. 149.

÷ Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1894. pt. 1. p. 193.

= Ibid.

** Journal of the Royal Asiatic Society, 1906. p.845.

थे। परिव्राजकवंशी महाराज हस्ती ने भी अपने नाम के चाँदी के कई सिक्के बनवाए थे। उन पर एक ओर "श्रीरणहस्ती" लिखा है और दूसरी ओर एक हाथी की मूर्ति है *।

इसके बाद बंगाल में गुप्त राजाओं के सोने के सिक्कों के ढंग पर एक प्रकार के सोने के सिक्के बने थे। उन पर जो कुछ लिखा है, वह पढ़ा नहीं जाता। इस प्रकार का एक सिक्का यशोहर जिले के मुहम्मदपुर गाँव के पास मिला था †। आज कल यह कलकत्ते के अजायबघर में है। बोगड़ा जिले में मिला हुआ इस प्रकार का एक सिक्का लघुपुष्करणी के जमींदार श्रीयुक्त राय मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर के पास है‡। ढाके × और फरीदपुर + में भी इस प्रकार के सिक्के मिले हैं। मुद्रातत्त्वविद् मि० जान एलन के मतानुसार ये सिक्के बंगदेश में ईसवी सातवीं शताब्दी में प्रचलित थे ÷। "सम्भवतः शशांक की मृत्यु के उपरांत माधवगुप्त और उसके वंशजों ने इस प्रकार के सिक्के चलाए थे" =।

---

* Indian Coins, p. 28; I. M. C., Vol. 1. p. 118, Nos 1–5.

† Journal of the Asiatic Society of Bengal 1852. Vol. XXI p. 401, pl. XII, 10, बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६७ चित्र ३१।४

‡ बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६७, चित्र ३१–५

× Journal of the Asiatic Society of Bengal New Series. Vol. VI, p. 141.

+ Ibid.

÷ Allan B. M. C. p. CVII. 154, No 620–22.

= बाँगालार इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६८

प्रथम गुप्त राजवंश

श्रीगुप्त
|
घटोत्कच गुप्त
|
१ प्रथम चन्द्रगुप्त=कुमारदेवी
|
२ समुद्रगुप्त=दत्तदेवी
|
कुवेरनागा=३ द्वितीय चन्द्रगुप्त = ध्रुवदेवी वा ध्रुवस्वामिनी

- (कुवेरनागा से) रुद्रसेन = प्रभावती (वाकाटक वंशी राजा)
  - दिवाकरसेन
- विक्रमांक वा विक्रमादित्य
  - ? =४ प्रथम कुमारगुप्त = अनन्त देवी महेन्द्रादित्य
    - (? से) ५ स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य
    - (अनन्त देवी से) ६ पुरगुप्त=श्रीवत्सदेवी
      - प्रकाशादित्य (?)
        - ७ नरसिंहगुप्त बालादित्य = महालक्ष्मी देवी
          - ८ द्वितीय कुमारगुप्त
            - तृतीय चन्द्रगुप्त द्वादशादित्य
              - विष्णुगुप्त चन्द्रादित्य
                - जयगुप्त प्रकाण्डयशा
  - गोविन्दगुप्त (सम्भवतः यही मगध के गुप्त राजवंश के आदि पुरुष हैं।)
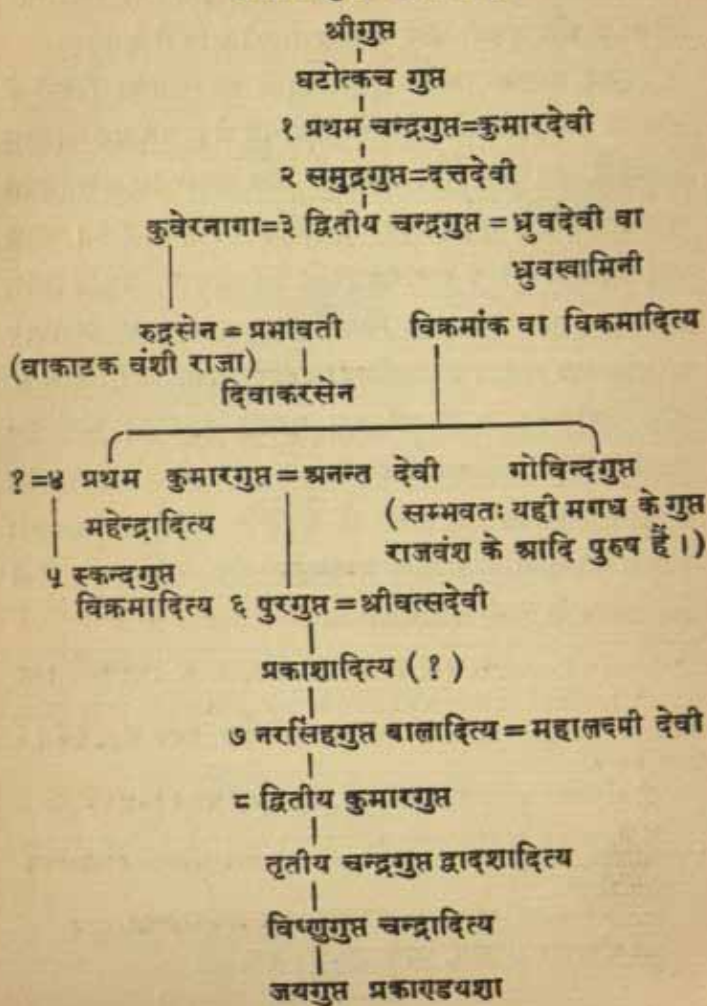
द्वितीय गुप्त राजवंश
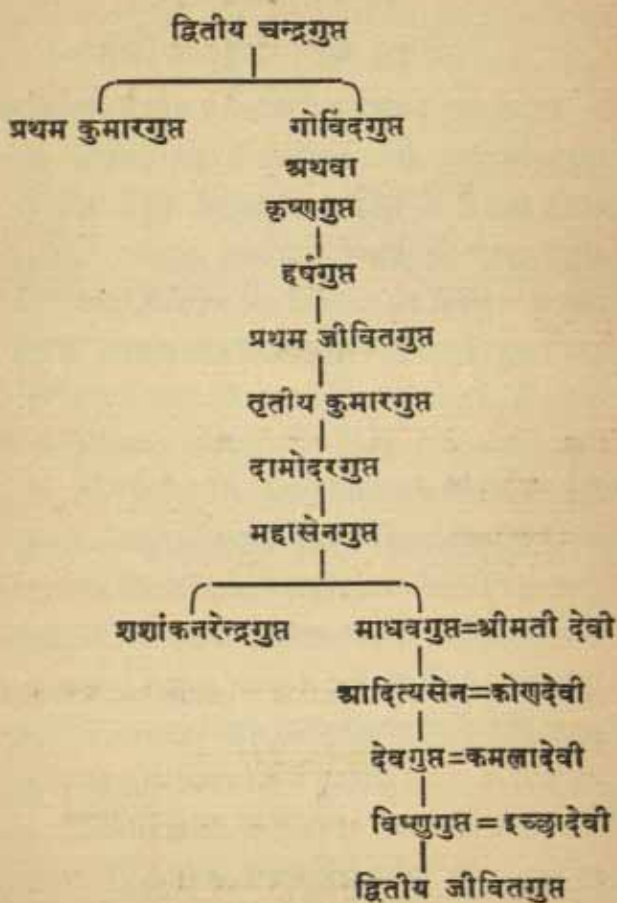
आठवाँ परिच्छेद

सौराष्ट्र और मालव के सिक्के

ईसवी सन् के आरम्भ में भारतीय यूनानी राजाओं के 'द्रम्म' नामक सिक्कों के ढंग पर सौराष्ट्र के शक जातीय क्षत्रप लोग अपने नाम से जो सिक्के बनाने लगे थे, उनके ढंग पर सौराष्ट्र और मालव में ईसवी छठी या सातवीं शताब्दी तक सिक्के बनते थे। ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में अथवा उससे कुछ ही पहले उत्तरापथ के शक राजाओं के एक शासन-कर्ता ने मालव और सौराष्ट्र में एक नवीन राज्य स्थापित किया था। यह राज्य कुषण साम्राज्य के स्थापित होने से पहले स्थापित हुआ था। इस वंश के राजाओं ने राजा की उपाधि नहीं ग्रहण की थी। उनकी उपाधि "महाक्षत्रप" थी। महाक्षत्रप उपाधिवाले शक जातीय दो राजवंशों ने भिन्न भिन्न समय में सौराष्ट्र में अधिकार प्राप्त किया था। पहले राजवंश ने कुषण साम्राज्य स्थापित होने से पहले और दूसरे राजवंश ने कुषण राजवंश के साम्राज्य के नष्ट होने के समय सौराष्ट्र में अधिकार प्राप्त किया था। प्रथम राजवंश के केवल दो राजाओं के सिक्के मिले हैं। पहले राजा का नाम भूमक था। इसके केवल तबे के ही सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर सिंह की मूर्त्ति और दूसरी ओर चक्र है; और

एक ओर खरोष्ठी अक्षरों में "छहरदस छत्रपस भूमकस" और दूसरी ओर ब्राह्मी अक्षरों में "क्षहरातस क्षत्रपस भूमकस" लिखा है *। भूमक का कोई शिलालेख या तिथियुक्त सिक्का अभी तक नहीं मिला; इसलिये उसके कालनिर्णय का समय भी अभी तक नहीं आया। नहपान के चाँदी के सिक्के मेनन्द्र के "द्रम्म" के ढंग के हैं †। ऐसे सिक्कों पर एक ओर महाक्षत्रप का मस्तक और यूनानी अक्षरों में उसका नाम तथा उपाधि और दूसरी ओर चक्र (?), शर और वज्र और ब्राह्मी तथा खरोष्ठी अक्षरों में राजा का नाम तथा उपाधि दी है। खरोष्ठी अक्षरों में "रंञो छहरतस नहपनस" और ब्राह्मी अक्षरों में "राज्ञो क्षहरातस नहपानस" लिखा रहता है ‡। नहपान के जामाता उषवदात अथवा ऋषभदत्त के बहुत से शिलालेख मिले हैं। इन लेखों में नहपान के राज्यांक अथवा किसी दूसरे संवत् के ४१ वें, ४२ वें और ४५ वें वर्ष का उल्लेख है ×। जुन्नार की एक गुफा में नहपान के प्रधान मंत्री अयम के लेख में संवत् ४६ का उल्लेख है +। उषवदात और अयम के

---

* Rapson, Catalogue of Indian Coins in the British Museum, Andhras, Western Ksatrapas etc. pp. 63-64, Nos. 237-42.

† Ibid, p. cviii,

‡ Ibid, pp. 65-67, Nos. 243-51.

× Epigraphia Indica, Vol. VIII, p. 82.

+ Archaeological Survey of Western India, Vol IV, p. 103.

शिलालेखों में जिन अनेक वर्षों का उल्लेख है, पुरातत्ववेत्ता लोग उन्हें शक संवत् के मानते हैं; और इसके अनुसार ईसवी दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ में नहपान का समय निश्चित करते हैं *। परन्तु प्रचीन लिपितत्व के प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार नहपान को महाक्षत्रप रुद्रदाम का निकटवर्त्ती अथवा कनिष्क, वासिष्क, हुविष्क और वासुदेव आदि कुषणवंशी राजाओं का परवर्ती नहीं माना जा सकता। "नहपान उ शकाब्द" नामक प्रबन्ध में हमने इस बात को ठीक प्रमाणित करने की चेष्टा की है †। उषवदात के शिलालेखों में नहपान की उपाधि "क्षहरात क्षत्रप" मिलती है; परन्तु अयम के शिलालेख में उसकी उपाधि "स्वामी महाक्षत्रप" दी है ‡। नहपान के सिक्कों पर उसकी "क्षत्रप" वा "महाक्षत्रप" उपाधि नहीं मिलती। नहपान का ताँबे का केवल एक सिक्का कनिंघम को अजमेर में मिला था। उस पर एक ओर वज्र और तीर और ब्राह्मी अक्षरों में नहपान का नाम और दूसरी ओर घेरे में बोधि वृक्ष है ×। नहपान के राजत्वकाल के अन्तिम

---

* Rapson, B. M. C, p. cx; V. A. Smiths, Early History of India, 3rd Edition, pp. 209, 218.

† "नहपान और शकाब्द" नामक प्रबन्ध पुरातत्वविभाग की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित होने के लिये भेजा गया है। वह संभवतः १९१३-१४ ई० की रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ होगा।

‡ Rapson, B. M. C. p. 65, Note 1.

× Ibid, p. 67, No. 252.

भाग में अथवा उसकी मृत्यु के उपरान्त अंध्रवंशी राजा गोतमीपुत्र शातकर्णि ने शकों के पहले क्षत्रप वंश का अधिकार नष्ट कर दिया था और नहपान के चाँदी के सिक्कों पर अपना नाम लिखवाया था। ऐसे सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और उसके नीचे साँप और ब्राह्मी अक्षरों में "राञो गोतमि पुत्रस सिरि सातकणिस" लिखा है। दूसरी ओर उज्जयिनी नगर का चिह्न है *। गोतमीपुत्र शातकर्णि के पोते अथवा किसी वंशज के राजत्वकाल में सौराष्ट्र देश अंध्र राजाओं के हाथ से निकल गया था। अंध्रवंश के गोतमीपुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि ने सौराष्ट्र के सिक्कों के ढंग पर चाँदी के सिक्के बनवाए थे। उन पर एक ओर राजा का मुख और ब्राह्मी अक्षरों में "रञो गोतमिपुतस सिरियञ सातकणिस" लिखा है। दूसरी ओर उज्जयिनि नगर का चिह्न, सुमेरु पर्वत, साँप और दाक्षिणात्य के ब्राह्मी अक्षरों में "···णप गोतम पुतप हिरुयञ हातकणिप" लिखा है †।

शक संवत की पहली शताब्दी के प्रथमार्द्ध में शक जातीय द्वितीय क्षत्रप वंश ने मालव और सौराष्ट्र पर अधिकार किया था। महाक्षत्रप चष्टन के पोते महाक्षत्रप रुद्रदाम ने मालव, सौराष्ट्र और कच्छ आदि देशों पर अधिकार करके बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था। कच्छ में रुद्रदाम के राज्यकाल

* Ibid, pp. 68-70, Nos. 253-58.

† Ibid, p. 45, No. 178.

में शक संवत् ५२ (ईसवी सन् १३०) के खुदे हुए चार शिला-लेख मिले हैं *। सौराष्ट्र के गिरनार पर्वत पर रुद्रदाम के राजत्व काल में शक संवत् ७२ (ईसवी सन् १५०) का खुदा हुआ एक बड़ा शिलालेख मिला है †। उसमें रुद्रदाम के साम्राज्य का विवरण है। रुद्रदाम उस समय पूर्व और पश्चिम आकरावन्ती, अनूपनिवृत्, आनर्त्त, सुराष्ट्र, स्वभ्र, मरु, कच्छ, सिन्धुसोवीरि, कुकुर, अपरान्त, निषाद आदि देशों का स्वामी था। उसने दक्षिणापथ के राजा शातकर्णि को दो बार परास्त किया था और यौधेय लोगों का नाश किया था।

रुद्रदाम के दादा चष्टन के पिता का नाम घ्समोतिक था। उसके नाम का केवल एक सिक्का मिला है। परन्तु रैप्सन का अनुमान है कि वह सिक्का चष्टन का है ‡। चष्टन के समय से द्वितीय शक राजवंश के सिक्कों का प्रचार आरम्भ हुआ था। चष्टन के चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। चाँदी के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के चाँदी के सिक्कों पर चष्टन की उपाधि "क्षत्रप" × और दूसरे प्रकार के सिक्कों पर

---

* Annual Report of the Archaeological Survey of India, 1905-06, p. 165. F. Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XXIII, p. 68.

† Epigraphia Indica, Vol. VIII, p. 36, ff.

‡ Rapson, B. M. C. p. 71

× Ibid, pp. 72-73. No. 259.

"महाक्षत्रप" * है। इन सब सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख और यूनानी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि और दूसरी ओर सुमेरु पर्वत और शशांक आदि चिह्न और ब्राह्मी तथा खरोष्ठी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि लिखो है। चष्टन के ताँबे के सिक्कों पर एक ओर डंडे में बँधे हुए घोड़े की मूर्त्ति और दूसरी ओर सुमेरु, शशांक और तारका चिह्न हैं। पहली ओर यूनानी अक्षरों के और दूसरी ओर ब्राह्मी अक्षरों के कुछ चिह्न हैं †। चष्टन के पुत्र जयदाम के दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के चौकोर हैं। उन पर एक ओर बैल और त्रिशूल और यूनानी अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है और दूसरी ओर सुमेरु, शशांक और ब्राह्मी अक्षरों में "राज्ञो क्षत्रपस स्वामि जयदामस" लिखा है ‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर उज्जयिनी नगरी का चिह्न है ×। रुद्रदाम के दो प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। दोनों ही प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और यूनानी अक्षरों में कुछ लिखा है और दूसरी ओर साँप और सुमेरु पर्वत और ब्राह्मी अक्षरों में कुछ लिखा है। पहले प्रकार के सिक्कों पर "राज्ञो क्षत्रपस जयदाम

---

* Ibid, pp. 73–75, Nos. 260–63

† Ibid, p. 75, Nos. 264.

‡ Ibid, pp. 76–77, Nos. 265–68.

× Ibid, p. 77, No. 269.

पुत्रस राज्ञो महाक्षत्रपस रुद्रदामस" * और दूसरे प्रकार के सिक्कों पर यही बात दूसरी तरह से लिखी है †। रुद्रदाम के पुत्र दामघ्सद के क्षत्रप उपाधिवाले तीन प्रकार के ‡ और महाक्षत्रप उपाधिवाले एक प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं ×। इन सिक्कों पर कहीं तो "दामघ्सद" और कहीं "दामजदश्री" नाम लिखा है। दामजदश्री के लड़के जीवदाम के समय से सौराष्ट्र के सिक्कों पर सम्वत् मिलता है। उन पर दिए हुए वर्ष शक संवत् के हैं। जीवदाम के सिक्कों पर शक संवत् १०० से १२० तक का उल्लेख है +। आंध्र राजाओं के मिश्र धातु के सिक्कों के ढंग पर जीवदाम ने पोटिन (Potin) नामक धातु के एक प्रकार के सिक्के चलाए थे। उन पर एक ओर बैल और यूनानी अक्षरों के चिह्न हैं और दूसरी ओर सुमेरु पर्वत, साँप आदि और ब्राह्मी अक्षरों में राजा का नाम और उपाधि लिखी है ÷। जीवदाम के बाद उसका चाचा रुद्रसिंह सिंहासन पर बैठा था। दूसरी शक शताब्दी के पहले और दूसरे दशक में रुद्रसिंह और जीवदाम में बहुत दिनों तक युद्ध हुआ था। इसी लिये उस समय के किसी वर्ष में जीवदाम

---

* Ibid pp, 78–79. Nos. 270–75.

† Ibid p. 79. Nos 276–80.

‡ Ibid. pp. 80–81, Nos. 281–85.

× Ibid, p. 82, Nos, 286–87.

\+ Ibid, p. 83.

÷ Ibid, p. 85. Nos. 293–94.

के साथ और किसी वर्ष में रुद्रसिंह के नाम के साथ "महाक्षत्रप" उपाधि का व्यवहार मिलता है *। काठियावाड़ के हाला जिले के गुंडा नामक स्थान में एक शिलालेख मिला था जो रुद्रसिंह के राजत्वकाल में शक संवत् १०३ (ईसवी सन् १८१) का खुदा हुआ था †। जूनागढ़ के पास एक गुफा में रुद्रसिंह के राज्यकाल का खुदा हुआ और एक शिलालेख मिला है ‡। दूसरी शक शताब्दी के आरम्भ से चौथी शताब्दी के दूसरे दशक तक सौराष्ट्र के चाँदी के सिक्कों में किसी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं दिखाई देता। सभी सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और यूनानी अक्षरों के चिह्न और दूसरी ओर सुमेरु पर्वत, सर्प इत्यादि और ब्राह्मी अक्षरों में राजा के पिता का नाम और राजा का नाम तथा उपाधि लिखी है। प्रत्येक राजा के सिक्के दो प्रकार के मिलते हैं। पहले प्रकार में राजा की उपाधि "क्षत्रप" और दूसरे प्रकार में "महाक्षत्रप" है। रुद्रसिंह के पोटिन के सिक्के जीवदाम के सिक्कों की तरह हैं ×। जीवदाम के अतिरिक्त दामजदश्री का सत्यदाम नामक एक और लड़का था। उसके क्षत्रप उपाधिवाले चाँदी के सिक्के मिले हैं +।

---

* Ibid, pp. 83–92.

† Indian Antiquary, Vol. X, p. 157.

‡ Journal of the Royal Asiatic Society, 1890, p. 651.

× Rapson, B. M. C. pp. 93–94, Nos. 324–25.

+ Ibid. p. 95.

महाक्षत्रप रुद्रदाम के बड़े लड़के का लड़का जीवदाम था। उसके दूसरे लड़के को रुद्रसिंह ने सिंहासन से उतार दिया था। तब से बहुत दिनों तक सौराष्ट्र पर रुद्रसिंह के वंशजों का ही अधिकार रहा। बहुत दिनों बाद जब रुद्रसिंह का वंश नष्ट अथवा दुर्बल हो गया, सम्भवतः तब जीवदाम के वंशजों ने फिर सौराष्ट्र पर अधिकार किया था। रुद्रसिंह के बाद उसका बड़ा लड़का रुद्रसेन सिंहासन पर बैठा था। रुद्रसेन के सिक्कों पर शक संवत् १२१—१४४ का उल्लेख है *। बड़ौदा राज्य के उखामंडल प्रदेश के मूलवासर नामक स्थान में रुद्रसेन के राज्यकाल का शक संवत् १२२ (ई० सन् २००) का खुदा हुआ एक शिलालेख मिला है † और काठियावाड़ के उत्तर में जसधन नामक स्थान में रुद्रसेन के राज्यकाल का शक संवत् १२६ या १२७ (ईसवी सन् २०५ या २०६) का खुदा हुआ एक और शिलालेख मिला है ‡। रुद्रसेन के बड़े लड़के पृथ्वीसेन के क्षत्रप उपाधिवाले चाँदी के सिक्के मिले हैं ×। उन पर शक संवत् १४४ लिखा है। पृथ्वीसेन के छोटे भाई द्वितीय दामदजश्री ने इसके बहुत बाद क्षत्रप पद प्राप्त किया

* Ibid, pp. 96–105, Nos. 328–376.

† Journal of the Royal Asiatic Society. 1890. p. 652; 1899, pp. 380–81.

‡ Ibid, 1890, p. 652, Indian Antiquary, Vol. XII, p. 32.

× Rapson; B. M. C. p. 106, No. 377.

था। इन दोनों भाइयों के महाक्षत्रप उपाधिवाले सिक्के नहीं मिले हैं। इससे अनुमान होता है कि ये लोग सिंहासन पर नहीं बैठे थे। रुद्रसिंह का दूसरा बेटा संघदाम प्रथम रुद्रसेन के उपरान्त सिंहासन पर बैठा था। उसके चाँदी के सिक्के मिले हैं जिन पर शक संवत् १४४-४५ लिखा है *। संघदाम के बाद रुद्रसिंह का तीसरा बेटा दामसेन सौराष्ट्र के सिंहासन पर बैठा था। दामसेन के चाँदी के सिक्कों पर शक संवत् १४५ से १५८ तक लिखा मिलता है †। दामसेन के राज्य-काल में पोटिन के बने हुए संवत्वाले सिक्कों पर राजा का नाम या उपाधि नहीं है ‡। दामसेन के राज्यकाल में उसके बड़े भाई प्रथम रुद्रसेन के दूसरे बेटे द्वितीय दामजदश्री ने क्षत्रप की उपाधि प्राप्त की थी। द्वितीय दामजदश्री के क्षत्रप उपाधिवाले सिक्कों पर शक संवत् १५४-५५ लिखा है ×। दामसेन के चार बेटों के सिक्के मिले हैं। उनमें से वीरदाम के सिक्कों पर केवल क्षत्रप उपाधि मिलती है। उन सब सिक्कों पर शक संवत् १५६ से १६० तक का उल्लेख है +। शक संवत् १५८ से १६१ तक ईश्वरदत्त नाम के किसी दूसरे वंश के राजा ने चाँदी के सिक्के बनवाए थे। उन सिक्कों पर

---

* Ibid, p. 107. No. 378.

† Ibid, pp. 108-112. Nos. 379-401.

‡ Ibid, pp. 113-14, Nos. 202-20.

× Ibid, pp. 115-16. Nos. 421-25.

+ Ibid, pp. 117-21. Nos. 426-59.

उसकी महाक्षत्रप उपाधि और समय के स्थान पर उसके राज्यारोहण का वर्ष लिखा मिलता है; जैसे—"राज्ञो महाक्षत्रपस ईश्वरदत्तस वर्षे प्रथमे" अथवा "वर्षे द्वितीये" *। ईश्वरदत्त सम्भवतः आभीर जाति का था †। दामसेन के दूसरे लड़के यशोदाम ने ईश्वरदत्त के साथ एक ही समय में राज्याधिकार पाया था। उसके सिक्कों पर "क्षत्रप" और "महाक्षत्रप" दोनों ही उपाधियाँ मिलती हैं। इन सब सिक्कों पर शक संवत् १६० और १६१ दिया हुआ है ‡। यशोदाम के बाद दामसेन के तीसरे लड़के विजयसेन ने सौराष्ट्र का राज्य पाया था। विजयसेन के सिक्कों पर "क्षत्रप" और "महाक्षत्रप" दोनों ही उपाधियाँ मिलती हैं। उन सिक्कों पर शक संवत् १६० से १७२ तक दिया हुआ है ×। विजयसेन के बाद दामसेन का चौथा बेटा तृतीय दामजदश्री सौराष्ट्र के सिंहासन पर बैठा था। उसके सिक्कों पर केवल "महाक्षत्रप" उपाधि मिलती है; और शक संवत् १७२ वा १७३ से १७६ तक दिया हुआ है +। तृतीय दामजदश्री के बाद दामसेन के बड़े लड़के वीरदाम का लड़का द्वितीय रुद्रसेन सौराष्ट्र के

---

* Ibid, pp. 124–25. Nos. 472–79.

† Ibid, p. CXXXIII.

‡ Ibid, pp. 126–28. Nos. 480–87.

× Ibid, pp. 127–36. Nos. 388–555.

\+ Ibid, pp. 137–40. Nos. 556–580.

सिंहासन पर बैठा था। उसके सिक्कों पर भी केवल "महाक्षत्रप" उपाधि मिलती है। उन पर शक संवत् १७८ (?) से १९६ तक दिया हुआ है*। द्वितीय रुद्रसेन के लड़के विश्वसिंह ने अपने पिता का राज्य पाया था। उसके सिक्कों पर "क्षत्रप" और "महाक्षत्रप" उपाधियाँ दी हैं; और शक संवत् १९९ से २०१ (?) तक दिया है†। विश्वसिंह के बाद उसके भाई भर्तृदाम ने राज्य पाया था और उसके सिक्कों पर दोनों उपाधियाँ हैं। उन सिक्कों पर शक संवत् २०१ से २१७ तक दिया है‡। भर्तृदाम के लड़के विश्वसेन के सिक्कों पर केवल क्षत्रप उपाधि है। उसके सिक्कों पर शक संवत् २१६ से २२६ तक दिया है×। जान पड़ता है कि शक संवत् २१६ से २७० तक (ईस्वी सन् २९४ से ३४८ तक) "महाक्षत्रप" उपाधिवाला कोई राजा नहीं था +। जान पड़ता है कि विश्वसेन के बाद दामसेन के वंश का अधिकार नष्ट हो गया था।

विश्वसेन के बाद स्वामी जीवदाम नामक एक साधारण मनुष्य के वंशजों ने सौराष्ट्र का सिंहासन पाया था। चष्टन के पिता घ्समोतिक की तरह जीवदाम की भी कोई राजकीय उपाधि नहीं मिलती। इसी लिये वह एक साधारण व्यक्ति

---

* Ibid, pp. 141–46. Nos. 581–626.

† Ibid, pp. 147–52. Nos. 627–64.

‡ Ibid, pp. 153–61. Nos. 665–718.

× Ibid, pp. 162–68. Nos. 719–66.

+ Ibid, p. cxli.

समझा जाता है *। परन्तु उसके नाम के स्वरूप से अनुमान होता है कि वह चष्टन का वंशधर था। विश्वसेन के बाद स्वामी जीवदम के पुत्र द्वितीय रुद्रसिंह ने सौराष्ट्र का सिंहासन पाया था। उसके चाँदी के सिक्कों पर "क्षत्रप" उपाधि और शक संवत् २२७ से २३० (?) तक मिलता है †। द्वितीय रुद्रसिंह के बाद उसका लड़का द्वितीय यशोदाम सिंहासन पर बैठा था। उसके चाँदी के सिक्कों पर "क्षत्रप" उपाधि और शक संवत् २३६ से २५४ तक मिलता है ‡। शक संवत् २५४ से २७० के बीच में महाक्षत्रप उपाधिधारी स्वामी द्वितीय रुद्रदाम ने सौराष्ट्र का राज्य पाया था। उसका कोई सिक्का नहीं मिलता ×; परन्तु उसके लड़के तृतीय रुद्रसेन के सिक्कों पर "राजा", "स्वामी" और "महाक्षत्रप" उपाधि मिलती है +। उसका वंशपरिचय अभी तक नहीं मिला; परन्तु उसके नाम के स्वरूप से अनुमान होता है कि वह चष्टन का वंशधर था। रैप्सन का अनुमान है कि द्वितीम रुद्रदाम द्वितीय रुद्रसिंह के पिता स्वामी जीवदाम का वंशज था ÷। द्वितीय रुद्रदाम के पुत्र तृतीय रुद्रसेन के चाँदी के सिक्कों पर उसकी महाक्षत्रप

---

* Ibid, p. cxli.

† Ibid, pp. 170–74, Nos. 767–93.

‡ Ibid, pp. 175–78 Nos. 794–811.

+ Ibid, p. 178, cxliii.

× Ibid, p. 179.

÷ Ibid, p. cliii.

उपाधि और शक संवत् २७० से ३०० तक दिया है*। तृतीय रुद्रसेन से सीसे के बने हुए कई तिथियुक्त सिक्के मिले हैं। उन पर तिथि है और एक ओर बैल और दूसरी ओर सुमेरु पर्वत है†। तृतीय रुद्रसेन के बाद उसके पहले भानजे सिंह-सेन ने सौराष्ट्र का राज्य पाया था। सिंहसेन के चाँदी के सिक्कों पर उसकी "महाक्षत्रप" उपाधि और शक संवत् ३०४ से ३०६ (?) तक दिया है‡। सिंहसेन के बाद उसका लड़का चतुर्थ रुद्रसेन सौराष्ट्र का अधिकारी हुआ था। ज्ञान पड़ता है कि वह शक संवत् ३०६ से ३१० तक सिंहासन पर था ×। चतुर्थ रुद्रसेन के बाद तृतीय रुद्रसेन के दूसरे भानजे (?) सत्यसिंह ने सौराष्ट्र का राज्य पाया था। उसका कोई सिक्का नहीं मिलता+। परन्तु उसके पुत्र तृतीय रुद्रसिंह के सिक्कों पर उसकी "राजा", "महाक्षत्रप" और "स्वामी" उपाधि मिलती है। सत्यसिंह का पुत्र तृतीय रुद्रसिंह संभवतः शक जातीय क्षत्रप वंश का अन्तिम राजा था। उसके चाँदी के सिक्कों पर महाक्षत्रप उपाधि और शक संवत् ३१० (?) मिलता है÷।

समुद्रगुप्त के पुत्र द्वितीय चन्द्रगुप्त ने गौप्त संवत् ८२ से

---

* Ibid, pp. 179-88, Nos. 812-903.

† Ibid, pp. 187-188 Nos. 889-903.

‡ Ibid, pp. 189-90, Nos. 904-06.

× Ibid, p. 191.

\+ Ibid, p. cxlix.

÷ Ibid, pp. 192-94, Nos. 907-29.

पहले मालव पर अधिकार किया था * और ईस्वी सन् ४१५ से पहले ही सौराष्ट्र पर से शकों का अधिकार उठ गया था। क्षत्रपों के सिक्कों के ढंग पर बने हुए द्वितीय चन्द्रगुप्त के चाँदी के सिक्कों पर संवत् की दहाई की जगह तो ९ मिलता है, परन्तु इकाई की जगह का अंक पढ़ा नहीं जाता †। इससे सिद्ध होता है कि गौप्त संवत् ९० से ९९ के बीच में चन्द्रगुप्त ने सौराष्ट्र पर अधिकार किया था; क्योंकि गौप्त संवत् ९६ में प्रथम कुमारगुप्त ने अपने पिता का राज्य पाया था ‡। द्वितीय चन्द्रगुप्त के चाँदी के सिक्कों में दो विभाग मिलते हैं। दोनों विभागों में एक ओर राजा का मुख, यूनानी अक्षरों के चिह्न और वर्ष और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति और ब्राह्मी लिपि है। पहले विभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर "परमभागवत महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त विक्रमादित्यः" ×; और दूसरे विभाग के सिक्कों पर "श्रीगुप्तकुलस्य महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्तविक्रमांकस्य" लिखा है +। द्वितीय चन्द्रगुप्त के पुत्र सम्राट् प्रथम कुमारगुप्त के चाँदी के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहलेवाले परिच्छेद में कहा जा चुका है कि पहले

---

* Fleet's Gupta Inscriptions, p. 25.

† Allan, British Museum Catalogue of Indian Coins, Gupta Dynasties, p. XXXIX.

‡ Fleet's Gupta Inscrtptions, p. 43.

× Allan B. M. C. pp. 49-51, Nos. 133-39.

+ Ibid, p. 51, No. 140.

प्रकार के सिक्के मध्य देश में चलाने के लिये बने थे। दूसरे प्रकार के सिक्के मालव और सौराष्ट्र में चलाने के लिये बने थे। इन पर एक ओर राजा का मुख, यूनानी अक्षरों के चिह्न और ब्राह्मी अक्षरों में संवत् है। दूसरी ओर गरुड़ और ब्राह्मी अक्षरों में कुमारगुप्त का नाम और उपाधि है। ऐसे सिक्कों के तीन विभाग हैं। पहले और तीसरे विभाग के सिक्कों पर दूसरी ओर "परमभागवत महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तमहेन्द्रादित्यः" * और दूसरे विभाग के सिक्कों पर "परमभागवत राजाधिराज श्री कुमारगुप्त महेन्द्रादित्यः" † लिखा है। सौराष्ट्र और मालव में चलने के लिये बने हुए स्कन्दगुप्त के चाँदी के सिक्कों के तीन विभाग मिलते हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर राजा का मुख, यूनानी अक्षरों के चिह्न और ब्राह्मी अक्षरों में संवत् और दूसरी ओर गरुड़ की मूर्त्ति और ब्राह्मी अक्षरों में "पमभागवत महाराजाधिराज श्रीस्कन्दगुप्त विक्रमादित्यः" लिखा है ‡। दूसरे विभाग के सिक्कों पर गरुड़ की मूर्त्ति की जगह एक बैल की मूर्त्ति है +। तीसरे विभाग के

---

* Ibid, pp. 89-96, Nos. 258-305; pp. 98-107, Nos. 321-84.

† Ibid, pp. 96-98, 306-20' तृतीय विभाग के कई सिक्कों पर भी "महाराजाधिराज" के बदले में "राजाधिराज" उपाधि है। Ibid, pp. 100-07. Nos. 332-84.

‡ Ibid, pp. 119-21. Nos. 432-44.

\+ Ibid, pp. 121-22, Nos. 445-50.

सिक्कों पर बैल की जगह एक वेदी है *। इस विभाग में तीन उपविभाग हैं। पहले उपविभाग में दूसरी ओर "परम-भागवत श्रीविक्रमादित्यस्कन्दगुप्तः" लिखा है †। दूसरे उपविभाग में "परमभागवत श्रीविक्रमादित्यस्कंदगुप्तः"‡ और तीसरे उपविभाग में "परमभागवत श्रीस्कन्दगुप्तः" × लिखा है। स्कन्दगुप्त के बाद सौराष्ट्र और मालव पर से गुप्तवंशीय सम्राटों का अधिकार उठ गया था। ईसवी पाँचवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में बुधगुप्त नाम के एक राजा ने मालव का राज्य पाया था और शक राजाओं के सिक्कों के ढंग पर चाँदी के सिक्के बनवाए थे। चाँदी के इन सिक्कों पर गौप्त संवत् १७५ मिलता है और दूसरी ओर "विजितावनिरवनिपतिः श्रीबुधगुप्तो दिविजयति" लिखा है +। गौप्त संवत् १६५ के खुदे हुए और ईरान में मिले हुए एक शिलालेख में बुधगुप्त का उल्लेख मिला है ÷। अब तक यह निश्चित करने का कोई उपाय नहीं मिला कि बुधगुप्त का गुप्त राजवंश के साथ क्या संबंध था। गौप्त संवत् १९१ में खुदे हुए और ईरान में मिले हुए एक और शिलालेख में भानुगुप्त नाम के मालव के एक और राजा का उल्लेख है =।

---

* Ibid, p. 122.

† Ibid, pp. 122-24, Nos. 451-71.

‡ Ibid, pp. 124-29. Nos. 472-520.

× Ibid, p. 129. Nos. 521-22.

\+ Ibid, p. 153, Nos. 517-19.

÷ Fleet's Gupta Inscriptions p. 89.

= Ibid, p. 92.

भानुगुप्त के बाद मालव पर हूण लोगों का अधिकार हुआ था। स्कन्दगुप्त की मृत्यु के उपरान्त गुजरात पर वलभी के मैत्रक-वंशी राजाओं का और सौराष्ट्र पर त्रकुटक राजाओं का अधिकार हुआ था। मैत्रकवंशी राजा लोग गुप्त राजाओं के सिक्कों के ढंग पर अपने सिक्के बनवाते थे। उन पर एक ओर राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर एक त्रिशूल है। उन पर जो कुछ लिखा है, वह अभी तक पढ़ा नहीं गया*। त्रैकूट वंश के दहसेन और व्याघ्रसेन नामक दो राजाओं के सिक्के मिले हैं। दहसेन के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और दूसरी ओर चैत्य, तारका और ब्राह्मी अक्षरों में "महाराजेन्द्रदत्तपुत्रपरमवैष्णवश्री-महाराजदहसेन" लिखा है†। सुरत के पास पर्दी नामक स्थान में एक ताम्रलेख मिला है। उससे पता चलता है कि दहसेन ने अश्व-मेध यज्ञ किया था और त्रैकुटक संवत् २०७ (कलचूरि, चेदि संवत् २०७=ईसवी सन् ४५६) में एक ब्राह्मण को एक गाँव दान दिया था ‡। दहसेन के लड़के का नाम व्याघ्रसेन था। व्याघ्र-

---

* V. A Smith, Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I, p. 127, Nos. III;—Rapson's Indian Coins, p. 27.

† Rapson, British Museum Catalogue of Indian Coins, Andhras and W. Ksatrapas etc. pp. 198-201, Nos. 930-74.

‡ Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol, XVI, p. 346.

सेन के चाँदी के सिक्के दहसेन के सिक्कों की तरह हैं। उन पर दूसरी ओर "महाराजवहसेनपुत्रपरमवैष्णवश्रीमहाराजव्याघ्रसेन" लिखा है। * शक राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हुए भीमसेन † और कृष्णराज ‡ नामक दो राजाओं के सिक्के मिले हैं। भीमसेन का एक शिलालेख मिला है ×; परन्तु उस का समय अथवा वंशपरिचय अभी तक निश्चित नहीं हुआ। पहले मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान था कि यह कृष्णराज राष्ट्रकूटवंशी द्वितीय कृष्णराज था +; परन्तु रैप्सन ने इस बात को नहीं माना है ÷। कृष्णराज के नाम के सिक्के बम्बई के नासिक जिले में मिलते हैं =। आगे के अध्याय में मालव में बने हुए अंध्र राजाओं के सिक्कों का विवरण दिया गया है।

---

* Rapson, B. M. C. pp. 202–03 Nos. 975–82.

† Rapson, Indian Coins, p. 27.

‡ Cunningham's Coins of Mediaeval India; p. 8, pl. I. 18.

× Cunningham, Archaeological Survey Reports, Vol, IX. p. 119. pl. XXX.

+ Journal of the Royal Asiatic Society 1889, p. 138.

÷ Indian Coins. 27.

= Elliott, Coins of Southern India, p. 149.

सौराष्ट्र का द्वितीय राजवंश:—
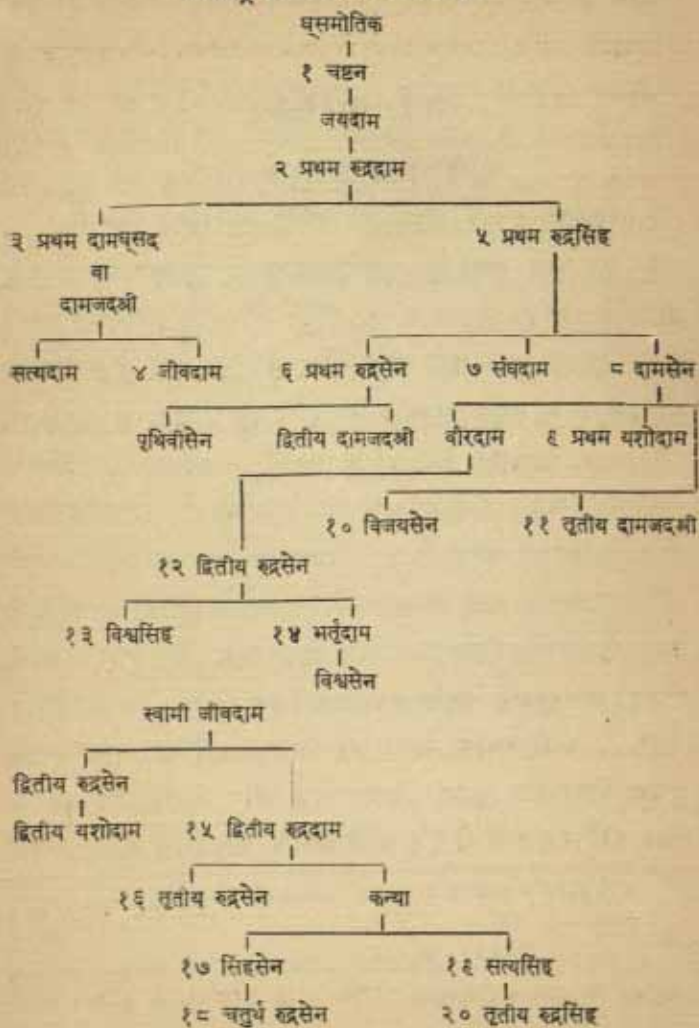
नवाँ परिच्छेद

दक्षिणापथ के पुराने सिक्के

दक्षिणापथ की तौल की रीति उत्तरापथ की तौल की रीति की तरह नहीं है। दक्षिणापथ में घुँघची के बीज के बदले में करंज या कंज के बीजों से तौल आरम्भ होती है। करंज का एक बीज तौल में ५० ग्रेन के लगभग होता है *। बहुत प्राचीन काल से ही दक्षिण में सोने के गोलाकार सिक्कों का प्रचार था। सोने के ये सिक्के "फणम्" कहलाते हैं। एक फणम् तौल में करंज के एक बीज के बराबर होता है †। सम्भवतः सबसे पहले फणम् लीडिया अथवा और किसी पश्चिमी देश के पुराने सिक्कों के ढंग पर बने थे। जिस प्रकार लीडिया देश के पुराने सिक्के गोलाकार सुवर्ण पिण्ड पर अंक-चिह्न अंकित करके बनाए जाते थे, उसी प्रकार फणम् भी बनाए जाते थे। बहुत पुराने फणम् गोलाकार सुवर्ण पिण्ड मात्र और देखने में इमली के बीज की तरह होते थे ‡। आगे चलकर अंकचिह्न अंकित करने

* Elliott's South Indian Coins p. 52 note.I.

† Ibid p. 53.

‡ Ibid; V. A. Smith, Catalogue of Coins in the Indian Museum Calcutta, Vol. 1, p. 317, Nos. 1-8.

के लिये ये सुवर्ण पिण्ड चक्राकार हो गए *। इमली के बीज की तरह के सिक्के विजयानगर के राजाओं, पुर्त्तगीजों † और अँगरेज व्यापारियों ‡ ने बनवाए थे। ईसवी संवत् १८३५ में जब भारतवर्ष में सब जगह एक ही तरह के सिक्के चलने लगे, तब ऐसे सिक्कों का प्रचार उठ गया ×।

दक्षिणापथ के सिक्कों में अंध्र जातीय राजाओं के सिक्के सब से पुराने हैं। किसी समय अंध्र राजाओं का साम्राज्य नर्मदा के दक्षिणी किनारे से समुद्र तट तक था। इसी लिये मालव, सौराष्ट्र, अपरान्त आदि भिन्न भिन्न देशों में भी अन्ध्र राजाओं के भिन्न भिन्न देशों के सिक्के मिले हैं। अंध्र देश अर्थात् कृष्णा और गोदावरी नदी के बीच के प्रदेश में दो तरह के सिक्के मिले हैं। ये दोनों तरह के सिक्के भिन्न भिन्न समय में प्रचलित नहीं थे; क्योंकि पुडुमावि, चन्द्रशाति, श्रीयज्ञ और श्रीरुद्र आदि राजाओं ने दोनों प्रकार के सिक्के बनवाए थे। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और दूसरी ओर उज्जयिनी नगरी का चिह्न मिलता है। इन पर के लेखों के अक्षर स्पष्ट नहीं हैं +। इस प्रकार के पाँच अंध्र राजाओं के

---

* Ibid pp. 323–25.

† Ibid, p. 318, Nos. 1–2.

‡ Ibid, pp. 319–20.

× Ibid, p. 311.

+ Rapson, Catalogue of Indian Coins, Andhras W. Ksatrapas, etc. p. lxxii.

सिक्के मिले हैं :—

(१) वाशिष्ठीपुत्र श्रीपुडुमावि ।

(२) वाशिष्ठीपुत्र श्रीशातकर्णि ।

(३) वाशिष्ठीपुत्र श्रीचंद्रशाति ।

(४) गोतमीपुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि ।

(५) श्रीरुद्रशातकर्णि * ।

दूसरे प्रकार के सिक्कों पर पहली ओर घोड़े, हाथी अथवा दोनों की मूर्त्तियाँ मिलती हैं। किसी किसी सिक्के पर सिंह की मूर्त्ति भी है। ऐसे सिक्कों का लेख बहुत ही अस्पष्ट है †। इन सिक्कों पर नीचे लिखे अंध्र राजाओं के नाम मिलते हैं :—

(१) श्रीचन्द्रशाति।

(२) गोतमीपुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि ।

(३) श्रीरुद्रशातकर्णि ‡ ।

मध्य प्रदेश में पोटिन नामक मिश्र धातु के बने हुए एक प्रकार के सिक्के मिलते हैं। उन पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर उज्जयिनी नगर का चिह्न है × । इस प्रकार के नीचे लिखे अंध्र राजाओं के सिक्के मिले हैं :—

---

* Ibid.

† Ibid, p. lxxiv.

‡ Ibid.

× Ibid, p. lxxx.

(१) पुडुमावि।

(२) श्रीयज्ञ।

(३) श्रीरुद्र।

(४) द्वितीय श्रीकृष्ण *।

दक्षिणापथ के अनन्तपुर और कड़प्पा जिले में एक प्रकार के सीसे के सिक्के मिले हैं। उन पर पहली ओर घोड़ा, सुमेरु पर्वत और बोधिवृक्ष मिलता है। ऐसे सिक्कों पर के लेख पूरी तरह से पढ़े नहीं गए हैं †।

चोड़मंडल के किनारे पर एक और प्रकार के सीसे के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर एक जहाज और दूसरी ओर उज्जयिनी नगरी का चिह्न है ‡। ऐसे सिक्के सम्भवतः आंध्र राजाओं के हैं; क्योंकि उनमें से एक सिक्के पर "पुडुमावि" नाम पढ़ा गया है ×। मैसूर के उत्तर में सीसे के एक प्रकार के बड़े सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर बैल और दूसरी ओर बोधिवृक्ष और सुमेरु पर्वत है। ऐसे सिक्कों पर "सदकणकड़लाय महारठिस" लिखा है +। रैप्सन का अनुमान है कि ऐसे सिक्के आंध्र राजाओं के किसी महारठि (महाराष्ट्रीय ?)

---

* Ibid.

† Ibid, p lxxxi

‡ Ibid.

× Ibid, p. lxxxii.

+ Ibid, pp. lxxxii–lxxxiii.

वंशी शासक के बनवाए हुए हैं *। कारवार जिले अर्थात् कनाड़ा प्रदेश के उत्तरार्द्ध में मिले हुए सीसे के कुछ बड़े सिक्कों पर धुट्टकड़ानन्द और मुड़ानन्द नाम के दो राजाओं का नाम मिलता है। ऐसे सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और दूसरी ओर बोधिवृक्ष है †। महाराष्ट्र देश के दक्षिण भाग अर्थात् वर्त्तमान कोल्हापूर राज्य में एक प्रकार के सीसे के सिक्के मिलते हैं। ऐसे सिक्कों पर के लेख का अर्थ अभी तक साफ समझ में नहीं आया है। इनपर पहली ओर सुमेरु पर्वत और बोधिवृक्ष और दूसरी ओर कमान और तीर है। ऐसे सिक्कों पर तीन प्रकार के लेख मिलते हैं :—

(१) रञो वासिठीपुतस विड़िवायकुरस।

(२) रञो माटरिपुतस सिवलकुरस।

(३) रञो गोतमिपुतस विड़िवायकुरस ‡।

विड़िवायकुर और सिवलकुर इन दोनों शब्दों का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हुआ। रैप्सन का अनुमान है कि ये शब्द स्थानीय भाषाओं में लिखी हुई स्थानीय उपाधियाँ हैं ×। इस विषय में भी संदेह है कि ऐसे सिक्के अन्ध्र राजाओं के हैं या नहीं। श्रीयुक्त देवदत्त रामकृष्ण भाण्डारकर का अनुमान है कि

---

* Ibid, p. lxxxii.

† Ibid, p. lxxxiii.

‡ Ibid pp. lxxxvi–lxxxvii.

× Ibid, p. lxxxvii.

ये अन्ध्र राजाओं के सिक्के नहीं हैं *। पंडितवर श्रीयुक्त सर रामकृष्ण गोपाल भाण्डारकर के मतानुसार ये सिक्के अन्ध्र साम्राज्य के भिन्न भिन्न प्रदेशों के शासकों के बनवाए हुए हैं †। अब तक इन तीनों प्रकार के सिक्कों का समय अथवा परिचय निश्चित नहीं हुआ। सोपारा और गुरजात में गौतमीपुत्र शातकर्णि और श्रीयज्ञशातकर्णि ने जो सिक्के बनवाए थे, उनका विवरण पिछले परिच्छेद में दिया जा चुका है।

मालव में अन्ध्र राजवंश के सबसे पुराने सिक्के मिले हैं। ये सिक्के अवन्ती नगर के सिक्कों के ढंग पर बने हैं और इन पर "रञो सिरिसातस" लिखा रहता है‡। नानाघाट की गुफा में श्रीशातकर्णि की पत्थर की मूर्त्ति के नीचे जिस प्रकार के अक्षरों में "रञो श्रीसातस" लिखा है ×, वह ठीक इन सिक्कों के लेख के अक्षरों के समान है +। प्राचीन लिपितत्व के अनुसार ऐसे सिक्के और शिलालेख ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी के मध्य भाग के बने और खुदे हुए हैं।

स्वर्गीय पण्डित भगवानलाल इन्द्रजी ने अपने एकत्र किए

---

* Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XXIII. p. 68.

† Early History of Deccan, 2nd Edition p. 20.

‡ Rapson, B. M. C. p. xcii.

× Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XIII, p. 311.

+ Rapson, B. M. C. p. xciii.

हुए सिक्के मरते समय लण्डन के ब्रिटिश म्यूजिअम को प्रदान कर दिए थे। उन सिक्कों में दो प्रकार के सिक्के मिलते हैं। उन सिक्कों पर के लेख का जो अंश पढ़ा जा सका है, उससे पता चलता है कि ये सिक्के भी अन्ध्र राजाओं के ही हैं। पहले प्रकार के सिक्के ईरान के पुराने सिक्कों की तरह हैं *। कनिंघम ने लिखा है कि इस प्रकार के सिक्के पुरानी विदिशा नगरी (वर्त्तमान बेसनगर) के खँडहरों में और बेस तथा बेतवा नदी के बीच के प्रदेश में मिलते हैं †। इसलिये रैप्सन का अनुमान है कि ये पूर्व मालव के सिक्के हैं ‡। ऐसे सिक्कों के चार विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्के पोटिन के बने हैं। उन पर एक ओर घेरे में बोधिवृक्ष, उज्जयिनी नगर का चिह्न, नन्दिपाद चिह्न और सूर्य का चिह्न है। दूसरी ओर हाथी की मूर्त्ति और स्वस्तिक चिह्न है ×। दूसरे विभाग के सिक्कों पर पहली ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर घेरे में बोधि-वृक्ष और उज्जयिनी नगर के चिह्न हैं। इस विभाग के सिक्के ताँबे के बने हुए हैं +। तीसरे विभाग के सिक्कों पर पहली ओर सिंह की मूर्ति और नन्दिपाद चिह्न और दूसरी ओर घेरे में बोधिवृक्ष और उज्जयिनी नगर का चिह्न है। ऐसे सिक्के

* Ibid, p. xcv.

† Cunningham's Coins of Ancient India, p. 99.

‡ Rapson, B. M. C. p. xcv.

× Ibid, p. 3, Nos. 5-6.

+ Ibid, No. 7.

भी ताँबे के बने हुए हैं *। ‡चौथे विभाग के सिक्के पोटिन के बने हुए हैं। उन पर पहली ओर सिंह की मूर्ति और स्वस्तिक चिह्न है और ब्राह्मी अक्षरों में "रञोसातकंणिस" उलटी तरफ लिखा है। दूसरी ओर नन्दिपाद चिह्न के बीच में उज्जयिनी नगर का चिह्न और घेरे में बोधिवृक्ष है †। इन चारों विभागों के सिक्के चौकोर हैं। दूसरे प्रकार के सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग के सिक्कों पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति, शंख और उज्जयिनी नगर का चिह्न है। दूसरी ओर घेरे में बोधिवृक्ष है। ऐसे सिक्के पोटिन के बने हुए और गोलाकार हैं ‡। दूसरे विभाग के सिक्के ताँबे के बने हुए और चौकोर हैं। इसके सिवा उनकी और सब बातें पहले विभाग के सिक्कों की तरह हैं ×।

भिन्न भिन्न समय में आंध्र राजाओं का अधिकार भिन्न भिन्न प्रदेशों में था; इसलिये भिन्न भिन्न आंध्र राजाओं के बहुत से भिन्न भिन्न प्रकार के सिक्के मिला करते हैं। जिस समय जो प्रदेश आंध्र राजाओं के अधिकार में आया, उस समय आंध्र राजाओं ने उसी देश के सिक्कों के ढंग पर अपने सिक्के बनवाए। जान पड़ता है कि ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में मालव

---

* Ibid, p. 4, No. 8.

† Ibid, Nos. 9–11.

‡ Ibid pp. 17–19, Nos. 59–75.

× Ibid, p. 19, No. 87.

देश में अंध्र राजाओं का राज्य था। इसी लिये मालव में मिले हुए "श्रीसात" के नाम के सिक्के मालव के पुराने सिक्कों के ढंग पर बने थे। श्रीसात के नाम के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर हाथी और नदी के जल में तैरती हुई तीन मछलियों की मूर्त्ति है। ऐसे सिक्के सीसे के बने हुए हैं *। दूसरे प्रकार के सिक्के पोटिन के बने हैं। उन पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति, घेरे में बोधिवृक्ष, सुमेरु पर्वत और मछली सहित नदी है। दूसरी ओर खड़े हुए मनुष्य की मूर्त्ति और उज्जयिनी नगर का चिह्न है †। मालव के पुराने सिक्कों के ढंग पर बना हुआ सीसे का एक सिक्का मिला है, जिस पर किसी राजा के नाम के आदि के दो अक्षरों को "अज" पढ़ा जा सकता है ‡। अन्ध्र देश के गोदावरी जिले में और एक सीसे की मूर्त्ति मिली है, उस पर एक ओर राजा के नाम के अन्त के दो अक्षरों को "वीर" पढ़ा गया है ×। पूर्व और पश्चिम मालव में मिले हुए छः प्रकार के जिन सिक्कों का पहले वर्णन किया गया है, उन पर साधारणतः "सातकणिस" लिखा है +। महाराष्ट्र देश के दक्षिण अंश में जो तीन प्रकार के सिक्के मिलते हैं, उनमें भी परस्पर कुछ प्रकार-भेद मिलता

* Ibid, p. 1, No. 1.
† Ibid, No. 2.
‡ Ibid, p. 2., No. 3.
× Ibid, No. 4.
+ Ibid, pp. 3-4.

है। वाशिष्ठीपुत्र विड़िवायकुर के नाम के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्के सीसे के बने हैं। उन पर एक ओर सुमेरु पर्वत, घेरे में बोधिवृक्ष और स्वस्तिक और दूसरी ओर कमान और तीर है*। दूसरे प्रकार के सिक्के पोटिन के बने हैं। उन पर एक ओर सुमेरु पर्वत के ऊपर वृक्ष और नन्दिपाद चिह्न और दूसरी ओर कमान और तीर है†। माठरीपुत्र सिवलाकुर के नाम के सिक्के भी दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्के सीसे के बने हैं। उन पर एक ओर सुमेरु पर्वत के ऊपर बोधिवृक्ष और दूसरी ओर धनुष है ‡। दूसरे प्रकार के सिक्के पोटिन के बने हैं। उन पर एक ओर सुमेरु पर्वत के ऊपर बोधिवृक्ष और नन्दिपाद चिह्न और दूसरी ओर कमान और तीर है ×। गौतमीपुत्र विड़िवायकुर के सिक्के भी दो प्रकार के हैं—सीसे + के और पोटिन के। पोटिन के बने सिक्कों के दो विभाग हैं। पहले विभाग में पहली ओर नन्दिपाद ÷ और दूसरे विभाग में स्वस्तिक चिह्न = है। पश्चिम भारत में मिले हुए पोटिन के बने कुछ सिक्कों पर एक ओर

---

* Ibid, p. 5, Nos 13–16.

† Ibid, p. 6, Nos. 17–21.

‡ Ibid, pp. 7–9, Nos. 22–30.

× Ibid, p. 9, Nos. 31–32.

+ Ibid, pp. 13–14, Nos. 47–52.

÷ Ibid, p. 15, Nos. 53–58.

= Ibid, p. 16.

हाथी की मूर्त्ति, शंख और उज्जयिनी नगर का चिह्न और दूसरी ओर बोधिवृक्ष मिलता है *। रैप्सन का अनुमान है कि नहपान को परास्त करने से पहले गौतमीपुत्र शातकर्णि ने ये सब सिक्के बनवाए थे †। अन्ध्र देश में मिले हुए जिन सिक्कों पर एक ओर सुमेरु पर्वत और दूसरी ओर उज्जयिनी नगर का चिह्न है, उन पर "रञोवासिठिपुतस सिरि पुड़ुमाविस" लिखा है ‡। परन्तु मध्य प्रदेश के चाँदा जिले में मिले हुए पोटिन के बने सिक्कों पर × और चोरमंडल के किनारे मिले हुए सीसे के बने सिक्कों पर + "सिरि पुड़ुमाविस" लिखा रहता है। अंध्र देश के कृष्णा और कावेरी जिले में वासिष्ठी-पुत्र श्रीशिवशातकर्णि, वासिष्ठीपुत्र श्रीचन्द्रशाति और गौतमी-पुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि के सीसे के सिक्के मिलते हैं। वासिष्ठी-पुत्र श्रीशिव शातकर्णि के सिक्के एक प्रकार के हैं ÷। श्रीचन्द्रशाति के एक प्रकार के सिक्कों पर 'वासिष्ठीपुत्र' विशेषण मिलता है =। परन्तु दूसरे प्रकार के सिक्कों पर यह विशेषण नहीं है **।

---

* Ibid, pp 17-19. Nos. 59-87.
† Ibid, p. xcv.
‡ Ibid, p. 20, Nos. 88-89.
× Ibid, p. 21, Nos. 90-94.
+ Ibid, pp. 22-23, Nos. 95-104.
÷ Ibid, p. 29. Nos. 115-16.
= Ibid, pp. 30-31, Nos. 117-24.
** Ibid, pp 32-33, Nos. 125-31.

अन्ध्र देश के मिले हुए गौतमीपुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि के सिक्के सीसे के बने हैं*। परन्तु मध्य प्रदेश के चाँदा जिले में मिले हुए उसके सिक्के पोटिन के बने हैं†। चाँदा और अन्ध्र देश में श्रीकृष्णशातकर्णि नामक एक राजा के पोटिन के बने सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति है और ब्राह्मी अक्षरों में "सिरि कहसातकणिस" लिखा है। दूसरी ओर दूसरे अन्ध्र सिक्कों की तरह उज्जयिनी नगर का चिह्न है‡।

दक्षिण में वीरबोधि अथवा वीरबोधिदत्त ×, शिवबोधि +, चन्द्रबोधि और श्रीबोधि ÷ नामक चार राजाओं के सीसे के सिक्के मिलते हैं। परन्तु अब तक इनका परिचय वा समय निश्चित नहीं हुआ। कुमारिका अन्तरीप के पास के स्थानों में प्राचीन अंक-चिह्नवाले सिक्कों के ढंग पर एक प्रकार के चौकोर सिक्के बनते थे। मुद्रातत्त्वविद् लोगों का अनुमान है कि इस प्रकार के सिक्के पाण्ड्य राजाओं के हैं। सम्भवतः ये सब सिक्के ईसवी सन् के आरम्भ से ईसवी तीसरी शताब्दी के अन्त तक प्रचलित थे। पाण्ड्य राजाओं के एक प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं जिन पर उनका दो

---

* Ibid, pp. 34-41, Nos. 132-64.

† Ibid, p. 42. Nos. 163-70.

‡ Ibid, p. 48, Nos. 180.

× Ibid, pp. 207-08, Nos. 983-87.

\+ Ibid, p. 209. Nos. 988-92.

÷ चन्द्रबोधि-Ibid, p. 210, Nos. 993-97 श्रीबोधि-No. 998.

मछलियोंवाला चिह्न है *। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि ऐसे सिक्के ईसवी सातवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक प्रचलित थे †। ईसवी ग्यारहवीं शताब्दी में पाण्ड्य देश को चोल राजाओं ने जीत लिया था। इसी लिये उस समय के ताँबे के सिक्कों पर पांड्य राजाओं के दो मछलियोंवाले चिह्न के साथ चोल राजाओं का बाघवाला चिह्न भी मिलता है ‡।

वर्त्तमान मैसूर का पश्चिमांश पहले कोङ्गु देश कहलाता था। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि दक्षिणापथ के धनुषवाले सोने और ताँबे के सिक्के इसी प्रदेश के हैं ×। हाथी की मूर्त्तिवाले एक और प्रकार के सोने के सिक्के हैं जो 'गजपति पागोडा' कहलाते हैं और जो इसी देश के सिक्के माने जाते हैं +। काश्मीर के राजा हर्षदेव ने इसी प्रकार के सिक्कों के ढंग पर अपने सिक्के बनवाए थे ÷। चन्द्रगिरि और कुमारिका

---

* Indian Coins, p. 35.

† Ibid, p. 36.

‡ Ibid.

× Ibid.

+ V. A. Smith, Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I-p. 3:8. No. 1.

÷ दक्षिणात्यभवद्भङ्गिः प्रिया तस्य विलासिनः।
कर्णाटान् गुणटङ्कस्ततस्तेन प्रवर्त्तितः ॥
राजतरङ्गिणी—सप्तम तरङ्ग ९२६।

अन्तरीप के बीच का प्रदेश प्राचीन काल में केरल कहलाता था। प्राचीन काल में केरल राजाओं के नाम के सोने के सिक्के प्रचलित थे। ऐसा केवल एक ही सिक्का अब तक मिला है, जो लंडन के ब्रिटिश म्यूजिअम में रखा है। उस पर दूसरी ओर नागरी अक्षरों में "श्रीवीरकेरलस्य" लिखा है *।

चोल राजाओं के दो प्रकार के सोने के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्के ईसवी ११वीं शताब्दी से पहले के बने हैं। उन पर चोल राजाओं के चिह्न 'व्याघ्र' के साथ चेर राजाओं का चिह्न मछली है †। इसलिये मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि उन दिनों पांड्य और चेर राजा लोग चोल राजाओं की अधीनता स्वीकृत करते थे। ईसवी ११वीं शताब्दी के आरंभ में चोल राजाओं ने प्रायः सारे दक्षिणापथ पर अधिकार कर लिया था और सारा अंडमन द्वीपपुंज तथा सिंहल जीत लिया था। ईसवी सन् ११२२ के बाद चोलवंशी प्रथम राजा राजदेव ने एक नए प्रकार के सिक्के चलाए थे। उन पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर बैठे हुए राजा की मूर्त्ति है ‡। ईसवी सन् ११७० में चोलवंशी प्रथम कुलोत्तुंग ने सोने के एक प्रकार के बहुत

---

* Indian Coins, p. 36.

† Elliott, South Indian Coins, p. 152, G, No. 151, pl. IV.

‡ Iudian Coins, p. 36.

छोटे सिक्के बनवाए थे *। चोल-विजय के उपरांत सिंहल के राजाओं ने चोल सिक्कों के ढंग पर एक प्रकार के सिक्के बनवाए थे। उन पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर लक्ष्मी की मूर्त्ति है †। ऐसे सिक्के ईसवी सन् ११५३ से १२८६ तक प्रचलित थे। पराक्रमबाहु, विजयबाहु, लीलावती, साहसमल्ल, निश्शंकमल्ल, धर्माशोक और भुवनैकबाहु के ताँबे के सिक्के इसी प्रकार के हैं ‡।

पल्लव लोग चोड़मंडल के पास के स्थान में रहा करते थे। उन लोगों के पुराने सिक्के अंध्र राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हुए हैं। उन पर एक ओर बैल और दूसरी ओर वृक्ष, जहाज, तारका, केकड़ा और मछली मिलती है ×। पल्लव लोगों के सिक्कों पर जहाज देखकर मुद्रातत्त्व के ज्ञाता अनुमान करते हैं कि उन दिनों पल्लव लोग व्यापार के लिये विदेश जाया करते थे। पल्लव लोगों के बाद के समय में सोने और चाँदी दोनों धातुओं के सिक्के बनते थे। उन पर पल्लव राजाओं का चिह्न सिंह और संस्कृत अथवा कनड़ी भाषा में कुछ लिखा हुआ मिलता है +।

ईसवी सातवीं शताब्दी के बाद चालुक्यवंशी राजाओं का

* Indian Antiquary, 1896, p. 321, pl. II, 26–27.

† Indian Coins, p. 37.

‡ I. M. C. Vol. I, pp. 327–30.

× Indian Coins, p. 37.

+ Ibid.

राज्य दो भागों में बँट गया था। पूर्व की ओर चालुक्य राजा लोग कृष्णा और गोदावरी नदी के बीच के प्रदेश में राज्य करते थे और पश्चिम ओर चालुक्य राजाओं का राज्य दक्षिणापथ के पश्चिम प्रांत में था। दोनों शाखाओं के राजाओं के सिक्कों पर चालुक्य वंश का चिह्न वराह मिलता है *। पश्चिम के चालुक्य राजाओं के सिक्के सोने के तौल में भारी और संभवतः गोआ के कादम्बवंशी राजाओं के पद्मटंका नामक सोने के सिक्कों के ढंग पर बने हुए हैं। कलकत्ते के अजायब घर में जगदेकमल्ल अर्थात् द्वितीय जयसिंह का सोने का सिक्का रक्खा है †। पूर्व ओर अर्थात् वेंगी के चालुक्य राजाओं के सोने, चाँदी और ताँबे तीनों के सिक्के मिले हैं ‡। विषमसिद्धि अर्थात् कुब्जविष्णुवर्द्धन का चाँदी का सिक्का कलकत्ते के अजायब घर में रक्खा है ×। विशाखपत्तन जिले के येल्लमंचिलि नामक स्थान में विष्णुवर्द्धन के ताँबे के कई सिक्के मिले थे +। इसी वंश के चालुक्यचंद्र वा शक्तिवर्म्मा के सोने के कई सिक्के अराकान तट के पास चेदुबा द्वीप में

---

* Ibid.

† I. M. C. Vol. 1, p. 313, Nos. 1–9.

‡ Indian Coins, p. 37. I. M. C. Vol. 1, p. 312.

× Ibid. pp. 312–18. Nos. 1–5.

\+ Indian Antiquary, 1896, p. 322, pl. II. 34.

मिले हैं *। ऐसे सिक्के सोने के बहुत ही पतले पत्तर के हैं और उन पर राज्यारोहण का वर्ष लिखा है।

गोआ के कादम्बवंशी राजाओं के सोने के सिक्कों के बीच में एक पद्म रहता है। इसी लिये सोने के ऐसे सिक्के पद्मटंका कहलाते हैं †। ईलियट का अनुमान है कि ये सिक्के ईसवी पाँचवीं अथवा छठीं शताब्दी के हैं ‡। परंतु रैप्सन का कथन है कि इन सिक्कों पर जिन अक्षरों का व्यवहार है, वे अक्षर बहुत बाद के समय के हैं ×। कल्याणपुर के कल्चुरि अथवा चेदि वंश के केवल एक ही राजा के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर वराह अवतार की मूर्त्ति और दूसरी ओर नागरी अक्षरों में "मुरारि" लिखा है +। मुरारि संभवतः इस वंश के दूसरे राजा सोमेश्वरदेव का दूसरा नाम है ÷।

देवगिरि के यादववंशी राजाओं के सोने, चाँदी और ताँबे तीनों के सिक्के मिले हैं। सोने के सिक्कों पर एक ओर गरुड़मूर्त्ति और दूसरी ओर कनड़ी अक्षरों में राजा का नाम

---

* Ibid, 1890 p. 79; Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, 1872, p. 3.

† Indian Coins, p. 38, I. M. C. Vol. 1, pp. 317–18. Nos. 1–6.

‡ Elliott's South Indian Coins, p. 66.

× Indian Coins. p. 38.

+ Elliott's South Indian Coins. p. 152, D; pl. III,87.

÷ Ibid, p. 78.

मिलता है*। चाँदी और ताँबे के सिक्के भी इन्हीं सिक्कों के ढंग पर बनते थे। मैसूर के द्वारसमुद्र नामक स्थान में यादव वंशी राजाओं के सोने और ताँबे के सिक्के मिले हैं। सोने के सिक्कों पर एक ओर सिंह की मूर्त्ति और दूसरी ओर कन्नड़ी भाषा का लेख है †। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर हाथी की मूर्त्ति और दूसरी ओर कन्नड़ी भाषा का लेख है‡। द्वारसमुद्र के यादववंशी राजाओं के सिक्कों पर राजा के नाम के बदले में केवल उपाधि मिलती है; जैसे—"श्रीतल काडु-गोण्ड" × अर्थात् तलकाडुविजयी। यह विष्णुवर्द्धन की उपाधि है। "श्रीनोणंबवाडिगोण्डन्" + अर्थात् नोणंबवाड़ि-विजयी। वरंगल के काकतीय वंश के राजाओं के सोने और ताँबे के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर बैल की मूर्त्ति और दूसरी ओर कन्नड़ी अथवा तेलगू भाषा का लेख है ÷। ये सब लेख अभी तक पढ़े नहीं गए।

जब उत्तरापथ पर मुसलमानों का अधिकार हो गया, तब दक्षिणापथ के विजयनगर में एक नया साम्राज्य स्थापित हुआ था। विजयनगर के राजा लोग सन् १५६५ तक बिल-

---

* Ibid, p. 152 D, Nos. 87–89½.

† Ibid, No. 90–91.

‡ Ibid, No. 92.

× Ibid, No. 90.

+ Ibid. No. 91.

÷ Ibid Nos. 93–95.

कुल स्वाधीन थे और सोहलवीं शताब्दी के अंत तक दक्षिणापथ में पुराने आकार के सोने के सिक्के बराबर चलते थे। जब दक्षिणापथ के उत्तरी अंश को मुसलमानों ने जीत लिया, तब वहाँ दूसरे प्रकार के सिक्कों के प्रचलित हो जाने पर भी दक्षिणी अंश में पुराने आकार के सिक्के ही प्रचलित थे*। विजयनगर के तीन भिन्न भिन्न राजवंशों के सिक्के मिले हैं। पहले राजवंश के सिक्कों पर एक ओर राजा का नाम और दूसरी ओर विष्णु तथा लक्ष्मी की मूर्त्ति है†। दूसरे ‡ और तीसरे × राजवंश के सिक्कों पर दूसरी ओर केवल विष्णु की मूर्त्ति मिलती है।

---

* Indian Coins p. 38.

† I. M. C., Vol. 1, p. 323.

‡ Ibid, pp. 313-25.

× Ibid, p. 325.

दसवाँ परिच्छेद

सैसनीय सिक्कों का अनुकरण

जिस बर्बर जाति ने प्राचीन गुप्त साम्राज्य को ध्वंस किया था, वह "हूण" और पश्चिम में "हन्" कहलाती है। संस्कृत साहित्य में उसका "श्वेत" "सित" या "हारहूण" के नाम से उल्लेख है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में पह्लव लोगों के साथ श्वेत हूणों का उल्लेख है*। जिन लोगों ने स्कन्दगुप्त के राजत्व काल में गुप्त साम्राज्य नष्ट किया था, वे लोग मध्य एशिया के रेगिस्तानवाले इन्हीं श्वेत हूणों की शाखा मात्र थे। श्वेत हूणों ने अनुमानतः सन् ४२० ई० से ५५६ ई० तक बराबर पारस्य के सैसनीय राजाओं के राज्य पर आक्रमण किए थे†। सन् ५५६ में जब तुरुष्क लोगों ने हूणों का बल तोड़ दिया, तब कहीं जाकर पारस्य के राजा लोग हूणों के आक्रमण से बच सके थे‡। सैसनीय वंश का पारस्य का राजा येज़देगर्द सन् ४३८ से ४५७ ई० के बीच में और फीरोज सन्

---

* गिरिदुर्गपह्लव श्वेतहूणचोलावगाणमरुचीनाः ।
प्रत्यन्तधानि महेच्छ व्यवसायपराक्रमोपेताः ।
—बृहत्संहिता १६।३८ Kern's Ed. p. 106.

† Indian Coins, p. 28.

‡ Ibid.

४५७ से ४८४ ई० के बीच में हूणों से कई बार परास्त हुआ था। उसी समय भारत के सीमा प्रदेश के सैसनीय साम्राज्य के प्रदेशों पर हूण लोगों का अधिकार हो गया था *। जिस हूण राजा ने भारत में हूण राज्य स्थापित किया था, चीन देश के इतिहासकारों के मत से उसका नाम ले-लीह था †। मुद्रातत्त्व-वेत्ताओं के मतानुसार यह ले-लीह और काश्मीर का राजा लखन उदयादित्य दोनों एक ही व्यक्ति थे ‡। लखन उदयादित्य के चाँदी के कई सिक्के मिले हैं ×। हूण लोगों ने पहले गान्धार के किदारकुषण वंश के राजाओं को परास्त करके तब भारतवर्ष में प्रवेश किया था। गुप्त, कुषण और सैसनीय इन तीन भिन्न भिन्न वंशों के साथ उनका सम्बन्ध हुआ था, इसलिये उन लोगों ने तीनों राजवंशों के सिक्कों का अनुकरण किया था। हूण लोगों को सब से पहले पारस्य के सैसनीय वंश से काम पड़ा था। उन लोगों ने भारत की सीमा पर के सैसनीय साम्राज्य के प्रदेशों पर अधिकार करके लूट पाट में जो सैसनीय सिक्के पाए थे, वे कुछ दिनों तक बिलकुल उन्हीं का व्यवहार करते थे +। हूण जाति के राज्यों में सैसनीय

* Journal of the Asiatic Society of Bengal, Old Series, 1904, pt. 1, p. 368.

† Indian Coins, p. 28.

‡ Journal of the Asiatic Society of Bengal, Old Series, 1904, pt. I, p. 369.

× Numismatic Chronicle, 1894, p. 279.

\+ Indian Coins, p. 5.

सिक्कों का इतना अधिक प्रचार हो गया था कि आगे चलकर जब सिक्के बनाने की आवश्यकता पड़ी, तब सब जगह सैसनीय सिक्कों के ढंग पर ही नए सिक्के बनने लग गए थे*। इस प्रकार भारतवर्ष में सैसनीय सिक्कों के ढंग पर सिक्के बनने लगे। ऐसे सिक्कों पर एक ओर सैसनीय शिरोभूषण अथवा शिरस्त्राण पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर पारस्य देश के अग्निदेवता की वेदी या कुण्ड मिलता है। भारत में हूण राजाओं के सिक्के ही सैसनीय सिक्कों के ढंग पर बने हुए सब से पुराने सिक्के हैं। बाद के समय में, ईसवी ७ वीं अथवा ८ वीं शताब्दी में, पंजाब के पश्चिमी भाग में एक नया सैसनीय राज्य स्थापित हो गया था। उस राज्य के राजाओं के सिक्के सैसनीय अवश्य हैं, परन्तु वे हूण राजाओं के सिक्कों की अपेक्षा नवीन हैं।

हूण राजाओं के सब से पुराने सिक्के सैसनीय चाँदी के सिक्कों की तरह छोटे हैं और उन पर सिजिस्तान या सीस्तान के कुषण राजाओं के सोने के सिक्कों की तरह यूनानी लिपि है†। बाद में यूनानी लिपि के बदले में नागरी लिपि का व्यवहार होने लग गया था‡। ऐसे सिक्कों पर दूसरी ओर अग्निदेवता की वेदी के ऊपर हूण राजा का मस्तक भी बना करता था। मारवाड़

---

* Ibid, p. 29.

† Numismatic Chronicle, 1894, pp. 276-77.

‡ Indian Coins, p. 29.

में एक प्रकार के चाँदी के सिक्के मिलते हैं जो सैसनीय वंश के पारस्य के राजा फीरोज के सिक्कों के ढंग के हैं *। फीरोज सन् ४८८ ई० में हूण-युद्ध में मारा गया था। हार्नली †, रेप्सन ‡, स्मिथ × आदि प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ताओं के मतानुसार ये सब सिक्के हूण राजा तोरमाण के बनवाए हुए हैं। बाद की चार शताब्दियों में फीरोज के सिक्कों के ढंग पर गुजरात, राजपूताने और अन्तर्वेदी के राजाओं ने चाँदी के सिक्के बनवाए थे + । मालव में हूण राजा तोरमाण के बहुत से चाँदी के सिक्के मिले हैं। ये मालव के राजा बुधगुप्त के चाँदी के सिक्कों के ढंग पर बने हैं और इन पर संवत् ५२ लिखा मिलता है ÷ । अब तक यह निश्चित नहीं हुआ कि यह तोरमाण के राज्यारोहण का वर्ष है अथवा किसी संवत् का। तोरमाण के एक प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। उन पर एक ओर सैसनीय राजाओं के मस्तक की तरह मस्तक बना है और उसके सामने ब्राह्मी अक्षरों में "त्र" लिखा है। दूसरी

---

* V. A. Smith, Catalogue of Coins in the British Museum, p. 233.

† Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, 1889, p. 228.

‡ Indian Coins, p. 29.

× I. M. C. Vol. I, p. 237.

+ Indian Coins p. 29

÷ Journal of the Royal Asiatic Society, 1889, p. 136; Cunningham's Coins of Medieval India, p. 20

ओर ऊपर की तरफ सूर्य का चिह्न है और उसके नीचे ब्राह्मी अक्षरों में "तोर" लिखा है *। तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल के चाँदी के सिक्के सब प्रकार से सैसनीय सिक्कों का अनुकरण हैं †। मिहिरकुल के दो प्रकार के ताँबे के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक है और उसके मुँह के पास "श्रीमिहिरकुल" अथवा "श्रीमिहिरगुल" लिखा है। दूसरी ओर ऊपर खड़े हुए बैल की मूर्त्ति है और उसके नीचे "जयतु वृष" लिखा है ‡। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और उसके बगल में एक ओर "षाहि मिहिरगुल" लिखा है और दूसरी ओर सिंहासन पर देवी की मूर्त्ति है ×। मिहिरकुल के एक प्रकार के सिक्के तोरमाण के सिक्कों पर बने हुए हैं +। पंजाब में नमक के पहाड़ के पास एक शिलालेख मिला है। उससे पता चलता है राजाधिराज महाराज तोरमाण के राज्यकाल में रोट्टजयवृद्धि के पुत्र रोटसिद्धवृद्धि ने एक विहार बनवाया था ÷। मध्य प्रदेश के सागर जिले के एरिन नामक गाँव में वराह की एक मूर्त्ति मिली है। वराह की छाती पर तोरमाण के राज्यकाल

---

* I. M. C Vol. I, pp. 235-36, Nos. 1-6.

† Indian Coins, p. 29.

‡ I. M. C., Vol. 1, p. 236, Nos. 1-9.

× Ibid, p. 237. No. 10.

+ Indian Coins p. 30.

÷ Epigraphia Indica, Vol. 1, pp. 239-40.

का खुदा हुआ एक लेख है। उस लेख से पता चलता है कि तोरमाण के राज्य के पहले वर्ष में महाराज मातृविष्णु के छोटे भाई धन्यविष्णु ने वराह के लिये एक मन्दिर बनवाया था *। इसी शिलालेख से तोरमाण का समय निश्चित हुआ है। बुधगुप्त के राज्यकाल में गौप्त संवत् १६५ में खुदे हुए शिलालेख से पता चल जाता है कि उस समय मातृविष्णु जीवित था †। परन्तु वराहमूर्त्ति के लेख से पता चल जाता है कि तोरमाण के राज्य के प्रथम वर्ष से पहले ही मातृविष्णु की मृत्यु हो गई थी। इसलिये तोरमाण के राज्यारोहण का पहला वर्ष गौप्त संवत् १६५ (ई० सन् ४८४) के बाद होता है। ग्वालियर के किले में मिहिरकुल का एक शिलालेख मिला है। वह मिहिरकुल के राज्य के १५ वें वर्ष में खुदा था। उस शिलालेख से पता चलता है कि उस वर्ष मातृचेट नामक एक व्यक्ति ने सूर्य का एक मन्दिर बनवाया था। इससे यह भी पता चल जाता है कि मिहिरकुल तोरमाण का पुत्र था ‡। सैसनीय राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हुए ताँबे और चाँदी के अनेक सिक्कों पर हिरण्यकुल ×, जर + वा जरि ÷, भारण वा

---

* Fleets Gupta Inscriptions, pp. 159–60.

† Ibid, p. 89.

‡ Ibid, pp. 92–93.

× Numismatic Chronicle, 1894, p. 282. Nos. 9–10.

\+ Ibid, No. 11.

÷ Ibid, No. 12.

जारण *, त्रिकोक † पूर्वादित्य ‡ नरेन्द्र × आदि राजाओं के नाम मिले हैं। परन्तु अब तक इन राजाओं का परिचय वा समय निश्चित नहीं हुआ। इनमें से दो एक काश्मीर के राजा जान पड़ते हैं। काश्मीर में बने हुए तोरमाण और मिहिरकुल के सिक्कों का विवरण अगले अध्याय में दिया जायगा।

सैसनीय वंश के पारस्य के राजा फीरोज के सिक्कों के ढंग पर भारत में जो सिक्के बने थे, मुद्रातत्वविद् उन्हें दो भागों में विभक्त करते हैं। पहला विभाग उत्तर पश्चिम के सिक्कों का है +। फीरोज के सिक्कों का यही सबसे अच्छा अनुकरण है। इस विभाग में दो उपविभाग हैं। पहले उपविभाग के सिक्के बढ़िया ÷ और दूसरे उपविभाग के सिक्के घटिया हैं =। परन्तु किसी उपविभाग के सिक्कों पर कुछ भी लिखा नहीं है। दूसरे विभाग के सिक्के पूर्व देश अथवा मगध के हैं। उन पर एक ओर राजा का नाम और दूसरी ओर पारस्य देश के अग्निदेवता की वेदी का अनुकरण मिलता है। पालवंशी प्रथम विग्रहपाल देव के सिक्के इसी प्रकार के

* Ibid, p. 284.

† Ibid, No. 6.

‡ Ibid, p. 285.

× Ibid, p. 286.

+ I. M. C. Vol. :, p. 237.

÷ Ibid, pp. 237-38, Nos. 1-14.

= Ibid, pp. 238-39, Nos. 15-30.

हैं *। उन पर पहली ओर "श्रीविग्रह" लिखा है। कुछ दिनों पहले मालव में श्रीदाम नामक किसी राजा के नाम के इसी तरह के सिक्के मिले थे †। गुर्जर प्रतीहार-वंशी प्रथम भोज-देव के चाँदी और ताँबे के सिक्के इसी प्रकार के हैं ‡। उन पर पहली ओर भोजदेव की उपाधि "श्रीमदादिवराह" है और उसके नीचे अग्निदेवता की वेदी का अस्पष्ट अनुकरण है। दूसरी ओर वराह अवतार की मूर्त्ति है। उत्तर-पश्चिम प्रांत के सिक्कों के ढंग पर गढ़ैया या गढ़िया नाम के चाँदी और ताँबे के सिक्के १८ वीं शताब्दी तक बनते थे। ऐसे सिक्कों में चार विभाग मिलते हैं। प्रत्येक विभाग के सिक्कों पर एक ओर सैसनीय राजमूर्त्ति का अनुकरण और दूसरी ओर अग्निदेवता की वेदी का अनुकरण है। पहले विभाग के सिक्के सैसनीय चाँदी के सिक्कों की तरह क्षीणवेध और बड़े आकार के हैं ×। दूसरे विभाग के सिक्के अपेक्षाकृत बड़े हैं +। तीसरे विभाग के सिक्के मोटे और बहुत छोटे हैं ÷। चौथे विभाग

---

* Ibid pp. 239–40, Nos. 1–13.

† श्रीदाम के सिक्कों का विवरण सन् १९१२–१३ के पुरातत्व विभाग के वार्षिक कार्य विवरण में प्रकाशित हुआ है।

‡ I. M. C. Vol. 1, pp. 241–42, Nos. 1–10.

× Ibid, p. 240, Nos. 1–8.

+ Ibid, Nos. 9–12.

÷ Ibid, pp. 240–41, Nos. 13–23.

के सिक्के बहुत छोटे और बहुत हाल के हैं *। इन पर नागरी अक्षरों में कुछ लिखा मिलता है। परन्तु दूसरे किसी विभाग के सिक्कों पर लेख का नाम ही नहीं है।

रावलपिंडी के पास मणिक्याला का विख्यात स्तूप जिस समय खुद रहा था, उस समय सैसनीय सिक्कों के ढंग पर बने हुए चाँदी के दो सिक्के मिले थे †। इन दोनों सिक्कों में विशेषता यह है कि इन पर पहली ओर ब्राह्मी अक्षरों और दूसरी ओर पह्लवी अक्षरों में लेख है। पहली ओर ब्राह्मी अक्षरों में "श्रीहितिधि पेरणच परमेश्वर श्रीवाहितिगीन् देवनारित" लिखा है ‡। इस लेख के प्रथमांश का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हुआ और उसके पाठ के संबंध में भी मत-भेद है। संभवतः ये सिक्के पंजाब के किसी विदेशी राजा ने बनवाए थे। तिगीन उपाधि से मालूम होता है कि यह राजा तुरुष्क जाति का था; क्योंकि तिगीन तुरुष्क भाषा का शब्द है। दूसरी ओर बाईं तरफ पह्लवी अक्षरों में "सफनन् सफ्तफ्" लिखा है। दाहिनी तरफ "तर्खान् खोरासान् मालका" लिखा है ×। कनिंघम के एकत्र किए हुए इस प्रकार के और भी

* Ibid. p. 241, No. 24.

† Journal of the Royal Asiatic Society, 1850, p. 344.

‡ I. M. C. Vol. 1, p. 234, No. 1; Numismatic Chronicle, 1894, p. 291, No. 9.

× I. M. C. Vol. 1, p. 234, No. 1.

कई सिक्कों पर एक ओर यूनानी अक्षरों के चिह्न हैं और दूसरी ओर ब्राह्मी अक्षरों में "श्री यादेवि-मानश्री" लिखा है*। वासुदेव नामक एक राजा के सिक्कों पर ब्राह्मी और पह्लवी दोनों लिपियाँ मिलती हैं। उन पर पहली ओर "सफ्वर्षुतफ्" लिखा है। कनिंघम का अनुमान है कि इस पह्लवी लेख का अर्थ श्रीवासुदेव है। इस प्रकार के सिक्कों पर दूसरी ओर ब्राह्मी अक्षरों में "श्रीवासुदेव" और पह्लवी अक्षरों में "तुकान् जाउलस्तान सपर्दलख्सान" लिखा है †। ऐसे ही और एक प्रकार के सिक्कों पर नापकिमालिक नामक एक और राजा का नाम मिलता है ‡। अब तक यह निश्चित नहीं हुआ कि नापकि के सिक्के भारतीय हैं अथवा पारसी ×। ऐसे सिक्कों पर पहली ओर पह्लवी अक्षरों में "नापकिमालिक" और दूसरी ओर दो एक ब्राह्मी अक्षरों के चिह्न हैं।

---

* Numismatic Chronicle, 1894, p. 289, No. 5.

† Ibid, p. 292, No. 10.

‡ I. M. C. Vol. 1, p. 235, Nos. 1-5.

× Indian Coins, p. 30.

ग्यारहवाँ परिच्छेद

उत्तरापथ के मध्य युग के सिक्के

(क) पश्चिम सीमान्त

गुप्त साम्राज्य के नष्ट होने के उपरान्त उत्तरापथ के भिन्न भिन्न प्रदेश कुछ दिनों के लिये हर्षवर्द्धन के अधिकार में आ गए थे। परंतु हर्ष की मृत्यु के उपरान्त तुरन्त ही फिर वे सब प्रदेश बहुत से छोटे छोटे खंड राज्यों में विभक्त हो गए थे। ईसवी नवीं शताब्दी के आरंभ में गौड़ राजा धर्मपाल और देवपाल ने उत्तरापथ में एकाधिपत्य स्थापित किया था; परंतु वह भी अधिक समय तक स्थायी न रह सका। नवीं शताब्दी के मध्य में मरुवासी गुर्जर जाति के राजा प्रथम भोजदेव ने कान्यकुब्ज पर अधिकार करके एक नया साम्राज्य स्थापित किया था। ईसवी ग्यारहवीं शताब्दी के प्रथम पाद तक इस साम्राज्य के ध्वंसावशेष पर गुर्जर प्रतीहार-वंशी राजाओं का राज्य था। इस वंश के पहले सम्राट् प्रथम भोजदेव के सिक्कों का विवरण पिछले परिच्छेद में दिया जा चुका है *। भोज-देव के पुत्र महेंद्रपालदेव का अब तक कोई सिक्का नहीं मिला। महेन्द्रपाल के दूसरे पुत्र महीपाल के सोने के कुछ

---

* दसवाँ परिच्छेद।

सिक्के मिले हैं। पहले यही सिक्के तोमर वंशी महीपाल के माने जाते थे। तोमर वंश का कोई विश्वसनीय वंशवृक्ष अब तक नहीं मिला है और न अब तक इसी बात का कोई विश्वसनीय प्रमाण मिला है कि उस वंश में महीपाल नाम का कोई राजा था। इसलिये श्रीयुक्त राय मृत्युञ्जयराय चौधरी बहादुर का अनुमान है कि महीपाल के नाम के सोने के सिक्के महेन्द्रपाल के दूसरे पुत्र महीपालदेव के हैं *। गुर्जर प्रतीहार वंश के किसी दूसरे राजा का सिक्का अब तक नहीं मिला।

कुजुलकद्फिस, विमकद्फिस और कनिष्क आदि कुषण वंशीय सम्राटों ने पूर्व में जो विशाल साम्राज्य स्थापित किया था, उसके नष्ट होने पर कनिष्क केवंशजों ने अफगानिस्तान में आश्रय लिया था। उसके वंशधर ईसवी ग्यारहवीं शताब्दी तक अफगानिस्तान के पहाड़ी प्रदेशों में राज्य करते थे †। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री युवानच्वाङ् ने और दसवीं शताब्दी में मुसलमान विद्वान अब्बुलरेहान अलबेरूनी ने अफगानिस्तान के राजाओं को कनिष्क के वंशज लिखा था ‡। अलबेरूनी ने लिखा है कि इस राजवंश का एक मंत्री राजा को सिंहासन से उतारकर स्वयं राजा बन गया था ×। काबुल पहले

* ढाका रिव्यू, १९१५, पृ० १३६।

† Indian Coins, p. 32.

‡ Saghau's Albiruni, Vol. II, p. 13.

× Ibid.

इसी राजवंश का राजनगर था। मुसलमानों ने याकूब लाइस के नेतृत्व में हिजरी सन् २५७ (ई० सन् ८७०-७१) में काबुल पर अधिकार किया था*। इसके बाद उद्भांडपुर (वर्त्तमान नाम हुंड वा उंड) इस राजवंश की राजधानी बना था। कल्हण मिश्र की राजतरंगिणी में उद्भांडपुर के शाही राजाओं का उल्लेख है। कनिष्क के वंशधर तुरुष्क शाही वंश के कहलाते थे और मंत्री का वंश हिंदू शाही वंश कहलाता था। जिस मंत्री ने राजा को सिंहासन से उतारकर स्वयं राज्य पर अधिकार किया था, अलबेरूनी के मतानुसार उसका नाम कल्लर था †। राजतरंगिणी के अँग्रेजी अनुवादक सर आरेल स्टेन का अनुमान है कि राजतरंगिणी का लल्लियशाही और कल्लर दोनों एक ही व्यक्ति हैं ‡। कल्लर ने एक स्थान पर लल्लिय के पुत्र कमलुक का उल्लेख किया है × । अलबेरूनी के ग्रंथ में इसका नाम कमलू लिखा है +। लल्लिय और कमलुक के सिवा कल्हण मिश्र ने भीमशाह ÷ और त्रिलोचनपालशाह =

---

* I. M. C. Vol. 1, p. 245.

† Saghau's Albiruni, Vol. II, p. 13.

‡ Stein's Chronicles of the Kings of Kashmir, Vol. 11, p. 336.

× राजतरंगिणी, पंचम तरंग, २३३ श्लोक।

+ Saghau's Albiruni, Vol. II, p. 13.

÷ राजतरंगिणी, षष्ठ तरंग, १७८ श्लोक, सप्तम तरंग, १०८१ श्लोक।

= राजतरंगिणी, सप्तम तरंग, ४७—६६ श्लोक।

नामक उद्भांड के शाही वंश के दो राजाओं का उल्लेख किया है। भीमशाह काश्मीर के राजा क्षेमगुप्त की स्त्री दिद्दादेवी का दादा था। त्रिलोचनपाल शाही वंश का अन्तिम राजा था। उसके राज्य काल में गांधार का हिंदू राज्य नष्ट हुआ था। सन् १०१३ में त्रिलोचनपाल जब गजनी के महमूद से तोषी नदी के किनारे पर हार गया *, तब उसके पुत्र भीमपाल ने पाँच वर्ष तक अपनी स्वाधीनता स्थिर रखी थी। इसके बाद गांधार में हिंदू राजवंश का और कोई पता नहीं चलता। गांधार में शाही राज्य के नष्ट हो जाने के उपरान्त अलबेरूनी ने लिखा है—"यह हिंदू शाही राजवंश नष्ट हो गया है और अब इस वंश का कोई नहीं बचा। यह वंश समृद्धि के समय कभी अच्छे काम करने से पीछे नहीं हटा। इस वंश के लोग महानुभाव और बहुत सुंदर थे †।" कल्हण मिश्र ने राजतरंगिणी के सातवें तरंग में शाही राजवंश के अधःपतन के लिये पाँच श्लोकों में विलाप किया है—

गते त्रिलोचने दूरमशेषं रिपुमंडलम्।
प्रचंडचंडालचमूशलभच्छायमानशे॥
संप्राप्तविजयोऽप्यासीन्न हम्मीरःसमुच्छ्वसन्।
श्रीत्रिलोचनपालस्य स्मरञ्छौर्यममानुषम्॥
त्रिलोचनोऽपि संश्रित्य हास्तिकं स्वपदाच्युतः।

---

* I. M. C. Vol. 1, p. 245.

† Saghau's Albiruni, Vol. II, p. 13.

सयत्नोऽभून्महोत्साहः प्रत्याहर्तुं जयश्रियम् ॥
यथा नामापि निर्नष्टं शीघ्रं शाहिश्रियस्तथा।
इह प्रासंगिकत्वेन वर्णितं न सविस्तरम् ॥
स्वप्नेऽपि यत्सम्भाव्यं यत्र भग्ना मनोरथाः।
हेलया तद्विदधतो नासाध्यं विद्यते विधेः* ॥

सर एलेक्ज़ेण्डर कनिंघम ने उद्भांडपुर के ध्वंसावशेष का आविष्कार करके उसका विस्तृत विवरण लिखा था †। कनिंघम से पहले पंजाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह के सेनापति जनरल कोर्ट ने ‡ और उनके बाद सन् १८९१ में सर आरल स्टेन ने × उद्भांडपुर का ध्वंसावशेष देखा था। उद्भांडपुर में मिला हुआ एक शिलालेख कलकत्ते के अजायबघर में रखा है। काबुल अथवा उद्भांडपुर में शाही राजवंश के पाँच राजाओं के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर बैल और दूसरी ओर एक घुड़सवार की मूर्त्ति है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर हाथी और दूसरी ओर सिंह की मूर्त्ति है। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सिंह और दूसरी ओर मोर की मूर्त्ति है +। अंतिम प्रकार का केवल एक ही

* राजतरंगिणी, सप्तम तरंग, ६३—६७ श्लोक।

† Cunningham's Ancient Geography, p. 52.

‡ Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. V, p. 395.

× Chronicles of the Kings of Kashmir, Vol. II, p. 337.

+ I. M. C. Vol. 1. p. 243.

सिक्का मिला है। वह लंडन के ब्रिटिश म्यूजिअम में रखा है और उस पर राजा का नाम "श्रीकमर" लिखा है *। यह संभवतः कमलू वा कमलुक का सिक्का है। हाथी और सिंह की मूर्त्तिवाले सिक्कों पर "श्रीपद्म", "श्रीवक्कदेव" और "श्रीसामंतदेव" नामक तीन राजाओं के नाम मिले हैं। ये सब सिक्के ताँबे के हैं। इस वंश के स्पलपतिदेव †, सामंतदेव ‡, वक्कदेव ×, भीमदेव +, और खुड़वयक ÷ के चाँदी के सिक्के मिले हैं। इन सब सिक्कों पर एक ओर बैल और दूसरी ओर घुड़सवार की मूर्त्ति मिलती है। स्पलपतिदेव के सिक्कों पर अंकों में संवत् दिया है =। मि० स्मिथ का अनुमान है कि यह शक संवत् है **। पहले अशटपाल या अशतपाल नाम का एक राजा उद्भांडपुर के शाही राजवंश का माना जाता था ††। परन्तु यह नाम पहले ठीक

---

* Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 62, No. 1.

† I. M. C. Vol. 1, pp. 246-47, Nos. 1-11.

‡ Ibid, pp. 247-48, Nos. 1-14.

× Ibid, pp. 248-49, Nos. 1-5.

+ Cunningham's Coins of Mediaeval India, pp. 64-65, Nos. 17-18.

÷ I. M. C. Vol. 1, p. 249, Nos. 1-3.

= Numismatic Chronicle, 1882, p. 128, 291.

** I. M C. Vol. 1, p. 245.

†† Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 65, Nos, 20-21, I. M. C. Vol. 1, p. 249, Nos. 1-2.

तरह से पढ़ा नहीं गया था। सम्भवतः यह अजयपाल है *। उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बाद में आर्यावर्त्त के अनेक राजवंशों ने सिक्के बनवाए थे। इनमें से दिल्ली का तोमर वंश प्रधान है। पहले कहा जा चुका है कि किसी विश्वसनीय सूत्र के आधार पर दिल्ली के तोमर वंश का वंशवृक्ष अब तक नहीं बना। जो राजा तोमर वंश के माने जाते हैं, उनका अब तक कोई शिलालेख नहीं मिला। जयपाल, अनंगपाल आदि जो राजा लोग मुसलमान इतिहासकारों के ग्रन्थों में महमूद के प्रतिद्वंद्वी माने जाते हैं, उनमें से केवल अनंगपालदेव के सिक्के मिले हैं। उन सिक्कों पर एक ओर बैल और दूसरी ओर घुड़सवार की मूर्त्ति है। पहली ओर "श्रीअनंगपालदेव" और दूसरी ओर "श्रीसामन्तदेव" लिखा है †। ऐसे सिक्के उद्भाण्डपुर के शाही शिक्कों के ढंग पर बने हैं। कनिंघम ‡, स्मिथ × और रेप्सन + ने बिना प्रमाण अथवा विचार के जिन राजाओं को तोमर वंशजात लिखा है, सम्भवतः उनमें से अनेक तोमर वंश के नहीं हैं। तोमर राजाओं का कोई शिलालेख अथवा ताम्रलेख अब तक नहीं

---

* Journal of the Royal Asiatic Society, 1908.

† I. M. C. Vol 1. p. 259, Nos. 1-7.

‡ Indian Coins, p. 31.

× I. M. C. Vol. 1, p. 256.

+ Indian Coins, p. 31.

मिला; इसी लिये मुद्रातत्व में इस प्रकार का भ्रम फैला है। कनिंघम, स्मिथ, रेप्सन * आदि मुद्रातत्व के ज्ञाताओं के मत के अनुसार तोमर वंश के सोने के सिक्के गांगेयदेव के सोने के सिक्कों के ढंग के हैं। परन्तु उनके चाँदी अथवा ताँबे के सिक्के उद्भाण्डपुर के शाही राजवंश के सिक्कों के ढंग के हैं। इन लोगों के मत के अनुसार कुमारपाल और महीपाल के सोने के सिक्के और अजयपाल के चाँदी के सिक्के तोमर वंश के सिक्के हैं। कुमारपाल, महीपाल और अजयपाल को तोमर-वंशज नहीं माना जा सकता। पहला कारण तो यह है कि तोमर राजवंश का कोई विश्वसनीय वंशवृक्ष नहीं है। दूसरा कारण इससे भी कुछ बड़ा है। महीपाल के सोने के सिक्के उत्तरापथ में सब जगह, यहाँ तक कि सौराष्ट्र और मालव तक में, मिलते हैं। कुमारपाल और अजयपाल के सिक्के मध्य भारत और सौराष्ट्र में अधिक संख्या में मिलते हैं। महीपाल के नाम के एक प्रकार के मिश्र धातु के सिक्के मिलते हैं जो उद्भाण्डपुर के शाही राजवंश के सिक्कों के ढंग के हैं। परन्तु महीपाल के नाम के सोने के सिक्कों के अक्षरों का आकार मिश्र धातु के सिक्कों के अक्षरों के आकार की अपेक्षा प्राचीन है। इसलिये यह सम्भव नहीं है कि महीपाल, कुमारपाल और अजयपाल दिल्ली के तोमर वंश के राजा हों। इसी लिये श्रीयुक्त मृत्युं-

---

* Ibid.

† Ibid.

जयराम चौधरी के मतानुसार महीपाल के सोने के सिक्कों को प्रतीहार वंशी सम्राट् महेन्द्रपाल के पुत्र महीपालदेव के सिक्के मानना ही ठीक है *। मिश्र धातु के बने महीपाल के नाम के सिक्के किसी दूसरे महीपाल के सिक्के नहीं जान पड़ते। कुमारपाल और अजयपाल गुजरात के चालुक्यवंशी राजा थे और अजयपाल कुमारपाल का लड़का था †। मालव के अन्तर्गत ग्वालियर राज्य में महाराजाधिराज अजयपाल के राज्यकाल का विक्रम संवत् १२२६ (ई० सन् ११७३) का खुदा हुआ एक शिलालेख मिला है ‡। उसी जगह कुमारपाल के राज्यकाल में विक्रम संवत् १२२० (ई० सन् ११६४) का खुदा हुआ एक और लेख × और मेवाड़ राज्य के चित्तौर में विक्रम संवत् १२०७ (ई० सन् ११५०) का खुदा हुआ कुमारपाल के राज्यकाल का एक और शिलालेख + मिला था। जब कि मध्य भारत और मालव में कुमारपाल और अजयपाल के सिक्के अधिक संख्या में मिलते हैं और जब कि यह सब प्रदेश किसी समय चालुक्यवंशी कुमारपाल और अजयपाल के अधिकार में थे, तब यही सम्भव है कि कुमारपाल के सोने के और अजयपाल के चाँदी के सिक्के चालुक्य वंश के इन्हीं नामों

---

* ढाका रिव्यू, १६१५, पृ० ११६।

† Epigraphia Indica, Vol. VIII, App. I p. 14.

‡ Indian Antiquary, Vol. XVIII, p. 347.

× Ibid, p. 343.

+ Epigraphia Indica, Vol. II, p. 422.

के राजाओं के सिक्के हों। उद्भाण्डपुर के शाही राजवंश के सिक्कों के ढंग पर बने हुए अनंगपाल देव के मिश्र धातु के सिक्के मिले हैं। कनिंघम *, रेप्सन † और स्मिथ ‡ ने शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हुए मदनपाल के नामवाले मिश्र धातु के सिक्कों को गाहड़वाल वंश के चन्द्रदेव के पुत्र मदनपाल के सिक्के माना था। गोविन्दचन्द्र के सोने या तांबे के सिक्के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हुए नहीं हैं ×। इसलिये मदनपाल के नाम के मिश्र धातु के सिक्के गाहड़वाल वंश के मदनपाल के सिक्के हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते। उद्भाण्डपुर के शाही राजवंश के सिक्कों के ढंग पर बने हुए सल्लक्षणपाल +, महीपाल ÷ और मदनपाल = के सिक्के सम्भवत: तोमर राजवंश के सिक्के हैं। तोमर वंश के उपरान्त चाहमान या चौहान वंश के सोमेश्वर ** और उसके पुत्र पृथ्वीराजदेव †† ने दिल्ली का राज्य

* Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 87, No. 15.

† Indian Coins, p. 31.

‡ I M. C. Vol. I. p. 260.

× Ibid, pp. 260-61, Nos. 1-9.

+ I. M. C. Vol. I, p. 259, Nos. 1-2.

÷ Ibid, p. 260, Nos. 1-2.

= Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 87, No. 15.

** I. M. C. Vol. I, p. 261, Nos. 1-4.

†† Ibid, pp. 261-62, Nos. 1-9.

पाया था। इन लोगों ने भी शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर मिश्र धातु के सिक्के बनवाए थे। सल्लक्षणपाल, अनंगपाल, महीपाल, मदनपाल, सोमेश्वर और पृथ्वीराज के सिक्कों की दूसरी ओर "असावरी श्रीसामन्तदेव" अथवा "माधव श्रीसामंतदेव" लिखा है। पृथ्वीराज की मृत्यु के उपरांत सुल्तान मुहम्मद बिन साम ने उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर मिश्र धातु के सिक्के बनवाए थे। उन पर एक ओर "श्रीपृथ्वीराज" और दूसरी ओर "श्रीमुहम्मद समे" लिखा है*।

मुसलमान विजय के उपरांत दिल्ली के सम्राटों ने तेरहवीं शताब्दी के अंतिम भाग और चौदहवीं शताब्दी के पहले पाद तक उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर सिक्के बनवाए थे †। अल्तमश के पुत्र नसीरुद्दीन ‡ के बाद से इस प्रकार के सिक्के नहीं मिलते।

काश्मीर के सब से पुराने सिक्के हूण राजाओं के हैं। काश्मीर के खिंगिल, तोरमाण, मिहिरकुल और लखन उदयादित्य के सिक्के मिले हैं। राजतरंगिणी के अनुसार खिंगिल मिहिरकुल के बाद हुआ था ×। सिक्कोंवाला

---

* Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 86, Nos. 12.

† H. N. Wright, Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. II, pt. I, pp. 17-33.

‡ Ibid, p. 33.

× Chronicles of the Kings of Kashmir, Vol. I, p. 80.

खिगिल और कल्हण का खिगिल दोनों एक ही जान पड़ते हैं। मुद्रातत्त्व के ज्ञाताओं के अनुसार तोरमाण और मिहिरकुल के पहले खिगिल हुआ था *। इसका दूसरा नाम नरेन्द्रादित्य था †। खिगिल के चाँदी और ताँबे के सिक्के मिले हैं। चाँदी के सिक्कों पर एक ओर राजा का मस्तक और "देवषाहि खिगिल" लिखा है ‡। ताँबे के सिक्कों पर एक ओर मुकुट पहने हुए राजा का मस्तक और दूसरी ओर घड़ा है ×। घड़े के बगल में खिगिल लिखा है। तोरमाण के सिक्के ताँबे के हैं और कुषण वंश के सिक्कों के ढंग के हैं। उन पर पहली ओर राजा का पूरा नाम "श्रीतुर्यमान" या "श्रीतोरमाण" मिलता है +। राजतरंगिणी के अनुसार प्रवरसेन मिहिरकुल का लड़का था। प्रवरसेन के समय से काश्मीर के राजाओं के सिक्कों पर कुषण और गुप्तवंशी राजाओं के सोने के सिक्कों की तरह एक ओर खड़े हुए राजा की मूर्त्ति और दूसरी ओर लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति मिलती है ÷। प्रवरसेन,= गोकर्ण**

---

* Numismatic Chronicle, 1894, p.279.

† राजतरंगिणी, प्रथम तरंग, १४७ श्लोक।

‡ Numismatic Chronicle, 1894, pp. 279-80, No. 11.

× V. A. Smith's Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I, p. 267.

\+ Ibid, pp 267-98, Nos. 1-8.

÷ Ibid, pp. 268-73.

= Coins of Mediaeval India, p. 43, Nos. 3-4.

** Ibid, p. 43, No. 6.

प्रथम प्रतापादित्य *, दुर्लभ वा द्वितीय प्रतापादित्य †, विग्रहराज ‡, यशोवर्मा ×, विनयादित्य वा जयापीड़ + आदि राजाओं के सिक्के इसी प्रकार के हैं। इन सब सिक्कों पर लक्ष्मी की मूर्त्ति के बगल में राजा का नाम लिखा है। उत्पल वंश के सिक्कों पर राजा वा रानी के नाम का आधा अंश पहली ओर और बाकी आधा दूसरी ओर लिखा रहता है ÷। प्रथम = और द्वितीय लोहर ** वंश के सिक्कों पर भी ऐसा ही है। द्वितीय लोहर वंश के जागदेव के सिक्के ही वर्त्तमान समय में मिले हुए काश्मीर के राजाओं के सिक्कों में से सब से अधिक नवीन हैं। ईसवी सन् १३३६ में शाहमीर नाम की एक मुसलमान रानी ने कोटा को परास्त करके काश्मीर में मुसलमानी राज्य स्थापित किया

---

* Ibid, p. 44, No. 9.

† Ibid, p. 44, No. 10, I. M. C. Vol. I, p. 268, Nos. 1-8.

‡ Ibid, p. 267, Nos. 1-3; Coins of Mediaeval India, p. 44. No. 8.

× Ibid, No. 11, I M. C Vol. I, pp. 268-69. Nos. 1-5.

\+ Ibid, p. 269, Nos. 1-6; Coins of Mediaeval India, pp. 44-45. Nos. 13-14.

÷ I. M. C., Vol. I, pp. 269-71.

= Ibid, pp. 171-72.

** Ibid, pp. 272-73.

था *। उत्पल वंश के नीचे लिखे सिक्के मिले हैं:—

(१) शंकरवर्म्मा (ईसवी सन् ८८३-६०२) †
(२) गोपालवर्म्मा (" " ६०२-०४) ‡
(३) सुगन्धा रानी (ईसवी सन् ६०४-६) ×
(४) पार्थ (ई० सन् ६०६-२१) +
(५) क्षेमगुप्त और दिद्दा (" ६५०-५८) ÷
(६) अभिमन्यु गुप्त (" ६५८-७२) =
(७) नन्दिगुप्त (" ६७२-७३) **
(८) त्रिभुवन गुप्त (" ६७३-७५) ††
(९) भीम गुप्त (" ६७५-८०) ‡‡
(१०) रानी दिद्दा (" ६८०-१००३) (*)

प्रथम लोहर वंश के चार राजाओं के सिक्के मिले हैं:—

* Chronicles of the Kings of Kashmir, Vol. I, p. 130.

† I. M. C. Vol. I, pp. 269-70, Nos. 1-4.

‡ Ibid, p. 270, Nos. 1-3.

× Ibid, Nos. 1-4.

+ Ibid, Nos. 1-3.

÷ Ibid, Nos. 1-3.

= Ibid, No. 1.

** Ibid, Nos. 1-2.

†† Ibid, p. 271, No. 1.

‡‡ Ibid, Nos. 1-2.

(*) Ibid, Nos. 1-8.

(१) संग्राम (ईसवी सन् १००३-२८) *
(२) अनन्त (" १०२८-६३) †
(३) कलश (" १०६३-८९) ‡
(४) हर्ष (" १०८९-११०१) ×

द्वितीय लोहर वंश के तीन राजाओं के सिक्के मिले हैं—

(१) सुस्सल (ईसवी सन् १११२-२८) +
(२) जयसिंहदेव (" ११२८-५५) ÷
(३) जागदेव (" " ११९८-१२१४) =

ज्वालामुखी या काँगड़े की तराई के राजा मुसलमानी विजय के उपरांत भी बहुत दिनों तक स्वाधीन बने रहे थे और सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ तक उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर ताँबे के सिक्के बनवाया करते थे। काँगड़े के सबसे पुराने सिक्कों पर एक ओर बैल की मूर्त्ति और सामन्त देव का नाम और दूसरी ओर घुड़सवार की मूर्त्ति है। ईसवी चौदहवीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध में पीथम-चन्द्र या पृथ्वीचन्द् ने नए प्रकार के सिक्के चलाए थे। उनपर

---

* Ibid, Nos. 1-7.
† Ibid, p. 272.
‡ Ibid, Nos. 1-6.
× Ibid, Nos. 1-6.
+ Ibid, No. 1.
÷ Ibid, p. 273, Nos. 1-2.
= Ibid, Nos. 1-5.

पहली ओर दो या तीन सतरों में राजा का नाम लिखा है और दूसरी ओर घुड़सवार की मूर्त्ति है *। काँगड़े के नीचे लिखे राजाओं ने पृथ्वीचन्द्र के सिक्कों के ढंग पर ताँबे के सिक्के बनवाए थेः—

(१) अपूर्वचन्द्र	(ईसवी सन् १३४५–६०)†
(२) रूपचन्द्र	(" " १३६०–७५)‡
(३) सिंगारचन्द्र	(" १३७५–६०)×
(४) मेघचन्द्र	(" १३६०–१४०५)+
(५) हरीचन्द्र	(" १४०५–२०)÷
(६) कर्म्मचन्द्र	(" १४२०–३५)=
(७) अवतारचन्द्र	(" १४५०–६५)**
(८) नरेन्द्रचन्द्र	(" १४६५–८०)††
(६) रामचन्द्र	(" १५१०–२८)‡‡

* Ibid, p. 275, Nos. 1–5.
† Ibid, p. 276, Nos. 1–5.
‡ Ibid, pp. 276–77, Nos. 1–8.
× Ibid, p. 277, Nos. 1–7.
+ Ibid, Nos. 1–5.
÷ Ibid, p. 277–78, Nos. 1–8.
= Ibid, p. 278, Nos. 1–2.
** Ibid, Nos. 1–6.
†† Ibid Nos. 1–2.
‡‡ Ibid, No. 1.

(१०) धर्मचन्द्र (" १५२८-६३)*

(११) त्रिलोकचन्द्र (" १६१०-२५)†

इसके सिवा कनिंघम ने रूपचन्द्र ‡, गम्भीरचन्द्र ×, गुणचन्द्र +, संसारचन्द ÷, सुवीरचन्द्र = और माणिक्यचन्द्र** के सिक्कों के विवरण दिए हैं। प्राचीन नलपुर (वर्तमान नरवर) के राजाओं ने मुसलमान-विजय के थोड़े ही समय बाद उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्कों के ढंग पर ताँबे के सिक्के बनवाए थे। मलयवर्म्मा और चाहड़देव के इसी प्रकार के सिक्के मिले हैं। मलयवर्म्मा के सिक्कों पर एक ओर घुड़सवार की मूर्त्ति है और दूसरी ओर दो या तीन सतरों में "श्रीमद मलयवर्म्मदेव" लिखा है ††। चाहड़देव के सिक्के दो प्रकार के हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर घुड़सवार की मूर्त्ति और "श्रीचाहड़देव" लिखा है। दूसरी ओर बैल की मूर्त्ति और "असवरी श्रीसामन्तदेव" लिखा है‡‡। चाहड़-

---

* Ibid, p. 279, No. 1.

† Ibid, Nos. 1–9.

‡ Coins of Mediaeval India, p. 105, Nos. 1–4.

× Ibid, No. 5.

+ Ibid, p. 106, No. 19.

÷ Ibid, No. 20–22.

= Ibid, p. 107, No. 25.

** Ibid, p. 108.

†† I. M. C. Vol. I, p. 262, Nos. 1–3.

‡‡ Ibid, pp. 260–63, Nos. 1–7.

देव के दूसरे प्रकार के सिक्के अभी हाल ही में पहले पहल मिले हैं। उन पर एक ओर घुड़सवार की मूर्त्ति और दूसरी ओर दो या तीन सतरों में "श्रीमं चाहड़देव" लिखा है *। त्रिलोचनपाल को परास्त करके महमूद ने नागरी अक्षरों और संस्कृत भाषावाले चाँदी के सिक्के बनवाये थे। इन सब सिक्कों पर एक ओर अरबी भाषा का लेख है और दूसरी ओर बीच में नागरी अक्षरों तथा संस्कृत भाषा में "अव्यक्तमेक महम्मद अवतार नृपति महम्मद" और चारों ओर "अयं टंकः महमूदपुर घटिते हिजरियेन संवत् ४१८" लिखा है।†

---

* सन् १६१४ में मालवे में मिले हुए ताँबे के ७६४ सिक्के परीक्षा के लिये कलकत्ते के अजायब घर में भेजे गए थे। उनमें दूसरे दो तीन राजाओं के साथ चाहड़देव के दूसरे प्रकार के सिक्के भी मिले हैं। इन सिक्कों पर विक्रम संवत् दिया है। सन् १६०८ में युक्त प्रदेश के झाँसी जिले में मिले हुए मलय वर्मा के सिक्कों पर भी इसी प्रकार विक्रम संवत् दिया है।

† Cunningham's Coins of Mediaeval India, pp. 65–66, No. 21.

बारहवाँ परिच्छेद

उत्तरापथ के मध्य युग के सिक्के

(ख) मध्य देश

मुद्रातत्व के ज्ञाताओं का अनुमान है कि डाहल के राजा चेदिवंशी गांगेयदेव ने उत्तरापथ में एक प्रकार के नए सिक्के चलाए थे *। उनपर एक ओर दो पंक्तियों में राजा का नाम लिखा है और दूसरी ओर पद्मासना लक्ष्मी देवी की मूर्त्ति है। परन्तु यदि इस प्रकार के महीपाल देव के नामवाले सोने के सिक्के प्रतीहार वंशी महेन्द्रपाल के पुत्र सम्राट् महीपाल के सिक्के हों, तो यह अवश्य मानना पड़ेगा कि इस प्रकार के सिक्कों का प्रचार गांगेयदेव से पहले ही हो गया था। संभवतः गुजरात के प्रतीहारों के राज्यकाल में ही पहले पहल इस प्रकार के सिक्के बने थे। उद्भाण्डपुर के शाही राजाओं के सिक्के जिस प्रकार उत्तर पश्चिम प्रान्तों में मध्य युग में सिक्कों के आदर्श हुए थे, उसी प्रकार महीपाल अथवा गांगेयदेव के सोने के सिक्के भी मध्य देश में मध्य युग में सिक्कों के आदर्श हुए थे। मध्य देश में चेदि राजवंश ने बहुत दिनों तक राज्य किया था। परन्तु इस वंश के राजाओं में से केवल गांगेयदेव

* Indian Coins, p. 33.

के ही सिक्के मिले हैं। उससे पहले के अथवा बाद के चेदि-वंशीय राजाओं में से किसी के सिक्के नहीं मिले। गांगेयदेव के सोने *, चाँदी† और ताँबे‡ के बने हुए सिक्के मिले हैं। तीनों धातुओं के सिक्के एक ही प्रकार के हैं। उनपर एक ओर दो पंक्तियों में राजा का नाम और दूसरी ओर चतुर्भुजा देवी की मूर्त्ति है। महाकोशल में चेदिवंश की दूसरी शाखा का राज्य था। इस राजवंश के तीन राजाओं के सिक्के मिले हैं। उन सिक्कों पर जाजल्लदेव, रत्नदेव और पृथ्वीदेव इन तीन राजाओं के नाम मिलते हैं। परन्तु इस राजवंश के खुदवाए हुए लेखों से पता चलता है कि इस वंश में जाजल्लदेव नाम के दो, रत्न-देव नाम के तीन और पृथ्वीदेव के नाम के तीन राजा हुए थे ×। यह निर्णय करना कठिन है कि उनमें से किनके सिक्के मिले हैं। स्मिथ् का अनुमान है कि पृथ्वीदेव + और जाजल्लदेव के नाम के सिक्के द्वितीय जाजल्लदेव ÷ के हैं; और रत्नदेव के नाम के सिक्के तृतीय रत्नदेव के हैं =। उसके मतानुसार द्वितीय पृथ्वी-

* V. A. Smith, Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. I, p. 252, Nos. 1–9.

† Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 72. Nos. 4–5.

‡ I. M. C. Vol. I, p. 253, Nos. 10–12.

× Epigraphia Indica, Vol. VIII. App. 1. pp. 16–17.

+ I. M. C. Vol. I, p. 254.

÷ Ibid.

= Ibid p. 255.

देव ने ईसवी सन् ११५० से ११६० तक, द्वितीय आजल्लदेव ने ई० सन् ११६० से ११७५ तक और तृतीय रत्नदेव ने ई० सन् ११७५ से ११६० तक राज्य किया था। जेजाकभुक्ति या जेजाभुक्ति के चन्द्रात्रेय अथवा चन्देलवंशी राजाओं के सोने और चाँदी के सिक्के मिले हैं। इस वंश के कीर्त्तिवर्मा, सल्लक्षण वर्म्मा, जयवर्म्मा, पृथ्वीवर्म्मा, परमर्द्दिदेव, त्रैलोक्यवर्म्मा और वीरवर्म्मा के सिक्के मिले हैं। जान पड़ता है कि कीर्त्तिवर्म्मा ने ई० सन् १०५५ से ११०० तक राज्य किया था *। यह भी जान पड़ता है कि उसके पुत्र सल्लक्षण वर्मा ने ई० सन् ११०० से १११५ तक राज्य किया था †। सल्लक्षण वर्मा का बड़ा लड़का जयवर्म्मा और उसका दूसरा लड़का पृथ्वीवर्म्मा दोनों ई० सन् १११५ से ११२६ के बीच में सिंहासन पर बैठे थे ‡। पृथ्वीवर्म्मा का पुत्र मदनवर्म्मा ई० सन् ११२६ से ११६२ तक जीवित था ×। मदनवर्म्मा के पोते परमर्द्दिदेव ने ई० सन् ११६७ से पहले राज्य पाया था +। वह चाहमानवंशी द्वितीय

---

* Ibid, p. 253. कीर्त्तिवर्मा के राज्यकाल में विक्रमी संवत् ११५४ (ई० सन् १०६८) का खुदा हुआ एक शिलालेख मध्य प्रदेश के देवगढ़ में मिला है।

† यह अनुमान मात्र है।

‡ जय वर्मा के राज्यकाल में विक्रम संवत् ११७३ (ई० सन् १११०) का खुदा हुआ एक शिलालेख मध्य भारत के खजुराहो गाँव के एक मन्दिर में मिला है।

× Epigraphia Indica, Vol. VIII, App. I. p. 16.

+ Ibid, Vol. IV. p. 157.

पृथ्वीराजदेव का समकालीन था और उससे परास्त भी हुआ था *। इसी परमर्दिदेव के राज्यकाल में कालिंजर के किले पर मुहम्मद बिन साम ने अधिकार किया था और चन्देल लोग भागकर पहाड़ी प्रदेशों में जा छिपे थे। परमर्दिदेव सन् १२०१ तक जीवित था †। जान पड़ता है कि परमर्दिदेव के बाद त्रैलोक्यवर्मा ने चन्देल राज्य पाया था ‡। वह ईसवी सन् १२१२ से १२४१ × तक जीवित था। त्रैलोक्य वर्म्मा के उपरांत उसका पुत्र वीरवर्मा सिंहासन पर बैठा था। वह सन् १२६१ + से १२८३ ÷ तक जीवित था। कीर्तिवर्म्मा =, परमर्दिदेव **, त्रैलोक्यवर्म्मा †† और वीरवर्मा ‡‡ के केवल सोने के सिक्के ही मिले हैं। सल्लक्षणवर्मा के सोने × × और

* Ibid, Vol VIII. App 1. p. 16.

† Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol. XVII. pt. 1. p. 313.

‡ Cunningham, Archaeological Survey Report, Vol. XXI, p. 50.

× Indian Antiquary, Vol. XVII p. 235.

+ Epigraphia Indica, Vol. I. p. 327.

÷ Ibid, Vol. V. App. p. 35, No. 242.

= I. M. C. Vol. 1, p 253, No. 1.

** Ibid, No. 1.

†† Ibid, No. 1.

‡‡ Ibid, p. 254, No. 1.

× × Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 79, Nos. 14-15.

तांबे * दोनों के सिक्के मिलते हैं। जयवर्मा † और पृथ्वीवर्मा ‡ के केवल तांबे ही के सिक्के मिले हैं। मदनवर्मा के सोने ×, चाँदी और तांबे + तीनों धातुओं के सिक्के मिले हैं। इनमें से चाँदी के सिक्के, बहुत ही थोड़े दिन हुए, मिले हैं ÷। चंदेल-वंशी राजाओं के भिन्न भिन्न आकार के सोने और चाँदी के सिक्के मिले हैं =।

गजनी के सुलतान महमूद ने जिस समय उत्तरापथ पर आक्रमण किया था, उस समय गुजरात के प्रतीहार राजाओं का विशाल साम्राज्य अपनी अंतिम दशा को पहुँच गया था। ई० ११ वीं शताब्दी के शेषार्द्ध में कान्यकुब्ज चेदिवंशी कर्णदेव के अधिकार में चला गया था। कर्णदेव के बाद गाहड़वाल-वंशी चंद्रदेव ने कान्यकुब्ज पर अधिकार करके एक नया राज्य स्थापित किया था। चंद्रदेव का अब तक कोई सिक्का नहीं मिला। उसके पुत्र का नाम मदनपाल वा मदनदेव था। मदन-

---

* Ibid, No. 16.

† Ibid, No 17.

‡ Ibid, No. 18.

× I. M. C. Vol I, p. 253, Nos. 1-3.

\+ Cunningham's Coins of Mediaeval India, p. 79, No. 21.

÷ Journal of the Asiatic Society of Bengal, New Series, Vol. X. pp. 199-200.

= Coins of Mediaeval India, p. 78.

पाल ई० सन् ११०४ से ११०६ तक * कान्यकुब्ज के सिंहासन पर था। उद्भांडपुर के शाही राजवंश के सिक्कों के ढंग पर बने हुए एक प्रकार के मिश्र धातु के सिक्कों पर मदनपाल का नाम मिलता है। मुद्रातत्त्व के ज्ञाता लोग इस प्रकार के सिक्कों को गाहड़वालवंशी मदनपाल के सिक्के समझते हैं †। इस प्रकार के सिक्कों पर पिछले परिच्छेद में विचार हो चुका है ‡। मदनपाल का पुत्र गोविंदचंद्र ई० सन् ११२४ से ११५४ तक कान्यकुब्ज के सिंहासन पर था ×। गोविंदचंद्र के सोने + और ताँबे ÷ के बहुत से सिक्के मिले हैं। ये सब सिक्के महिपालदेव अथवा गांगेयदेव के सिक्कों के ढंग पर बने हैं। इन पर एक ओर दो सतरों में राजा का नाम और दूसरी ओर चतुर्भुजा देवी की मूर्ति है। गोविंदचंद्र के सोने के सिक्के दो भागों में विभक्त हो सकते हैं। पहले विभाग के सिक्के खालिस सोने के बने हैं; परंतु दूसरे विभाग के सिक्कों में सोने के साथ चाँदी का भी मेल है। गोविंदचंद्र के पुत्र का नाम विजयचंद्र था। जान पड़ता है कि वह ईसवी सन् ११५५ से ११६९ तक =

---

* Epigraphia Indica, Vol. VIII. App. 1. p. 13.

† Coins of Mediaeval India, p. 87, No. 15.

‡ ग्यारहवाँ परिच्छेद।

× Epigraphia Indica, Vol. VIII. App. 1, p. 13.

\+ I. M. C. Vol. 1, pp. 260-61, Nos. 1-6 A.

÷ Ibid, p. 261, Nos. 7-10.

= Epigraphia Indica, Vol. VIII. App. 1, p. 13.

कान्यकुब्ज के सिंहासन पर था। विजयचंद्र का अब तक कोई सिक्का नहीं मिला। विजयचंद्र का पुत्र जयचंद्र ईसवी सन् ११७० * में सिंहासन पर बैठा था और ई० सन् ११६४ अथवा ११६५ में मुहम्मद बिन साम के साथ युद्ध करते समय मारा गया था। अजयचंद्रदेव के नाम के एक प्रकार के चाँदी के सिक्के मिले हैं। कनिंघम का अनुमान है कि ये सिक्के जयचंद्र के ही हैं †। गोविंदचंद्र के सिक्कों की तरह ये सिक्के भी महीपालदेव अथवा गांगेयदेव के सिक्कों के ढंग पर बने हैं। इसके अतिरिक्त गाहड़वाल वंश का अब तक और कोई सिक्का नहीं मिला। जयचंद्र का पुत्र हरिश्चंद्रदेव ईसवी सन् ११६५ से १२०७ तक ‡ कान्यकुब्ज के सिंहासन पर था। उसका कोई सिक्का अब तक नहीं मिला। जयचंद्र को परास्त करके सुलतान मुहम्मद बिन साम ने मध्य देश में चलाने के लिये गाहड़वाल राजाओं के सिक्कों के ढंग पर सोने के सिक्के बनवाए थे। उन पर एक ओर नागरी अक्षरों में तीन सतरों में उसका नाम लिखा है और दूसरी ओर लक्ष्मी देवी की मूर्ति है ×। इस प्रकार के सिक्कों के दो विभाग मिलते हैं। पहले विभाग के सिक्कों परः—

---

* Ibid, Vol. IV. p. 121.

† Coins of Mediaeval India, p. 87, No. 17.

‡ Journal of the Asiatic Society of Bengal, New Series, Vol. VII. pp. 757-770.

× Coins of Mediaeval India, p. 86, No. 12.

(१) श्रीमह
(२) मद विनि
(३) साम *

और दूसरे विभाग के सिक्कों पर:—

(१) श्रीमद (ह)
(२) मौर मह (म)
(३) द साम †

लिखा है।

नेपाल के पुराने सिक्कों को देखकर ऐसा भ्रम होता है कि मानों वे यौधेय जाति के सिक्के हैं। संभवतः यह भ्रम इसलिये होता है कि ये दोनों प्रकार के सिक्के कुषणवंश राजाओं के सिक्कों के ढंग पर बने हैं ‡। मानांक, गुणांक, वैश्रवण, अंशुवर्म्मा, जिष्णुगुप्त और पशुपति इन छः राजाओं के सिक्के मिले हैं। इन में से पशुपति के अतिरिक्त बाकी पाँच राजाओं के नाम नेपाल की राजवंशावली में मिलते हैं। इन छः राजाओं में से मानांक के सिक्के सबसे पुराने हैं। उन पर एक ओर पद्मासना लक्ष्मी की मूर्ति और "श्री भोगिनी" लिखा है। दूसरी ओर खड़े हुए सिंह की मूर्ति और "श्रीमानांक"

---

* H. M. Wright, Catalogue of Coins in the Indian Museum, Vol. II. pt. 1. p. 17, No. 1.

† Ibid, Nos. 2–3.

‡ Indian Coins, p. 32.

लिखा है*। नेपाल के शिलालेखों में मानांक का नाम मानदेव दिया है†। गुणांक के सिक्कों पर एक ओर पद्मासना लक्ष्मी की और दूसरी ओर हाथी की मूर्ति है। लक्ष्मी की मूर्ति के बगल में "श्रीगुणांक" लिखा है‡। वंशावली में गुणांक का नाम गुण-कामदेव दिया है ×। वैश्रवण के सिक्कों पर एक ओर बैठे हुए राजा की मूर्ति और "वैश्रवण" लिखा है और दूसरी ओर बछड़े सहित गौ की मूर्ति है और "कामदेहि" लिखा है +। अंशुवर्म्मा के तीन प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर परवाले सिंह की मूर्ति है और "अंशुवर्म्मा" लिखा है और दूसरी ओर बछड़े सहित गौ की मूर्ति है और "कामदेहि" लिखा है ÷। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर सूर्य्य का चिह्न है और "महाराजाधिराजस्य" लिखा

---

* Coins of Ancient India, p. 116. I. M. C. Vol. I, p. 253.

† Indian Antiquary, Vol. IX, pp. 163-67.

‡ Coins of Ancient India, p. 116. pl. XIII. 2.

× Hara Prasad Sastri, Catalogue of plam-leaf and Selected paper Mss. Durbar Library, Nepal. Introduction by Prof. C. Bendall, p. 21.

+ Coins of Ancient India, p. 116, pl. XIII. 4.

कनिंघम का अनुमान है कि वैश्रवण का वंशावली में कुबेर वर्मा नाम दिया है—Ibid, 115

÷ Ibid, p. 116, pl. XIII. 4; I. M. C. Vol. I, p. 283, No. 2.

है। दूसरी ओर एक सिंह की मूर्ति है और "श्र्यंशोः" लिखा है*। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर परवाले सिंह की मूर्ति है और "श्र्यंशुवर्म्मा" लिखा है और दूसरी ओर साधारण सिंह की मूर्ति और चंद्रमा का चिह्न है†। अंशुवर्म्मा के कई शिलालेख मिले हैं‡। जिष्णुगुप्त के सिक्कों पर एक परवाले सिंह की मूर्ति है और "श्री जिष्णुगुप्तस्य" लिखा है। दूसरी ओर एक चिह्न है ×। जिष्णुगुप्त का एक शिलालेख भी मिला है +। पशुपति के तीन प्रकार के सिक्के मिले हैं। पहले प्रकार के सिक्कों पर एक ओर खड़े या बैठे हुए बैल की मूर्ति और दूसरी ओर सूर्य्य का अथवा और कोई चिह्न है ÷। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर त्रिशूल और दूसरी ओर सूर्य्य का चिह्न है =। तीसरे प्रकार के सिक्कों पर एक ओर बैठे हुए राजा की मूर्ति और दूसरी ओर पुष्पयुक्त घट है**। इन

---

* Ibid, No. 3; Coins of Anceint India, p. 117, pl. XIII. 55.

† Ibid. pl. XIII. 6; I. M. C., Vol. I., p. 283, No. I.

‡ Indian Antiquary, Vol. IX, pp 170–71; Bendall's Journey to Nepal, p. 74.

× Coins of Ancient India, p. 117. pl. XIII. 7.

+ Indian Antiquary, Vol. IX, p. 171.

÷ Coins of Ancient India, p. 117, pl. XIII. 8—11.

= Ibid. p. 111, pl. XIII. 12—13.

** Ibid, pl. XIII. 14—15.

सब सिक्कों पर दोनों में से किसी एक ओर राजा का नाम है। बुद्ध गया में पशुपति के दो एक सिक्के मिले हैं*।

बहुत प्राचीन काल में अराकान में भारतीय उपनिवेश स्थापित हुआ था। ईसवी सातवीं अथवा आठवीं शताब्दी में अराकान में भारतीय राजाओं का राज्य था। उनका और कोई परिचय तो अब तक नहीं मिला, परंतु रम्याकर, ललिताकर, श्रीशिव आदि नाम देखकर जान पड़ता है कि अराकान के ये राजा लोग भारतीय ही थे। ये लोग चंद्रवंशी थे और ईसवी सन् ७८८ से ६८७ तक इनका राज्य था†। इनके सिक्कों पर एक ओर बैठे हुए बैल की मूर्ति और दूसरी ओर एक नए प्रकार का त्रिशूल मिलता है‡। इसी प्रकार श्रीशिव, यारिक्रिय ×, प्रीति +, रम्याकर, ललिताकर, प्रद्युम्नाकर और अन्ताकर ÷ के भी सिक्के मिले हैं**।

---

* Cunnigham's Mahabodhi, pl, XXVII. H

† I. M. C., Vol. I, p. 331.

‡ Ibid, p. 331.

× Ibid, No. 1.

+ Inid, Nos. 2—6.

÷ Ibid, No. 7.

** रम्याकर, ललिताकर और अन्ताकर के चाँदी के सिक्के श्रीयुत प्रफुल्लनाथ महाशय के पास है। जान पड़ता है कि इस प्रकार के सिक्के पहले नहीं मिले थे।

विषयानुक्रमणिका

अ

अंशुवर्मा २६६, २६७.
अकोंबिय ४६.
अगथुक्लेय ४०, ४६, ५५, ५६.
अगथुक्लेया ४६.
अग्नि ११४, ११७.
अग्निमित्र १३४, १३५.
अच्युत १३५, १५४.
अजमित्र १३९.
अजयपाल २४७, २४८, २४९.
अजवर्मा १३१.
अणुमित्र १३५.
अश्वदमन १३५.
अनंगपाल २४७, २५१.
अनंत २३५.
अनंतपुर २१५.
अनाथपिंडद ९, १०, १७.
अनूपनिष्ठत्र १९६.
अन्तर्वेदी १८१, २३४.
अन्ताकर २६९.
अन्ध्रराज ३, १९५. २१३, २१६, २१७, २१८, २१९, २२६.
अन्ध्रवंश १९५.
अपरान्त १३१, १९६.
अवजात १३१.
अपूर्वचन्द्र २५६.
अपोलो १९, ५१, ६३.
अफगानिस्तान २९, ३४, ४६, ७२, १०२, १२०.
अफ्रिका २६, १२५, १४२.
अबदगश ९७.
अभिमन्यु गुप्त २५४.
अमित ४७, ७१.
अमेरिका २३.
अमोघभूति १४२, १४३.
अम्बिकादेवी १३३, १३४, १४२, १४४.
अय ६२, ६४, ७०, ७३, ७७, ८३, ८४.
अयश्चंद्र २६५.
अयम १९३.
अयिलिष ९०, ९१, ९२, ९३.
अयुमित्र १३१.
अयं दया १३०,
अराकान २२७, २६९.

अरुणसालि १८७,
अर्जुनायन १३७, १३६, १४५.
अर्थाग्र ६८,
अलतमश २५१.
अलवर १३७.
अलमोड़ा १३१.
अवतारचन्द २५६.
अवन्ती २१७.
अवमुक्त १४५.
अशटपाल वा अशतपाल २४६.
अशोक ३३, ३५, १२३.
अश्वघोष १३३.
अस्ववर्मा ८६, ६३, ६५,
अहिच्छत्र १३३, १३४.
अहीरा ६४, ११८.

आ

आंतिआलिकिद १८,४७,६०,६१.
आकरावन्ति १६६.
आगस्टस १०८.
आगरा १३७.
आटविक १५४.
आतिश ११४, ११७.
आर्त्त ६६.
आर्तेमिस ३७, ४६.
आर्तेमिदोर ४७.
आनर्त्त १६२, १६६.
आन्तिमख १८, ४७, ५४,
५७, ७१.
आन्तियोक ३३, ३७
आपलदत्त ४७, ६०, ६२, ६३, ६४.
आपलोदोरस ६५.
आपुलफिन ४७.
आभीर १४५.
आम्भी १९.
आरमेनिया १०४.
आलिकसुंदर ३३.
आस्ट्रेलिया ३.

इ

इन्द्रमित्र १३१, १३५.
इन्द्र वर्मा ८६, ६५.
इयूची ७५, १०३.
इलाहाबाद १६३.
इसामन ६५.

ई

ईरान १४. १५, २१८.
ईशानवर्मा १८८.
ईश्वरदत्त २०१, २०२.
ईसापुर ११६.

काक १५५.
काकतीय वंश २३६.
काकिनी १६, १६.
काट वा काश १३२.
काठियावाड़ १६६, २००.
कादम १३२.
कादम्ब वंश २२७, २२८.
कान्यकुब्ज २६३.
काबुल ११७, १६७, २००.
कामदत्त १३३.
कामरूप १५५.
कार्षापण वा काहापण ४, ५, ६,
१५, २१, २२, २४, ५४.
कालिंजर २६२.
काशगर ३४.
काश्मीर २३७, २५१.
किश चिश किस १०४, १०७.
किदर १२७.
किदार कुषण १२७, २३२.
कीर्तिवर्मा २६१.
कुई-शुयाङ्ग १०४.
कुकर १६६
कुजुलकदफिस १०४, २४२.
कुणिन्द १३७, १४१, १४२, १४७.
कुणोत १४२.
कुमार १००.
कुमारगुप्त १५५, १७१, १७२,
१७३, १७४, १७५, १७७, १७८,
१७६, १८०, १८१, १८४,
१८५, २०६.
कुमार देवी १५२, १५५.
कुमारपाल २४८, २४६.
कुमारिका ८, २२३, २२४.
कुमुदसेन १३१.
कुयुलकदफिस १०४, १०६,
१०७, १०६, २४२.
कुयुलककस १०५, १०६.
कुयुलकस १०६.
कुलिन्द ११८.
कुलूत १४१.
कुलोत्तुंग २२५.
कुबेर १२५.
कुशान १२७.
कुषण ७५, ८४, १०२, ११६,
१२०, १२१, १२६, १५०, १६३,
१६२, २३२, २४२, २५२, २६६.
कुस्थलपुर १५५.
कृतवीर्य १२०.
कृष्णराज २१०.
कृष्णाक्ष ६.
कृष्णा २१३.
केरल २२५

केक्रिपथ ७१.
कैविटक ११४.
कोङ्कु २२४.
कोटा २५२.
कोट्टुर १५५.
कोल्हापुर २१६.
कौरलदेश १५५.
कौशाम्बी १३२.
क्रीनस २६, २७, २८.
क्राशदाहक ३.

क्ष

क्षत्रप २६, १००, १६४.
क्षत्रपवंश १६३.
क्षेमगुप्त २४४, २५४.

ख

खरवस्त् ९९, १००.
खरपरिक १५५.
खिङ्गिल वा खिङ्खिल २५१, २५२.
खुहुवयक २४६.
खुरप २८.

ग

गजनी २४४, २६३.
गणपति पागोडा २२५.
गजव १४६.
गटेवा वा गेटिया २३८.
गदहर १२७.
गणपति नाग १५०, १५४.
गणेन्द्र १५१
गम्भीरचन्द्र २५७.
गर्दभिल्ल ७४.
गाङ्गेयदेव २४७, २५६, २६०, २६४.
गान्धार ३५, ४६, १३२, १४७, १८१, २३२, २४४.
गाहडवाल २४६, २६३, २६४, २६५.
गिरनार १४७, १६६.
गुजरात २६, २१७, २३४.
गुणाढ्य २६६, २६७.
गुणचन्द्र २५७.
गुप्ता १९९.
गुडुकर ९३, ९४, ९५, ९६.
गुद्रग ९८.
गुप्तवंश १५२, १७२, २०८, २३२, २५५.
गुरदासपुर १३८.
गुर्जर जाति २४१.
गुर्जर प्रतिहार वंश २४२.
गुणचंद्र २५७.
गोवा २२७, २२८.
गोकर्ण २५२.

गोअर १४६.
गोदावरी २१३, २२०.
गोपालवर्मा २५४.
गोमित्र १३३.
गोविन्द १७२, २६४.
गौतमीपुत्र शातकर्णि १९५, २१७.
गौतमीपुत्र श्री यज्ञशातकर्णि
१९५, २१४, २१७.
गौर सर्षप या पीली सरसों ५.
ग्रीक या यूनानी १८, १३३.
ग्रीस या यूनान देश २.

घ

घटोत्कचगुप्त १५२, १८८.
धूमोतिक १९६, २०३.

च

चन्द्र ११५.
चन्द्रगिरि २२५.
चन्द्रगुप्त १२, १५२, १५३, १५४,
१६२, १६३, १६४, १६६, १७०,
१७१, १८६, २०५, २६३.
चन्द्रदेव २५०, २६३.
चन्द्रबोधि २२३.
चन्द्रवंश २६६.
चन्द्रवर्म १५४.
चन्द्रात्रेय या चन्देलवंश २६१,
२६२.

चष्टन १९३, १९६, १९७, २०१,
२०४.
चांग-क्रियान १०१
चाँदा २२२.
चालुक्यचन्द्र या शक्ति वर्मा २२७.
चालुक्य वंश २२६, २४९.
चाहड़देव २५७.
चित्तौर २४६.
चीन ३, ७५, १०३, २३२.
चेदिवंश २२८, २५६, २६०, २६३.
चेरुपा २२७.
चोड़मण्डल २१५.
चोलमण्डल २२२, २२६.
चौहान या चाहमान २५०, २६१.

छ

छत्रेश्वर १४२.
छू १२७.

ज

जगदेकमल्ल या जयसिंह २२७.
जयमय १४०
जयगुप्त प्रकाण्डयशा १८५, १८६,
१८८.
जयचन्द्र २६५.
जयदाम १९७.
जयनाथ १८१.

जयपाल १४७.
जयमित्र १३५.
जयवर्मा २६१, २६२.
जयसिंहदेव १५५.
जयापीड़ १५३.
जर या जरि १६३.
जागदेव २०८, २५५.
जाजल्लदेव २६०, २६१.
जातक १३, १५.
जातकमाला १३.
जावक १४६.
जारवा या भारवा १८१.
जिष्णुगुप्त १६६, १६८.
जिहुनिय ६६.
जीवदाम १६८, १६९, २००.
जुन्नार १६३.
जूनागढ़ १६६.
जूलियस सीजर २०६.
जेजाभुक्ति या जेजाक भुक्ति २६१.
जेठमित्र १३३.
जेत ६.
जेतवन १७.
जौ या यव ५.
ज्वालामुखी या कांगड़ा १५१.

झ

झेलम ४७, ५५, ६७.

ट

टिमार्कस ५०.
टीन ३.
टैलेन्ट २६.

ड

डबाक १५५.
डिमिटर ८६.

त

तक्षशिला ११, १७, ३४, ४६, ५४, ८३, १२६, १३०.
तख्ते बहाई ६४.
तर्खान-खुरासान मार्का २३६.
तर्पणदीघी २६.
तारानाथ ६६.
तिगीन २३६.
तिब्बत ६६.
तुरमय ३३.
तुरुष्क २३१, २३६, २४३.
तुषार ७४.
तेक्षिक ४७.
तोमर २४७, २४८.
तोमरवंश २४२.
तोरमाण १२८ २३४, २३६, २३७, २४२.
तोषि २४४.

त्रसरेणु ५.
त्रिपिटक ७.
त्रिपुरी ११६.
त्रिभुवनगुप्त १५४.
त्रिलोक ११७.
त्रिलोचनपालशाही २४१.
त्रैकूटक २०६.
त्रैगर्त्त १३७, १३८
त्रैलोक्यवर्मा २६१.

थ

थेअफिल ४७.

द

दक्षिणापथ ३, १०, १३, ३०, १५४, २१२, २१३, २१५, २१४, २१६.
दमन १५५.
दरियावुष ३८.
दहसेन २०८, २०९.
दाइमाखोस ३३.
दामघ्सद १६८.
दामजदश्री १६८, १९९, २००, २०१, २०२.
दामसेन २०१, २०२, २०३.
दारिक ११, २८.
दारुल १५६.
दिअनिसिय ४७, ५४, ५६.
दिद्दा २४४, २५४.
दिमित्रिय ३६, ४०, ४६, ४८, ४९, ५०,
दिय ६०.
दियदात १७, ३५, ३६, ३७, ४६, ५५.
दियमेद ४७.
दिल्ली २४७, २५०.
दुर्लभ २५३
देवगिरि २३८.
देवनाग १५०.
देवपाल २४१.
देवमित्र १३१.
देवराष्ट्र १५५.
दोनक ३४.
द्रम्म या दरम १६२, १६३.
द्वादशादित्य १८५.
द्वारसमुद्र २३६.

ध

धनंजय १५५.
धनदेव १३१
धन्यविष्णु २३६.
धरघोष १४०, १४१.
धरष ४, ५, ८, ११, २६.

धरसेन १८१.
धर्मचन्द्र २५७
धर्मपाल २४१.
धर्माशोक २२६.
धुडुकवानन्द २१६.
ध्रुवमित्र १३८.
ध्रुवस्वामिनी वा ध्रुवदेवी १७१

न

नन्दिगुप्त २५४.
नन्दी १५४
नरसिंहगुप्त १८४.
नरेन्द्र २१७.
नरेन्द्रचन्द्र २५:.
नरेन्द्रादित्य २५१.
नलपुर वा नरवर १५०, २५७.
नसीरुद्दीन २५१.
नहपान. १६३, १६४.
नागदत्त १५४.
नागर १४४.
नागवंश १५०.
नागसेन ६६.
नागोद ६.
नानाघाट २१७.
नायकिमालिक २४०.
नासिक २१०.
निकल ३६.
निक्रिय ४७.
निगम चिह्न ३१.
निरशंकमल्ल २२६.
निषाद १६६
निष्क ५, ६, ८, १३, ३१.
नीलराज १५५.
नेगमा ३४.
नेपाल १५५, २६७.
नोर्नववाड़ि २१६.

प

पकुर ६८.
पचत १११.
पद्म १४६.
पञ्चनद २८, ३२, ३७, १४२.
पञ्चाल ६५, १३०, १३१, १३४, १३५.
पञ्जाब २६, ३४, ८०, १०२, १३८, २३३.
पदटङ्का २२७.
पद्मावती वा नलपुर वा नरवार १५०.
पन्तलेय ४०, ४७, ५४.
पभोसा वा प्रभास ११३.
पय १४०.
परमर्दिदेव २६१, २६२.

पराक्रमबाहु २२६.
परिव्राजक वंश १८१, १८६.
पर्दी २०६.
पल ५, ६, ८.
पलक १५५.
पलासिन ४७.
पल्लव १२६, २३१.
पशुपति २६६.
पाटलिपुत्र ३३, ६५, १५४.
पाणिनि १६.
पाण्ड्य देश २२४.
पारद ३३, ३४, ४३, ५०,
७५, १०४.
पार्थ २५४.
पाल वंश २३७.
पासन १२६.
पिष्टपुर १५५.
पीतल ३.
पीयमचन्द्र वा पृथ्वीचन्द्र १५५.
२५६.
पुइमावि २१४.
पुर्त्तगीज २११.
पुरगुप्त १८३, १८४.
पुराण ५, ६, १६, १७, १८, २१,
२३, २४, २६, ३०, ४१, १३१.
पुरुदत्त १३३.
पुलुमायिक १६३.
पुष्यमित्रीय १७२, १८०.
पुष्यमित्र १३४.
पूर्णादित्य २३७.
पृथ्वीचंद्र २५५, २५६.
पृथ्वीदेव २६०.
पृथ्वीराज २५१.
पृथ्वीवर्म्मा २६१, २६२.
पृथ्वीसेन २००.
पेउकलास ४७.
पेशावर १११.
पोलीबियस ३७.
पौरव १३७, १४३.
प्रकाश १२७.
प्रकाशादित्य १८४, १८५.
प्रतापादित्य २५३.
प्रद्युमनाकर २६६.
प्रवरसेन २५२.
प्रार्जुन १५५.
प्रीति २६६.
प्लुत ४७
प्लेटो ३६

फ

फणाम्ब २१२.
फारस ८, १३, २५, ७५.
फाल्गुनीमित्र १३५.

फिलीशीय १३, ४१.
फिलसिन १८, ४७.
फीरोज २११, २३४, २३७.

ब

बभ्रू २६.
बरमा ३१.
बरेजी १३१.
बलभूति १३३.
बलवर्मा १४४.
बहावलपुर १११, १४८.
बालादित्य १८४.
बाबिरुप वा बबेरु (बाबिलोन)— २५, २७.
बिम्बिसार ३३.
बुखारा ५३.
बुद्ध ११४.
बुद्धगया ६, १७, १८, २६६.
बुद्धगुप्त २०८, २३४.
बेग्राम ६४.
बेह्निनगर १५५, २३७.
बेसनगर ६०, २१८.
ब्रह्मपुत्र ८.
ब्रह्ममित्र १३३.

भ

भद्र १२६
भद्रघोष १३५.
भर्पंयन १४६
भरतपुर ११७, १४७
भरुकच्छ वा भृगुकच्छ ६६.
भर्तृदाम २०३.
भवदत्त १३३.
भागभद्र ६०.
भानुगुप्त २०८.
भानुमित्र १३५, १३७, १३६.
भारवा २३६.
भावभव्य ६.
भारहुत १२७.
भीमपाल २४४.
भीमदेव २४६.
भीमशाही २४३.
भीमसेन २१०.
भीमगुप्त २५४.
भुवनैकबाहु २२६.
भूतेश्वर ६४.
भूमक १६१, १६३.
भूमिमित्र १३५.
भू १२६.
भृगु १२६.
भोजदेव २३८, २४१.

म

मंटराज १५५.
मक ३३.

मगल्ल १४६.
मगज १४६.
मगजश १४६.
मगध १५४.
मगोजन १४६.
मजुर १४६.
मणिक्याला १११, ११२, २३६.
मत्तिल १५४.
मथुरा १२, ६४, ११२, ११६,
१२०, १२२, १३३, १३७.
मदनपाड़ ३०.
मदनपाल २५०, २५१.
मदनवर्मा २६१, २६२, २६३.
मद्र १४१, १४३.
मद्रक १५५.
मध्य एशिया २५, १३१.
मध्य भारत २४६.
मनसेरा या मानसेरा १२३.
मपक १४६.
मपय १४६.
मपोजय १४६.
मरज १४७.
मरु १६६.
मर्करी ५०, ७७.
मलय १, ३१.
मलय वर्मा २५७, २५८.
महमूद २४४, २४७, २५८, २६३.
महमूदपुर २५८.
महाकान्तार १५५.
महाकोशल २६०.
महाराठि २१४.
महाराय १४७.
महाराष्ट्र २६, २१५.
महासेन ११८.
महिमित्र १३६.
मही १२६.
महीधर १२६.
महीपाल २४२, २५०, २५१.
महीपालदेव २४१, २४६, २५६.
महेन्द्र १५५.
महेन्द्रगिरि १५५.
महेन्द्रपालदेव २४१, २४२, २५६.
माणिक्यचन्द्र २५७.
मातृचेट २३६.
मातृविष्णु २३६.
माधवगुप्त १८६.
माधववर्मा १३१.
माधाईनगर १६.
माध्यमिक या मध्यदेश १५, २५६.
मानदेव २६७.
मानसेरा या मनसेरा १२३.
मानांक २६६, २६७.

मारवाड़ २३१.

मालव १३४, १४२, १६३, १७६, १६२, १६५, २०७, २०८, २१७, २३८, २४८, २४६,

मालव जाति १३७, १४३, १४४, १५५.

मालवा १४३.

मालविकाग्निमित्र ६५.

माशय १४६.

माषक ४.

माशा ४.

माद ११५, ११८.

मित्र १३०.

मिश्र या मित्र ११५, ११८

मिश्रदात ५०.

मिलिन्द ६६.

मिलिन्द पंचहो ६६.

मिहिर ११५, ११८, १५०.

मिहिरकुल २३५, २३६, २३७, २४२.

मुदानन्द २१६.

मुरारि २२८

मुर्शिदाबाद १८८.

मुसलमान २०.

मुहम्मदपुर १८७, १८६.

मुहम्मद बिन् साम २५१, २६५, २६३.

मूलदेव १३१.

मेगास्थिनीज ३३.

मेघचन्द्र २०५.

मेनन्द्र १८, ४२, ५७, ६०, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ७०, १६३.

मेवाड़ २४६.

मैत्रकवंश २०६.

मैसूर २१५, २२४.

मोअ या मोग ७७, ७६, ८०, ६३, ६६.

मौखरी वंश १८८.

मौर्य्य ३५.

य

यम वा मय १४६

यव वा जौ ६.

यवद्वीप ३१.

यशोदाम २०२, २०४.

यशोधर्म्मदेव १८४.

यशोवर्म्मा २५३.

यशोहर १८७, १८६

याकूब लाइस २४६.

यादव वंश २२८.

यारिक्रिय २६६.

युधिष्ठिर ३७, ३८, ३६, ४०, ४५, ४६, ४८.

यूनानी राजा ४२, ४३. ४४, ४५.

येजदेगर्द २११.
येनकाङ चिङ्गताई १०५, १०६.
येल्लमञ्चलि २१७.
योदिया १४८.
योदियापार १४८.
यौधेय १३१, १३७, १४७, १४८, १५५, १५७.

र

रंगपुर २६.
रक्तिका ४.
रणजीतसिंह २४४.
रत्ती ४, ५.
रत्नदेव २६०, २६१.
रत्नाकर २१६, २६६.
रविगुप्त १८८.
राङ्गामाटी १८८.
राजन्य १३२.
राजलपॅघ ५.
राजवुल वा राजुल ९९, १००, १०१, १३३.
रामचन्द्र २५६.
रामदत्त १३३.
रामनगर १३४.
रामपुर ६४.
रावलपिण्डी १११, २१६.
राष्ट्रकूट वंश २१०.
रुद्रगुप्त १३५.
रुद्रदाम ११२, १६५, १६७, २००.
रुद्रदाम १४१, १६४.
रुद्रदेव १५५.
रुद्रवर्मा १३६.
रुद्रसिंह १६४, १६८, १९९, २००, २०४, २०५.
रुद्रसेन २००, २०१, २०२, २०३, २०४; २०५.
रूपचन्द ३५६, ३५७.
रूप्य १६.
रोह्ट सिंह वृद्धि २३५.
रोह्ट जयवृद्धि २३५.
रोमक, रोमन २५, १०, १३६, १७२.

ल

लक्ष्मणसेन १६.
लक्षन उदयादित्य २०५, २३२.
ललिताकर २१६, २६६.
लल्लियशाहि २४३.
लाङ्किकी ५१.
लाहौर १३६.
लिख्य वा लिपा ५.
लिच्छवि १५२, १५४.
लिच्छवि वंश १५४.
लिलिय १८, ४७, ४८.

लोहिया १२, २६, ३८, २१२.
लीलावती २२६.
लेलोह २१२.
लोहर वंश २५१, २५४, २५५.
लोहा या लोह ३.
लोह या लोहा ३.

व

वक्रदेव २४६.
वच्चु ४८, ७५, १०३, १०४.
वचर्गा १२६.
वत्सदेवी १८४.
वनकुल २१६.
वगहुल ६, १७.
वराहराज १२७.
वरुण ७८८५, ८६, ११८.
वलभी १८१, २०६.
वल्लालसेन १६.
वसुमित्र ६६.
वहसतिमित्र १११, ११३.
वाप्पदेव १३१.
वाग्दाक ११७.
वाशिष्ठिपुत्र शिवशातकर्णि २१२.
वाशिष्ठीपुत्र श्रीचन्द्रशाति २१३, २१५, २२१.
वशिष्ठीपुत्र श्रीपुडुमावि २२३, २१४, २२१.
वशिष्ठीपुत्र श्रीयज्ञशातकर्णि २१४, २२०, २२२, २२३.
वासवदत्ता १५.
वासिष्क १०५, ११६, १२२, १६५.
वासुदेव ६६, १०५, १२०, १२१, १२१, १२५, १९६.
वाह्लीक २५, ३५, ३७, ४४, ४८, ५७, १०३, १०४.
विग्रहराजदेव २३७.
विग्रहराज २५३.
विजयगढ़ १४८.
विजयचन्द्र २३४, १६५.
विजयनगर २१३, २२६, २३०.
विजयमित्र १३१.
विजयबाहु २२६.
विजयसेन २०२.
विदिवायकुर २१६, २२१.
विदिशा १३४.
विनयादित्य वा जयापीड़ २५३.
विमकदफिस वा विमकविश १०५, १०८, २४२.
विक १२६.
विकटक १२६.
विशाखदेव १३१.
विशाखपत्तन २२७.
विश्वपाक १३५.

विश्वरूपसेन २०.
विश्वसिंह २०३.
विश्वसेन २०३, २०४.
विषमसिद्धि वा कुब्जविष्णुवर्द्धन २२७.
विष्णुगुप्त वा चन्द्रादित्य १८५, १८६.
विष्णुगोप १५५
विष्णुमित्र १३३, १३५.
विष्णुवर्द्धन २२६.
वीरदाम २०१, २०२.
वीरयश १३६.
वीरवर्म्मा २६१, २६२.
वीरबोधि या वीरबोधिदत्त २२३.
वीरसेन १३३, १६२.
वृष्णि १२६.
वृहस्पतिमित्र १३५.
वेत्रवती १३४.
वैश्रवण २६६, २६७.
व्याघ्रराज १४५.
व्याघ्रसेन २०६, २१०.

श

शक जाति २७, ७४, ७५, १३३, १६३, १६२, १६३, १६५, १६६.
शकद्वीप ७४, ७५.
शकस्थान १०२, १०३.
शङ्करवर्मा १५४.
शाक्याकाशीक १५५.
शतमान ५, ६.
शरभ ११८.
शर्व्ववर्म्मा १८८.
शशांक १८६, १८७, १८६.
शहबाजगढ़ी १२३.
शाकल वा शागल ६६.
शातकर्णि १६५, १६६, २१४, २१७.
शात्र १६२.
शाहमीर २५३.
शाहि वा शाही २४४.
शाहि खिङ्खिल २५२.
शाही राजवंश २४६, २६४.
शिलादित्य १२७, १८८.
शिवदत्त १३१, १३३.
शिवदास १४१.
शिवबोधि २२३.
शिशुचन्द्रदत्त १३३.
शेषदत्त १३३.
शोडास ६६, १००, १०१, १३३.
शोख ३५.
शौर शैव ३१.
श्रावस्ती ६.
श्रीकमर २४६.
श्रीकृष्ण २१५.

श्रीकृष्ण सातकर्णि २१३.
श्रीगुप्त १५२.
श्रीचन्द्रशाति २१४.
श्रीतुर्यमान २५२.
श्रीदाम २३८.
श्रीनोखांववादि गोष्दन २२६.
श्रीपदम २४६.
श्रीबोधि २२३.
श्रीभोगिनी २६६.
श्रीमदादित्राह २३८.
श्रीयज्ञ २१५.
श्रीरुद्र २१५.
श्रीरुद्रशातकर्णि २१४.
श्रीवक्रदेव २४६.
श्रीविग्रह २३८.
श्रीशिव २१६, २६६.
श्रीयादेवि मानश्री २४०.
श्रीसात २२०.
श्रीसामन्तदेव २४६, २४७, २५१.
श्यंसुवर्मा २६८.
श्व १६६.
श्वेत २३१.

स

संक्षोभ १८१.
संग्राम २५५.
संसारचन्द्र २५७.
सहुदाम २०१.
सहुमित्र १३१.
सत्यदाम १६६.
सत्यमित्र १३१.
सत्यसिंह १६३, २०५.
सद्यःपुष्करिणी २६, १४१.
सनबर ६८.
सपलेज २०१.
सफतन सफ्तक् २३६.
सफरपुंतक २४०.
समतट १५५.
समुद्र १२६.
समुद्रगुप्त १३५, १३८, १४७, १५०, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५६, १६२, २०५.
सयष १२६.
सर्वनाथ १८१.
सर्वयश १२७.
सहुचणबाल २५०, २५१.
सहुचणवर्मा २६१, २६२.
सस ६५.
साँची १३०.
साकेत ६५.
सागर २३५.
साचाधूत ६४.

सामन्तदेव २४६, २५५.
सांइसमल २३६.
सिंहल २२५.
सिद्धसेन २०५.
सिकंदर १०, ११, २८, ३२, ४५, ५५, ६५, १४३.
सिग्लोस २८, २६.
सिङ्गारचन्द्र २५६.
सिजिस्तान (सीस्तान ?) २२५, १२७, २३३.
सित १२७, २३१.
सिन्धु ६, २६, ६६.
सिन्धुदेश ३४.
सिन्धु सौवीर १६६.
सिल्यूकस ३२, ३३, ४५, ५१.
सिवलकुर २१६, २२१.
सीरिया ३३
सीसक या सीसा ३
सुईविहार १११.
सुङ्ग ६६, १३४.
सुगन्धारानी २५४.
सुभूति ३२.
सुराट २०६.
सुराष्ट्र १६६.
सुवर्ण ४, ६, ७, ८, ६, १५, १८.
सुवीरचन्द्र २५७.
सुस्सल २५५.
सूर्य ११४.
सूर्यमित्र १३१, १३५.
सेंद्रगाचारी १०१.
सेन या सेरा १२७.
सेण्ट पिटर्सबर्ग या लेनिनग्रेड १५२, १८८.
सैरिन्ध २४१.
सैलनीय २३१, २३२, २३३, २३४, २३६, २३७, २३६.
सोगडियाना ७५, १०३.
सोन ६५.
सोनपत १४८.
सोपारा २१७.
सोमेश्वर २५१
सोमेश्वर देव २३८.
सौराष्ट्र १५६, १५७, १६३, १७०. १७६, १८२, १६६, २००, २०२, २०४ २०५.
स्कन्दकुमार विशाख ११७,
स्कन्दकुमार विशाख महासेन ११८
स्कन्दगुप्त १५७, १८०, १८१, १८२, १८३, १०८, २०६, २३१
स्टेटर २६, ११०, ११४.
स्रत ४७.
स्रतेग या ह्रेटेगस ८६, ६३.

स्वलगदम ८०, ८१,
स्वलपतिदेव २४६.
स्वलहोर ८०, ८१
स्वाटी ३.
स्वाजिरिष ८१, ८२,
स्वामिदत्त १५५.
स्वामी शिवदास २०३, २०४

ह

हगान ९९, १००, १०१, १३३.
हगामाष ९९, १००, १०१. १३३.
हन १०३, २३१.
हरमिस ८६.
हरिगुप्त १८८.
हरिश्चन्द्रदेव २६५.
हरिषेण १३५.
हरीचन्द्र २५६.
हर्ष २५५.
हर्षदेव २२४.
हर्षदेव २४१.
हस्ति वर्मा १५५.
हस्ती १८१, १८६.
हाईवानिया ६५.
हाखामानिषीय २८, ७५.
हारहुष २३१.
हिगन् १०३
हिन्दूकुश १०५.
हिन्दू शाही वंश २४४.
हिपुष्क ५८.
हिमू १४.
हिमालय ८.
हिरकोद १०१.
हिरण्य कुल २३६.
हुएनत्द १२७.
हुविष्क १८, ९९, १०५, ११६, ११७. ११९, १२४, १६३, १६४.
हूण १७२, १८०, १८१, २०६, २३१, २३२, २३३, २३४.
हेफाइस्टम ८८, ९३.
हेरय १०१.
हेरमय ४६, ४८, ७२, १०६, १०७.
हेलिओक्लेप ४८, ५१, ५७, ५८, ५९.
हेलिय ग.वाक्स ११४.
हेलिसुदोर ६०
हैड्रियन ३१.
होशियार पुर १३८.

सूचना

इन चित्रों में सिक्कों के साथ जो अंक दिए गए हैं, वे बँगला हैं। अतः पाठकों के सुभीते के लिये हम नीचे उन बँगला अंकों के हिन्दी रूप दे देते हैं—

১......१	৫......५	৯......९
২......२	৬......६	১০......१०
৩......३	৭......७	১১......११
৪......४	৮......८	১২......१२

(१) अनाथपिण्डद का जैतवन खरीदना।

(१)

(२)

(१) वरहुत को स्तूप वेष्टनी पर का चित।

(२) बुद्ध-गया की वेष्टनी पर का चित्र।

(२) सबसे पुराने सिक्के—पुराण और कार्षापण।
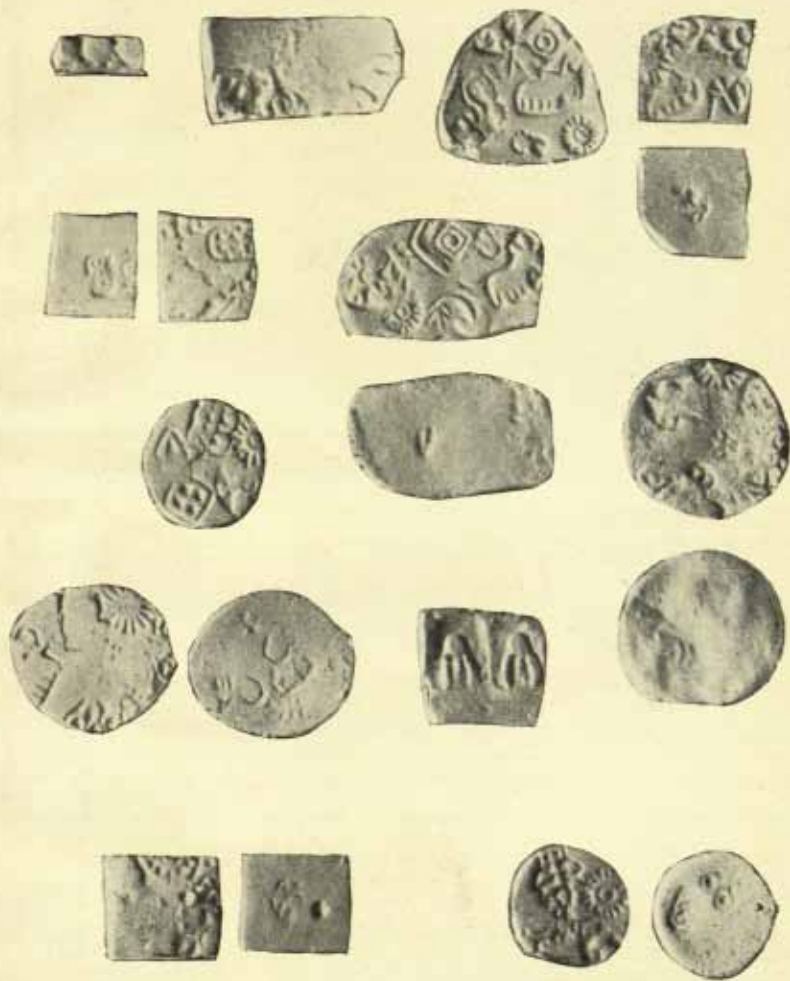
(३) प्राचीन भारतके विदेशी सिक्के।
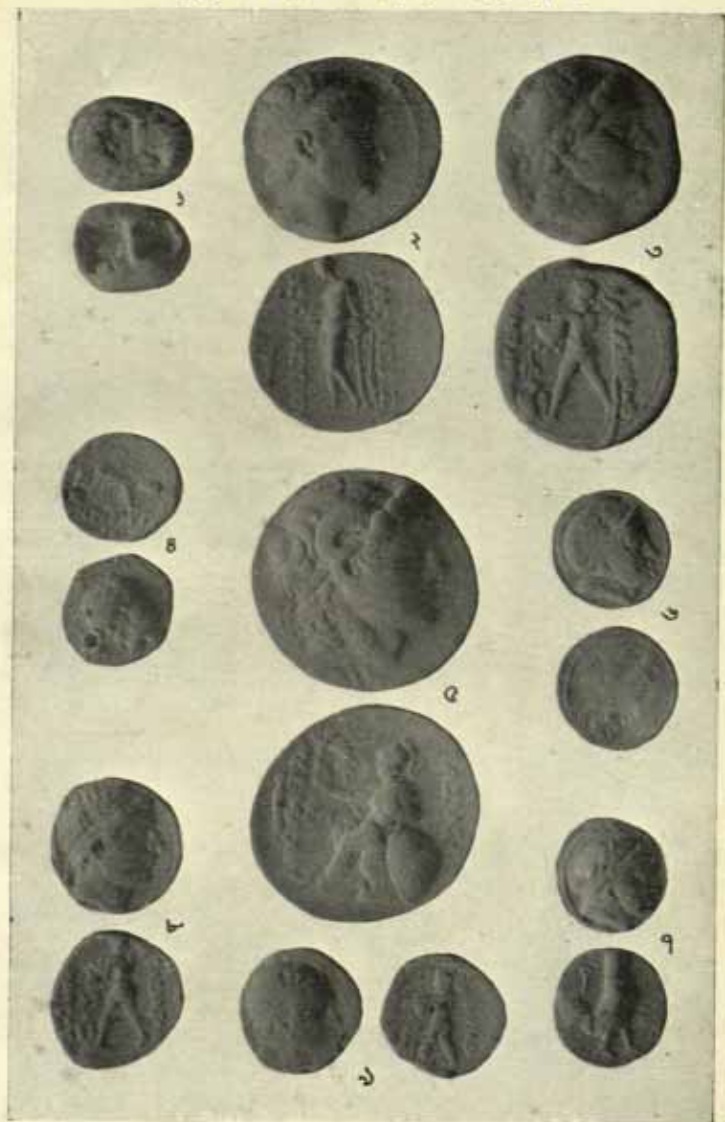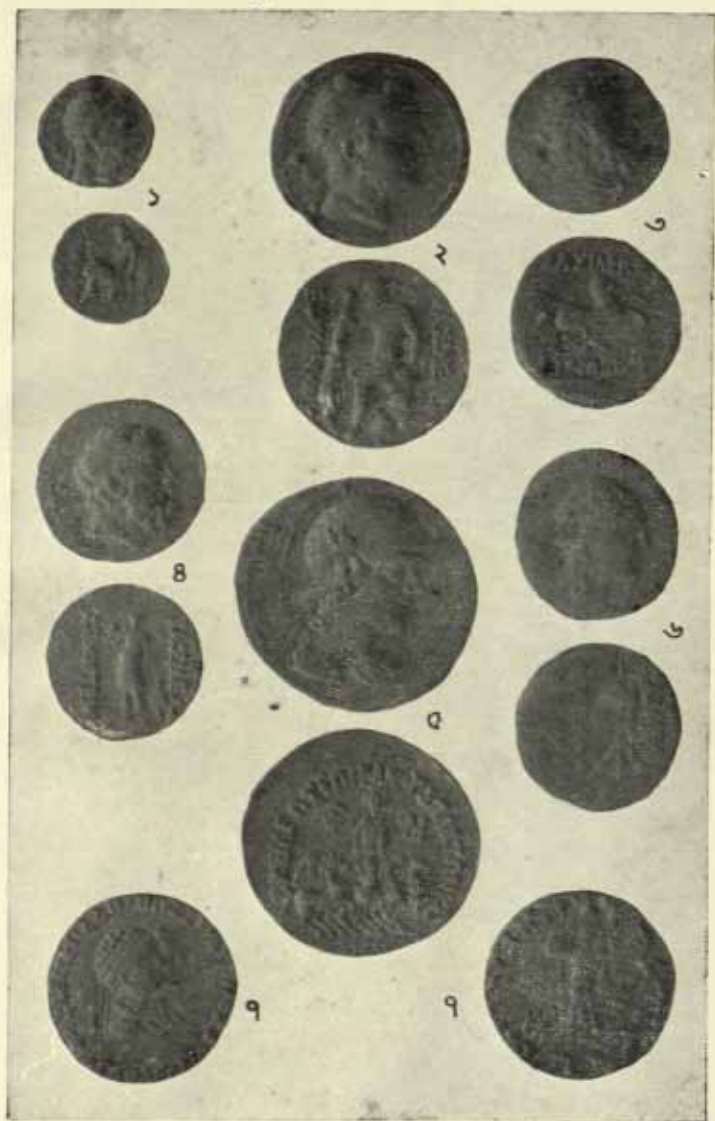
(४) यूनानी राजाओं के सिक्के।

(५) यूनानी राजाओं के सिक्के।
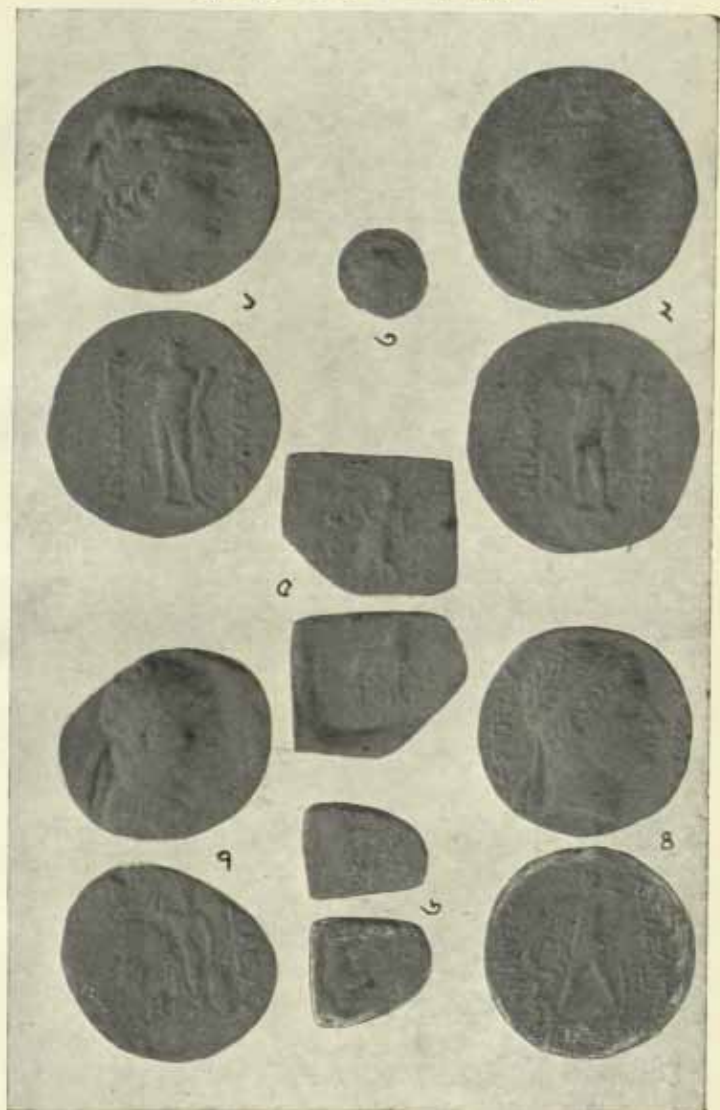
(६) यूनानी राजाओं के सिक्के ।
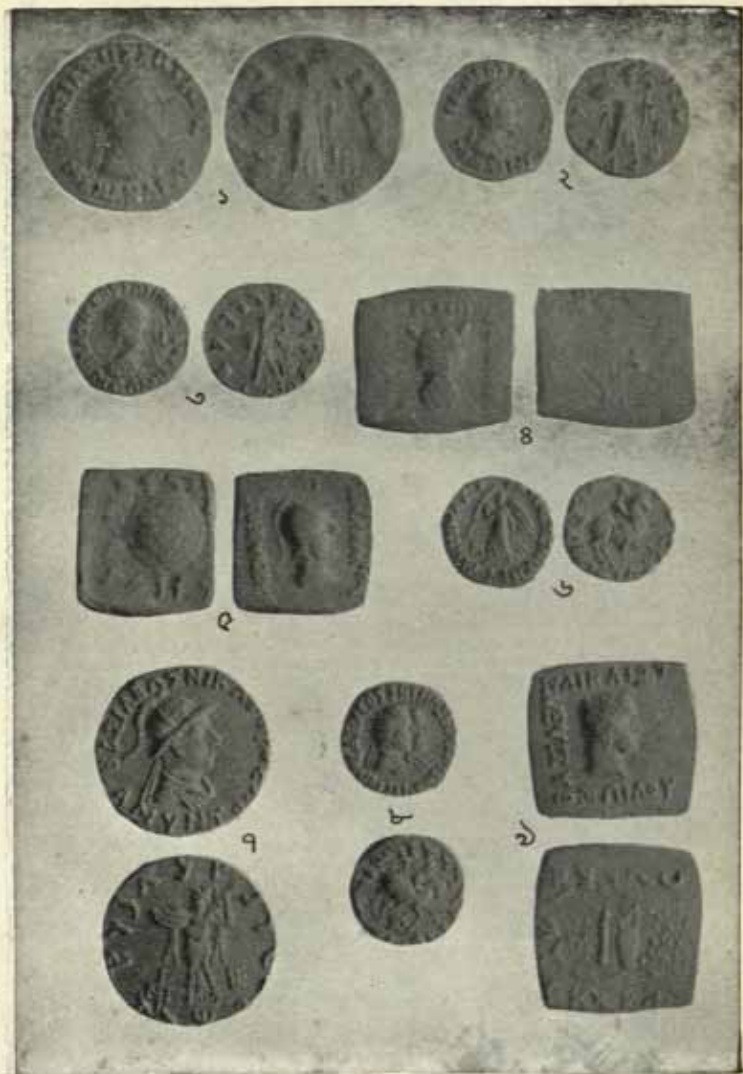
(७) युनानी और शक राजाओं के सिक्के ।
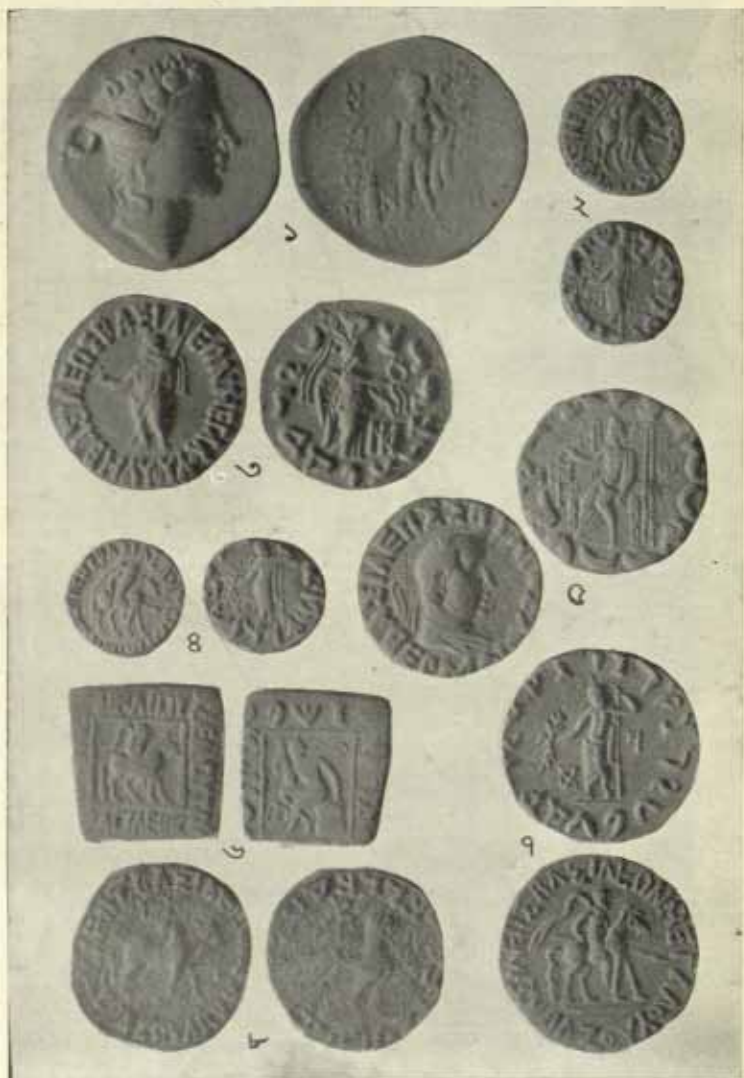
(८) शक जातीय और कुषण वंशीय राजाओं के सिक्के ।
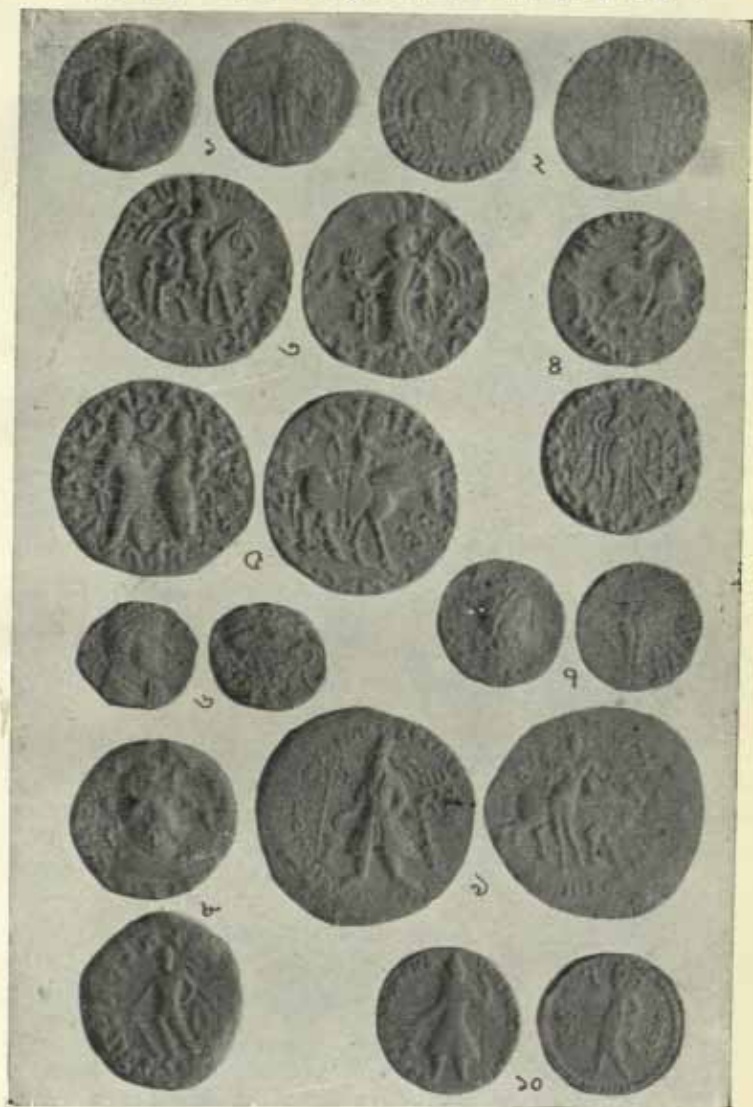
(८) कुषण वंशीय राजाओं के सिक्के।
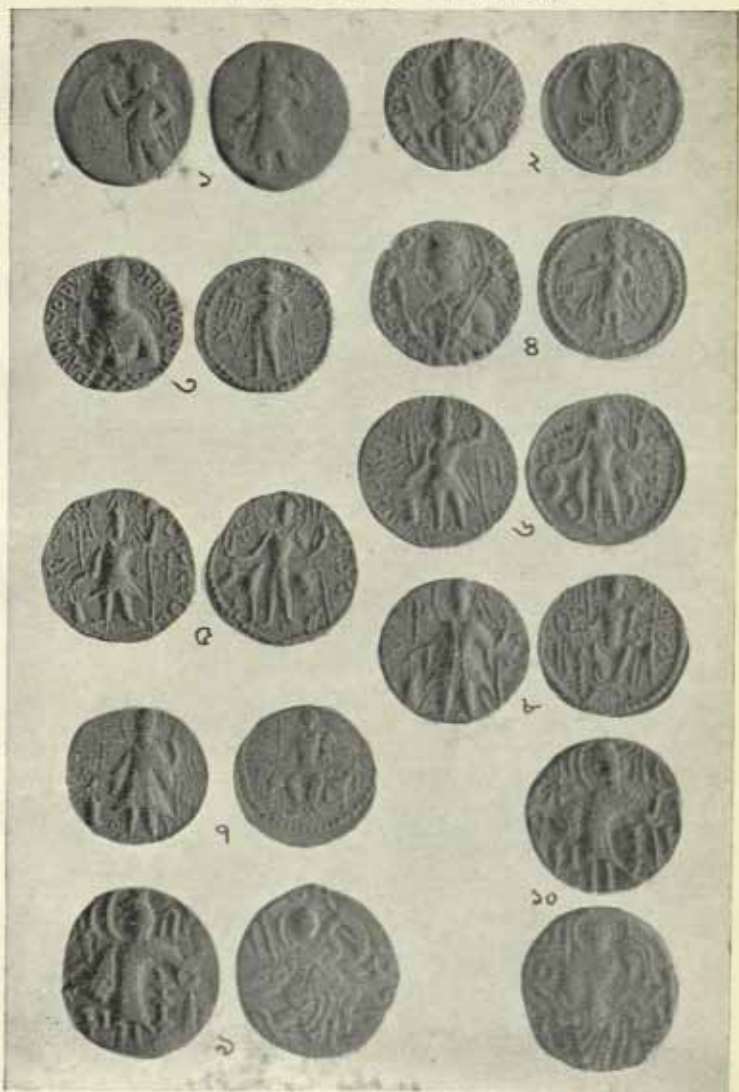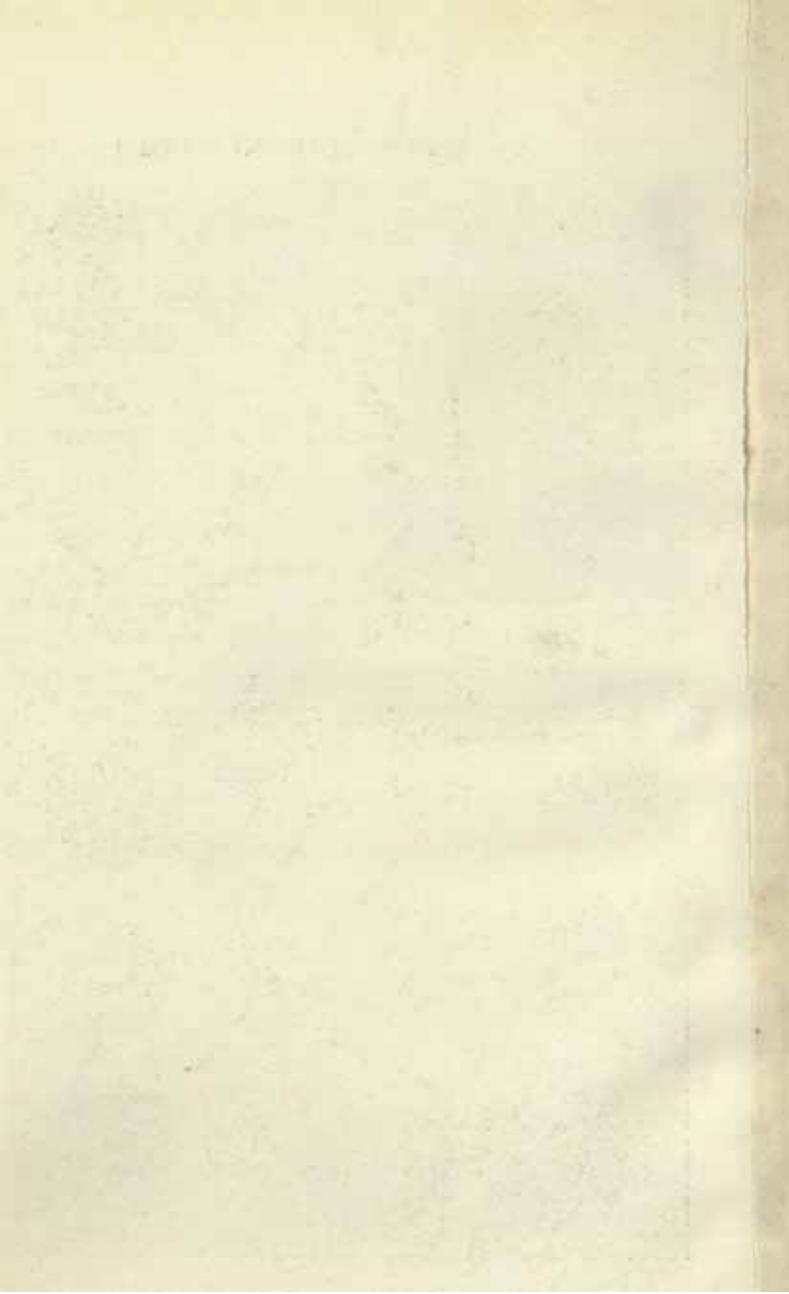
(१०) जानपदों और गणों के सिक्के।

(११) जानपदों और गणों के सिक्के।
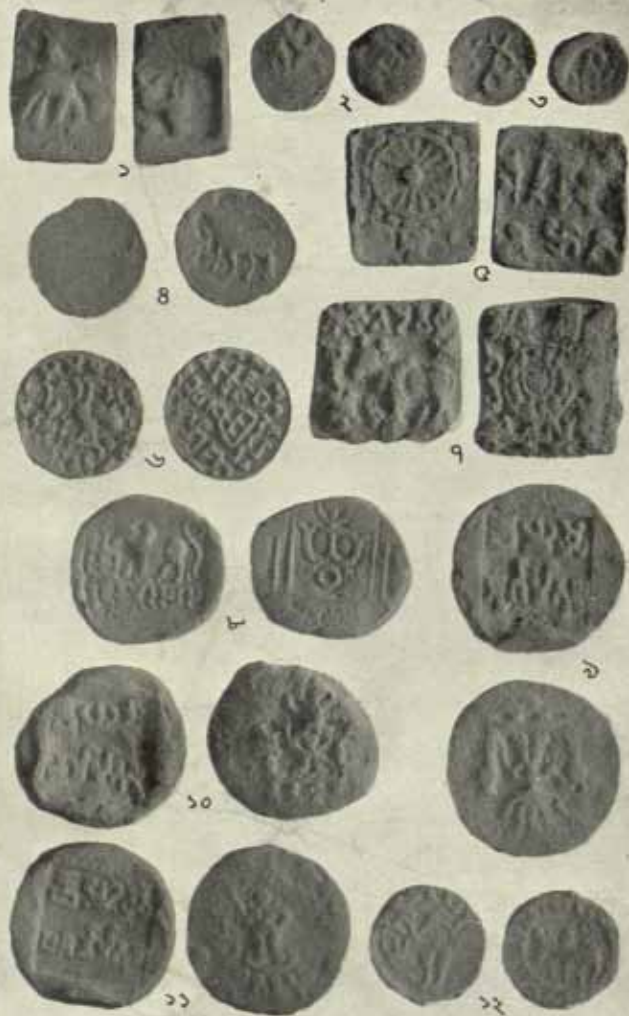
(१२) गुप्त वंशीय सम्राटों के सिक्के ।
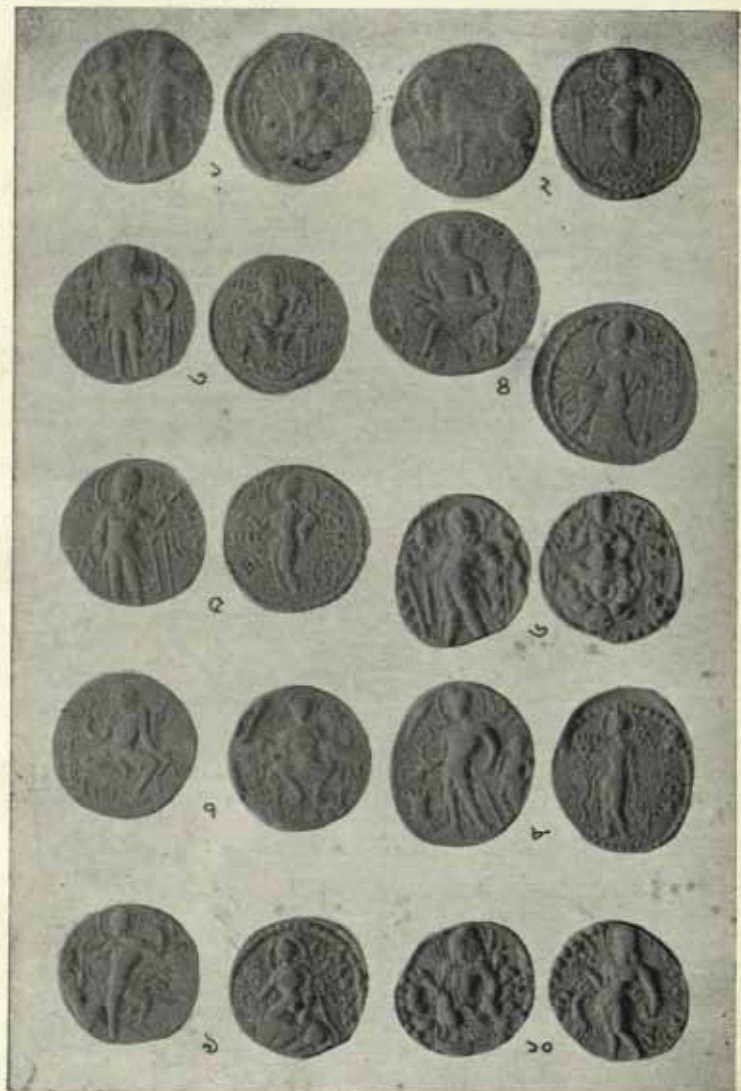
(१३) गुप्तवंशीय सम्राटों के सिक्के ।

(१४) गुप्त सम्राटों के सिक्कों के अनुकरण।

(१५) सौराष्ट्र और दक्षिणापथ के सिक्के।
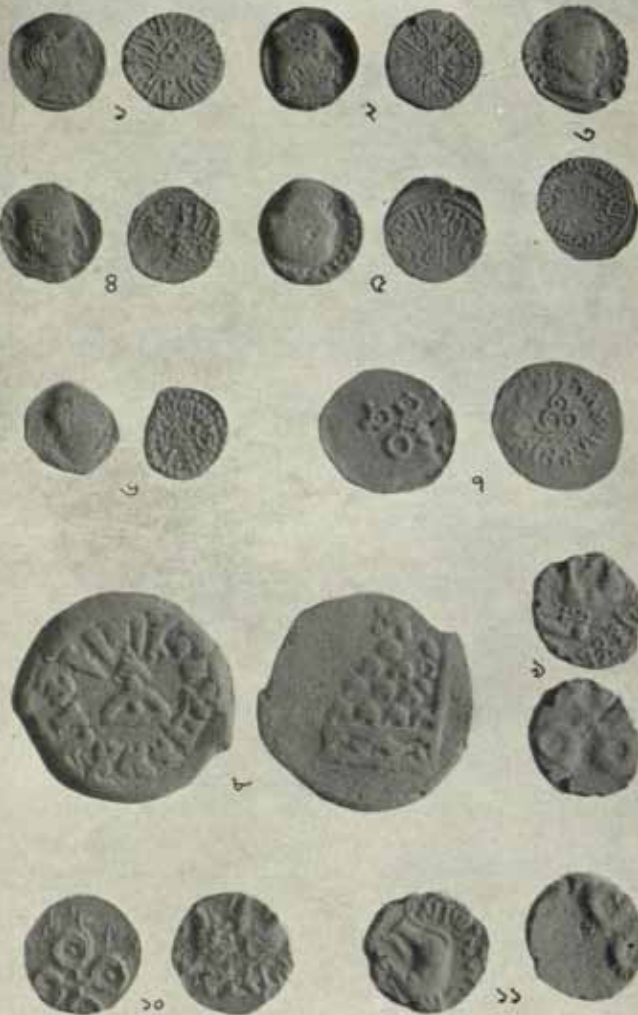
(१६) दक्षिणापथ और हूण राजाओं के सिक्के ।
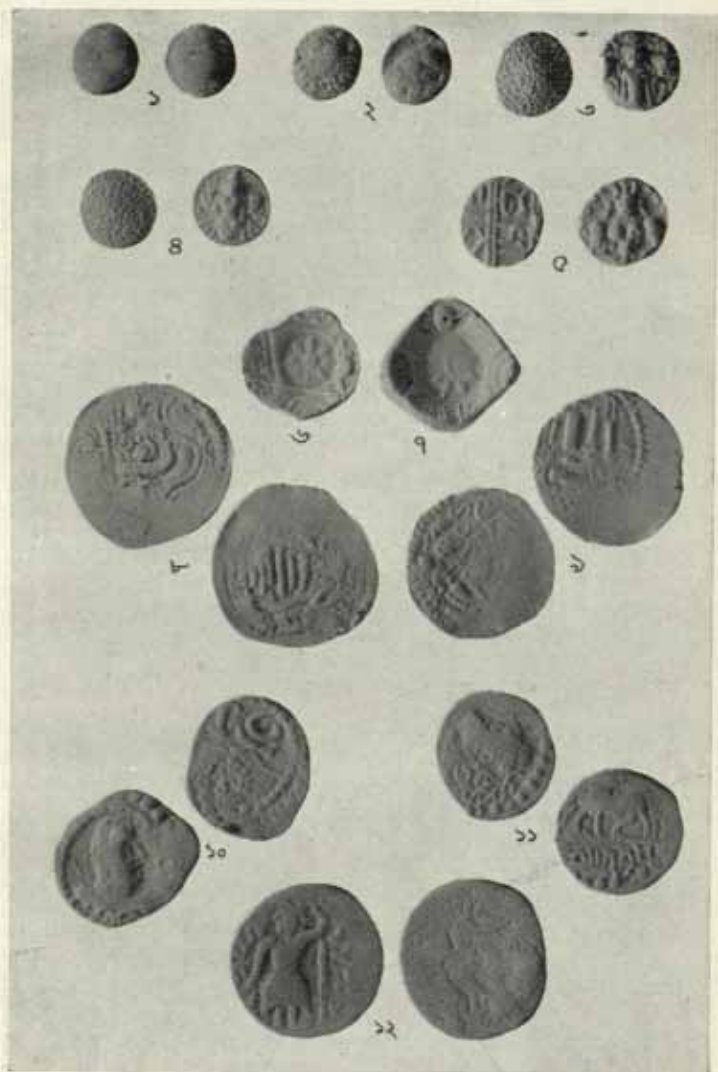
(१७) सैसनीय सिक्कों के अनुकरण ।
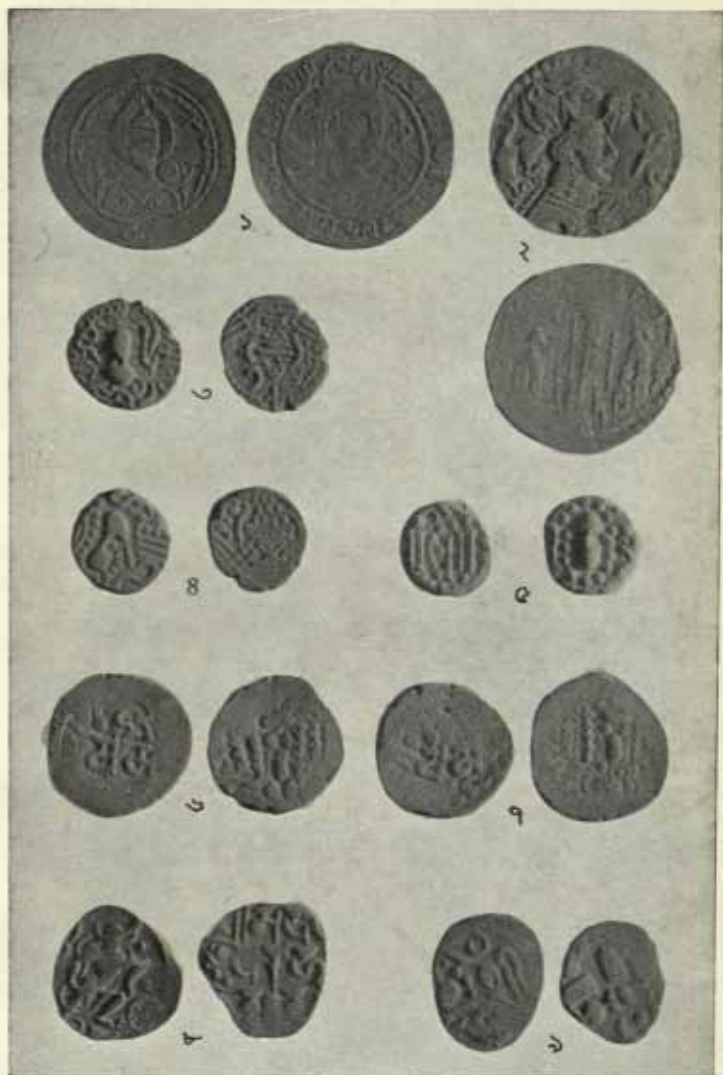
(१८) सिंहल और उत्तर-पश्चिम सीमांत के मध्य युग के सिक्के।

(१८) काश्मीर, कांगड़ा, प्रतीहार, चेदी, चालुक्य, गाहड़वाल, चंदेल और चेजाभुक्ति राजाओं के सिक्के।

(२०) नैपाल और अराकान के सिक्के।